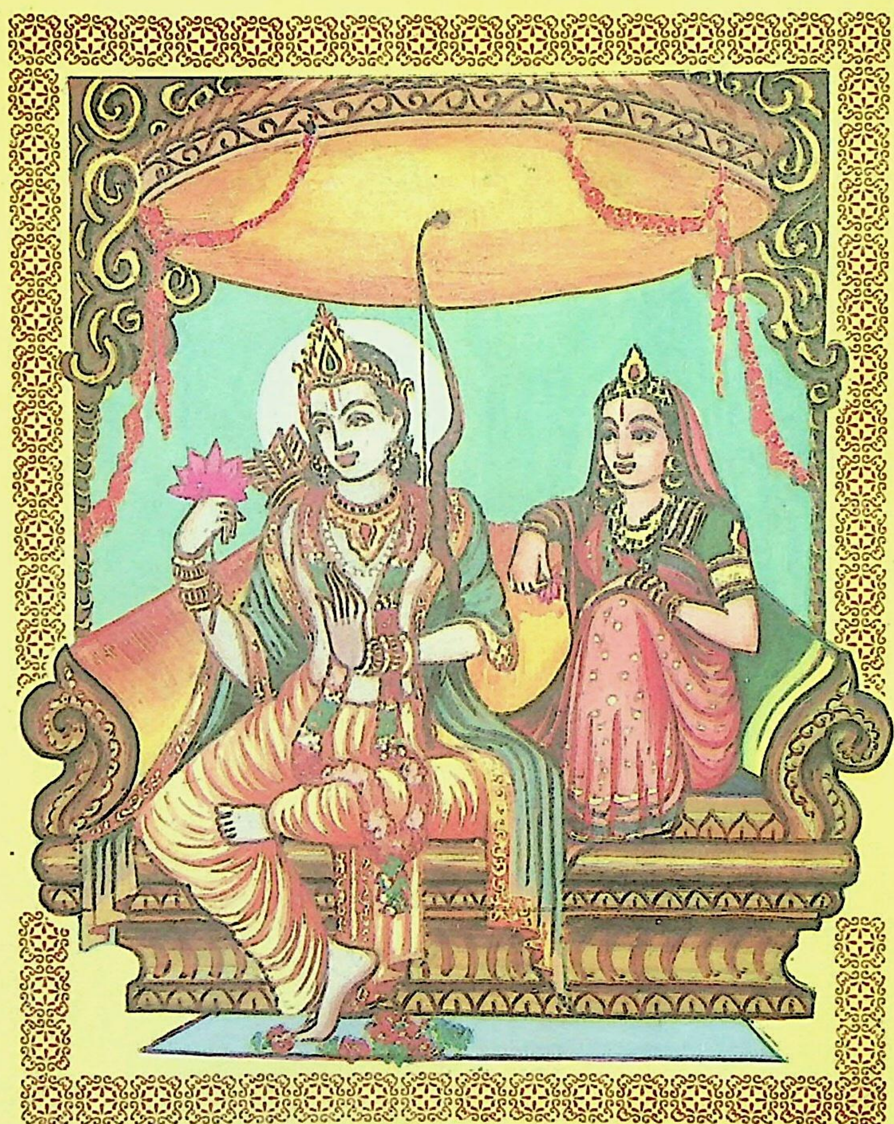
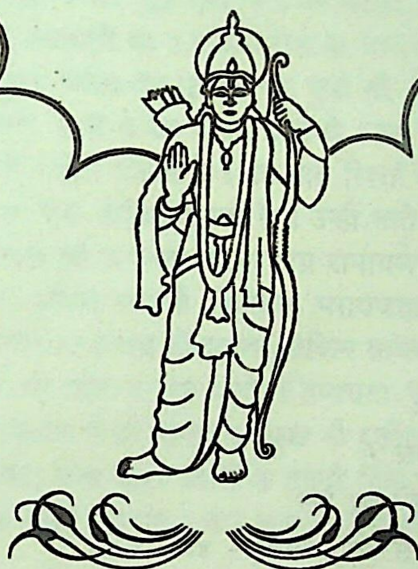
अग्ररामायण



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

अग्ररामायण



लेखिका

सीतादेवी पुरुषोत्तम पोद्दार



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

संस्करण : सन् १९९७ सम्वत् २०५३

मूल्य : ११० रुपये

मुद्रक व प्रकाशक :
खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्री वेङ्कटेश्वर प्रेस
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्वई - ४०० ००४.

Printed by Shri. Sanjay Bajaj for M/s. Khemraj Shrikrishnadas Proprietor : Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004 at their Shri Venkateshwar Press, 66, Hadapsar Industrial Estate, Pune - 411 013.

प्रस्तावना

।। श्री गणेशाय नमः ।। इस पुस्तक का नाम अग्र रामायण रखा गया है, क्योंकि इसमें आदर्श मानव राम का चरित्र चित्रण है । ब्रह्माण्ड के हर जीव मात्र की जीवन लीला, गृहस्थाश्रम का वर्णन है एक ऐसा नाट्यक्षेत्र है गृहस्थाश्रम, जहां हर मानव अपनी जीवन लीला आदि से अन्त तक खेलता है । जीवन से मृत्युपर्यन्त यहीं रहकर अनेक उपाधियां पाता है नाम पाता है, मान सम्मान पाता है । और फिर यहीं अन्त में जीवनलीला समाप्त करता है । शून्य शून्य में मिल जाता है । लेकिन बुद्धिजीवी होने के नाते मानव अपने कुल के इतिहास में अपना नाम अंकित कर जाता है । मरणोपरान्त भी लोग उसे याद कर कहते है वह एक आदर्श भारतवासी था, यानि अपने देश से वह जुड गया है । यह व्यक्ति अमुक वंश का था । अग्रवाल था यानि अग्रवंशी था । उसका वंश के साथ अविछिन्न संबंध जुड गया है । यह अमुक व्यक्ति का पुत्र था वा पुत्री थी । इसकी अमुक माता थी, इसके यह नाना, नानी थे यह दादा, दादी थे । यह इसकी निजी सन्तान है । यानि बेटे पोते, दोहते दोहती है । यह नाते रिश्तों का कमाल जो मरण के बाद भी तुम्हारा नाम जीवित रखता है । उन्हीं नाते रिश्तों का तारतम्य निभाना, वंश परम्परा को उज्ज्वल करना अग्र रामायण सिखाती है । इसमें तन्मयता को पाना, जीवन सत्य है । कर्तव्य परायणता निभाना आदर्श है नाते रिश्तों के हिंडोले पर तन्मय हो झूलना, लेकिन सावधानी से, झूला टूटने न पाये और तुम्हें भी चोट न लग जाये । तन्मयता पा निमग्न हो इसमें रहना । यानि गृहस्थाश्रम में तो मानव को कुछ भी दुर्लभ नहीं है, सब सुलभ है । अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष चारों पदार्थ के तुम्हारे पास भरे भंडार है । जब चार भुजा का नाथ विष्णु भगवान । चार भुजाओं में लिये चार पदार्थ तुम्हारे पास है ।

गृहस्थाश्रम कोई रूढिवाद नहीं यह एक कठोर सत्य है जो आज भी है, कल भी था और सदैव रहेगा । समाज कोई बंधन नहीं वह जीव के सृजनहार प्राण है । प्राण जब तक तन में है तभी तक सब जीवित है, क्रियाशील है । प्राण निकलते ही जीव निर्जीव है । यह मानवता का अंतस्तल हृदय क्षेत्र है । जहाँ राम रावण का युद्ध नित्यप्रति होता है, होता था और

सदैव होता रहेगा । मानव हृदय को जो विचार क्लेश पहुँचाये, कष्ट दे, चैन हर ले वह सब रावण के उद्‌गार है । इसके विपरीत जो मन को आराम पहुँचाये, सुख की नींद सुलाये, परायों को अपना बनाये, विश्व बंधुत्व का नारा लगाये वह राम के श्वास हैं । अंधे प्राणी को ही जब विश्व की रम्यता देखने को दो नयनों की उत्कट अभिलाषा है वह राम लक्ष्मण दो विवेक के नयन जब खोल पाता है तो तन्मय हो सब ओर से आनन्द विभोर हो जाता है । फिर नयनवाला यदि इस रम्यता को नहीं देख पाता तो भूल भूलैया में भटक जाता है नयन होते हुये भी चक्र में फँस जाता है जहाँ से निकलना कठिन हो जाता है । विवेक के चक्षु खोल, देखो क्या आनन्द आता है। अपना समझो सबको, सब तुम्हारा है । अलग होता जाये मानव तो वह स्वयं कर्तव्यच्युत हो अलग हो जाता है । राम जोडना सिखाता है, राम जुडे सिया से अपने से पहले उसका नाम लिखाया है, सिया राम बने, दशरथ सुत कहलाये चारों भाईयों का कितना अपूर्व चरित्र चित्रण अग्र रामायण में दिखाया है ।

प्रेम मिलन और युद्ध विध्वंस लाता है । प्रेम में मानव तन्मय हो जाता है और युद्ध के विध्वंस को देख अन्त में क्लांत हो पछताता है उसके हाथ ग्लानि और क्षोभ के अतिरिक्त कुछ नहीं आता है ।

राम प्रेम के प्रतीक, रावण युद्ध सिखाता है । युद्ध के लिये चाहिये शक्ति अपार जिसको संचय करने के लिये घोर परिश्रम करना पडता है । इसके विपरीत प्रेम तो हृदय की अनुभूति है उसे जागृत करते ही वह स्वयं उमड आती है । इसलिये राम रावण से नित्य प्रति जीत जाता है ।

पति पत्नी को जब परिणयसूत्र में बाँधा जाता है तो क्या वह बंधन कहलाता है । वह जीवनसूत्र है जो मानवता की वाटिका में सदैव नये पुष्प खिलाता है तभी तो जीव उसमें बँध उस नींव की सुरक्षा चाहता है । गृहस्थाश्रम ही तो एक यह ऐसी सुरम्य वाटिका है जहाँ जीवन सतरंगो में रंगा जाता है । इन्द्र धनुषी हो जाता है ।

सीता मेरा बचपन का नाम था विवाह के पश्चात धर्मपत्नी श्री पुरुषोत्तम दासजी पोद्दार की कहलाई । जननी पदवी पा माता, शारदा और देवीप्रसाद की कहलाई । शादी की शारदा की वीरेन्द्र कुमार रूंगटा से, वह दामाद बने,

उनकी सास कहलाई । देवीप्रसाद का पाणिग्रहण हुआ दिव्या से वह पुत्रवधू कहलाई । शारदा के कन्या मेघा, पुत्र कर्ण, पुत्र गौरीश ने जन्म लिया उनकी नानी कहलाई । देवीप्रसाद के दो कन्याएँ हुई अनीशा और अक्षरा, उनकी दादी कहलाई । माता पिता के घर में एक कन्या आई । नाम, धर्म संस्कार समाज ने दिये । कन्या, पिता केदारनाथ अग्रवाल और माता उषादेवी की कहलाई, ननिहाल की दोहती, पिता के घर की कन्या तथा ससुराल की बहू कहलाई, जन्म, मरण तक क्या यह छाप कभी मिट पायेगी । मानव जीवन पर जिन जिन नाते रिश्तों की मुद्रा लग जाती है वह जन्म जन्मान्तर तक अमिट हो जाती है । पति के स्वर्गवास वा सुयोग्य संतति निकलने से बदनामी और सुनामी सदा माता पिता परिवार, वंश और देश तक को आती है । राम अपने को दशरथ सुवन कह पिता के मरने के पश्चात भी उनकी कीर्तिध्वजा फहराते थे । अग्र रामायण है जो सदैव नाते रिश्तों के सूत्र का अमोघ दर्शन कराती है जिनकी अमिट छाप मानव जीवन पर लग जाती है । उसे कैसे निभाया जाय ताकि प्रेम की शृखंला टूटने न पाये यह अमोघ शक्ति घन अग्र रामायण बरसाती है । स्मृतियों को संजोये रखने के लिये जन्म दिवस और विवाह दिवस सभी मनाते है । पति का स्वर्गवास हो गया, स्वर्णमय विवाह दिवस, पचासवें वर्ष पर पतिश्री पुरुषोत्तमदास पोद्दार की स्मृति में इस अमोघ शक्ति अग्र रामायण पर भावना के कुछ पुष्प चुन सीता पी. पोद्दार चढाती है । चढाना उपासिका का काम है तोड़ दे या जोड दे यह समाज, जनता जनार्दन का काम है । कुछ मिले तो राम का है ले लेना, न मिले तो राम के चरणों में उपहार है छोड़ देना । वह जाने उनका काम है । दोष दूर कर निर्दोष बना दे, हर तन, हर कण, हर मन में बसे रहे उनकी शक्ति अपार है । बारम्बार राम के चरणों में नतमस्तक मम नमस्कार है ।

जय सियाराम। विघ्न विनाशक, गणपति, गणनायक, गणेश महाराज।

सीता पी. पोद्दार

वंश परिचय

हम अग्रवाल अग्र वंशी है । हमारे वंश के प्रवर्तक महाराजाधिराज अग्रसेनजी महाराज है । अग्रवंशी अधिकतर वैश्य हैं । व्यापार से जीविका चलानेवाले होते हुये भी राजनीति, अर्थशास्त्र, व्यापार, धन कमाने इत्यादि किसी भी क्षेत्र में कम नहीं । इकाई को शून्य आगे लगा, लगाकर बढाने में वैश्य विश्व में सबसे अग्रगण्य है । वह एक रुपये की पूंजी से व्यापार कर करोड में परिणित कर देता है । इकाई के सहारे शनैः शनैः रहने को भवन बना लेता है । निर्विघ्न कार्य सिद्धि कर्ता यदि गणनायक महाराज साथ दे तो सिद्धि स्वममेव आ जाती है । सिद्धि यानि 'स' शब्द जब बुद्धि के साथ जुड जाता है तब सुबुद्धि आ जाती है । सुबुद्धि सिद्धिदायिनी है । इसके विपरित यदि 'क' शब्द बुद्धि के संग जुड जाता है तो मानव मस्तिष्क में कुबुद्धि का प्रवेश होता है जो विध्वंसकारी है ।

अग्रवंशी धनोपार्जन करते हैं तो आपस में बाँटकर खाते हैं अपनी पूंजी दूसरों को भी देते है । लेकिन अपनी पूंजी वही है जिसे मानव स्वयं संचित करे, उसे बाँट देने का उसे पूर्ण अधिकार है चाहे वह कण है या मण, लेकिन विरासत में मिली पूंजी स्वतः की नहीं वह पहले ही सबके साँझे की हे । जैसे किसी कोषाध्यक्ष के पास सब संपत्ति जमा रहती है । लेकिन उसको लुटाने का उसे कोई अधिकार नहीं, उसे सँभालना उसका कर्तव्य है ।

मेरे जीवन की विचारधारा की यह एक पूंजी अग्ररामायण है । यह कण है या धन है । जिसे मैं प्राणीमात्र को देना चाहती हूँ । इस अग्र रामायण रूपी विचारों के कोष की कुंजी राम है । राम जीवन के प्रेरणा स्रोत के आराम है । यदि कुंजी लगाकर खोल लो इस खजाने को तो आराम ही आराम है । यदि बिखर जाय यह विचारों का जल तो भी हर प्रकार से आराम है । कण को करेगा यह स्पर्श, कण कण में राम विराजमान है । कण से कण मिल गया कण का अस्तित्व महान है । जय सियाराम । मिलन की शक्ति अपार है । नारी और नर का मिलन ही वंश का उत्थान है । मानव बुद्धिजीवी प्राणी है । उसमें व्यक्त करने की शक्ति संचार है । वह

बोलकर, लिखकर प्रगट कर सकता अपने जो विचार है । वह साहित्यकार है । उसके पास जीवन का सुरक्षित इतिहास है ।

मानव को छोड़ क्या कोई अन्य प्राणी जानता है अपना या अपने वंश का नाम क्या है । कौआ वा अन्य कोई भी पशु पक्षी क्या जानता है अपने बाप दादा का क्या नाम है । वह कौआ, गाय, भैंस, घोडा इत्यादि कहलाता है । उनके जीवन में एक का नहीं अनेक समूह का नाम है । इसलिये स्मृतियों का खजाना नहीं उनके पास है । जीवन के इतिहास में नहीं लिखा रहता उनका नाम है ।

इसके विपरीत मनुष्य के पास उसका अपना स्थान है । मानवता उस समूह का नाम है । फिर भी वहाँ हर एक नग का अपना स्थान है । हर एक व्यक्ति का अपना नाम, देश तथा गाँव है । हर एक के निजी अधिकार है । वह विश्व के किसी भी कोने में हो बता सकता छाती तान अपने बाप दादा देश और जाति का क्या नाम है । क्योंकि उसके पास अपनी वंशावली का सुरक्षित ज्ञान है ।

राम मानव है हर कण में उनका नाम है । राम दशरथ सुत है हर कण में मिले होते हुये भी उनका अक्षय व्यक्तिगत अधिकार है । राम मानवातार है यह हृदय के उद्‌गार अग्र रामायण में व्यक्त किये, यह शीतल सुखदायक लगे तो हृदय तिजौरी में रख लेना सँभाल के यदि निर्रथक लगे तो राम के चरणों में समर्पित कर देना जहाँ कण को भी मिलता सम्मान है। वह ठुकराये या प्यार करे निर्णय निर्णायक का काम है । यहाँ वाद विवाद का न कोई काम है । यह अटूट विश्वास है ।

सीता पी. पोद्दार

गृहस्थाश्रम

नाते रिश्तों का तारतम्य गृहस्थाश्रम कितना सुदृढ, सुन्दर, सुरम्य तथा अमोघ है । यह पैदा होते ही जीव को कितने रूप देता है और कैसे विस्तृत और विश्वव्यापी समय के संग करता जाता है जिसका वर्णन समापन में दिखाया है । निज जीवन के घटित सत्य को बताया है । सबके नाम थोपे नहीं बल्कि जीवन शृखंला का आलोक बताया है । यह एक बाल रूप में जन्म लिये शिशु को मरणपर्यन्त अनेक रूप में दिखाता है । जैसे ब्रह्म एक है, एक होते हुये भी अनेक है । अनेक होते हुये भी फिर एक हो जाता है । शून्य में मिल जाता है । यानि जीव जब प्राण छोड़ता हे तो वह शून्य में मिल जाता है । उसका भौतिक अस्तित्व मिट जाता है लेकिन अपने कुल के इतिहास में उसका नाम लिखा रहता है । इन नाते रिश्तों गृहस्थाश्रम, की महिमा अपार है । मरणोपरान्त भी ये सूत्र जीवन के साथ जुड़े रहते हैं। यह क्या परिधि है ? नहीं, कदापि नहीं, यह जीवन का मूल सत्य गृहस्थाश्रम है । इसी में ब्रह्म का वास है । अन्यत्र नहीं, इसे बंधन मान भागोगे तो भटक जाओगे। आदर्श राम का अनुसरण कर निभाओगे तो ब्रह्म को पाओगे आदर्श राम के गृहस्थाश्रम का आनन्द रूप वर्णन अग्र रामायण है । इसमें डुबकी लगाते जाओ, रत्न सागर है निधियाँ और सिद्धियाँ ही पाओगे । जयश्री राम । भूमिका है अग्र रामायण की तूलिका है गणनायक के हाथ । जय अंजनी पुत्र, शंकर सुवन हनूमान । सत्यं शिवं, सुन्दरम् हे भोलेनाथ । लेखनी को रखना अपने हाथ में सँभाल बारम्बार विनायक महाराज आपको प्रणाम ।

सीता पी. पोद्दार

श्री गणेशाय नमः

अग्र रामायण (प्रारम्भ)

किसी भी कार्य को आरम्भ करते समय उसकी निर्विघ्नता से सम्पन्न होने की ओर प्रथम ध्यान जाता है। निर्विघ्नता के दाता विश्व में प्रथम पूज्य गणपति दादा हैं। उनके श्रीचरणों में नतमस्तक शीश झुकाना, श्रद्धा के सुमन चढ़ाना आवश्यक है, वह सब सिध्दियों के दाता हैं। माता इनकी पार्वती, पिता महादेव, भाई हनुमन्त राम का जिनके हृदय में वास है सत्यम् शिवम् सुन्दरम् भोलेनाथ का नाम है। विघ्न बाधायें टाल देंगे। निर्विघ्न कर देंगे वह काम, सच्चे हृदय से जो उनको करता प्रणाम, निर्विघ्न करा देते हैं सम्पन्न वह सब काम, यह अटल विश्वास. जय गणनायक महाराज बारम्बार आपके श्री चरणों में प्रणाम। यह तूलिका सौंप दी प्रभु, आपके हाथ अग्र रामायण राम का बखान हर कण को दे रहे वह आराम। जय श्रीराम।

सब ग्रंथों में अग्र रामायण, प्राणदायिनी रामायण दशों रस से ओतप्रोत रामायण, सब शास्त्रों का सार रामायण, सब अस्त्रों का ज्ञान रामायण, वैदिक शास्त्रों का ज्ञान रामायण, गृहस्थ जीवन का विश्लेषण रामायण, सुख का सार रामायण, भक्ति का सागर रामायण, ओरछोर रामायण चहुं ओर छाई रामायण। दिग्विजयी रामायण, सब रतन का भरा भंडार रामायण। जो खोजो वह मिल जाये ऐसा रत्न सागर रामायण। आदि रामायण, अन्त रामायण, प्राचीन रामायण नवीन रामायण, जीवन का अग्र पथ प्रदर्शक रामायण, जीवन का आलोक रामायण। इसे अग्र रख जीवन पथ पर चलते जाओ, दुःख को सुख में परिणित कर पाओगे, यदि रामायण अग्र मान पाओगे जीवन में सबसे अग्र रामायण। बोलो जय रघुपति जय रघुनायक। विघ्न विदारक, जय श्री विनायक महाराज।

बालकाण्ड

जीवन का पहला और प्रथम चरण जन्म है, फिर लालन पालन, शिक्षण बाल्यावस्था को पार कर यौवनावस्था में पर्दापण करना। इसका कितना सुचारू, सुन्दर विवरण हमें बालकाण्ड में मिलता है। संसार की गतिविधि को चलते रखने के लिये जन्म मरण आवश्यक है, प्राणीमात्र के जन्म की

आधार शिला नर, नारी के प्रेम जिसे प्रणय वा शृंगार रस कहते हैं उस पर आधारित है, आकर्षण इसका केंद्र है । मर्यादा इसकी परिधि है । काम इसका देव है । लेकिन देव भी यदि अपराध करे तो उसे भी कष्ट सहना पड़ता है, पराकाष्ठा को पार करना कष्ट को आव्हान देना है, जिसका अतिसुन्दर विवरण बालकाण्ड में सती की मृत्यु के पश्चात भगवान शिव की समाधि भंग करने के अपराध में कामदेव को मिला, कामदेव ने यह कार्य देवताओं के लिये परोपकार के लिये किया था स्वार्थ हेतु नहीं । उन्होंने भूल की, लेकिन पर हितार्थ इसलिये शिवने उन्हे भस्म कर दिया लेकिन उनका अन्त नहीं हुआ वह अनन्त हो गये, अदृश्य रूप से सब जीवों में व्याप्त हुये, वह अदृष्टिगोचर होते हुये भी सर्वव्यापी है, ग्रीष्म ऋतु में माँ धरती तो तप्त हो रक्तावरण हो जाती है यौवन में उग्रता और तेजी का आना स्वाभाविक है, उसकी लालिमा, तेज और सौन्दर्य को देख मेघ उसपर मुग्ध हो जाता है अपना प्रेम प्रणय जल बरसाता है । धरती लहलहा उठती है । हरियाली छा जाती है । वनस्पतियाँ खिलती हैं, पवन पराग उड़ा, बीज बोता है नये फूल पत्ते उग आते हैं इससे बड़ा कौनसा जीवन शास्त्र है ।

हर युग्म के हृदय में कुछ समय के बाद संतान की कामना उत्पन्न होना स्वाभाविक है, बाल्यावस्था में बच्चे, खिलौनों से खेलते हैं मनचाहे खिलौनों के लिये माँ बाप से हठ करते हैं । भूमि पर लोट लोट जाते हैं । चाँद खिलौने के लिये मचलते हैं । माँ बाप बुद्धि से उसका समाधान कर उसे संतुष्ट करते हैं । दर्पण हाथ में देकर कहते हैं ले चाँद खिलौना ले, यौवनावस्था में मानव सँभालने योग्य हो जाता है इसलिये परमपिता उसे निर्जीव नहीं सजीव बाल खिलौना देता है, यदि समय पर वह उन्हें खिलौना नहीं देता तो मानव भी परमपिता प्रभु के आगे मचल जाता है । यज्ञ कराता है, पृथ्वी पर लौट जाता है, बारम्बार कार्य सिद्धि हेतु साष्टांग प्रणाम करता है । समयानुकूल साधन जुटाता है । पहले, मंत्रों द्वारा कार्य सिद्धि का जमाना था तब ऋषि मुनि पुत्रकामेष्टि यज्ञ इत्यादि कराते थे लेकिन आज विज्ञान का जमाना है । चिकित्सक लोग यंत्र के द्वारा ऑपरेशन इत्यादि से सफलता दिलाते हैं, पहले हम हवि खाकर पैदा हुये और सीता धरती की उपज है । जिसे टेस्ट ट्यूब का दूसरा रूप कह दीजिये । कहते हैं रावण ने ऋषियों

के खून से भरा घट कुदृष्टि डाले अपने घर में रखा था, शंकर भगवान रावण के इष्ट देव थे, उन्होंने उसे समझाया "रावण तू यह अनाचार कदापि न कर, यह घट तेरा सर्वनाश कर देगा, भयभीत हो उसने वह घट जनकराज की परिधि में रखा दिया, वहाँ अनावृष्टि हो गई । प्रजा हाहाकार करने लगी। ऋषियों से आदेश पा प्रजा के कल्याण हेतु राजाने स्वंय हल चलाया, जय जवान जय किसान का नारा चरितार्थ हो उठा, हल की नोक से घट बाहर आया उसमें सुकुमार सीता को राजा जनक ने पाया, हलकी अग्र नोक जिसे सीता कहते है वह घट को बाहर लाई इसलिये जनकदुलारी सीता कहलाई। वृष्टि हुई, धरती लहलहा उठी । प्रजा के हेतु राजा निसंकोच सब कर दिखाये इससे बड़ी राजनीति कोई नहीं हो सकती है । जहाँ का राजा अपनी प्यारी प्रजा को प्राण समान माने तो क्यों न प्रजा अपना उत्तरदायित्व सँभाले। पहले के ऋषि मुनि हर समय साधनारत रहते थे । नई नई सिद्धियाँ प्राप्त कर राजाओं और प्रजा के उपयोग में लाते थे, तो राजा और प्रजा भी उनको उतनाही सम्मान और सहयोग देती थी । राजा के दरबार और कोष के पट हर समय उनके लिये खुले रहते थे । प्रजा उनका हार्दिक सत्कार करती थी। आज हम उसे आविष्कार करना कह दें तो कोई अतिशयोक्ति न होगी लेकिन आविष्कार की साधना के लिये तन, मन, धन और बुद्धि की एकाग्रता यानि साधना की सर्वोपरी आवश्यकता है, ऋषि मुनि साधनारत रहते थे और राजा तथा प्रजा धन तथा मन से उनकी सेवा करती थी आज भी वही नियम लागू है चंद्रलोक की खोज में जिस देश का विमान उड़ान भरता है उसी का व्यय होता है । जानेवाला जीवन संघर्ष करता है यदि सफल हुआ तो उस देश तथा व्यक्ति का नाम युग युग तक इतिहास में लिखा जाता है ।

खोजो और पाओ

जीवन के हर क्षेत्र में अग्र रामायण छाई है, इच्छित वस्तु, इच्छित संतान की प्राप्ति पर मानव की क्या मनोदशा होती है, इसका अति सुन्दर उदाहरण राम की बाल्यावस्था में दशरथ का दुलार है, रामायण एक ऐसी यात्रा है जिसमें सब रस और नीतियों का सागर भरा है वात्सल्य का अति सुन्दर तथा मार्मिक उदाहरण इस एक ही दोहे में निहित है, धूल धूसरित राम आये, विहँसी राव गोद बैठाये यानि पुत्र मोह में मानव सब कुछ करने

और सहने को तत्पर हो जाता है चाहे विश्व उसकी खिल्ली ही क्यों न उड़ाये । राम को चलना सिखाते समय राजा दशरथ राम की उँगली पकड़ झुक झुक कर चलते हैं । चक्रवर्ती राजा पुत्र के समक्ष झुक रहे हैं यानि गृहस्थ इतना माननीय आश्रम है, मर्कट का खेल देख राम मचल जाते हैं अपने लिये एक मर्कट लाने के लिये, सब मर्कट यानि बंदर दिखाये नहीं पसन्द आये, झट राजा दशरथ ने किष्किन्धा सूचना भेजी कि उन्हें एक अति सुन्दर वानर भेजो, एक चक्रवर्ती सम्राट ने बाल हठ की पूर्ति के लिये अपने मित्र से उपहार की याचना की, वानरराज ने श्रेष्ठ वानर हनुमान को भेजा जिसे पा राम खुश हो खेलने लगे । मन जो तन में कैद है उस कैदी की मानवता में कितनी प्रधानता है । मन के अनुकूल होते ही तन पुलकायमान हो जाता है और प्रतिकूल होते ही मुरझा जाता है । काल जिसकी अटल गति है उसको भी मानव अपने मनोनुकूल तथा प्रतिकूल होने से छोटा बड़ा समझ लेता है । खुशी और मस्ती में दिन छोटा लगता है, गम और आलस्य में बड़ा । इसे दोष कहो या मानव स्वभाव, हेरा फेरी तो होती ही रहती है, राम कुछ दिन खेलकर हनुमान को अपने स्वामी के पास पुनः भेज देते हैं, मानव मानव है यदि वह सच्चा, सर्वगुण सम्पन्न है तो वह भगवान है, मर्यादा में रहनेवाला मर्यादा पुरुषोत्तम राम है ।

सत्ता का लोभ

सत्ता का लोभ यह मानव का स्वभाव प्रदर्शित करने में भी अग्ररामायण खोजो और पाओ, राजा शीलनिधि की कन्या की हस्तरेखा देख नारद जैसे ऋषिराज त्रिलोकी नाथ होने के स्वप्न देखने लगे, कामदेव को जीत लेने के अभिमान में मदमस्त नारद भूल गये कि यह मायाजाल है, जिसका पति त्रिलोकीनाथ होगा, वह अन्य कौन लक्ष्मी होगी, यह न जान पाये उस सुन्दर बाला को पाने के लिये उन्हें भी यौवन और लावण्य की इच्छा हुई । नर नारायण के पास दौडे और हरि के रूप की माँग की, भगवान बोले- नारद ऐसा ही होगा । यहाँ एक अति विचारणीय बात है, हरि शब्द के दो अर्थ हैं, बंदर तथा भगवान, प्रभु ने नारद को वानर रूप दिया, लेकिन अदृश्य, जिसे केवल पारदर्शी नेत्र ही देख सकते थे, जय और विजय लख गये, हरि के द्वारपाल होने के नाते । शीलनिधि की कन्या लख गई, विष्णु की अर्द्धांगिनी

के नाते, बाकी सबको ऋषिराज नारद ही दिखे, भगवान ने सभा में उनका मान भंजन नहीं होने दिया । ऐसे ही आज के माता पिता यदि संतान अनुचित मार्ग पर चली जाये तो माता पिता उनका मान सम्मान रखते हुये, अपनी योग्यता से उन्हें एकांत में समझाये तो गृहस्थ का तारतम्य टूटने से बच जायेगा, विवेक जगेगा व बच्चा स्वयं उचित अनुचित समझ पायेगा, कष्ट तो पिता को भी होगा ही जैसे नारद का श्राप विष्णु को झेलना पडा। बच्चे को कुमार्ग से बचाना किस योग्यता से होना चाहिये इसका सर्वोत्तम उदाहरण नारदमोह अग्र रामायण है ।

सब कुछ होते हुये भी और का कौनसा ठोर और के भंवर में फँसा मानव छोर भूल जाता है, अविवेक की निस्तब्ध रात्रि में वह बीच मझधार ऐसा डूबता है कि कोई बचानेवाला नहीं, इसका अति मार्मिक उदाहरण सत्यकेतु के पुत्र प्रताप भानु का है, जिसका वर्णन अग्ररामायण है । चकवर्ती राजा होते हुये भी उसे ऐसी लालसा थी जो अति थी । उसके मोह में राजा भूल गया अति अंत का उद्‌गम है, उसने कपटी मुनि से मनोकामना प्रगट की, जन्म-मरण, दुःख रहित तनु सागरपर्यन्त एकछत्र, रिपुहीन महि, राज के लिये पुत्र, राजनीति की सर्वोत्तम शिक्षा अग्र रामायण । राजा का हारा हुआ शत्रु उसे पहचान कर अपने जाल में फँसाने लगा उसकी कमजोरी को उसने अस्त्र बना राजा पर फेंका, राजनीति चाणक्य नीति कूटनीति है, किसी चीज व अनाज को कूटना (बारीक टुकडे करना) है, ठोसवस्तु का अवलोकन सहज है लेकिन कण से मन नापना कठिन ।

जरासा जलपान कर अनजान पर पूर्ण विश्वास यह राजनीति के विरुद्ध है क्योंकि किस समय कौन व्यक्ति राजा पर वार कर दे कौन जाने। वह मायावी था जिसने राजा को घोडे समेत राजधानी पहुँचा दिया, तो भी राजाने उसे अपना रसोईया हर कर ले जाने की अनुमति दे दी, भोजन अनजान से बनवाया और ब्राह्मणों के श्राप से कुल समेत नाश को प्राप्त हुआ । वह कपटी मुनि राजा का मित्र नहीं शत्रु था, राजनीति कहती है राजा को सदैव सावधान रहना चाहिये ।

रिपु तेजसी अकेल अति लघुकर गनिअ न ताहू ।
अजहू देत दुःख रविशशिहि, सिर अवशेषित राहू ॥

चारों तरफ देखकर चाल चलना राजा का काम है, अचानक विश्राम करना राजनीति में वर्जित है, इसका दिग्दर्शन यही हुआ है । प्रतिशोध की अग्नि में दग्ध मानव कैसे नाचता है, कैसी बांसुरी बजाता है, कौनसे स्वर आलापता है, इसके वर्णन है इस कथा में । राजा, प्रतापभानु के शत्रु एकतनु ने शत्रुता का बदला लेने के लिये मुनि का वेष धारण किया, जंगल में निवास किया । मायाजाल का प्रयोग किया । विश्राम को दृढ़ कराया, राजा प्रतापभानु का पिता समेत नाम सुनाया, ''सत्यकेतु तव पिता नरेसा'', उसे प्रशंसा की सुरा पिलाई । योग्य राजा वही है जो जहाँ तहाँ अपना नाम नहीं बताता । उसके लक्षण स्वयं बोलते हैं और योगी मुनि स्वयं समझ लेते हैं, यह कौनसी जाति का मानव है । घोडे समेत मंत्र द्वारा राजा को निद्रा में उसके घर पहुँचा दिया तथा विश्वास दिलाया कि मैं तुम्हारा एकछत्र होने का स्वप्न साकार करने खुद रसोईया बन भोजन बनाऊँगा तुम ब्राह्मण भोजन कराना, सब ब्राह्मण तुम्हें आशीर्वाद देंगे ।

लोभ में फंसे राजा को चारों तरफ से जाल में बाँध लिया और अपना काम क्या खूबी से लिया, राजनीति के क्या सुन्दर अस्त्र फेंके, निहत्था शत्रु तेजस्वी सम्राट से कैसे प्रतिशोध ले सकता है । इसकी युक्ति सिखाई राजा एकतनु ने । शस्त्रधारी शत्रुको निशस्त्र प्राणी कैसे जीत पाये । तेजस्वी राजा के घर में, मित्र बन प्रवेश किया और उसी के स्वजनों से उसे ऐसा श्राप दिलाया कि जो जन्म जन्मान्तर तक मारता रहा, जब अकाशवाणी ने झूठ का पर्दा उठाया तो वहा से एकतनु जी गायब थे । ''अब पछताये क्या होत है जब चिडिया चुग गई खेत'' राजा को हर पल कितना सावधान रहना चाहिये, इसका उदाहरण है यह । लेकिन साँच को आँच नहीं, प्रतापभानुका नाश किया लेकिन पुण्य नष्ट न हो सका, दूसरे जन्म में वह रावण बना जिसे मारने कुल समेत नाश करने असाधारण शक्ति को अवतरित होना पडा, रावण के नाश के संग पृथ्वी का उद्धार भी हुआ । राम जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम ने जन्म लिया । यह प्रतापभानु के पुण्य का सुकृत था कि उसे कोई ओर न मार सका स्वयंम् त्रिलोकीनाथ आये । अंत तपा सो तपा । यह एक रावण का वर्णन, अच्छे बुरे का द्वन्द युद्ध जो मानव जीवन में हर पल हर क्षण चलता है । सुकार्य की विजय सुखदायी और दुष्कार्य की

दुःखदायी । सुमन खिले चारों ओर सुवासित करे । सिंह दहाडे, कइयों को पछाडे । भय से कम्पायमान करे ।

सत्यं शिवम् सुन्दरम्

सत्यं शिवम् सुन्दरम् को चरितार्थ करने में भी अग्र रामायण । सत्यं शिवं सुन्दरम् की भावना मानव में देवप्रवृत्ति है, देव प्रवृत्ति यानि कल्याणकारी भावना । इसमें से सत्य को निकाल केवल शिवं और सुन्दरम् की उपासना आसुरी, प्रवृत्ति यानि अनिष्टकारी भावनायें । शिव भगवान तो स्वयं सत्यं शिवं सुन्दरम् है यदि किसी का सिर काट लो आप तो क्या वह जीवित है। वह तो स्वयं निर्जीव हो जाता है । शिवकी अर्द्धांगिनी शक्ति अपने पति की उपेक्षा होती देख क्या तुम्हारी बनेगी नहीं कदापि नहीं, वह अवसर देख तुम्हारा साथ छोड देगी और सत्य से मिलकर अन्य रूप में प्रगट हो तुम्हारी विनाशकारी बन जायेगी । देव वृत्तियों को कैद कर आसुरीवृत्तियों का तुम उपभोग करो तो वह स्थायी कदापि नहीं अस्थायी है, क्योंकि सत्य मूल है, शाश्वत है निर्विकार है तथा साकार भी है, तुम पाषाण की मूर्ति की पूजा करो सच्चे हृदय से तो वह और कुछ नहीं तुम्हारे हृदय का बोझ हलका कर देगी, तुम्हारा उपहास न कर तुम्हारी भावनाएं सुन लेगी, गोपनीय रखेगी। इसके विपरित यदि तुम उस पाषाण को तोडोगे तो वह आवाज करेगा, चारों ओर शोर मचेगा । लोग बुरा भला कहेंगे । विश्व में जब आसुरी वृत्तियों का पलड़ा भर जाता है, तब हाहाकार मचता है दैवी शक्तियों एकत्रित होती हैं और वह आसुरीशक्तियों का हनन करती है । एकता ही विजय का दूसरा नाम है । फूट पराजय का अह्वाहन है। आसुरी शक्तियों में फूट पडती है । मानव मदान्ध हो जाता है वह प्रकृति के सब नियमों की अवहेलना करता है । अपने को अजर अमर समझ बैठता है । बहुत बडा बहुत भयंकर इतना शक्तिशाली कि जिस मनुष्य की दो भुजायें हैं वह बीस भुजाओं वाला हो जाता है यानि हर प्राणी से दस गुणा बलशाली । एक सिर वाला मानव दसानन बन बैठता है यानि वह एक मुख से नहीं तृप्त है वह दस मुखों से भिन्न भिन्न रस चूसता है अपने इतने पराक्रम शाली देह की रक्षा के लिये उसे उतनी ही उदरपूर्ति चाहिये । वह भक्ष्याभक्ष्य खाकर अपने को शक्तिशाली समझता है। वही नर है उसने अपना रूप विकराल

समझ लिया । मदान्ध मानव ने भी उसकी सत्ता मान ली लेकिन पारदर्शी नर उसे देख मुस्कराया सूक्ष्म रूप में आया । चार हाथ होते हुये भी दो धारण किये । मन्द मुस्काया, उसे समझाया, नहीं माना तो विवेक द्वारा उसे काट गिराया ।

देवासुर संग्राम क्या है ? यही दैनिक जीवन की आसुरी तथा दैविक भावनाओं का संघर्ष जिसमें सत्य की जीत, और झूठ की पराजय होना अवश्यंभावी है ।

समय का हेरफेर हो सकता है, आसुरी शक्तियों की कितनी प्रबलता है और उन्हें टूटने में कितना समय लग जाय लेकिन सत्य तो सत्य है, झूठ झूठ है चाहे उसपर कितनी भी सत्य की पर्त चढ़ा दो । ऋषि बाल्मीकि एक क्षण में लूटेरे से महान ऋषि बन गये । आसुरी शक्तियों का दमन करते ही देव शक्तियाँ जागृत हो उठी जो इतनी कल्याणकारी है कि उनका काव्य तथा नाम विश्व में अटल रहेगा, उन्होंने रामायण लिखी, राम का वर्णन किया, राम यानि आराम, विश्व शान्ति का नाम, युद्ध सदैव विध्वंसकारक है और प्रेम प्राणदायक, एक हनन करता है, दूसरा सृजन कर्ता । रामायण आदि अन्त तक मानव जीवन के नीति शास्त्र में अग्र है, अग्र रहेगी । बोलो जय सिया राम । बोलो जय अग्र रामायण ।

जैसा बोलो तैसा पाओ

जैसा बोलो वैसा पाओ । यह प्रकृत्ति का अटल नियम है । यह सच है बोआ पेड़ बबूल का आम कहाँ से खाये । इस अटल सत्य की परिभाषा भी अग्र रामायण है । मनु सतरूपा ने कठोर तपस्या की, भगवान से वर माँगा राजा मनु ने इच्छा प्रकट की, "चाहिये तुम्हीं समान सुत प्रभु सन कवन दुराव" रानी से जब पूछा गया तो वह बोली, "भगवान जो पतिदेव ने माँगा वही मेरी इच्छा है, ठीक है, भगवान बोले एवमस्तु ऐसा ही होगा लेकिन धीरज धरो, आप सरिस खोजूं कहाँ जाई, नृप तव तनय होब मैं, आई, भगवान ने अभिमान से नहीं कहा कि मेरे जैसा और नहीं है बल्कि उन्होंने एक शाश्वत बात कही, संसार में इतना प्राणीमात्र है एकसे दूसरा भिन्न है तभी तो उसकी अलग व्याख्या पहचान रहती है । अंग और आकार तो सबके एक है फिर भी भिन्नता रहती है । प्रभु सर्वव्यापी होते हुये भी

ओझल, एक में अनेक रूप धारण किये, सगुण होते हुये भी निर्गुण, उनकी लीला अपरम्पार है, जितना शोधने जाओ, उतनी नवीनता पाओ। राम सागर में जितनी बार डुबकी लगाओ उतनी बार मोती पाओ। अनंत भंडार को कौन समेट पायेगा।

तप के बल पर भगवान को दूसरे जन्म में राजा दशरथ और रानी कौशल्या के घर में शिशु रूप से जन्म लेना पडा। वह दशरथ नन्दन कौशल्या सुत कहलाये। अच्छे कर्म, सत्कर्म का पुण्य जन्म जन्मान्तर तक क्षीण नहीं होता, दुष्कर्म का फल भी जन्म जन्म तक पीछा नहीं छोडता। इसका उदाहरण राम और रावण की उत्पत्ति सिद्ध करने में भी अग्र रामायण है। मनु और सतरूपा ने राम जैसा पुत्र पाया। योग्य संतान सात पीढी को यश देनेवाली है। राम, रघुकुल के हैं, वह सूर्यवंशी हैं। यानि कुल और वंश दोनों को चार चाँद लग गये। उधर भूल से हुये भी दुष्कर्म के कारण राजा प्रतापभानु रावण बन जन्मे। पुलस्त्य कुल को धब्बा लगा तथा कुल समेत रावण का नाश हुआ लेकिन राजा प्रतापभानु बहुत तेजस्वी तथा धर्मात्मा था। इसलिये उसके सत्कर्मों को जीतने की शक्ति केवल त्रिलोकीनाथ में थी। इसीलिये उन्हें उसका संहार करने और पृथ्वी का भार उतारने स्वयं आना पडा। रावण कोई साधारण व्यक्ति नहीं था, वह भी असाधारण था, शिवभक्त था, शक्ति उपासक था सुर और सुरा दोनों का पान करनेवाला था। लक्ष्मीपाने का इच्छुक था लेकिन मदहोश था, विष्णुद्रोही हो लक्ष्मी पाने का इच्छुक था। माँ लक्ष्मी को वह माँ के रूप में न देख भार्यारूप में देखता था। यही सबसे बडी भूल उसके विनाश का कारण बनी। पराई स्त्री को यदि तुम माँ रूप में देखते हो तो कोई बुरा नहीं मानता। वह स्वयं भी मां शब्द सुन तुम्हें पुत्र मान आशीष देगी। एक मां जग माँ कहलाने में भी निसंकोच है। लेकिन एक पत्नी चाहे गुप्तरूप से किसी अन्य व्यक्ति से भी पति रूप व्यवहार रखे लेकिन समक्ष में तो किसी अन्य को पति कहलाना स्वीकार नहीं करेगी, इसे अपना अपमान समझेगी, समाज के आगे झिझकेगी। पुरुष भी यदि बलात्कार से किसी अन्य नारी को पत्नी बना लेगा तो उसके भी अनेकानेक दुष्परिणाम होंगे। जैसे आजकल "एडस्" की भयानक बीमारी चल पडी

है जो मनुष्य का प्राणहनन करती है । सदाचारी एक पत्नी व्रत के लिये उससे कोई भय नहीं । वह सौलह आँगुल की सोड़ में सो सकता है ।

एक पत्नीव्रत की महानता में भी आदर्श राम का नाम अंकित है। जिसका वर्णन करने में सबसे अग्र रामायण । जय सिया राम, जय सियाराम। उत्तम तथा अधम सन्तति की प्राप्ति की व्याख्या देने में भी अग्र है रामायण। जन्म के बाद जीव के लालन पालन का प्रश्न है । माँ बाप सन्तान में कैसे संस्कार देते हैं। वह बहुत विचारणीय प्रसंग है । बालक माँ का स्तनपान कर उसके रस से सिंचित हो बढता है तभी तो एक क्षत्राणी अपने सुत को दावे से कहती है कि मेरे दूध की लाज रखना लेकिन इसके विपरीत जब माता अपने शिशु को स्तनपान कराना हेय समझती है तो उसका पहला सुत पर अधिकार तो स्वयं छिन गया । माता जब अपने बच्चे को प्रेम से लोरी गाकर नहीं सुलाती केवल सेवकों के भरोसे छोड देती है तो वह माता होते हुये भी मातृत्व के अधिकार से वंचित हो जाती है । बालक्रीडा का सुख किसी अन्य नारी को प्राप्त है जो उसका पालन कर रही है । चाहे वह दासी ही क्यों न हो । माँ कौशल्या विष्णु की भक्ति करती थी । राजा दशरथ की पटरानी थी तो भी भगवान को भोग लगाती हुई भी राम का ध्यान रखती थी । तभी तो राम ने एक तरफ उनके हाथ से भोग खाया, दूसरी ओर सोये शिशु रूप की माया दिखाई, कहने का तात्पर्य यह है बालक ईश्वर का रूप है । जननी का कर्तव्य उसे शिक्षा और प्रेम से पालने का है। यदि कोई भी माँ इस नियम को पालन करेगी तो बालक की रगरग में माँ का प्यार भर जायेगा । वह कभी नालायक नहीं होगा एकदम राम नहीं होगा तो भी आरामगाह अवश्य होगा । ममता का मूल्य आँक सकेगा जैसे कौशल्या ने अधिकारपूर्ण कहा था 'जो केवल पितु आज्ञा ताता तो धर रहो जान बड माता ।' यानि संतति पर मातां का अधिकार पिता से अधिक है। क्योंकि वह उसकी जननी है, पोषणकर्ती है । गृहस्थ रूपी राज्य में विविध प्राणियों के अधिकारों का विवेचन करने में भी अग्र रामायण है । अब बालकाण्ड में शिक्षा और यौवन का विवेचन होगा ।

जन्मजात अधिकार पा, माता पिता के लालन पालन में पल बालक बड़ा होता है, तो वह प्रथम मातासे गुरुरूप शिक्षा संस्कार पाता है । कुल

के संस्कार माता पिता से विरासत में ग्रहणकर वह अब आगे कदम बढाता है । विद्या अध्ययन करने गुरुकुल को जाता है । मानव अब संकुचित परिवार का सदस्य यानि कूप का मंडूक न रह विस्तृत परिवार की सदस्यता ग्रहण करता है । विस्तृत ज्ञान प्राप्ति करता है । विभिन्न संस्कारों के बच्चों मिलता है । भेदभाव को भूल सामान्य मूल जीवन में आता है । समानता की महत्ता समझता है । हर परिस्थिति से समझौता करता है । भेदभाव की गहरी खाई पार करता है । सबसे हिलमिल कर रहता है । विभिन्न शिक्षायें ग्रहण करता है । गुरू (अध्यापक) सबको एक साथ बिठा पाठ पढाता है । अध्यात्मिक शिक्षा, वीरोचित शिक्षा, तत्त्वज्ञान, विज्ञान, वेदान्त आदि शिक्षा के सब क्षेत्रों में उसे घुमाता है । जाति वंश के मुताबिक नहीं, एक मानवता के अंग के नाते । राजा का बच्चा हो अथवा रंक का । ब्राह्मण का हो या क्षत्रिय का, सबको हिलना मिलना, पढना लिखना तथा विद्या अध्ययन कराता है । उसे जीवन के सब रूप का दिग्दर्शन कराया जाता है, जिससे समय आने पर वह घबराये नहीं सब परिस्थितियों से खेल सके, सब समस्याओं का हल कर सके । अब वह बाल विशेष की निजी बुद्धि है कि वह कितना ग्रहण करता है । कोई सबभांति पारंगत हो जाता है, कोई किसी विषय में अधिक रुचि रख उसे ही आगे शोधता है । जिसे आजकल "स्पेशीलाइज" करना कहते हैं तथा कर्ता को विशेषज्ञ की उपाधि से विभूषित किया जाता है । माता पिता विद्या ग्रहण करने बच्चे को शाला में भेजते हैं । वह विद्यारूपी कितनी अनमोल मालायें धारण कर लौटता है । यह तो बालक के जन्म जन्मान्तर के कर्मों पर निर्भर करता है । जैसा कहा जाता है कि यह तो जन्म से गायक उत्पन्न हुआ, यह कवि, यह राजनीतिज्ञ, यह वैज्ञानिक उत्पन्न हुआ । इसे प्रकृति की यह देन है । लेकिन राम त्रिलोकीनाथ थे, सर्वांगीण सर्वत्र विराजमान थे, सबका भला, परोपकार करने आये थे । इसलिये सब सिद्धियां और ज्ञान उनमें एकत्रित हो गये ।

विद्या ग्रहण करते, करते मानव युवक का रूप लेता है, अब उसे केवल सीखना ही नहीं लिखना भी है । राग अलापना है, स्वर बजाना है, अब वह केवल दूसरों के साथ बैठ नदी की सैर करने की अवस्था उलांघ गया । अब वह नाव चलाना सीख गया अब उसे गृहस्थ रूपी नैया के चप्पू

पकडकर चालक बनना है । अब वह सुरक्षा पा चुका, अब उसे स्वयं संरक्षक बनना है । अब उसे लेना ही नहीं देना भी है । मातृ पितृ ऋण गुरु ऋण, परिवार ऋण, सखाऋण, समाजऋण इत्यादि सबसे मुक्त होना है । फूल खिल गया अब उसे पराग लुटानी है । संसार बनाना है । सबसे सुन्दर ओजस्वी सतरंगी यौवनावस्था के रंग एकत्रित कर इन्द्रधनुष बन जीवन आकाश पर शोभायमान होना है, ताकि आकर्षण का कार्य हो, कोई उसके जीवन में खिंचे, वह कुछ कहे, कुछ सुने, अपने अपूर्ण जीवन को पूर्ण कर जीवन साथी पाये, जन्म जन्म का साथ निभाने तथा निर्माण कार्य में हाथ बंटाने ।

गुरू वशिष्ठ राम को अयोध्या लाते हैं । यह गुरुजी का स्वयं आना था । राम जन्म के बाद नामकरण के समय अयोध्या नरेश ने उन्हें राजगुरु के रूप में निमंत्रित किया था । बालकों की कुंडली बनाने तथा नाम धरने के लिये । नामकरण संस्कार जीवन का एक बहुत बडा कार्य है जो योग्य पुरुष द्वारा ही होना चाहिये । नाम देना जीव को पहचान देना है । विश्व के किसी भी कोने में चले जाओ, पत्र आपके नाम से आपके पते पर पहुँच जायेंगे । विश्व में आपकी पहचान आपका नाम है । वह सुन्दर रहस्यमय तथा साकार हो तो सोने में सुंगध का काम है । जैसे गुरु वशिष्ठ ने ग्रहों के बलाबल को देखते हुये गुणों के अनुरूप राजा दशरथ के चारों पुत्रों का नाम रखा, पृथ्वी को आराम देने वाले राम, सब लक्षणों के धाम लक्ष्मण, विश्व का भरण पोषण करनेवाले भरत, शत्रुओं का नाश करनेवाले शत्रुघ्न। दूसरी बार पुत्रों को गुरुकुल ले जाने राजा ने बुलाया था । अब वह अपना कर्तव्य निभाने राजा की थाती उनके पुत्रों को सब विद्याओं में पारंगत कर उन्हें सकुशल सौंपने आये थे ।

सुयोग्य पुत्रों को अब जीवन संगिनी की आवश्यकता है, यह जान इस विद्या में निपुण मां कैकयी, उन्हें संमोहन शक्ति का मंत्र शृंगार- वस्त्राभूषण स्नान, सुगंधि द्रव्य इत्यादि का लेपन करती है । जिससे दूसरे राज्यों की कन्याएंगुग्ध हो । उन्हें पाने की इच्छुक बने, कारण कि स्वयंवर तभी हो सकता था, जब कन्या स्वयं वर पसन्द करे । वास्तविकता में भी यह युक्तिसंगत है कारण कि नारी को अपना समर्पण देना है । उसे एक नैया

से दूसरी नैया पर बैठना है । उस नैया के लोग कैसे होंगे वह किस प्रकार संतुलन करेगी यह सोचना है । पुरुष को तो केवल यही देखना है कि उसकी नैया नवांगुतक का भार सह सकती है या नहीं । इसलिये हिन्दू विवाह रस्म में सप्तपदी में कन्या पुरुष से वचन लेती है लेकिन श्रमजीवी पुरुष यानि भार उठानेवाला एक ही वचन लेता है कि मेरे से एकाकार बनकर मेरा नाम अंग धारण करना है । इसमें सब कुछ समाविष्ट हो जाता है । नारी के सब वचनपूर्ण हैं । यानि मैं अपना अंग समझ तुम्हें संभालूंगी तुम मेरे से अभिन्न हो । क्या सुन्दर हिन्दू शास्त्र है, प्रेम का कितना उच्च आदर्श । प्रणय की क्या आन, नारी का क्या मान, पुरुष की क्या शान । क्या इसमें सब कुछ समाविष्ट नहीं है । यदि आज भी नर नारी इस जीवन के गूढ तत्व को समझ जायें तो गृहक्लेश के अधिकांश झगडे मिट जायें । गृहस्थरूपी राज्य में राम राज्य हो जिसकी सब वांच्छा तो करते हैं लेकिन वंचित हैं । इसका सर्वोत्तम उदाहरण तथा शिक्षा देने में भी अग्र रामायण हैं । रामायण केवल रूढिवाद का ढकोलसा नहीं मानव जीवन की दैनिक सुरम्य यात्रा का मार्ग है जहां स्थान स्थान पर आरामगाह है । यह प्राचीन भी है । नवीन भी है । आज भी है । कल भी थी और कल भी रहेगी । जब तक मानव सृष्टि है तब तक यह नवीन रहेगी । प्रकाश का भंडार सूर्य क्या कभी पुरातन है, वह तो शाश्वत है । नवीन है । अखंड है । सदा ज्योर्तिमय हैं । जय श्री रामायण ।

गरिमा का मापदंड

राम पढ लिखकर गुरू वशिष्ठ के संग घर आये, उनकी कीर्ति पताका चारों ओर फहरा रही थी कि राजर्षि विश्वमित्र अपने आश्रम की रक्षा हेतु राजा दशरथ से उनके पुत्र राम को मांगने आये बोले, है राजन् ! असुर समूह सतावही मोही मैं याचन आयऊ नृप तोही । बोले राजा दशरथ - आज्ञा कीजिये मुनिराज - हे राजन ! यज्ञ की रक्षा के लिये राम को मेरे संग भेजो । राम सुनते ही राजा मोहजाल में फँस चुप रह गये । बोले - मुनिराज ! देहप्राण ते प्रिय कछु नाहि । सो मैं देऊं निमिष एक मांहि । सब सुत मोही प्राण की नाई । राम देत नहीं बने गुसाई'' तेवर विश्वमित्र के बदलने ही वाले थे कि राजगुरु वशिष्ठजी ने स्थिति को संभाल लिया ।

उन्होंने अपनी राजभक्ति का कर्तव्यपालन किया, नहीं तो अनर्थ हो जाता, जिसको अपनी चतुराई से उन्होंने सार्थ का दिया। बोले- राजन् ! विश्वामित्र के संग राम को भेजो, यह विश्व कल्याणकारी होगा। विश्वामित्र राजर्षि हैं, राजा से ऋषि राज बने हैं, उन्हें राजनीति, अस्त्र नीति का जो गोपनीय ज्ञान है वह विश्व में किसी को भी नहीं। वह अद्वितीय है, राम उनकी संरक्षकता में रहकर विश्वविजयी शक्ति पायेंगे। यह सुवर्ण अवसर है। चूकना मत। राजा करबद्ध बोले- मुनिराज ! यह मेरा पुत्र राम अब आपका पुत्र है, काया के संग रहने वाली छाया भी उसके संग ही रहेगी यह सृष्टि का अचूक नियम है। हर समय राम के संग रहनेवाले लक्ष्मण भी उनके साथ चलने का आग्रह करने लगे। मुनिराज ने दोनो भाइयों की जोडी अपने संग ली। चतुर गुरु शिष्य को एकक्षण में परख लेता है। मार्ग में विश्वामित्र बोले- हे राम ! कुटिया के दो मार्ग है। एक निर्विघ्न लेकिन देर से पहुँचने वाला। दूसरा शीघ्र ले जाने वाला पर कंटकमय, बोले कौनसी राह चलें। राम बोले- मुनिराज ! शीघ्र ले जानेवाले कंटकमय मार्ग से, ताकि कटंक दूर कर उसे सरल बनाया जाये, जन कल्याण के लिये।

गरिमा का सबसे बड़ा मापदंड। प्राण जाय पर वचन न जाये। राम परीक्षा में उत्तीर्ण हुये। उद्देश्य प्राप्ति के लिये प्राण उत्सर्ग करने को तैयार राम कीर्ति स्तम्भ है। असुर निकंदन होंगे, राज ऋषि भाँप गये। सिद्धियों का आशीर्वाद दे मुनि कंटकमय मार्ग में घुसे। ताडका ताड के समान अकड लिये हुये भागी लेकिन धैर्य और शौर्य ने धराशायी कर दिया। गुरू राम पर अति प्रसन्न हुये और उन्होंने गंगा किनारे खडे हो, लक्ष्मण की अनुपस्थिति में राम को युद्ध के सब गोपनीय अस्त्र और विधियों का ज्ञान कराया। गुप्तरूपसे बीज को बोया जाता है धरती में, समय पाकर वह विशाल वृक्ष बनता है। लेकिन योंही बेकार फेंक देने से कोई बीज काम नहीं आता। दान सुपात्र को देना लाभकारी है जैसे रामको विश्वामित्र ने युद्धका पूर्ण ज्ञान दिया। अग्निबाण, मेघबाण, संमोहन बाण, अणुविस्फोटक बताया, लेकिन सुपात्र होने के नाते वह ज्ञान राम ने विश्व कल्याण के लिये प्रयोग किया। यही यदि दानवों को देते तो वह विध्वंसकारक होता। कुपात्र और सुपात्र को दान का भेद बताने में भी अग्र रामायण है।

प्राचीनता में नवीनता

प्राचीनता में नवीनता का अवलोकन कराने में भी समर्थ अग्र रामायण। जीवन का ऐसा कौनसा क्षेत्र है जिस पर रामायण ने प्रकाश नहीं डाला। विद्याओं का कौनसा ऐसा भंडार है जिसकी तूलिका रामायण नहीं है। मानव जीवन की सर्वस्व अनुभूतियों को स्पंदन करने में अग्र रामायण। वीणा के समस्त सुरों को झंकारने में अग्र रामायण। कहाँ तक वर्णन करें इसकी महिमा जितना खोदते जाओ, उतना खजाना पाओ, मेरा निजी अनुभव है। मैंने १९५० से इसमें विशेष रुचि लेनी आरम्भ की और मुझे आज तक भी जितनी बार पढती हूँ उतनी बार कुछ नया मिलता है नया आनंद आता है। इसीलिये रस का लोभी मन भ्रमर बारंबार इस पर मंडराता है और पागल कहलाता है। कई प्रश्न करते हैं कि बार बार पढकर क्या मिलता है वही श्रद्धा के सुमन पाठ किया रामचंद्र के चरणकमलों में चढाने और लोगों को अंध विश्वास की ओर अग्रसर करना, यानि रूढिवाद के अंधकूप में ढकेलना है। पर यह तो अपना निजी दृष्टिकोण है। प्रकाश की किरणें तो उज्जवल है लेकिन जैसे घट में से तुम देखोगे वैसे ही दिखेगी। यह अपने दृष्टिकोण पर निर्भर है। मैं पूछती हूँ, रामायण में क्या नहीं मिलता। जहाँ न पहुँचे रवि, वहां पहुंचे कवि। आज से हजारों वर्ष पहले के कवि अथवा ऋषिमुनियों ने कितना सुंदर साहित्य दिया है। हमारा भारत हर क्षेत्र में कितना अग्रगण्य था। यह समझने की चेष्ठा करो तो नतमस्तक कुए में न ढकेले जाओगे बल्कि सीना तान आगे बढ पाओगे। यदि ऐसा न होता तो आज विश्व के कोने कोने में रामानन्द सागर की चरित्र चित्रण ही हुई रामायण को बच्चे, बूढे, युवा तथा युवतियां इतने प्रेम से न देखती। रसहीन ऊष को चूसने के लिये कौन लालायित है - लेकिन रसभरा ऊष तो सभी को वांछित है।

अब बाल्यावस्था विद्या अध्ययन के पश्चात युवावस्था का आगमन है। मानव रूपी नट को जीवन के प्रांगण में इस लीला को खेलना है। राम भली भाँति यज्ञ की रक्षा करते हैं। राक्षसों को सतयोजन दूर भगा देते हैं। किसी को मारना युक्तिसंगत नहीं, इसलिये खल को भी अपनी प्रभुता का अनुभव करा भगा देना ताकि फिर साहस न कर सके, सबसे उत्तम है।

हत्या से भी बचे, शत्रु के हृदय में आतंक की छाप हो गई। एक स्तुति करनेवाला गायक बिना खर्च किये मिल गया, क्या बढिया सौदा है। श्री विश्वामित्र का यज्ञ निर्विघ्न होने लगा, उधर जनक की कन्या सीता का स्वयंवर। त्रिकालदर्शी मुनिराज वर को कन्या के समक्ष ले जाने को उद्यत हुये राम लक्ष्मण को साथ ले विश्वामित्र जनक पुरी की ओर अग्रसर हुये। राजा की सीमा पर पहुँच विश्वामित्र शिला बनी शापग्रस्त गौतम भार्या को पाषाण योनि से राम को आदेश दे मुक्त कराते हैं यहां भी बुद्धिमत्ता से विश्वामित्र एक पंथ दो काजकी नीति को कार्य रूप में लेते है। सुयोग्य वर के निर्वाचन में चमत्कार दिखा रामचंद्र बहुमत जीत जाते हैं। जनक दुलारी भी असाधारण थी। शिव धनुष को एक हाथ में उठा दूसरे हाथ से उसके नीचे सफाई कर लेती थी। ऐसी कन्या के लिए राजा जनक को ऐसा वर चाहिये जो धनुष भंग कर दे। यह स्वयंवर होते हुये भी पिता की कसौटी पर उतरने वाले वर को पाणिग्रहण का अधिकार देता था। यह भी एक अद्‌भुत जीत थी। नाम स्वयंवर और शर्त पिता की। यहां भी दो काज थे, जो एक साथ पूर्ण करने थे।

राज सभा में प्रवेश करने से पहले ही जनक वाटिका में सीता राम का प्रथम मिलन होता है। प्रेम के प्रथम मिलन का इससे विलक्षण कौनसा वर्णन होगा। राम सीता को, सीता राम को लख मंत्रमुग्ध, नयनों ने नयनों से सब बात कह ली सब सुन ली, अपलक नेत्र सब काम कर गये लेकिन वाणी मूक वंदना में लग गई। इसके वर्णन में भी अग्र रामायण है। गिरा अलिन मुखपंकज रोकी, प्रगट न लाज निशा अवलोकी। हार्दिक वरणं राम ने सीता का ओर सीता ने राम का कर लिया, अब सरकार की मुहर लगवाई। सीता ने माँ भवानी से तथा राम ने अपने अंतर देव, कुलदेव से। राम बोले- सीता को देख मेरा मन चंचल हो गया। रघुवंशी पराई नारी को लख विचलित नहीं होता। अब बोलो हे इष्टदेव ! क्या कारण है। राम के शुभ अंग फरकने लगे। यानि बडे सरकार की मोहर लग गई, उधर गौरी से प्रार्थना कर सीता ने वर पा लिया। जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलहू न कुछ संदेहू। आज कोर्ट विवाह में तो अदालत में जाना पडता है। लेकिन यहाँ खडे खडे ही दोनों ने अपना नाम पति पत्नी के रूप में

लिख दिया । निधडक सोओ, न्यायकर्ता इष्टदेव ने कह दिया । यह जोडी अटूट है । विवाह निर्विघ्न संपन्न होगा अब केवल लौकिक व्यवहार है । रजिस्टर में शादी लिखी गई, इससे बडा आधुनिक कोर्ट मॅरेज का कौनसा प्रसंग है । इस विषय को दर्शाने में भी अग्र रामायण है । जनमत सदैव विजयी है, होगा और होता रहेगा । इसका भी यह ज्वलंत उदाहरण । जनक राज्य की जनता राम को सीता का वर चुन चुकी थी । हर आत्मा की पुकार थी तो हर शिवजी भगवान ने उसे स्वीकृत किया और जिस धनुष को बडे बडे योद्धा उठाने में भी असमर्थ थे राम के छूते ही शिवजी भगवान ने अपनी माया समेट ली और धनुष भंग हो गया । किसी को कुछ दिखा नहीं । क्षणभर में सब कार्य हो गया । कैसे उठा कैसे भंजन हुआ केवल धनुष भंग की ध्वनि सुनाई दी । बहुमत की विजय सच्चे प्रेम की जीत का निनाद सुना और किसी ने कुछ होते करते नहीं देखा, नहीं सुना । भगवान ने सुन ली । सब प्रसन्न । प्रसन्नता का मूल आधार भी अग्र रामायण है ।

मानव और प्रकृति

मानव और प्रकृति परस्पर अभिन्न है । इसका चरित्रीकरण करने में भी अग्र रामायण है । पूर्ण चंद को लख लहरें उछलती है, मेघ को देख मयूर नाच उठता है । इसी प्रकार सुसंवाद पा मानव मन भी उछल पडता है । खुशी के कारण उसका मन मयूर नाच उठता है । फिर लहर की गति जैसे शान्त हो सागर में विलीन हो जाती है, वैसे मानव भी एक बार नाच, शिथिल पड जाता है । फिर वास्तविकता में प्रवेश कर विवेक में लौटता है। जैसे राजा दशरथ जनक पुरी के दूत का समाचार पा एक बार तो कुछ न बोल सके न कह सके, खाटी मिठ्ठी । फिर विवेक जागृत हुआ तब कुशलक्षेम के सब समाचार पूछे । रामका परिचय उन्हें कैसा मिला उसका विवरण पूछ, घर में सबको शुभ समाचार सुनाया, दूत बोले महाराज, आपके कुलदीप का क्या वर्णन कहें, उसका तो प्रकाश कोने कोने में फैल रहा है । वह माँ पृथ्वी की धुरा पर चढ़ सब विश्व को आलोकित कर रहा है । अहिल्या का उद्धार कर दिया । परशुराम के क्रोध को शांत करने में नम्रता का चमत्कार दिखाया । बोले मुनिराज । 'हमहि तुम्हहि सरिबरि कस नाथा।कहहु न कहाँ चरण कहँ माथा ।' यानि हमारी तुम्हारी क्या बराबरी है । आप ब्राह्मण हैं,

हम क्षत्रिय हैं, हम में तो केवल एक गुण युद्ध कौशल है लेकिन आपमें तो 'नवगुण परमपुनीत तुम्हारे' वेश के भ्रम में पडकर बालक लक्ष्मण ने आपसे वादविवाद किया। बालक होने के नाते उसने सूक्ष्म दृष्टि से काम नहीं लिया क्योंकि 'वेश' मानव की पहचान है जैसे सब जाति और देश के भिन्नभिन्न वेश हैं, एक दूसरे का वेश धारण करने से भारतीय भी विदेशी बन जाता है, राम बोले "जौं तुम्ह औतेहु मुनि की नाईं पदरज शिशु सिर धरत गोसाईं" यहां एक ही बात में दो नीति वर्णन की। पहली नम्रता की क्रोध पर विजय दूसरी अपना वेश अपना परिधान, अपना देश अपना कुल, मानव की आन-शान सम्मान और पहचान है। कौआ चलै हंस की चाल तो कौवे को हँसों ने भी अपने झुंड से नकली बताकर निकाल दिया और कौओंने अभिमानी कह अवहेलना की यानि जहां तुम हो वहीं से सब कुछ जीत सकते हो। यदि तुम्हारे में शक्ति है तो हर क्षेत्र में व्याप्त धरा है, तुम्हारे पुत्र ने धरा पर अपना नाम धर दिया है। संतति तो सबके प्रायः होती ही है लेकिन वह माँ बाप धन्य हैं जिनके ऐसे तनुज और तनुजा हो जो पृथ्वी के लाल और लालिमा कहलाये, जिनके कीर्तिध्वज विश्व के कोने कोने में लहराये। उन्हें कौन नहीं जानेगा जो सर्वव्यापी हैं। धन्य हैं आप जिनके राम जैसे पुत्र है और धन्य है जनक जिनके सीता जैसी पुत्री है।

विवाहित संबंध कैसा होना चाहिये इसका समाधान भी अग्र रामायण है। वर कन्या के अनुरूप है और कन्या वर के। विधाता ने इतना सुन्दर युग्म बनाया है आप बारात लेकर आइये और अपने नेत्रों से देखिये अवर्णनीय को वर्णन करने में भाव विह्वल हो जाता हूँ लेकिन उसे शब्दबद्ध करने में असमर्थ। राजन अपनी कुल मर्यादा के अनुसार वशिष्ठजी को वह निमन्त्रण पत्रिका सौंप उनके आदेश की प्रतीक्षा करते हैं। मन राम से मिलने को लालायित एक क्षण भी नहीं खोना चाहता। लेकिन प्रकृति का नियम, सीमा का उल्लघंन करना अनुचित है। इसलिये राजा दशरथ कल्याण हेतु अपने को मर्यादा की सीमा में रख कुल गुरू की आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

राजा के शिष्ट व्यवहार को देख गुरू प्रसन्न हो बारात की तैयारी की सबको आज्ञा दे देते हैं तथा शुभ मुहुर्त शोध प्रस्थान करते हैं। राह में

स्थान स्थान पर शुभ सूचक सगुन होते हैं प्रकृति यह अवसर कैसे चूके। अपनी सच्चाई को प्रगट करने के लिये सब सगुन प्रगट हो गये। ताकि उन्हें कोई ढोंग कहकर बदनाम न करें। यह सधारण नहीं विशेष विवाह था केवल राजा दशरथ और राजा जनक की कन्या का नहीं, पृथ्वी के लाल और पृथ्वी की लाली का पाणिग्रहण होने जा रहा था। धरती का कोना कोना आनन्दविभोर था, मानव का तो कहना ही क्या।

विशेष अग्रगण्य

वैसे तो सब वेदशास्त्र ज्ञान का भंडार है लेकिन सबसे अग्र रामायण, क्योंकि यह जन साधारण से लेकर ईश तक का वर्णन करती है। सबके आमोद प्रमोद का सामान यहाँ मिलता हैं। इसके ईश राजा राम जन साधारण से उनके भावानुकूल व्यवहार करते थे जैसे सीता विवाह के समय उन्होंने सबको अपने भिन्न भिन्न रूप दर्शाये। जाकि रही भावना जैसी। प्रभु मूरत देखी तिन तैसी ॥ देखहुँ भूप महारणधीरा। मानहु वीर रसधरे शरीरा ॥ राम अलौकिक शक्तिशाली थे एक होते हुये भी क्षण में अनेक बन गये, वह असाधारण व्यक्ति थे इसलिये अग्रगण्य थे, उनकी कृतियाँ भी उतनी ही सुन्दर हैं। भगवान अलौकिक शक्ति बिंदु में भी समा जाये और सिंधुबन लहराये भी, एक बूँद से मानव बनाये और एक चीज जीव निकाल निर्जीव कर दे। यह माया तो सब संसार आज भी देख रहा है। जन्म और मृत्यु के खेल में एक बूंद जल से मानव बन ज़ाता है और जीव निकलते ही 'खेल खत्म पैसा हज्म' ईश क्या है, विलक्षण प्रकृति जो सर्वव्यापी है, अदृश्य है, जिसका सानी दूसरा कोई नहीं है। जानी मानी है पर अनजानी आदि, अन्त है अनन्त है। अति नाम अन्त का भी है और शिखर का भी। अति यानि शिखर पर पहुँच जब आगे कोई छोर नहीं रहता तो पीछे आना पड़ता है। आदि का पथिक अन्त की ओर जाता है। अन्त से फिर आदि अर्थात् पृथ्वी गोल है, चक्र चालू है। सृष्टि के नियम अमिट हैं। इसलिये सृष्टिकर्ता का भी कोई आदि अन्त नहीं है। वह सदैव प्राचीन होते हुये भी नवीन है, गुण हो या अवगुण, जो बेजोड हो वह ईश। विष में सबसे बड़ा विष हलाहल, उसे पान करने की सामर्थ्य शिव में थी, तो उनका नाम नीलकंठ हुआ। वह सत्यं, शिवं सुन्दरम् थे क्योंकि जिस विष को कोई भी लेने को

तैयार न था उसे शिव ने पान किया । व्यक्त को मान दिया, पान किया हलाहल, सुखसार हो गया । सबके मन की इच्छा पूर्ण करनेवाले राम सबके मन पर छा गये । राजा दशरथ राम की बारात ले गये लेकिन विषमता न हो, अतः सारे भाईयों का जन्म जैसे एक संग हुआ वैसे ही विवाह भी एक मण्डप में । रामायण प्राचीन है लेकिन कितनी नवीन । इतने प्रतापशाली राजा जनक ने अपनी घर की चार कन्याओं का विवाह एक मण्डप में ही किया । इससे बड़ा तथा सुन्दर सामूहिक विवाह का कौनसा उदाहरण मिल सकता है । यदि सुयोग्य वर वधू का चयन हो जाये तो सामूहिक विवाह में कितना आनन्द है । चारों कन्याएं एक संग विदा होती हैं । कन्या की विदाई के समय माँ बाप तथा कन्या पक्षवालों की क्या स्थिति होती है इसका मार्मिक चरित्र चित्रण करने में भी अग्र रामायण, जो कली अपने घर में पल, विकसित होती है उसे तुम दूसरे के घर विदा देते हो । तुम्हारे आंगन से उठा दूसरे आंगन में फूलने फलने भेजते हो । अब उस आँगन की माटी अनुकूल होगी या प्रतिकूल इस चिन्ता में माँ बाप का मन डावांडोल होता है वह सब देवी देवता मना, हाथ जोड़ वरपक्ष को सौंपते हैं तथा कली को भी शिक्षा देते हैं । बेटी प्रतिकूल हवा को ढाढस से झेलना ताकि वह अनुकूल हो जाये । नये वातावरण को समझना तथा उस परिवार रूपी भूमि पर इस तरह छा जाना कि चारों ओर सुगंधि फैल जाये । खिलना और सबको खिलाना इसमें नारी जीवन की सार्थकता है । माँ सुनयना ने सुशिक्षा दे अपनी पुत्रियाँ से कहा सदैव अपने पति और परिवार के अनुकूल चलना तो यश स्वयं तुम्हारे चारों ओर फैल जायेगा, इससे सुन्दर एक माँ अपनी कन्या को क्या शिक्षा दे सकती है और यह शिक्षा सुख का मूल है । इसका वर्णन करने में भी अग्र रामायण है । सन्तान को सुशिक्षा देना एक जननी का कर्तव्य है । लेकिन कुशिक्षा देना अपने बच्चे को अपने हाथों गर्त में डालना और स्वयं भी चिन्ताओं में उलझते जाना है । जिसकी कन्या ससुराल में जा भलीभाँति घुल मिल जाती है उस माता को कितनी शान्ति मिलती है यह एक जननी ही व्यक्त कर सकती है । और जिसकी लडकी उलझनों में फँस जाती है तो क्या माँ बाप को चैन मिल सकता है कदापि नहीं । फिर ऐसा पौधा रोपो जिससे मधुर फल खाने को मिले । विवाह गृहस्थ की नींव

है । नींव पर ही महल आधारित है । नींव पक्की होगी तो महल निसंदेह सुदृढ होगा ।

नमन दमन है

अपने पहले आये पथिक को झुककर नमस्कार करने से तुम उसका आशीष पाते हो । नई वधू का प्रवेश उस नये परिवार में होता है जहाँ की पद्धतियों से अभी तक वह अनभिज्ञ है लेकिन अब उसे उन्हें निभाना है इसलिये यदि वह उस परिवार के बडे बूढों का सत्कार कर उनका हृदय जीत ले तो वे उसे सब रास्तों से परिचित करा देंगे जहाँ से जाने में सिद्धियाँ उसे स्वयं ही मिल जायेंगी । इसके विपरित यदि उदंड हो अधिकार और प्यार की माँग करे तो थोडा कठिन मामला हो जायेगा कारण कि सिर की ओर बैठ लक्ष्मण ने शिक्षा माँगी नीतिज्ञ रावण कुछ नहीं बोला । राम के आदेश से चरणों की ओर बैठते ही बोला हे- लक्ष्मण ! सबसे बडी संसार की नीति है, शुभ कार्य को करने में देर नहीं करो, बुरे काम के लिये सोचो। अच्छा काम तुम्हारे हाथ से होगा तो अच्छे बीज बोये जायेंगे, समय पाकर उनपर मीठे फल आयेंगे । लेकिन बुरे काम में बिलम्ब होने से, तुम उसे भूल जाओ और वह काम तुम्हारे हाथ से न हो तो, तुम बुराई से बच जाओगे । कितना सुन्दर शिक्षण है ।

हार में जीत है । नमन में दमन है । खोना पाना है । बाजी हारकर भी सहर्ष खेलो तो जीत पाओगे । अहम् को खो दो स्वयं जीत पाओगे झुककर प्रणाम करो उसका दमन स्वयं हो जायेगा वह तुमको उठा आशीर्वाद देगा । उसके अधिकार की मुहर तुम पर स्वयं लग गई । भगवान को साष्टांग प्रणाम करोगे तो उसे अपना भक्त जान तुम्हें निभाना पड़ेगा, प्यार माँगा नहीं जाता न दिया जाता है, वह एक हृदय की अनुभूति है जो स्वयं बह उठती है । काम बेचा जा सकता है, सेवक को वेतन दे, तुम चाकरी यानि काम कर सकते हो लेकिन वह निस्वार्थ तुम्हारे लिये जान की बाजी लगा दे वह प्रेम का अंतिम रूप भक्ति में सामर्थ्य है । जैसे हनुमानजी ने समय समय पर असम्भव को सम्भव कर दिखाया । भावना को जागृत किया तो रूप भी बदल गया, ओज से ओत प्रोत हो लहलहराते सागर को कूद गये जिसका प्रत्यक्ष वर्णन किष्किन्धा कांड में आयेगा, वह राम के सेवक होते

हुये भी, उनके प्राणाधार थे । इससे अधिक सुन्दर वर्णन, स्वामी सेवक भाव का कहाँ मिल सकता है । इसमें भी अग्र रामायण है । सच्चा सेवक प्राणाधार है यानि वह तुम्हारा प्राण है । स्वामी कौन जो सेवक को अपनाही अभिन्न रूप समझे । राजा दशरथ अपनी पुत्रवधुयें ले जब घर आये तो रानियों को सौंपते ही क्या बोले-"बधु- लरकिन यह पर घर आई ।। राखेऊ नयन पलक की नाई ।। उन्होंने पुत्र वधुओं के लिये कहा, लेकिन पुत्रों के लिये कुछ नहीं, कारण कि वे उसी कुल में जन्मे और पले थे । लेकिन अन्य राजा की कन्यायें आई हैं, गुमराह न हों, उन्हें संभालना सास का काम है, राजा ने क्या कहा कि जिस प्रकार पलकें आँखों की रक्षा करती हैं उसी प्रकार तुम इनकी रक्षा करना । पलकें आँखों में कुछ गिरने लगे तो बन्द हो जाती हैं । इसी प्रकार यदि इनसे कोई भूल चूक हो जाये तो क्षमा के आवरण से ढँक लेना, निन्दा से बचाना इनकी निन्दा तुम्हारी है यानि एक दूसरे से तुम अब अभिन्न हो जिस कुल की मर्यादा तुम्हारे कन्धों पर है, उसीका भार उठाने में यह तुम्हारा हाथ बटायेंगी । इस बेल को धीरे धीरे ऐसा सींचना कि यह पूर्णतया विकसित हो चारों ओर अपनी महक फैलाये, परिवार रूपी वाटिका महक उठे । संकुचित केवल अपना ही परिवार सोचते हैं, विश्व व्यापी मानवता रूपी परिवार की विशालता शुद्ध विचारों वाले खोजते हैं संलग्न हो नये आविष्कार करते हैं जो जन सुखदायी हों वैसा ही सुन्दर सास बहू के सम्बन्ध के महल की नींव राजा दशरथ के माध्यम से वर्णन करने में भी रामायण अग्र है ।

परिवार के सब सदस्य मिल जुलकर रहते हैं तो पृथ्वी पर स्वर्ग है। एकता अनेकता है । दिग्विजयी है । कोने कोने में उसका गुण गान है । एकाग्रचित मानव बहुत कुछ खोज लाता है क्योंकि वहाँ सब चेष्टायें एकत्रित हैं यह मानवता का नियम है । बालकाण्ड का वर्णन प्राचीन नहीं नवीन है अप्रत्यक्ष नहीं प्रत्यक्ष है । हरेक प्राणी के मनोभाव हैं आप विचारो, यदि कोई त्रुटि हो तो क्षमा करें । जय श्री राम, जय अग्र रामायण । पतित पावन सीताराम ...

अग्ररामायण द्वितीय सोपान अयोध्याकाण्ड

जय गणपति विघ्न निवारक, गणपति गजानन महाराज, अयोध्या नगरी में दिन रात आनन्द मंगल से व्यतीत हो रहे हैं । आनन्द अपनी चरमसीमा पर था । आनन्द मंगल का पारावार न था लेकिन अति नाम अंत का है । यानि उससे आगे राह नहीं तो पीछे मुड़ना अवश्यंभावी था । राजा दशरथ वृद्धावस्था को प्राप्त हो चुके थे । उन्हें तो राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न चारों पुत्र वैसे ही बुढापे में हुये थे, पुत्रेष्टि यज्ञ के करने से यानि खेल खेल में प्राप्त खिलौने नहीं बल्कि बहुत चेष्टा से पाये हुये पुत्र थे, वह पुत्र मोह में अतिमग्न थे । अतिमग्न होने के कारण उन्हें कई नाते विस्मृत भी हो जाते थे । इसलिये उन्होंने मन में निश्चय किया कि राम जो जनना का आराम है। उसे राजभार सौंप, स्वयं बंधनमुक्त हो जाऊँ । लेकिन राजमुकुट जनता की धरोहर है । सर्व सम्मति से ही ताज किसी व्यक्ति विशेषको पहनाया जाता है । इस नियम का पालन करने हेतु राजा दशरथ ने एक जगह वशिष्ठजी से इस विषय में अनुमति लेने की सोची, क्योंकि यह कार्य राजगुरू होने के नाते उनके कर कमलों से सम्पन होना था । यह प्राचीन पद्धति आज भी नवीन है । जहाँ राज्याभिषेक होता है, वहाँ राजगुरू की अनुमति से ही यह कार्य सम्पन होता है । केवल राजा के करने से नहीं । आज भी ब्रिटन साम्राज्य में बिना राजगुरू की अनुमति के राजा नहीं बनाया जाता है । चाहे सारा विश्व एक ओर क्यों न हो । राजा और रानी के अभिषेक में आज भी धर्म का बंधन है । इसे रूढिवाद कह दो या अच्छाई, लेकिन है इसमें भलाई । राजघराने के लोगों की विशेषता को सुरक्षित रखने का यह अस्त्र है । उच्छृंखलता को रोकने का एक शस्त्र है । राजा को ताज के लिये त्याग करने का आदेश है ताकि वह नियमित हो । राजा का आचरण यदि जनसाधारण जैसा होगा तो वह जनता का राजा कैसे कहलायेगा । कुछ विशेषताएं, कुछ बंधन तो आवश्यक हैं। समुद्र यदि अपनी सीमा उलांघ दे तो वह रत्नाकर न होकर विध्वंसकारक होगा । इसीलिये प्रकृति कहिये या ईश ने उसे नियम में बांध रखा है । इसलिये राजगुरू भी कुछ गुरुमंत्र होने वाले राजा को सिखाने जाता है गुरू का आगमन देख राम उनका आदर करने द्वार पर आते हैं । गुरू वशिष्ठ आदेश देते हैं राम तुम्हारा राज्याभिषेक

कल है । 'करहु सब संजम आजू ।' गुरूजी तो शिक्षा देकर चले जाते हैं लेकिन समता का इच्छुक शिष्य मन में विचार करता है । विमल वंश यह अनुचित ऐकू । अनुज विहाई बडेऊ अभिषेकू ।। यानि इस उत्तम कुल में यह रीति बहुत अनुचित है । छोटे को छोड बडे को राजा बनाते है । यहाँ तो बडे छोटे का कहाँ प्रश्न उठता है । जन्मे एक संग सब भाई । भोजन शयन केलि लरिकाई ।। कर्ण वेध उपवीत विवाहा । संग संग, सब भए उछाहा ।। हमारे चारों भाईयों के तो सब काम एकसंग ही हुये हैं । जन्म, पालन, पोषण, यज्ञोपवीत, शिक्षा, दीक्षा, कानछेदन तथा विवाह तक सब काम एक साथ हुये हैं । फिर यह भिन्नता क्यों । अभिन्नता में भिन्नता के प्रवेश ने असीमित के हृदय को खिन्न किया । उदारता और भ्रातृप्रेम का वर्णन करने में भी अग्र रामायण है । वह राम जो खेल में भी स्वयं हार कर अपने भाईयों को जिताते । स्वयं हारकर जीतका ताज उन्हें पहनाते, वह आज यह बात कैसे सहन करे । वैसे तो असीमित ने यह जन्म सीमित बन धारण किया था । अपनी सोलह कलाओं में से दो कलाओं को माँ सरस्वती की थाती रख विवेक धन ले लिया था क्योंकि उन्हें केवल अवध का राज ही नहीं सँभालना था बल्कि माँ पृथ्वी का भार उतारना था, जन जन का दुःख दूर करना था । उन्हें केवल अवध का राज काज ही नहीं, बल्कि विश्व का कार्य सँभालना था । उन्हें समूह का सर्वमत से राज्य सँभालना था। उन्हें एक पिता की आज्ञा से राज्य नहीं करना था बल्कि अपना कर्तव्य शिरोधार्यकर भूभार उतारना था । उन्हें वैभवसे नहीं खेलना था, संघर्ष से बाजी जीतनी थी । कुछ पाने को कुछ देना था । परिधि बनानेवाला नियम कैसे तोडे। मर्यादा पुरुषोत्तम राम पिता की आज्ञा उल्लंघन कैसे करे, बड़ा जटिल प्रश्न था । माँ सरस्वती को स्मरण किया उन्होंने उपयुक्त अस्त्र को काम में लिया । कौशल्या राम की जननी । सुमित्रा, कैकेयी और कौशल्या दोनों का मन रखनेवाली थी । हवि भी पुत्रप्राप्ति के लिये राजा ने कैकेयी और कौशल्या दोनों के हाथ में दी, लेकिन गम खानेवाली सुमित्रा ने कोई तर्क वितर्क नहीं किया, कौशल्या ने अपनी छोटी बहिन का मन रखने के लिये अपनी हवि में से उसे भाग दिया । उधर कैकयी ने भी उचित समझ अपने में से उसे भाग दिया, यानि दोंनों में से उसे मिला, उसे दो पुत्र हुये

जबकि कौशल्या और कैकयी के एक एक । इसीलिये तो कहते है, कोई गम खाकर देखो, गम खाना चीज बड़ी है ।

संघर्ष राह की पहचान है । ऐशोआराम भूल भूलैया का साधन, राम को अब संघर्ष की ओर चलना है, न कि राज्याभिषेक की आरामगाह में विश्राम करना है । माँ सरस्वती को यह कार्यभार सौंपा गया, क्योंकि राम जन्म लेने से पहले ही अपनी दो अमोघ कलायें छलकपट, संगीत नृत्य माँ को सौंप आये थे जो समय समय पर माँ को उनके लिये लानी थी, राम चौदह कला लेकर जन्मे थे । सम्पूर्ण सौलह कलायें लेकर नहीं, कारण कि इन दो कलाओं में मयार्दा उल्लंघन करने की क्षमता है क्योंकि इस अवतार में उन्हें असीमित को सीमित रखना था, इसलिये इन दो अलौकिक कलाओं को वह माँ को दे आये थे । उन्हें इस जन्म में बाल्यावस्था से ही जन कल्याण, असुर संहार करना था । जन मनोरंजन नहीं, जन उद्धार करना था । वह मुरली मनोहर नहीं कहलाकर मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाये, उन्होंने बचपन से ही धनुष बाण धारण किया न कि मुरली बजाई । द्वापर में कृष्णावतार में वे सोलह कलाओं से अवतरित हुये, इसलिये सम्पूर्ण खेल स्वयं खेले । जय कन्हैया लाल, जय सियाराम ।

संघर्ष और मानवता

राम को अब आसुरी प्रवृत्तियों से संघर्ष कर मानवता को सही मार्गदर्शन कराना था, पुत्र मोह के वशीभूत हुये राजा दशरथ पथभ्रष्ट हो गये। पुत्र होने के नाते राम उन्हें कैसे बतायें उसके दुष्परिणाम, इसलिये उन्होंने उपयुक्त पात्र को यह कार्य भार सौंपा । तुच्छ बुद्धि वाली एक दासी । मंथरा, जो रामराज्य के उत्सव को देख विचलित हो गई और राम की प्रिय माता, राजा दशरथ की प्रिय रानी कैकयी के कान में जहर उगला । माँ कैकयी को राम अति प्रिय थे । उन्हें कभी वह सौतिया पुत्र नहीं मानती थी और न राम भी कभी उन्हें विमाता समझते थे। लेकिन इस समय असुरों का संहार करने के लिये उन्हें अपनी जगध्दात्री, ममतामयी माँ दुर्गा माँ को असुर निकंदनी चण्डी माँ का रूप धारण करने की प्रेरणा दी, क्योंकि शक्ति के बिना यह कार्य असफल था । नारी अबला नहीं सबला है, मन्दबुद्धि नहीं तेजस्विनी है । सपनों के महल बनाने में जितनी सहायक है उतनी ही गिराने

में । रंग में भंग करना उसके बाऐं हाथ का खेल है, क्योंकि वह अर्द्धांगिनी रूप में पुरुष के बाम अंग की अधिकारिणी है । राजा दशरथ भूल रहे थे कि उन्होंने रानी कैकयी को उनकी कोख से जन्मे पुत्र को युवराज बनाने का विवाह के समय वचन दिया था और दो वचन देवासुर संग्राम में कैकयी के युद्धचातुर्य को देख कर दिये थे, जब उन्होंने रथ की धुरी में अपनी उंगली लगा राजा के प्राणों की रक्षा की थी । तीसरा भरत शत्रुघ्न की अनुपस्थिति में राज्याभिषेक करना अयुक्तिसंगत था । शुभ प्रसंग में अपने स्वजन परिजनों का होना अति आवश्यक है, यह कुल की मर्यादा है, जिसको गुरू वशिष्ठ और राजा दशरथ ने कोई महत्व नहीं दिया । इसलिये माँ सरस्वती द्वारा उन्होंने गृह कलह रूपी राग छिडवा दिया । वीणाधारिणी सुमधुर गीत गानेवाली ममतामयी माँ कैकयी को आग उगलने पर प्रेरित किया । जिसमें उन्हें स्वयं भी झुलसना पडा तथा दशरथ तो राम राम करते ही चारों पुत्रों की अनुपस्थिति में स्वर्गलोक सिधारे । यहाँ श्रवण कुमार के अंधे माता पिता का श्राप जो एक समय उनके जीवन के सहारे श्रवण को मारकर उन्हें मिला था । जिसे निसंतान होने के नाते उन्होंने श्राप न समझ वर दान माना था । क्योंकि यह अभिशाप उन्हें पुत्र प्राप्ति का साधन लगा था । आत्मा अजर अमर है । सच्ची आत्मा से दिया श्राप भी सत्य है वह व्यक्त करने में भी अग्र रामायण है । आसुरी प्रवृत्तियों का विरोध न करने पर सिद्धि क्षीण पड जाती है वह भी यथार्थ कर दिखाने में अग्र रामायण है । गुरू वशिष्ठ से पंडित ज्ञानी शोध के लग्न धरो । सिया को हरण दशरथ को मरण बन बन विपत पडो । गुरू वशिष्ठ के लग्न पर असत्यता की आंच आ गई । लेकिन माँ कैकयी केवल राम की माँ है । दूसरे किसी की नहीं, इस मान से सम्मानित हुई । दूसरी कोई स्त्री का नाम कैकयी नहीं होगा । उस पर केवल राम का एकाधिपत्य रहेगा । विमाता को उन्होंने एकाधिपत्य सम्मान दिया, कारण कि उन्होंने अपने पुत्र को असुर निकंदन करने की शक्ति प्रदान की, जन कल्याण हेतु चण्डी का रूप धारण करनेवाली मुण्ड माला पहने सब देवताओं ने शक्ति को नमस्कार किया । शक्ति को बिना मानव कुछ भी करने में असमर्थ है । शक्ति तो पहले चाहिये । इसलिये राम हर समय बनवास में कैकयी को स्मरण करते थे । आज के युग में अमेरिका के प्रेसीडेण्ट अब्राहम लिंकन

भी कहते थे कि मैं आज जो हूँ अपनी विमाता के कारण हूँ, माता तो छोटेपन में चली गई लेकिन जिसे संसार विमाता कहता है वह मेरी सुमाता है जिसने मुझे सही ढांचे में ढाला । विमाता की पदवी माता से भी बढकर। माता तो अपनी कोख से जन्म देकर प्रकृति से बच्चे का भोजन दुग्ध पान करकर पालती है । लेकिन विमाता संघर्ष कर उसका पोषण करती है । समय समय पर दूषित होने की संभावना से संघर्ष करती है, वह विमाता धन्य है जो सब परिस्थितियों को सहकर भी बच्चे के लिये अपना सब कुछ न्यौछावर करती है । तभी तो उसे माता से भी एक पदवी ऊपर सुमाता कहा जाये तो, अतिशयोक्ति न होगी, इसके विपरीत आचरण करने पर तो उसे विमाता की पदवी तो पहले ही मिल गई । अब वह "वि" को विजय में परिणित करे या पराजय में, उसके ऊपर निर्भर है । कैकयी ने दो वर के लिये राजा दशरथ से आग्रह किया, कारण कि दूसरे दिन सूर्योदय होने पर तो राम राजा होनेवाले थे, शासन पर दशरथ का अधिकार हट जाने वाला था । वह भगवद् भजन के लिये वनवास जाना चाहते थे । लेकिन विधि का विधान तो पारदर्शी वशिष्ठ जैसे भी न जान सके तो जनसाधारण का तो प्रश्न ही कहाँ उठता है, विशेष को ही विशेषण से विभूषित किया जाता है न कि सर्वसाधारण को । यह जग की रीत है ।

मोह के जाल में फँस मानव कितना मदांध हो जाता है इसका भी ज्वलंत उदाहरण अग्र रामायण । शासन की बागडोर संभालने वाला राजा नारी हृदय की गूढता को नहीं लख सका, झट बोला, दो के चार माँग लो। दो पाने में ही यहां संदेह है चार का सवाल कहाँ । दो से चार बडा है गणित शास्त्र के हिसाब से तो राजा ने पूर्ण विश्वास दिलाने, अपने वचन की सुरक्षा के लिये राम की शपथ खा ली, जिसकी रानी को चाह थी । जब रानी ने मुँह खोला तो राजा स्तब्ध । रानी ने वर मांगा । भरत का राज्याभिषेक तथा राम को चौदह वर्ष बनवास । राजा आकुल व्याकुल, रानी बोली, इसी साहस पर आपने वर देने को कहा था क्या आप समझते थे कि मैं एक छोटी मोटी चीज के लिये आग्रह करूँगी जो आप झट से दे देंगे । नारी क्या इतनी हीन है ? वह पुरुष के हाथों का खिलौना है ? जिसे वह जैसे चाहे चला ले, नहीं, नारी प्राणदायिनी है तो साथ में स्वयं पर आँच आती

देख नरभक्षिणी भी । जल्दबाजी में राजा फँस गये जाल में, तडफडाने लगे, रंग में भंग हो गया, सबके लाख समझाने पर भी रानी टस से मन न हुई क्योंकि उन्हें अपने पुत्र राम का जीवनध्येय पूरा कराना था, उन्हें त्याग की शक्ति का ताज पहना जनसाधारण का मानस राज्य सौंपना था, कुंदन को अग्नि में डाल परिमार्जित करने का कैकयी ने काम किया । अब राम बन जाने को उद्यत है, लेकिन जननी की आज्ञा लेना भी अति आवश्यक है । वह कैकयी के महल से लौटे, उन्हें सुमंत वहाँ ले गये थे तो रानी कौशल्या समझी, राजा ने कुछ विशेष कारण से बुलाया होगा । राम का मुख चमक रहा था । तेज आलोकित था, उधर अँधेरा दूर हो गया था । माता बोली कुछ कलेवा कर लो राज्याभिषेक में बिलम्ब होगा । राम मुस्कराये बोले- पिता दीन मोही कानन राजू । जहाँ मोर सब विधि सुपासू, अब आप आज्ञा दीजिये ताकि मैं बनगमन करूँ और पिता का वचन पूरा कर सुकुशल लौटू और आपके चरण वंदन करूँ । माता शून्य, बोली, यह क्या आश्चर्यजनक घटना हो गई। राम बोलो तो सही यह अमृत में विष का सम्मिश्रण और वह भी इतने अल्प काल में । यह हलाहल कहाँ से आया अयोध्या राज में, जिसने अमृत में अपने को घोल दिया, दो विरोधाभासी सामग्रियों का मिलन कैसे हुआ । ठहरो, मैं देखती हूँ । अब माँ कौशल्या अयोध्या की पटरानी राम की जननी होने के नाते गृहस्थाश्रम के तराजू में माता पिता के पुत्र पर अधिकार में कौन भारी है तोलने लगी, बोली हे राम ! जो केवल पितु आज्ञा ताता । तो घर रहो जान बड़ी माता ।। यानि संतान पर पिता से माता का अधिकार अधिक है । क्योंकि वह उसकी जननी है । लेकिन यदि माता ने भी आज्ञा दी है तो सहर्ष जाओ, तुम्हारे लिये कानन शत अवध समाना । कितना महान त्याग है एक साम्राज्ञी का, कितनी सहनशीलता है, कितनी कर्तव्यपरायणता । राज्य के कल्याण हेतु पुत्रमोह का त्याग। सौतिया डाह और बंधु विरोध से राज की सुरक्षा तथा आपत्तिकाल में पति का पूर्ण साथ देना कर्तव्यपरायणता की चरम सीमा झलकाई कौशल्या ने राम को वन गमन की आज्ञा देने में । गृहस्थ की स्वामिनी, गृहलक्ष्मी यदि इतनी दक्ष हो तो वहाँ अलक्ष्मी, कलह इत्यादि का प्रवेश कैसे हो सकता है । नारी कितनी दक्ष और कल्याणकारिणी है । इसके प्रदर्शन का भी अति सुन्दर चित्रण

करने में अग्र रामायण है । त्याग महान है । नर नारी का उत्तम परिधान है। आत्मा का श्रृंगार है । जीवन का आलोक है । नर नारी का युग्म बनाया जाता है । जीवन निभाने न कि उसे चटकाने को । कौशल्या राम को विदा देती है अपने सब पितरों को, देवी देवताओं का आह्वाहन कर उन्हें राम की रक्षा का भार सौंप, आशीर्वाद का कवच पहना । निर्विघ्न वन गमन के लिये गौरी गणपति मना । जय गणनायक वरदायक ऋद्धि सिद्धि के दाता गणपति देवा ।

राजा दशरथ की पटरानी कौशल्या और प्रिय रानी कैकयी के मध्य बहने वाली एक और धारा रानी सुमित्रा जो गृह संचालन का कारभार सँभालती थी, उसकी दक्षता को देख तो दाँतो तले अंगुली दबा लो, वह सब अपने मनोभावों को सदैव अपने में ही दबाकर गृह का संतुलन बराबर बनाये रखने में संलग्न थी । वह राम की माता कौशल्या की हवि तथा कैकयी के हाथ की हवि पा एक नहीं दो दो पुत्रों की जननी बनीं । लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न । राम की माँ की हवि के लक्ष्मण तथा भरत माता की हवि के शत्रुघ्न। जैसा अन्न वैसा मन । इस सिद्धान्त को सिद्ध करने में भी अग्र रामायण है । राम के संग सदैव लक्ष्मण रहते थे और भरत के संग शत्रुघ्न। वैसे चारों एक ही हवि से उत्पन्न हुये इसलिये चारों भाइयों का मन एक था। यानि भ्रातृप्रेम का सागर चारों ओर एक सा लहराता था, उधर चारों भाईयों की पत्नियाँ भी आपस में एक खेत की ही उपज थीं । एक खेत की उपज होने के कारण उन चारों में भी प्रायः एक से गुण विद्यमान थे । वैसे भी राजा राम ने सीता को प्रथम मिलन में यह उपहार दिया था कि मेरी केवल एक तुम्ही पत्नी होगी । मुझे एक आदर्श पालन करना है । कई स्त्रियाँ धारण करने की प्रथा उस समय उनके परिवार में ही थी, जैसे उनके पिता के तीन पत्नियां थीं । समता के पुजारी राम विषमता के विरोधी थे नर और नारी में भेद क्यों ? पुरुष और स्त्री, यदि गृहस्थाश्रम की गाडी के दो पहिये हैं तो एक तरफ तुम तीन पहिये जोड़ दोगे और एक तरफ केवल एक, तो क्या गाड़ी भली भाँति चल पायेगी ? भूमि चाहे कितनी भी समतल हो लेकिन गाडी विषम होने के कारण भली भाँति कदापि नहीं चल पायेगी। यह राम का दृढ विश्वास था जिसे वह अपने जीवन में निभाकर सबके लिये पथदर्शक

बनना चाहते थे । उनके भाईयों ने भी उनका ही अनुकरण किया । राजा के चार पुत्र थे और चार ही पुत्रवधुयें । नारी पुरुष के समानाधिकार का बटवारा करने में भी आदर्श राम का जीवन अग्ररामायण है ।

सतरंगी नारी

पृथ्वी के कणकण में समाई नारी सत्ता नारी विद्वत्ता नारी ऊर्जा नारी, पूजा नारी, शक्ति नारी, भक्ति नारी, प्राणदायिनी नारी, विध्वंसकारिणी नारी, जीव नारी, माया नारी, मानव के मन पर छाई नारी, आकर्षण नारी, संकर्षण नारी, सुमधुर भाषिणी नारी, लावा उगले नारी, सृजन कर्तृ नारी, सुई से घर बना दे नारी सुई से घर खोद दे नारी । अपार क्षमता रखने वाली नारी को यदि कुचलना चाहो तो परिणाम क्या होगा वही जो खरबूजे और चाकू का होता है । खरबूजा चाकू पर गिरा तो भी वही कटेगा और चाकू खरबूजे पर गिरा तो भी खरबूजा ही कटेगा । तभी तो कहते हैं कि जहाँ की नारियाँ प्रसन्न हों वहां सब देवता वास करते हैं । क्योंकि खान पान की व्यवस्थापिका नारी है । वह खिन्न होगी तो भैया भूखे ही रह जाओगे । यह तो सब ठिठौली है, हाँ तो एक सीधी सी स्वयं सिद्ध बात है कि तुम लक्ष्मी माँ को, माँ रूप से आदरमान दोगे तो वह तुम्हारे ऊपर अपने आशीर्वाद का जल छिडकेगी, तुम सुखी और माननीय हो पाओगे । यदि स्त्री रूप से रख, उस पर बलात्कार करोगे तो वह चुपचाप अवसर पाकर वहाँ से चम्पत हो जायेगी, तुम्हें मालूम भी नहीं होगा । हमारे भारत की नारियाँ कितनी अग्रगण्य थीं, हर क्षेत्र में इसका प्रमाण देने में अग्र रामायण है । चतुर गंभीर राम की माँ वन की अनुमति देती है । यह समाचार सुन भला लक्ष्मण कैसे पीछे रहे, वह तो राम के सदैव संग रहनेवाले थे । वन जाने का बडे भैया से आग्रह किया, राम ने बहुत समझाया बुझाया लेकिन छोटे भाई के हृदय को ठेस पहुँचाना उनका काम न था इसलिये वन गमन के पत्र पर हाँ की मुहर लगा दी । लेकिन निज जननी की आज्ञा लाने भेजा अनुज लक्ष्मण को। यहाँ सुमित्रा की बुद्धि की विलक्षणता को देखो । जिसने एक क्षण भी नहीं लगाया अनुमति देने में, ताकि लक्ष्मण निरुत्साह न हो पाये बल्कि उनके उत्साह को चार चांद लगा दिये यह वचन कह - जाओ लक्ष्मण, यदि मेरे तनुज हो तो राम की सेवा में कोई कमी न आने देना । ऐसी त्यागमयी

थी भारतीय नारी । भाई को अनुमति मिल गई तो सहचरी क्यों पीछे रहे । वह आई और सास से आज्ञा माँगने लगी । अनुनय विनय करके कि मेरे मन्दभाग्य है कि आपकी सेवा के समय वन गमन कर रही हूँ लेकिन आज का समय मुझसे यही मांग रहा है । जीव और माया एक दूसरे से अभिन्न है तो इन्हें अलग कैसे किया जा सकता है, प्राचीन रामायण कैसा सुन्दर आज के नवीन जीवन दृष्टिकोण का वर्णन करती है । पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर नारी चलने का साहस रखती, वह पिछडी हुई नहीं, सहचरी है। तेजस्विनी नारी ने नम्रता के बल पर, माँ कौशल्या की अनुमति ली और निष्काम प्रेम के बल पर राम को जीत लिया, जय सियाराम ।

नारी की गरिमा

सीता ने तो अपने तर्क शास्त्र के बल पर वन जाने की अनुमति सास और पति दोनों से ले ली, लेकिन उर्मिला का क्या होगा ? एककुल में उत्पन्न दोनों बहिनें, एक ही सोपान पर चढना चाहेगी तो क्या होगा ? एक ससुर की पुत्र वधू होने के नाते जो अधिकार सीता को मिल सकता था वही उर्मिला भी ले सकती थी । समता की नीति का तो यही विधान था, यदि उसे इनकार किया जाये तो विषमता का उद्‌गम था । नारी नारी सब समान है, सबकी हृदय गति एक है । फिर एक को ना करना विषमता होगी । इसी विचार में राम निमग्न थे । उधर लक्ष्मण अपने पती धर्म को निभाने के लिये तथा विरहाग्नि की कसौटी पर अपनी भार्या उर्मिला को तपाने के लिये रंगमहल पहुँचे कि वह क्या है, उर्मि, चेतना, लहर अथवा चट्टान, जिससे टकराकर लहर स्वयं सागर में मुड जाती है । बोले उर्मिला! मुझे राम का सेवक बन चौदह वर्ष वन में जाना है । बोलो तुम्हें क्या संदेश सुनाना है । राम, भाभी सीता को संग ले चलेंगे, बोलो अब परिस्थिति को कैसे सँभालना है । नैया एक में जाना, बोलो समय कैसे निभाना है । बोली उर्मिला, मुझे अडचन नहीं, तुम्हारा साथ निभाना है । स्वामी के लिये जो उचित है वह सामर्थ्यवान है जो चाहे करे लेकिन सेवक धर्म तुम्हारे लिये कांटा बन मुझे बन में नहीं जाना है, मुझे विरहाग्नि की धूनी रमाना है । कोई संदेश नहीं सुनाना, मूक रह जाना है । सुध तुम लेते रहना मेरी समय समय पर चेतन या अचेतन, सक्रिय थी या निष्क्रिय, यह परीक्षाफल आप

आकर बतलाना । मूक वंदना की महिमा की शक्ति का गौरव तुम बतलाना। जाओ सहर्ष जाओ प्रणय के काँटे पैरों में न उलझाओ । शुभ काम में देर किस बात की, मुझे बतलाओ । मेरा अहोभाग्य कह जरा मुस्काओं कि मैं इतनी भारी परीक्षा देने जा रही हूँ, एकाग्रता के अध्ययन से ही मैं उत्तीर्ण हो पाऊँगी । मैं सेवक की अर्द्धांगिनी हूँ । लक्ष्य मेरा दूसरा है । मैं वन में न जा रंग महल में धूनी रमाऊँगी । विरह-अग्नि को माँ कह इसकी अंक में बैठ जाऊँगी । इस तरह अपनी अवधि बिताऊँगी। सबमें रमते राम, सुन लिया यह संवाद ध्वनियां वायु मण्डल में मिश्रित हो, विश्व के कोने कोने में फैल जाती है । फिर राम तो उसी महल में थे । आज हम रेडियो यंत्र के द्वारा सब समाचार सुनते हैं । लेकिन पहले के समय, साधना नाम का यंत्र था जो सब समाचार देता था । राम ने सब सुन लिया, गुण लिया तथा परिणाम भी निकाल लिया । एक क्षण में हृदयंगम । कम्पूटर पर किसी ने कुछ नहीं देखा न किसी ने कुछ सुना । लक्ष्मण आ गये विदा लेकर, मुख तेज से चमक रहा था । अलौकिक ज्योति से । राम को माता कौशल्या ने विदा दी पर यहाँ तो माता और नारी दोनों का संगम था । तेज द्विगुणित हो फूट पड़ा । मुखकांति हृदय की रूप रेखा है । राम लख गये लक्ष्मण पूर्ण उत्साह से वन गमन कर रहे हैं, यह विजय उर्मिला की होगी, राम मुस्करा उठे । कहां होगी ? इस राज को हृदय में छिपाये भविष्य ज्ञाता राम मां कैकयी के भवन में लौट आये लक्ष्मण और सीता सहित । आगे राम, पीछे लक्ष्मण, बीच में सिया सुकुमारी, नेत्र खोल देखो छवि कैसी प्यारी । जीवन के किसी भी क्षेत्र में जटिल से जटिल समस्या आने पर पुरुष यदि नारी की गरिमा को ध्यान में रख उससे सलाह कर ले तो वह ऐसा हल निकालेगी जो जग देखे, क्योंकि नारी अनुभवी है । वह एक कुल में पैदा होती है दूसरे में पाणिग्रहण कर जाती है । यानि उसे दो कुल का ज्ञान तथा अनुभव होता है । यदि पूर्ण आदर और सत्कार से तुम नारी को रखो तो नारी पुरुष के लिये असाध्य को भी साध्य करने में समर्थ है, भारी से भारी बोझ उठाने को तत्पर है, असह्य को सह्य को समझ सकती है । वह शक्ति स्वरूप है। वह भक्तिरूपा है । वह श्रुति है, शान्ति है जो शनैः शनैः सब उलझे तारों को बिना चिटकाये ही सुलझा देगी । हर जटिल समस्या का समाधान कोमलांगी

नारी करने में समर्थ है । केवल नारी की गरिमा को ठेस पहुँचाने की चेष्टा मत करो, नहीं तो वह उग्र रूप धारण कर लावा उगल देगी, धरती पर भूकम्प आयेगा जो युग युग से विनाशकारी है । नारी की गरिमा को प्रदर्शित करने में भी अग्र रामायण है । घर में त्रस्त या असंतुष्ट नारी विद्रोह की जन्मदात्री है तथा इसके विपरीत घर में तुष्ट नारी प्रसन्नता का उद्‌गम । क्योंकि चाहे तुम नारी हृदय को कितना भी कुचलकर रखो, वह किसी कारण से बोल न पाये पर उसकी आत्मा अशान्त है । आत्मा में परमात्मा का वास है । परमात्मा में विश्व का यानि वायुमण्डल में अशान्ति के छोटे कण फैलते है। इसके विपरीत प्रसन्न नारी हो तो प्रसन्नता को उत्पन्न करती है । यानि राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न, सीता, उर्मिला, माण्डवी तथा श्रुतिकीर्ति जैसी संतान, जिसका नाम आज भी विश्व लेता है, कितने युग बीत गये । आज भी उनके चरित्र देख प्रसन्नता होती है, जितनी बार पढो, सुनो उतनी बार नवीनता का आभास होता है, होता था और होता रहेगा। यानि भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों काल के पटल पर उत्तम संतान की छाप रहती है। अमिट वही है जो मिट नहीं सकता । मानव जीवन का सार अग्र रामायण है ।

नारी शीतल जल बन धरा पर बहती है लेकिन उसको बहुत ऊँचा उठाकर नीचे फेंक दो तो जल में विद्युत पैदा करने में भी नारी सामर्थ्यवान है । नारी एक ओर मधुरभाषिणी है तो दूसरी ओर कडकती बिजली, वह कोमलांगी भी है और वज्र से कठोर भी । राम लक्ष्मण सिया आ गये वन जाने को, राजा दशरथ अपना वचन भंग करने को तत्पर है । सब आ गये हैं रानी कैकयी को समझाने । लेकिन राम की प्रेरणामयी माँ जिन्हें उन्होंने एकाधिपत्य दे दिया है जननी के नाम पर। कैकयी नाम के दूषण को उन्होंने भूषण बना दिया, विशेषता के हीरों से जडकर । कैकयी नाम कोई नहीं रखेगा, क्योंकि वह केवल राम की माता ही रहेगी । युग युग तक, क्योंकि जब तक सृष्टि का क्रम चलेगा कैकयी भरत राम की माता कहलायेगी, अन्य कोई और सुत की नहीं ।

गुरु नारियां तथा सब प्रौढा स्त्रियाँ कैकयी को सब प्रकार से समझाने की चेष्टा करती है । लेकिन सौतिया डाह के लेप से पोते हुये उसके हृदय पर शिक्षा की कोई बूँद नहीं ठहरती । चिकने घडेपर बूंद न पडे । राजा

दशरथ तड़प रहे हैं । राम पिता का आशीर्वाद लेने हेतु चरणस्पर्श करते हैं। राम तुम वन नहीं जाओ मैं अपने वचन वापिस ले लूँगा । अपकीर्ति का मुझे भय नहीं, राम इस वर के दो ही परिणाम हैं या तो तुम घर रहो या मेरे प्राण तन को छोड देंगे । राम चुप, अब रानी कैकयी का विवेक जागृत होता है । वह बोली- राजन् ! रघुकुल रीति सदा चली आई । प्राण जाय पर वचन न जाई ।। क्या इसी बल पर तुमने माँगने को कहा था क्या मैं राजा दशरथ की प्रिय रानी, उनसे किसी छोटी मोठी चीज के लिये आग्रह कर रही थी । साध्य चीज यदि माँगती तो थाती क्यों रखती वरदान को । राजन ! आप महाराजाधिराज होकर भी कूटनीति जो शासन के लिये एक आवश्यक अस्त्र है, उसे भूल गये । वचन देने के पत्र पर सहर्ष राम की मुहर लगाने से पहले क्या सोचा कि मैं चना चूर (चबेना) मॉगूँगी, राजन नारी अथाह सागर है, वह लक्ष्मी है, पाताल वसंती यानि के चरणों में रहने वाली और आकाश में उडनेवाली परी भी, जो सदैव युवती ही रह शृंगारमयी नवयौवना बन, अच्छे अच्छे ऋषियों की तपस्या भंग करने में भी समर्थ है। इतिहास के पन्ने पलट कर देखो नारी क्या नहीं है । किस बात में वह नर से हीन है । प्रकृति ने उसे सृजन के समय ही एक पुरुष से विशेष अंग गर्भाशय दिया है जहाँ से सृष्टि का उद्‌गम है । नारी जिसका कोई भी अरि नहीं है यानि उसमें मैत्री भाव का चातुर्य भरा है । वह शत्रुता से नहीं प्रेम बाण से मानव हृदय को जीतने का सामर्थ्य रखती है । यदि ऐसा न होता तो वह एक कुल में उत्पन्न हो दूसरे कुल में पदार्पण कर अपनी बुद्धिमत्ता से अपने को वहाँ की साम्राज्ञी न बना लेती, वह कायापालट करने में भी एकदम चतुर है । एक राजा की रानी विवाह होते ही रानी कहलाती है । लेकिन एक रानी का पति कभी भी राजा नहीं कहलाता । उदाहरणार्थ ब्रिटिश सल्तनत को ही ले लो, रानी ऐलिजाबेथ का पति कभी राजा नहीं कहलाता, ताज पर बैठी रानी को ताज के नाते सिर झुकाता है । एक साधारण व्यक्ति से विवाह करने पर वह उसी के नाम से पुकारी जाती है जैसे धोबी की स्त्री धोबिन ही कहलाती है । नारी अपने को अपने उसी कुल के अनुरूप ढाल लेती है, जिसमें वह प्रवेश करती है, तथा जिसकी बागडोर पकड़ती है। उसे निभाती है । आपका वचन, भंग नहीं होने दूँगी, रघुकुल पर आँच नहीं

आयेगी, जहाँ राम जैसे पुत्र उत्पन्न हुये हैं । चाहे मुझे और आपको किसी भी अग्नि परीक्षा से क्यों न जाना पड़े, पर अयोध्या का कीर्तिध्वज लहरायेगा और अवश्य लहरायेगा । राम बोलो तुम क्या कहते हो, घर रहकर पिताकी प्राण रक्षा या वन जाकर माता की प्राणरक्षा, कौनसा सौदा मंजूर है, बोलो, शीघ्र बोलो, बिलम्ब न करो, कोई अन्य खरीददार न आ जाये क्योंकि दूकानदार को तो माल बेचना है । मुस्कुराये राम, माता की चतुराई पर । धन्य है जननी तू, जिसने रघुकुल की आन और शान के लिये अपने प्राण की बाजी लगा दी । जिस आन और शान को राजा प्राण के मूल्य पर बेचने को तैयार है । दौड में कौन आगे । हार में भी किसकी जीत । अबला कहे या सबला, इन सब प्रश्नों का उत्तर है अग्र नारी, जो कि वर्णन करने में अग्र रामायण है और नारा लगा रहा है बड़ी शान से आज का LADIES FIRST । हमारे प्राचीन भारत में तो सदैव नारी का सम्मान था, वह अग्र माननीय थी, परिवारों में भी भाई से बहिन का अधिक सम्मान था, संतति पर माता का पिता से अधिक अधिकार था । जिसका भली भाँति निष्कर्ष स्थान स्थान पर देने में अग्र रामायण है ।

राम बोले छोडें इन बस बातों को, आज्ञा दो हे जननी ! बन जाने की । कैकयी वस्त्र लाई, वन में पहनकर जाने योग्य । धारण करने में सिया सकुचाई । वन कैसे जायेगी वह कली जो वेश देख कुम्हलाई । राम पहनाने को उद्यत हुये गुरु वशिष्ठ ने वर्जनाकी, सिया राज लक्ष्मी है वह इसी वेष में तुम्हारे संग वन गमन करेगी, हे राम! मेरी आज्ञा है। कितना गूढ आशीर्वाद है, किसी भी स्थान पर जाओ वहीं तुम्हें राजा का सम्मान मिलेगा, निर्वासित थे राम, राज्य था कानन में भी, सच है, श्रीमान भोगत सुख वन में भी ।

दूरदर्शी राम गुरु वशिष्ठ की आज्ञा से समझ गये । घट घट के वासी अन्तर्यामी राम तो सारी लीला खेलना चाह रहे थे आसुरी प्रवृत्तियों का हनन करने, असुर निकंदन वन जा रहे थे । लेकिन पिता का स्वर्गवास होना था इसीलिये अपयश का सारा भार सौतिया डाह को सौंप दिया । बुद्धि की विलक्षणता कैसी, कार्य भी किया और सबको अपकीर्ति से बचाया भी। सोतिया डाह दूषित होगा । इसलिये राम ने सिया को माता कैकयी के आदेशानुसार प्रथम मिलन पर यह उपहार दिया था कि मैं एक केवल सियाराम

ही रहूँगा । दूसरी पत्नी किसी भी कारण के वशीभूत हो नहीं धारण करूँगा जैसा कि उस समय प्रचलन था। क्योंकि दो-दो तीन तीन पत्नियाँ रखने से कहीं न कही ऐसा कारण बन जाता है जिसका मानव अंत पा नहीं पाता जाल में पकडी मछली सा तडफ तडफ कर प्राण गंवाता है ।

राम कर्तव्य प्रेरणा देने वाली माँ कैकयी की आज्ञा शिरोधार्य कर बन जाने को चलते हैं। राज दशरथ सुमंत को आदेश देते है कि उन्हें वन विहार कराके अपने चातुर्य के बल से लौटा लाये । यदि राम लक्ष्मण न भी आयें तो सिया को तो अवश्य लाये, नहीं तो मैं राजा जनक को अपना मुँह कैसे दिखाऊँगा । यानि मेरा प्राणान्त निश्चित है । राम लक्ष्मण, सिया जैसे ही रथारूढ हुये कि सब अयोध्यावासी उनके पीछे पीछे भाग लिये, अयोध्या, मेरी मातृ भूमि अयोध्या, क्या वीरान हो जायेगी, नहीं कदापि नहीं, मैं जनता को इसका कारभार सौपूँगा, यही सोचते राम जा रहे थे । जीवन में कई ऐसे मोड आ जाते हैं जिनको जानते हुये भी अनजान बनना पडता है । कहने और करने में अंतर है , देखने और सुनने में भी अंतर है । लेकिन सत्य तो वही है जो तुमने करके दिखाया या अंतर चक्षु ने तुम्हें दिखाया । कहने को तो सब कह देते है कि निंदक नियरे राखिये आँगन कुटी छवाय ! बिन पानी साबुन बिना निर्मल करे सुभाव ।। लेकिन विश्व में कितने ऐसे मनुष्य हैं जो कडुवे सत्य को पी जाये । अबोध बालक को भी बुखार उतारने के लिये कडवी दवाई दो तो वह कभी नहीं पान करेगा लेकिन चुपचाप इंजेक्शन द्वारा उसमें मिश्रित कर दो तो वह एक बार तो जरुर हा हू करेगा लेकिन फिर उसके रक्त में मिल उसका रोग निवारण कर देगी । राम ने भी अयोध्यावासियों के लिये चिकित्सा ज्ञान शोधा । रात्रि के समय जब सब निद्रा मग्न थे तो सुमंत को रथ आगे बढाने का आदेश दिया और निशान रहित मार्ग पर अग्रसर होने को कहा । यहाँ भी गूढ तत्व है - निशान रहित यानि निष्कलंक पथगामी बनाओ मुझे । हे तात सुमंत । तुम पिता तुल्य हो, आशीर्वाद के सुमनों से सजाओ इस पथ को ताकि ढूंढ भी न पाये कोई और काम भी बन जाये । सकाम प्रेम को निष्काम का रूप दे दो । नयन से ओझल हो मन में रम जाऊँ । मैं राम कहलाऊँ । मेरा कर्तव्य पूर्ण करने में सबको सहायक बना पाऊँ । एक

मानव अकेला कुछ करने में असमर्थ है । एकता जन समूह के गठन में शक्ति है । एकता की जीत है । आदि और अंत केवल अकेले है क्योंकि वे शिखायें है, धुरी है धुरी के उपर रथ टिका है । धुरी पर पृथ्वी टिकी है । मानव अकेला जन्म लेता है और मरता है । बाकी जीवन में हर समय उसे साथी चाहिये । साथी की महत्ता वर्णन करने में भी अग्र रामायण है ।

साधना

रथ पथ पर अग्रसर है । अश्व अपनी साधना में जुटे हैं । राम अपनी साधना में । मातृभूमि की गोद से बाहर जाने को अग्रसर । सुमंत राजाज्ञा पालन करने की साधना में तत्पर है । सीता लक्ष्मण साथ निभाने की साधना में निमग्न है । मातृभूमि की सीमा आ गई इन्हीं विचार में उतरते चढते । राम जयति जयति जन्मभूमि को नमस्कार करते हैं । वहां की माटी अपने उद्देश्य की सफलता के लिये संग लेते है । मां कौशल्या ने कुशलता का आशीर्वाद दिया था लेकिन भूमाता से राम सफलता का आशीर्वाद चाहते थे। नम्र हो - उन्होंने पृथ्वी माँ से मूक वंदना की । सुमंत अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिये माँ सरस्वती को पुकार रहे हैं ताकि वह उनमें इतना वाक्चातुर्य भर दे कि वह अपने उद्देश्य की पूर्ति कर सके । विश्व का हर प्राणी हर क्षण साधना में जुटा रहता है । साधना की आराधना हर क्षण हर पल सब जीवों को प्रेरित करती है । केवल कालका ग्रास की उसे जीत पाता है । निद्रामग्न प्राणी भी स्वप्नलोक में भ्रमता है । बनते सपनों के महल को देख प्रसन्न और उजड़ते लख अप्रसन्न होता है चाहे वह महल वास्तविकता से बहुत दूर हो लेकिन वह उसे पकड़ने को भागता है। वह जीव है निर्जीव नहीं । अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिये वह आराधना में लीन होता है । चोर भी यदि चोरी करने जायेगा तो वह इषदेव को मनायेगा खूब माल पानी पाने के लिये । मिलेगा कितना यह तो समय बतायेगा । दुःखी आदमी अपने दुःख भंजन के लिये नारायण को बुलायेगा लेकिन सुख के समय इतना इतरायेगा कि कण कण में व्याप्त को भी न देख पायेगा । महान शक्तियाँ कभी मुंह से नहीं बोलती अपनी महानता को, लेकिन बुद्धि सुबुद्धि स्वयं कह देती है । ऐसे ही महान शक्ति थे राम जिन्हें जग वंदन करता हैं। यह कहकर - सर्व आपदा हरण, सर्व सम्पदाप्रदप्रभु, जग अभिरामं, लोक

हितकारक रामं नमामि, रामं नमामि, रामं नमामि· रघुवंशनाथम् । वह राम सब प्राणियों से कितना सभ्य नम्र तथा आदर्श व्यवहार करते है । महानता की परिभाषा नम्रता व्यक्त करने में भी अग्र रामायण है । माना कि हर मानव महान नहीं बन सकता । सब राम नहीं बन सकते जो सबमें रम सके, लेकिन आराम के तो सब इच्छुक हैं। राम आराम के दाता है, उनसे झोली भर लो। हर परिस्थिति में मुस्काओ चाहे वह अनुकूल हो या प्रतिकूल। फिर चारों ओर आराम ही आराम है । कहने सुनने की क्या बात है । प्रत्यक्ष को क्या प्रमाण है । माना कि चांद व तारों की कोई बराबरी नहीं, लेकिन सदा एक रस टिमटिमाने वाले तारे, अंधेरी रात में पथिक को उतना ही सुख दे देते हैं जितना कि पूर्णमासी का चांद । क्योंकि तारे भी अंधेरी रात में उसी रूप से टिमटिमाते है जैसा कि पूर्णमासी का चांद । यह समानता की महत्ता है कि वह भी अमावस्या को चांद के गौरव को पा जाते हैं । राम तो तुम नहीं बन सकते पर स्वतः को तो आराम दो । विश्व में मत रमो पर स्वयं में तो रमो विश्व तुम्हारे में आ जायेगा, क्योंकि जल की हर बूँद में जल के सर्वगुण व्याप्त है । बूँद बूँद से घट भरता है । बूँद बूँद रिसने से खाली । कोर कोर खाने से पेट भरता है और भोजन की थाली खाली। यानि कर्म निष्फल नहीं है सफल है, थाली खाली तो पेट भर गया। कुछ खोया, कुछ पाया । सृष्टि का चक्र गोल चलाया, भूमंडल भी गोल बनाया । रोम रोम में रमनेवाली भावनाओं का व्यक्त करने में भी अग्र रामायण है । शरीर के रोम कितने हैं जान लेना दुसाध्य है फिर उससे भी गहन विषय उसमें व्याप्त भावनाओं को व्यक्त करना तथा हर जटिल से जटिल समस्या का समाधान करना तथा हर उलझन को सुलझाना अति दुर्गम है । उसे भी सुलभ बनाने में अग्र रामायण है । अवर्णनीय का वर्णन करने में भी समर्थ अग्र रामायण है । सागर के अंतिम छोर के मोती निकालने में समर्थ अग्र रामायण है । अंतस्थल के भावों को खेंच लानी वाली अग्र रामायण, क्यों न इतनी महान हो । जिसका मार्गदर्शक दीप रोम रोम में रमने वाला राम, दूरदर्शी राम, पारदर्शी राम, गंभीर सागर राम, आदर्श राम, दिशाओं को नहीं मन को भी जीतने वाला राम। मन की लगाम राम, मन का लगाव राम, जिधर देखो उधर राम, सर्वव्यापी राम, अयोध्या की सीमा लाँघ गये

राम और प्रवेश करते है अपने गुरुशाला के मित्र निषादराज की नगरी में, बालसखा से मिलने की इच्छा ने संदेश भेजा निषादराज को सुनते ही बाग बाग खिल उठे मनोरंजन के फूल । नगर प्रवेश वर्जित, बनवासी राम को। मिलने आये, उनके बाल सखा, अंग मिलन प्रेम का सबसे बडा उपहार आलिंगन पाया गुहराज निषाद ने । भेदभाव सब भाग गये दूर समदर्शी राम समव्यवस्क हो गये इस तरह लीन, सोचने को विवश हुई सीता सुकुमारी, विचार करे लक्ष्मण कुमार, संशय भंजन करने वाले उठे सुमंत, धन्य निषाद राज, सहपाठीकी मित्रता का इससे बड़ा कौनसा उपहार । चरणों को लिया प्रेमांसुओं से पखार । पथ के काँटे कंकर न तुम्हें चुभने पाये हे राम ! मुझे लेने दो बुहार । यहीं करो वास या मुझे लो साथ, मार्ग मैं दूँ बुहार । प्रेम में कितना बड़ा त्याग, सुगमकर दिखाया इस प्रसंग में ।

एक राजा यदि दूसरे राज्य में जाये तो वहां की राजा प्रजा दोनों भयभीत हो जाते हैं युद्ध के आंतक से, लेकिन मैत्री के भाव ने यहां विश्राम के लिये विवश किया राम को । सेवा में गुहराज की प्रजा खड़ी तैयार, पैसे से नौकरी करे सब लोग लेकिन यहाँ बिन पैसे चाकरी करने को जनता तैयार, कितना अलौकिक प्यार का मूल्य है । जयति जयति जन्मभूमि भारत भूमि प्यारी जहाँ खेले राम कृष्ण मुरारी ।

सखा मिलन, धरती का लाल

प्रेम मिलन, सखा मिलन की सतरंगी झांकी दिखाने में भी अग्र रामायण । प्रेम विह्वल गुह तो मानवीय क्रिया कलापों को विस्मृत कर राम के आलिंगन में तन मन की सुध बिसारते, पर राम मानव का आराम, प्रेम के सुरम्य मार्ग के कांटे भेद भाव निकाल फेंकते है। गुहनिषाद राज प्रेमाश्रुओं से उनके चरण पखालते हैं तो राम प्रेम यानि आनन्द की वर्षा करते हैं तो गुहराज भक्ति जो प्रेम का अंतिम रूप है, उसमें निमग्न हो जाते है । भक्ति परमानन्द, यहाँ भी देखो राम जीव का कैसा विश्राम स्थल है । आराम है, भक्तिभाव सखा के हृदय में परमानन्द देते हैं, जीत भक्त की हार अपनी मान, श्रद्धा के हार पहन मुस्काते है, सिया लखन, सुमंत देखते हैं, मधुर मिलन को । कुशलक्षेम के द्वार खटखटाये जाते हैं । गुहराज कहते हैं प्रभु आपके आगमन के बाद कुशलता तो स्वयं पधार गई पूछने का प्रश्न ही कहां । भक्तिभाव जाग्रत होगया । आपका तो नाम राम ही आराम है ।

अधिक क्या वर्णन करूँ । कहने में असमर्थ हूँ झाँकी का दर्शन नयन कर रहे हैं । मन तथा तन आनन्द निमग्न है । वाणी की इतनी शक्ति कहाँ जो व्यक्त कर सके इस अनुभव को । वीणा धारिणी सरस्वती की वीणा तो स्वयं झंकृत हो उठी गीत मधुर मिलन के गाने को । अब पूछो नहीं आज्ञा दो राग गाने को आप बताओ अपनी कुशलक्षेम के समाचार राम ! सखा, सुनो विचित्र कहानी को ब्रह्मांड में गूंज रही कर्कश वाणी को । सुनो समझो मधुर मिलन के राग को हटाकर विक्षेप के विकृत तार को, कैकयी के महान् त्याग और उपकार को । निंदा के काँटों पर सो गई माँ मेरी कीर्ति सुमन शैय्या पर पुत्र अपने को सुलाने को । राजसी सुख तज दिये राजा का प्रण निभाने को । मुकुट पहन बनता कूपका मंडूक राजा लेकिन पहना दिया ऐसा विश्व व्यापी मुकुट, मन जीत राजा मुझे बनाने को । बनवास मत कहो सुवास दिया माता मेरी ने मुझे । जनसाधारण से मिल सकूँ यह अवसर मिला मुझे । सब रम्य स्थलों का पर्यटन करने भेजा मुझे । इसीलिये एकाधिपत्य देता हूँ मैं माता कैकयी को। कैकयी नाम चाहे बदनाम कहो पर उस पर राम जननी की छाप है, भूलना न इसको । बोले सखा करबद्ध हो धन्य राम तुम हो । जननी सुखदायी निकल आये भू भार उतारने को । प्रेम विह्वल हुआ मैं भूल गया सुधि तन मन की । क्षमा कहना पूछ न पाया जलपान और विश्रामकी ।

हँस बोले राम माता पिता आज्ञा मान मैं आया बन को । तुम सबसे मिलने का सुअवसर पाया, तज राज सिंहासन को । मुनि वेषधारण किया, मुनियों सा आहार विश्राम है उचित इस अवसर पर मुझे । ले ले काँवरी भर लाये फलों से अतिथि सत्कार को । सूक्ष्म आहार, सात्विक विहार, शुद्ध रक्त का नशों में हो संचार, लक्ष्य बेध दे यह शुद्ध बाण हमारे उद्देश्य पूर्ण हो फिर मिलने आऊँ तुमसे यह हार्दिक उपहार दो मुझे विजयी बनाने को। रसलोभ में भ्रमर बन कैद न हो जाऊँ, कमल के कक्ष में । अंधकार की रात्रि जहाँ नहीं ज्ञान का प्रकाश रहे दिन रात में । भक्ति रस के कमल में वास हो मेरा जहाँ ज्ञान सूर्य चमके हर समय । कैदी न बन पाऊँ उस कक्ष में जहाँ सूर्य का हर समय प्रकाश हो । आनन्द हो उस आनन्दस्वरूप के धाम में । तामसी भोजन में नहीं वह शक्ति जो फलाहार में तृप्त होता है

तन मन इस आहार से क्योंकि माँ पृथ्वी विश्व व्यापिनी देती है अपने जीवों को यह भोजन प्रेम उपहार में । माँसे भक्षण में क्या अधिक शक्ति है जो किसी जीव को नष्ट कर मिलता है उसके अभिशाप से ।

कुश शैय्या पर शयन करूँ यह अनुभव निराला है। छत अम्बर, बिछौना धरती मात की गोद पर, स्वच्छंद आकाश, स्वच्छंद धरती, स्वच्छंद सब यहाँ बोलने बतलाने को भिन्न राजमहल से यह अनुभव हमारा है लेकिन स्वतंत्रता में क्या सार है इसकी महिमा अपार है । अनन्त में अनन्त का वास है ।

कर कंद मूल आहार, राम कुश शैय्या पर शयन करते हैं, सीता सुकुमारी के पास में, लक्ष्मण सुमंत गुहराज गदगद हो रहे इस छवि को निहारकर, वीरासन पर बैठे लक्ष्मण उर्मिला भार्या शक्ति हृदय में धार कर। फल भेज चुके उर्मिला के कक्ष में आज के उपहार में । मन की खिन्नता खनक उठी लबों पे आने को, निंदा कैकयी की फूट निकली क्षीर सागर फाडने को, लेकिन बिंदु में सामर्थ्य कहां जो दूषित करे महान सागर को । वह विलीन हो जायेगी उसी में जिसे चली मिटाने को । राम तो कैकयी की प्रशंसा करते नहीं थक रहे थे भैया लक्ष्मण, बोले गुहराज मुस्करा के, सुख नींद कैसे सो रहे हैं सियाराम दूर सब प्रकार के विकार से । निंदा न ग्रहण करे किसीकी, स्तुति को मिल रहा इसीलिये आह्वान है । राम मानव धरती का लाल महान है वह मेरा तेरा नहीं सबका संचित प्यार है । आनन्द अपार है । जग अभिराम लोक हितकारक राम है, धरती के लाल की परिभाषा करने में भी अग्र रामायण है, सुनते ही गुहराज के वाक्य निंदा के तीर आतुर हो उठे तरकश में आने को वाणी गदगद हो उठी अनन्त को मनाने में । विचार विमर्श में रजनी शेष हुई । उद्यत हुये राम आगे जाने को । साधन तैयार करो सखा उस पार जाने को । नाव तैयार हुई, नाविक तैयार हुआ कुछ सकुचाकर बिलम्ब न करो केवट पार उतारो, बाधा वर्णित करो क्यों बिलम्ब है पार जाने में, पार ले जाना तो प्रभु कुछ कठिन नहीं, शान्त बह रही सुरसुरी धारा है लेकिन विचलित मन मेरा है । क्या धारा में, पत्थर नारी बन जाये ऐसा कमाल है चरण स्पर्श तुम्हारेमें । नाव काठ की मेरी उड़ गई यदि आकाश में तो कुटुम्ब पालन का अन्य साधन नहीं आता मुझे

इसलिये कैसे करूँ कुछ समझ नहीं आता । असमंजस में फँस गया निकालो बाहर मुझे । पराग चरण कमलों की धोकर तुम्हें बैठा लूं निसंकोच हो नौका में । धोलो चरण उतार लो धूलि दुविधा दूर करो मन तुम्हारे की । खुशी खुशी पार करो चलाओ नौका आराम की । कठौता भर जल लाया खूब धोये चरण कमल, छवि निहारी अपार की, जल छिड़का चारों ओर तर्पण पितरों को दिया । धन्य परिवार हुआ जहां केवट से पुत्र का जन्म हुआ जिसे भू भार उतारने आये राम को पार उतारने का संयोग मिला नौका में चढ़ाया सिया, राम, लक्ष्मण को, आग्रह किया निषादराज ने संग चलने को, वन का अनुभव है सखा पर्णकुटी बनाऊँगा, तुम्हारे रहने के लिये फिर वापिस लौट आऊँगा, अपने नगर को राजधर्म निभाने को ।

चुप सुमंत खड़े आग्रह न कर सके संग जाने का, उनके कंधों पर भार था राजाज्ञा निभाने का, घोडे हिनहिनाने लगे संग ले लो हमें मन्द मुस्करा दिये राम प्रेम निभाने को । बोले सुमंत हे राम ! क्या संदेश सुनाऊँ पिता तुम्हारे को, तुम्हारे वियोग में निसंदेह प्राण त्याग देंगे । शायद बच जाये यदि सिया चले हमारे साथ में, राजा जनक को मुँह न दिखा पायेंगे वह, यदि सीता पुत्री जाये वन तुम्हारे साथ में, विदा कराते समय वचन दिये थे राजा जनक को, वह खंडित हो जाये पिता तुम्हारे के । कोमलांगी सिया बन बन कैसे भटकेगी सुमंत उसे अवश्य लौटा लाना मेरे प्राण रक्षा की आधार शिला बनाने को ।

बोले राम पितातुल्य आप हैं क्या कहूँ मैं आपको, वयोवृद्ध होने के नाते अनुभव अधिक है तुम्हारे पास में । सात्वना दे पिता को सँभाल लेना, इसी खुशी से गये राम बन को । मनोमालिन्य का नामो निशान न था, उनके पास में । चरणकमलों में नमस्कार का संदेश भेजा है आपके लाल ने । कटु कुछ बोलने को उद्यत हुये लखनलाल, वर्जना का बंधन दिया राम ने । चुप हो रह गये लखन न पड़े रामके आराम में । संदेश सिया ने दिया। बार बार मेरा चरण वंदन कहना ससुर हमारे से । संकोच किस बात का माता पिता से अधिक दुलार पाया मैंने सास ससुर हमारे से । क्षमा करेंगे अपराध मेरे को । सेवा के समय तज आई मैं अयोध्या राज को । पति विहीन न जी सकूँगी, इसलिये स्वेच्छा से आ गई वन अपने प्राण बचाने को । धन्य उर्मिला है जो सहर्ष रह गई कर्तव्य-अग्नि में स्वयं को तपाने को ।

लौटे सुमंत खिन्न मन, घोडे लगे हिनहिनाने । हारे थके हो जैसे असमर्थ आगे कदम बढाने को । औषधि न लाया । मृतशैय्या पर तड़फ रहे राजन के प्राण बचाने को । क्या मुँह दिखाऊँगा सबको दिन के उजियारे में । हारकर जा रहा हूँ । चुपचाप प्रवेश करूँ अँधियारे में । जन जन को कैसे समझाऊँगा । राजा को तो मुख मुद्रा दिखाऊँगा । छाप देख वह भाँप लेंगे फिर धीरे से संदेश सुनाऊँगा । सुनते ही प्राण तजेंगे तडफते राजन, मैं स्वामी की वेदना न देख पाऊँगा । इसलिये झट महल से नौ दो ग्यारह हो जाऊँगा। संकल्प सुमंत ने अपना निभाया । स्वामी भक्ति का अपूर्व दृश्य दिखाने में भी अग्र रामायण है, यह कर्तव्य सुमंत ने निभाया, संदेश सुनते ही तडफडाने लगे राजन, देख न पाये चकवर्ती राजा को बेबस महलों से भाग आये । रानी कौशल्या के महल में राजा ने प्राण गंवाये । अबला कहते हैं जिसे वह सबला हो उठी समय की पुकार से । वीर अधीर हो उठे लेकिन धैर्य रखा कौशल्या नारी ने । प्राण तज दिये राजा ने, बहुत समझाया रानी ने । चारों पुत्र अनुपस्थित हैं, बुलाया राजगुरू वशिष्ठ को, कैसी होनहार है। होनी को नमस्कार है । गुरू वशिष्ठ जैसे तत्त्वज्ञानी ने भी इसका पार न पाया है । शकुन अपशकुन का भी विवरण देने में भी अग्र रामायण है । गुरू वशिष्ठ ने भरत शत्रुघ्न को ननिहाल से बुलाया है । अयोध्या की स्थिति मत बतलाना यह आदेश दे अनुचर बुलाने को भिजवाया है । लेकिन अपशकुन नृत्य कर रहे भरत मन में । कुशलक्षेम अयोध्या की के लिये जप रहे अपने इष्टदेव को, बार बार कर रहे शिव अभिषेक है । पहुँचे दूत, हो लिये संग, मन उद्विग्न था अयोध्या आने को । ननिहाल में संकोच वश न कह सके पितृ गृह जाने को । देर किस बात की थी जब दूत आ पहुँचे लिवाने को ।

हुये घोडों पर असवार, चलने को तैयार, कुशलक्षेम पाये अयोध्या में, लगे देवी देव मनाने को । अशुभकी आशंका के भय से पीडित मन भारत, आगे बढ रहे थे , लेकिन उन्हें उदासीनता के कारण कुछ सुहावना न लग रहा था । वन निर्जन लग रहे थे, कल कल निनाद करते निर्झर शोर गुल मचा रहे थे । जैसे तैसे मन को मनाते मंजिल पार कर भरत अयोध्या पहुँचे । ननिहाल से आये भरत की अगवानी करने को कोई उपस्थित नहीं। मूक वंदना के सिवाय उन्हें कोई स्वर सुनाई न दिया । आयो वत्स, आओ

ननिहाल में कैसे रहे सुनाओ, प्रश्न पूछने को कोई तैयार नहीं । समस्या के बिना हल कैसा, हल के बिना उपज कहाँ? उपज के बिना हरियाली कहाँ? हरियाली के बिना तप्त भूमि पर चल कर आये पथिक को चैन कहाँ ? ये सब चीजें एक दूसरे के साथ जुडी हुई हैं । घबराये भरत, महलो में घुसे लेकिन वहाँ भी सुनसान । माँ कैकयी स्वागत के लिये आरती लाई, लेकिन यह आरती, माँ भारती कहाँ - दुर्गा सा तेज आँखो में, सुसज्जित सदा आभूषणों से मेरी माँ कहाँ ? वह रूप नहीं वह रंग नहीं, अयोध्या की राजलक्ष्मी कहाँ ? उमड़ते उद्‌गार डुबो रहे समुद्र में, बचाओ भी कहने में असमर्थ निःसहाय खड़े भरत डग न भर पाये आगे को । देख पुत्र की मुरझाई मुख कान्ति को, पूछी कुशलक्षेम माँ कैकयी ने अपने मायके की और वर्णन कर दी सारी दशा अयोध्या की । सहायता मंथरा की से सब काम बन गया । राम सीता लक्ष्मण वन चले गये, तुम्हें निष्कंटक राज मिल गया करने को । लेकिन पिता न देख पाये इस उत्सव को, प्राण तज दिया पिता तुम्हारे ने । चारों पुत्रों की अनुपस्थिति में । सुन समाचार विलखने लगे भरत । भागे माँ कौशल्या से मिलने को । छाती से लिपटा लिया । अश्रुओं को पोंछ कर । स्तनों की दुग्ध धार से मुँह पोंछ शृंगार किया माता ने प्यार से । होनी के आगे जोर नहीं । पाँसा पलट दे वह क्षण में । जीतते खिलाडी को क्या कभी हार का अहसास आता है, लेकिन हार को जीतना ही विजय पताका है । पिता के शव का करो दाह संस्कार, पुत्र धर्म तुम्हें निभाना है। राम गये वन, माता पिता की आज्ञा मान, अब तुम्हें उन्हीं पद चिन्हों पर चल राज चलाना है । अयोध्या अनाथ हो रही उसे सनाथ बनाना है । राजगुरू वशिष्ठ के आदेश से सब धर्म निभाना है । उनके चरणों में शीश नमाना है। आ गये वशिष्ठ, धीरज दे भरत से दाह संस्कार यथोचित कराया है । पिता मरण हेतु सबको निर्दोष बताया है । दान धर्म देश काल अनुसार भली भाँति करवाया है । माता के वचन मान, गुरू आज्ञानुसार सब पिता का काम भरत ने भली भाँति कर पितृ ऋण चुकाया । लेकिन राज तिलक का प्रश्न आते ही भरत घबराया । हाथ जोड बोला- हे स्वजन, परिजन, गुरूजन, और देशजन, विवेक के जो नयन बंद हैं कंलक के अंधकार से । फल तोड़ लिया डाल से । सूख न जाऊँ कहीं मैं जोड दो पुनः मुझे राम डाल से । बचा लो मुझे, बचा लो मुझे , मिला दो राम से, ताकि सोच सकूँ मैं आराम

से । पथभ्रष्ट, पथ दिखा दो, मिला दो राम से, घर पहुँच सकूँ आराम से । कलंक से अंधे विवेक नेत्रों को प्रकाश दिला दो सूर्यवंश के राम से । उनके आदेश से सब काम होगा । मिला दो, बंधु राम से । बंधुत्व की कीर्ति उज्जवल हो इस संसार में । कलंक धुला दो गुरूदेव । मिला दो राम से । विश्व के एक पन्ने को सजा दो भरत मिलाप से । राम के आदर्श बंधु प्यार से । जनता जनार्दन के नये आविष्कार से । बालहठ को मिल जाये शायद कुछ उपहार में ।

जनता की महत्ता

राजा के अनुचित व्यवहार पर क्या जन साधारण को कुछ बोलने का अधिकार नहीं, भरत अपनी निरीह प्रजा को अधिकार वंचित कर उसका शोषण नहीं चाहता । वह राम भ्राता होने के नाते भरत नाम को सार्थक कर प्रजा का भरण पोषण चाहता है न कि शोषण । जन साधारण के कंधों पर ही राज की नींव है । राजा तो केवल उसका नियुक्त किया हुआ सेवक है, जिसे हर नागरिक की सुविधा का ध्यान करना है । राजा की शक्ति प्रजा है उसके हार्दिक सहयोग बिना राज का उत्थान कहाँ ? विवश प्रजा को मूक कर दो, राजधर्म का ताला लगा, लेकिन उनके भीतर की आवाज बुलन्द हो जाये दरवाजा खुलाने को तो वहाँ क्या होगा ? राज्य की शक्ति का ह्रास, राजा का उपहास । प्रभु पूछो जनता से वह राम राज के इच्छुक है, या बंधु विरोध की छाप लगाकर आयोध्या की नींव को खोखला करने को उद्यत है मुझे राजा बनाकर । सच्चे हृदय से पूछो मेरी प्रिय प्रजा से । क्या भरत मिलाप में मेरा सहयोग देंगे या राजा बनाकर मुझे निर्जीव करना चाहते हैं। निर्जीव राजा से प्रजा क्या आशा कर सकती है पूछो सबसे क्या सहमत हैं मेरे मत से । बन जाऊँ राम को मनाने, संग ले बड़ों को, बच्चों का काम बनाने । पीछे से संभाले अयोध्या राजा राम के आने तक, अनीति का चोर न घुसने पाये इस रघुवंश के घराने में । क्या जन साधारण तैयार है सुरक्षा का बीडा चबाने को । अपने भरत की मानसिक उथल पुथल मिटाने को । बिंदु को मिला दो सिन्धू से, सिंधू बनाने को । करुणा घट भर दो करुणा सागर में मिलाने को । जनमत दे दो मुझे निष्कलंक बनाने को । दर्शन राम का, सहयोग आपका ही आयेगा आ़ज मेरे काम में । राम-राज्य

की इच्छुक प्रजा, भेज दो मुझे अपना प्रतिनिधि बना राम के पास में, लिवा ला सकूं सुख चैन आपके पास में । जन मत कितनी अमोघशक्ति है एक राज की यह सिद्ध करने में भी अग्र रामायण है । जनता के हृदय का राजा कभी पराजय न पायेगा, बूँद बूँद से शक्ति का सागर भर जायेगा, बनसागर की थाह फिर कौन पायेगा। वह स्वतः राम राज्य बन जायेगा। भरत जैसा भाई कहाँ होने पायेगा, जिसने भ्राता राम का संदेश सुन लिया, मन की एकाग्रता की झंकार से । जनता के सुख हृदय बेल पर सींच दिया अमृत उत्साह का । जाग उठी जनता अपना प्रतिनिधि भरत को बनाने के लिये । तैयारी करो हो गई आज्ञा गुरू देव की बन जाने को । जय सिया राम, जय सिया राम, जय सिया राम । अथाह प्रेम सागर का पैमाना है अग्र रामायण । जितना खोजते जाओगे, उतना पाओगे, अंत पार नहीं है इस खजाने का । जीवन के हर पहलू पर रस बरसाने में अग्र रामायण है ।

उपयुक्त चयन

भरत के अपूर्व भैया राम । खेलत खुनस न कबहू देखी । हारउ खेल जीताऊँ मोही ।। जिन के लाड़ प्यार ने हार कर भरत भैया का मन जीत रखा था, उन्हें मिलने को आकुल हो रहे भरत कुमार । अयोध्या के राजा राम जिनके बिना सूना राज सिंहासन, पुकार उठा अपने महान त्यागी राजा राम को, जन जन के आराम राम को, मिलने को, सब हो रहे तैयार। सुख चैन पाना तो मानव का है स्वभाव, कौन उससे अपने को वंचित रखने को होगा तैयार । यह समस्या खड़ी हो गई महान किसको ना करे भरत कुमार। प्रजा को सुख से वंचित रखे यह माना जायेगा अन्याय । मौन साधे चरणकमलों में गुरूदेव के, पड़े थे भरत कुमार । उठो तात भैया से मिलने को हो तैयार। एक मत बहुमत व सर्वसम्मत इस पहेली को दो गुरूदेव सुलझा । वन चलने के कैसे सजे साज, राज सिंहासन देने को संग ले लो सब साज, आशीर्वाद दे मातायें लो उनको साथ । उपयुक्त सामग्री, उपयुक्त मानव सब चलें अपने साथ । अब पूछो जनता से, राम की मातृभूमि अयोध्या की रक्षा का कौन अपने कंधों पर लेगा भार । कौन कौन चले अपने साथ। बड़ी माँ कौशल्या संग उर्मिला नार हम दोनों भाई गुरूदेव आप और संग जनता के जो जो प्रतिनिधि उन्हें आज्ञा दो गुरूदेव आपका बडा होगा मुझपे उपकार । त्रुटि

यदि कोई रह जाये तो आप बालक अपने की भूल को लेना सुधार । राम लौट आये, ऐसा सजाओ साज ठीक बोले भरत कुमार, जनता का चयन होगा मेरे हाथ । लेकिन शोकातुर राज घराने को मैं न सकूँगा सँभाल । प्रौढ़ व्यक्ति शिक्षा दे समझा सकता है, लेकिन शिशु में वह प्राकृतिक सामर्थ्य है कि अपनी बालक्रीडा के बल बूते पर रोतों को हँसा रस में वात्सल्य रस का कर दे वह संचार । करो माताओं और राजघराने को तुम तैयार । बाकी जनता जनार्दन का चयन होगा महलों से बाहर । उसका सौंप दो मेरे कंधो पर भार । मैं उचित और अनुचित समझाकर उनको कर लूँगा तैयार । जय श्री राम । महलों के बाहर उपयुक्त चयन कर रहे गुरुदेव सँभाल । महलों में चले भरत कुमार, बडी माँ कौशल्या आप चलो बन में मुझे मिलाने राम। बड़ी छोटी यह पदवी कैसी, माता तो तीनों पुत्रों के लिये समान । यदि माता चाहिये तो चलेंगी तीनों साथ । पिता तुम्हारे की अर्द्धांगिनी तीनों समान। विषमता का यहाँ कहाँ काम । राम को लौट लाने की शक्ति रखती है कैकयी माँ । उसके बिना कौन पूर्ण करेगा यह काम । यदि ऐसा उचित है तो चलो, तीनों बन में हमारे साथ । उर्मिला भी चले अपने साथ। पूछ लो उससे क्या उसका है विचार । मूक वंदना में संलग्न बीत रहा समय आसान। मन मंदिर में विराजमान इष्टदेव को समक्ष पा मृगतृष्णा में भटक न जाऊँ मैं जाकर वन में तुम्हारे साथ । वन नहीं अयोध्या ही है मेरा संसार। विविध प्राणियों और विविध परिस्थितियों के लिये विविध औषधियाँ है तैयार, एक के जीवन रक्षा को यदि चाहिये संजीवनी तो दूसरे का विष भी है उपचार। देव अमर हुये करके अमृतपान तो सत्यं, शिवं, सुन्दरम् हुये शिव करके हलाहल विष का पान । नीलकंठ की शक्ति महान, जिसे पाने के लिये शैलजा पार्वती ने किया तप महान । संक्षेप में पढ़ लो मेरे हृदय की बात। तुम जाओ आनन्द से लौट आओ इन महलों के आलोक में हम समय बितायें। सुरक्षा का भार अपने कंधों पर उठाये । कोमलांगी नारी समय आने पर चट्टान से भी दृढ़ है । यह नारी का गौरवमय रूप भी दिखाने में अग्र रामायण है । विश्व को बताये । वायुमंडल में गुंजरित हो उठी उर्मिला के हृदय की झंकार । जाने को बन सब जनता हो रही तैयार। कर्तव्य परिधि में स्वतः बंध गई । गुरू आज्ञा पालन करने को करके हठ का त्याग । धन्य

उर्मिला नारी जिसने एक क्षण में भर दी उलझन की खाडी । सुगम हो गया मार्ग बन जाने की तैयारी । उलझी गुत्थी को सुलझाने में कितनी चतुर है नारी । यह समय समय पर प्रदर्शित करने में भी सफल अग्र रामायण । नारी बुद्धि की विलक्षणता की दाद देने में समर्थ अग्र रामायण ।

प्रकृति की देन

प्राणी यानि सृष्टि के सब जीव प्रकृति की देन हैं । काम सृष्टि की रचना की आधार शिला यानि हर जीवन में सब प्रकृतियां, विद्यमान हैं, दानवी और मानवी । लेकिन कौनसी प्रकृति का उत्थान है उसकी चरम सीमा पर और कौनसी का दमन । यदि आसुरी प्रवृत्तियों का प्रादुर्भाव अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाता है तो मानव ही दानव बन जाता है, यदि दैविक प्रवृत्तियों का उसमें उत्थान अपनी चरम सीमा पर हो तो वह देव है यदि दोनों प्रकारकी प्रवृत्तियॉं सम है तो मानव और यदि विषम संतुलन है तो जिन प्रवृत्तियों का पलडा भारी है उसी रूप में मानव यदि दैविक प्रवृत्तियों का अधिक्य है तो देव तुल्य श्रेष्ठ मानव कहलाता है । यदि आसुरी प्रवृत्तियॉं अधिक हैं तो दुष्ट बन जाता है । मानव तो सब मानव है लेकिन विभिन्नता उसकी विचार धारा है जिसको पढने में जननी होने के नाते प्रकृति सबसे चतुर है । वह मानव के रग रग में समाई है और नस नस को पहचान लेती है इसलिये तो भरत राम से मिलने जा रहे हैं उनके मन में सुविचार है तो प्रकृति अपना रंग राह में बरसाती है । किये जाहीं छाया जलद सुखद बही वर बात जस मग भयो न राम को तस भा भरतहि जात ।। अच्छे कार्य में प्रकृति पूर्ण सहयोग देती है । दुर्भावनाओं की उत्पत्ति होते ही वह उन्हें कुचल देती है जैसा कि गुहराज भरत के लश्कर को देख युद्ध करने तथा राह में रोड़ा अटकाने को उद्यत होते हैं, उसी समय एकवृद्ध के हृदय में सगुन उत्पन्न हो जाते हैं तथा बिना भली भाँति सोचे समझे आवेश में आकर कुछ भी कर बैठना अनुचित है । मेरा सगुन कहता है कि भरत राम से मिलने जा रहे हैं न कि उनको हानि पहुँचाने के उद्देश्य से ।

गुहराज चेतन हो गये, पता लगाने को देव समक्ष नहीं आता लेकिन वह भावनाओं में परिवर्तन कर देता है । तथा समयानुकूल हृदय कक्ष वातानुकूल कर देता है यह दिखाने में अग्र रामायण । विज्ञान कोई नया

अस्त्र नहीं वह तो प्रकृति की देन है जो अजर है, अमर है केवल रूपका परिवर्तन है ।

जैसे बालक कभी चाबी के खिलौने से खेलना चाहता है तो कभी अपने बनाये मिट्टी के घरौंदो से । कभी दूसरों के द्वारा संचालित यंत्र का आनन्द लेता है तो कभी अपने विचारों से बनाये घरौंदो में । आनन्द तो दोनो में ही उसको समान मिलता है तभी तो वह खेलता है । प्रकृति सदैव एक रस है वह न कभी नवीन न कभी प्राचीन । खेलना बच्चे के विकास का साधन है । चाहे वह किसी रूप में हो, साधन विभिन्न है लेकिन खेलने का अभिप्राय आनन्द एक है । आनन्द स्वरूप अटल है, अजर है, अमर है, नवीन है, प्राचीन है , आदि है अन्त है इतना सूक्ष्म है एक कण में समा जाये, इतना विशाल है कि कोई पकड न पाये उसे प्रकृत्ति कह लो- भगवान कह लो, जिस चाहे नाम से पुकारो, लेकिन वह अटल सत्य है जिसका वर्णन करने में भी अग्र रामायण । जिसे देख न पाये । युगों पुरानी त्रेता की कहानी है लेकिन आज भी उतनी ही रोचक है । इसमें विराजमान जीवन के सब सार, हर समस्या का समाधान देने में दो अक्षर "राम" है जिसका वर्णन करने में अग्र रामायण है । ढूंढते जाओ खोजते जाओ सब मिल जायेगा इसी अथाह सागर में लेकिन पार न पायेगा । अंत न हो पायेगा सदा लहरायेगा एक रस इस मानसरोवर का जल । सबको मुक्त करनेवाले देखो बँध गये मर्यादा की परिधि में, इसलिये कहलाये मर्यादा पुरुषोत्तम राम। त्याग दिया घर बार, सुख पा रहे बन में । लक्षण स्वयं कह उठे यह है राजा राम । घर जंगल में एक समान । बताने में अग्र रामायण । खड़ी तैयार, जय सियाराम । प्रकृति सिया । लक्षणधाम । लखन लाल के संग विराज रहे राम । जय राम जन जन के आराम ।

विजय की आधार शिला

युद्ध के लिये उद्यत हुये गुहराज ने अपना विचार बदल दिया, अब वे भरतकुमार से मिलने जा रहे हैं, दूध का दूध और पानी का पानी छानने को । लेकिन एकाकार हुये दूध और पानी को छानने की सामर्थ्य किसमें । कपट रूपी खटाई में । लेकिन यहाँ तो उस खटाई का लवलेश मात्र भी नहीं । यहाँ तो मिठास का समुद्र उमड़ रहा है, खटाई का क्या काम ।

समतल बहते सागर की लहरों में तूफान कहाँ ? अनुकूल दिशा में बह रहे जल में विषमता की विद्युत कहाँ ? गदगद हो गये निषादराज, संग चलने को तैयार । दिखा रहे मार्ग का सब स्थान जहाँ जहाँ किया राम ने विश्राम। प्रदक्षिणा कर रहे भरत कुमार उन पर्णशय्याओं की जहाँ सोये थे सिया राम, बेडे नावों के करके तैयार, सबको उतार दिया पार । इतने जन समुदाय को देख बनवासियों ने पहुँचा दी खबर अपने राजा राम के पास । आप जैसा स्वरूप वाला आ रहा एक अन्य राजकुमार । आये होंगे भाई भरत समझ गये क्षण में अर्न्तयामी राम । लेकिन इतना लश्कर क्यों लाये साथ । झट वीर रस से ओतप्रोत बोल उठे लखनलाल, सोचा होगा करूँ अकटंक राज, निकाल इस राम नाम के काँटे को बाहर । आखिर तो है कैकयी के लाल । क्या असम्भव को सम्भव कर सकेंगे भरत कुमार । जब तक राम का अंगरक्षक लक्ष्मण है उनके साथ । कुत्सित भावनाओं में मत बह जाओ, हम चारों भाई हैं एक ही जनक के कुमार फिर अन्तर कैसा चारों एक समान । राम भरत के भाई, भरत राम के भाई । हम चारों भाई कैकयी सबकी माता है क्यों भरत को यह विशेषता लगाई । वह पहले राम माता है बनी, क्योंकि मैं हूँ बड़ा भाई । भरत ने तो पीछे वह ममता पाई । क्यों कर रहे मुझे मेरे अधिकार से वंचित, कैकयी पर भरत के संग राम ने अपनी मुद्रा लगाई । भरत नाम के पुत्रों की जननी तो और भी मिल जायेगी लेकिन कैकयी सदा इसी राम की माँ कहलायेगी । क्या राम विष बेलि का फल है। कैसे तुमने मेरी माता को दूषित ठहराई । ले लो अपने शब्द वापिस मेरे भाई । छोटों के अपराध क्षमा करने में ही है बड़ाई । क्षमा बडों को चाहिये, छोटन को उत्पात । कहा विष्णु को घट गयो जो भृगु मारी लात । बल्कि क्षमाशीलता ने उनके गौरव को बढ़ा दिया सदा सदा के लिये । वह चिह्न उनकी छाती पर अंकित हो गया । क्रोध के आवेश में परशुराम जैसे मुनिराज न जान पाये, लेकिन विवेक के चक्षु से जब निरीक्षण किया तो बोले- राम रमापति कर धनु लेहू । खेंचहूँ तात मिटे संदेहू ।। भैया लक्ष्मण आवेश को त्याग विवेक नेत्रों से देखो अपने जीवन के लक्ष्य को । मत दोषी बनाओ किसीको । निर्दोष हैं सब । इस जीवन का ताना बाना इसी रूप में गया है बनाया । मानव हृदय का राज्य तिलक दिलाया माँ कैकयी ने, जिससे बढकर

न कोई और सिंहासन है, बह्मांड में, जिस पर माँ कैकयी ने मुझे बिठाया, ऐसी मेरी माता को वही दूषित करे जिन्हें यह राम न हो प्यारा। विमाता मत कहो ''वि'' हटा दो ''वि'' विकल्प खडा करना नहीं है काम आराम का। यदि जोडना ही है तो जोड दो 'स' शब्द माता के आगे, ताकि सुफल जन्म हो हमारा। यदि इस विकल्प के अन्तः भेद को मिटा दोगे तो विजय द्योतक होगा यह संकल्प हमारा। विजय की आधारशिला सुविचार है इसका दिग्दर्शन कराने में भी अग्र रामायण है। निर्द्वन्द्व मन सफलता की कुंजी है। एकाग्रता साधना है, साधना से ही सिद्धि प्राप्त होती है।

नाते रिश्ते

वैवाहिक सम्बन्ध कितना निष्कपट, निस्वार्थ तथा शाश्वत है इसे सजीव करने में भी अग्र रामायण। नरनारी वर कन्या, माया जीव किसी रूप में ही कह दो, वैवाहिक संस्कार के बाद जन्म जन्मान्तर का सम्बन्ध हो ही जाता है लेकिन दोनों परिवारों का भी कितना घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। वह किया नहीं जाता स्वतः होता है। यह सिद्ध करती है अग्र रामायण। अपनी कन्याओं के विवाह के पश्चात राजा जनक हर समय हर आगुंतक से कौशल देश की कुशल पूछने में नहीं चूकते थे। विदेह होते हुये भी अयोध्या की कुशलक्षेम के समाचार सुन दैहिक हो जाते और गद्‌गद् होते और इसके विपरीत यदि कोई अनीतिज्ञ समाचार मिलने पर विदेह देहधारी बनेंगे या न्यायधारी इस अनुभव का उनके पास पहले तो कभी कोई अवसर नहीं आया था, लेकिन एक भनक उनके कान अवश्य पड़ी थी जो उन्हें सुमधुर नहीं लगी। असुहावनी लगी। वह राम के राज्याभिषेक का समाचार और वह भी इतनी जल्द बाजी में जबकि भरत शत्रुघ्न ननिहाल थे और किसी नाते रिश्तेदार से भी बिना ही पूछे यह विचार उनके मष्तिष्क में कौंध गया था। वह परम ज्ञानी तो थे ही उन्होंने सोचा कि इतना बड़ा कार्य सबके परामर्श से ही होना युक्तिसंगत था। सहज पके सो मीठा होय। जल्दबाजी में किये कार्य में कई छिद्र रह जाने की संभावना है। राजतिलक एक बहुत बड़ा समारोह है जिसमें सबकी, जन की खुशी है, क्योंकि राजा प्रजा का प्रतिनिधि है उसमें सबकी सहमति हो तो राज एकछत्र निर्विघ्न होगा अन्यथा कहीं भी विघ्न होने की संभावना है। उन्होंने अपने इस विचार को समाधान

स्वास्थ्य के कंधों पर लाद दिया था । उन्होंने सोचा था राजा दशरथ का स्वास्थ्य शायद ठीक न हो इसलिये उन्होंने अपने इस उत्तरदायित्व को प्रजा के भार को राजा राम के कंधों पर सौंपने की जल्दी से तैयारी कर ली । शास्त्र कहता है कि शुभ कार्य को करने में देरी क्यों ? और गलत काम करने के लिये शोध आवश्यक है । काल करे सो आज कर आज करे सो अब । पल में प्रलय होगी फिर करेगा कब ।। ऐसा सोच राजा जनक चुप साध गये । प्रेम के इन कच्चे धागों पर विवेक का वट लगाकर मजबूत बनाने में भी सबसे अग्र रामायण । रिश्तेदारी के विषय में सद्बुद्धि रखना हर समस्या का समाधान है तथा इसके विपरीत विरोधाभास उलझन का मुकाम । सद्भावना से कच्चे धागे सुलझकर मजबूत बन जायेंगे लेकिन विरोधाभास से खिंचकर चटक जायेंगे, जय सियाराम, जय मर्यादा पुरूषोत्तम राम ।।

नैया की पतवार

एक ओर तो राजा जनक को राज्याभिषेक की सूचना मिली जिसकी त्रुटि का उन्होंने किसी से वर्णन नहीं किया केवल हृदयंगम कर अपने विचार सागर में ही उसका समाधान कर दिया । उधर झट उनको खबर मिली, राजा दशरथ के देहावसान की । बहुत विकट परिस्थिति हो गयी । चारों पुत्रों की अनुपस्थिति में । राजा राम माता कैकयी की आज्ञा से बनवास गये । सीता लक्ष्मण अयोध्या त्याग संग गये, राजा दशरथ ने इस वियोग में प्राण तज दिये । विषम परिस्थितियों के अथाह सागर को विवेक का चप्पू चला पार उतरने में दक्ष राजा जनक कोशलेश के प्राणान्त के समाचार सुन चुप साध गये । यह कैसी अनहोनी । राम की सबसे प्रिय माँ कैकयी जो हर समय ईश्वर से यह प्रार्थना करती थी कि यदि मैं कभी भी स्त्री का जन्म पाऊं तो राम सीता जैसे पुत्र और पुत्रवधू पाऊँ, भरत और मांडवी से भी अधिक वह राम सीता को समझती थी । क्योंकि मानव सदैव अच्छाई माँगेगा न कि नीचाई । यह मानव स्वभाव है कि वह सदैव उच्च वस्तु का चयन करेगा, फिर यह कैसे सम्भव है कि उसी माता ने उन्हें बनवास दिया । राजा दशरथ की रानियों में कभी विषमता का भाव नहीं सुना था । जहाँ द्वेष का कण भी नहीं था वहाँ मण केसे आया, समझने में असमर्थ राजा जनक ने अपने दूतों को भेजा अयोध्या वास्तविकता का पता लगाने। यह बात तो सत्य है

लेकिन थाह क्या है वह तल में जाने से ही मालूम होगी दूतों ने लौट कर समाचार दिया। राजा दशरथ का स्वर्गवास हो गया, राजा राम बन गये सीता लक्ष्मण के साथ। भरत शत्रुघ्न लौटकर आ ननिहाल से किया विधिवत दशगात विधान, अब माताओं और गुरूओं को संग ले राजतिलक का सब सामान साथ ले भरत कुमार गये बन, राजा राम का अभिषेक करने। वन के शुद्ध शान्त वातावरण में। मन की शुद्धि और शांति के लिये जहाँ रहते हैं तपस्वी वहाँ पहुँचे मनस्वी अपने भक्ति रस का प्रेम अलापनेको। वही प्रस्थान किया जनकराज ने देखने उस अलौकिक राज्याभिषेक को। वह सम्राज्य जिसे त्याग गये पिता वचन निभाने राजा राम। जनता का कथन है कि वह उसे दे गये भरत कुमार को लेकिन नहीं स्वीकार है सुनी सुनाई बात का, पिता ने नहीं दिया। मुझे चारों प्राणों से अधिक प्यारे थे पिता को, लेकिन बड़े भैया चलाये नैया, छोटों को ले साथ, यही है कुल का रिवाज। उलंघन नहीं होगा इसका, हमारे पूर्वजों का रिवाज। पिता ने कब सौंपा मुझे बोलो किसने देखा सूर्यवंश का यह अन्याय। दशरथ जैसे पिता राम जैसा भाई मानेंगे अवश्य जब मचलूँगा और कर लूँगा बालहठ तो मान जायेंगे राम लेंगे छाती से लगा। हे भैया अटल विश्वास होंगे राजा राम। माँ वनस्थली कह देगी बड़ों का छोटे से कितना अनुराग। छाती से लगायेंगे राम और विश्व विख्यात होगा नाम, भरत मिलाप, अस्त्र नहीं शस्त्र नहीं केवल प्रेम का व्यवहार लौटा लायेगा अयोध्या में राजा राम। विश्राम का चप्पू कर देगा इस विषमता के सागर को पार, जय जय दशरथ के चारों राजकुमार धन्य तुम्हारी जननी और धन्य यह भारत महान जहाँ खेले ऐसे बँधु जिसे वर्णन करने में सदा उज्वल रहें अग्र रामायण। प्रथम तुम्हारा नाम। जय प्रथम पूज्य गणेशजी महाराज। विचार धारा को सहारा दो जिससे निर्विघ्न हो सब विषयों पर संदेश देने में अग्र रामायण तुम्हारा नाम, गणपति लो पतवार को संभाल निर्विघ्न हो सब कार्य। जय गणपति महाराज। अग्र रामायण नैया पतवार सौंपी तुम्हारे हाथ। है यह एक प्रयास मान सम्मान का नहीं ध्यान। साहित्य के अथाह सागर में समर्पित यह एक भावनाओं का उपहार। सफल विफल करना गणराज अपका काम। उचित अनुचित का विश्लेषण आपके हाथ, कण कण में समा रहे आप गणेश महाराज।

राम, सबके हृदय का आराम को लग जाये चार चाँद यही आप कृपा कर दो गणपति महाराज ।

परब्रह्म परमेश्वर

घट घट के वासी अविनाशी पारब्रह्म परमेश्वर सूक्ष्म इतने कि कण कण में समा रहे, विशाल इतने कि सारे ब्रह्माण्ड का संचालन कर रहे । दृश्य ऐसे कि जहां न हो वहां पाओ । खूब रास रचाओ मन बहलाओ । अदृश्य ऐसे कि पल में छिप जाये और मानव ढंढने में असमर्थ अंधकार में भटक जाये । वज्र से भी कठोर पुष्प से भी कोमल, असुर निकंदन दुःख भंजन । दाता ऐसे कि जो मांगो वही पाओ अवर्णनीय प्रभु का वर्णन करने में भी अग्र रामायण । इस गुत्थी का सार राम विश्व का आराम, सबमें वास करता है, प्रेम के फाँस से बधा चला आता है, क्योंकि प्रेम में आकर्षण है चाहे तो देख लो इसे प्रयोग करके, कोई तुम्हारे आगे चल रहा है, तुम एकटक पीछे से उसे देखते रहो वह स्वयं मुडकर तुम्हारी ओर देख मुस्करायेगा, आकर्षण इतनी महान् शक्ति है कि एकनिष्ठ ध्यान से वह तुम्हारी ओर जिसे चाहो उसे ले आयेगा । फिर राम तो मर्यादा पुरुषोत्तम है वह अपनी सीमा कैसे छोड दे । असीमित होते हुये भी सीमित है । भरत मिलाप हो गया । राम भाई के प्रेम में द्रवीभूत है, भरत राज्याभिषेक का आग्रह कर राजा राम को अयोध्या लौटा ले जाने चाहते है । राम प्रेम के इस आग्रह को कैसे टालेंगे, क्योंकि भरत का समर्पण अलौकिक है । ठुकरा दो या प्यार करो, यह भ्रात तुम्हारा है, इन प्रेम के दो शब्दों में प्रेम का अथाह सागर हिलोरें मार रहा है । राम छलाँग मारकर लाँघ जाये इस सागर को या बंधु का हाथ पकड नौका विहार करे साथ में एक ओर कर्तव्य की बलिवेदी पिता का वचन पालना करना है । दूसरी ओर भ्रातृप्रेम को ठेस न पहुँचे ऐसा सेतु बनाना है जिससे अयोध्या का राजा दोनों नौका एक साथ चला पाये । सबसे सम्मति ली जा रही है इतने में जनक राजा के आगमन का समाचार मिलता है । विधना ने बहुत सुअवसर दिया है इस सभा को स्थगित कर राजा जनक का हार्दिक स्वागत करने को सब उद्यत हो जाते हैं ।

पूर्ण स्वागत के पश्चात वन में सब रम गये । तन की शान्ति भंग हो रही है अतिथियों को लौटने के लिये अपने मुख से कहना युक्तिसंगत न

समझ राम ने गुरू वशिष्ठ से नम्र निवेदन किया । प्रभु, इधर तो वन में सबको कष्ट हो रहा है उधर अयोध्या नगरी, मातृभूमि सूनी है । उसके चारों रक्षक यहां है इस अवस्था में क्या युक्तिसंगत होगा। आप सब बड़े जन जो आज्ञा करें मुझे शिरोधार्य है, निर्णय आपका मुझे निभाना है । गुरू वशिष्ठ बोले निर्णायक राजा जनक को बनाना है । अति कठिन है यह न्याय । प्रेम और कर्तव्य दोनों समतुल्य है । डंडी मारना न मुझे आता है । समझ गये राम । अतिथि के कंधों पर इतना बोझा रख देना कि वह झुक जाये यह किसने बताया है ।

सहोदर मेरा है मैं मनाऊँगा या मान जाऊँगा एक ही रूप है इधर या उधर । भैया चरण पादुका मेरे ले जाओ । सिंहासन पर इन्हें बैठा सुरक्षा करना नगर की इनकी आज्ञा से, तन पिता का वचन निभायेगा । मन तुम जीत चले । पादुका में वास मेरा पाओगे । जो आज्ञा आपकी शिरोधार्य है लेकिन अवधि के बाद एक दिन का विलम्ब मैं न सह सकूँगा । या आप मिलोगे इस तन से या प्राण निकल आयेंगे आपसे मिलने को । यह बालहठ है भैया । निभा देना अपने भरत की आन यह जल सब तीर्थों का जो लाया गया आपके अभिषेक के लिये उसे क्या आज्ञा है, यह किसी कूप में छोड़ दो । भरत कूप नाम होगा जिसका युग युगान्तर तक राम के वनवास के संग भरत कूप का वास होगा । वन में भी राम के साथ भरत का वास है। ऐसे अमोघ प्रेम का वर्णन करने में अग्र रामायण । पारब्रह्म प्राप्य है निस्वार्थ प्रेम को । भरत कूप का सम्मान आज भी है पतित पावन के नाम से, अजर अमर है भरत मिलाप का यह भरतकूप चिह्न आज भी । अवर्णनीय है, अदृश्य है, अजेय है, अमोघ है, निस्वार्थ है, एक रस है संतुलित है वह पारब्रह्म है । जयश्री राम अबोध का उपहास न हो । शरणागत वत्सल आपका है नाम ।

प्रकृति

प्रकृति के अंतस्तल में सब, भंडार भरे हैं । वह जीवन यापन के लिये भोजन प्रदायिनी है । रोग निवारण के लिये औषध-दायिनी, अष्ट सिद्धि नवनिधियों से पूरित हैं । अंतिम तह में भी लय है । वंदनीय होते हुये भी सहनशील, नम्र, आर्द्र, जीवन मात्र की सहायक प्रकृति है । प्रकाश की

पहली किरणों का स्वागत करती है भूमाँ । ग्रीष्म काल में सूर्य इतना अधिक तेज फेंकता है कि उसके जल स्रोत सूखने लगते है । माँ संतप्त हो उठती है, क्योंकि प्रकृति का नियम है "अतिसय रगर करे जो कोई, अनल प्रगट काठ ते होई" बिना मतलब तंग करना किसी को भी हानिकारक है । प्रकृति संतप्त है । मेघ वही बाष्प जो सूर्य भगवान मां के जलाशय से खेंच रहे थे उसे पुनः जल के रूप में वर्षाते हैं । माँ मुखरित हो उठती है इन संतोष बूँदों को पाकर । शस्य श्यामला हरी भरी हो मुस्करा उठती है । वनस्पति की उत्पत्ति प्राण-यापन के लिये होती है । कहने का तात्पर्य है, संतुलन सुखदायी है, असंतुलन क्लेशकारी । राम ने सबको संतुष्ट कर अपने अपने स्थान पर लौटा दिया । सब इस स्थान को जान गये पहचान गये । जब मन होगा चले आयेंगे । एकाग्रचित्त कार्य साधना में विघ्न होगा। लक्ष्य साधारण नहीं, असाधारण है, उसकी पूर्ति हेतु सेतु बाँधना है । यह सोच राम अब आगे बढ़ जाते हैं । अयोध्याकांड समाप्त कर अरण्यकाण्ड की ओर उनका पदार्पण हो रहा है ।

अपने पथ को निष्कंटक करने हेतु राम अब अरण्काण्ड में प्रवेश करते हैं । चित्रकूट से अब वह गोदावरी निकट आते हैं । अपने पिता के मित्र जटायु की सुरक्षा में रहने पंचवटी में निवास करते हैं । प्रकृति के नियमानुसार नारी का जीवन नीरस न हो, वह सदैव प्रसन्नचित्त और स्फूर्तिमयी रहे, इसमें जनकल्याण निहित है । इसके विपरीत उसके मन की खिन्नता, भिन्नता बन अडचन का रूप ले सकती है । राम अरण्यकाण्ड में अपने लक्ष्य की ओर चल रहे हैं । भाई लक्ष्मण और संग अर्द्धांगिनी सीता नारी है । नैया के संचालक राम भाई लक्ष्मण और सीता को अपने लक्ष्य प्राप्ति हेतु हर कोण से सहायक बनाना चाहते हैं । और सहायक भी कैसा स्वयं इच्छुक जिससे कहीं भी कोई त्रुटि की अकांक्षा नहीं हो सकती । कर्तव्य का बोझा लादकर बड़े भैया राम अपने अनुज लक्ष्मण और भार्या सीता से कैसे कोई काम ले । वह तो वात्सल्य और प्रणय के पुष्पों को सुवासित करें तो अत्युत्तम होगा । लक्ष्मण को वात्सल्य से राम, सीता के समक्ष भी सींच सकते थे, क्योंकि बड़े भाई की भार्या होने के नाते सीता लक्ष्मण की माँ तुल्य थी । माता तो वात्सल्य के रस में खूब अच्छी तरह

नहा सकती है । लेकिन प्रणय स्थल एकांत है । जहाँ केवल नर और नारी, प्रकृति और पुरुष, माया और जीव । आत्मा और परमात्मा का मिलन हो, ऐसे ही एक अवसर पर राम सीता का पुष्पों से अपने हाथों शृंगार करने में मग्न थे । चांदनी रात, निस्तब्धता और एकाग्रता तीनों का समावेश था । माया, ब्रह्म और जीव का मिलन जिसे संसारिक जीव समझने में असमर्थ । जयंत ने देखा! यह दृश्य- यह कैसे राम जो नारी में ले रहे पूर्ण विराम, क्या यही है भगवान, परीक्षा कर निर्णय लूँगा, करूँगा विश्व में इन्हें बदनाम, चोंच मारी सीता के पाँव में, बह निकला रुधिर हो गया घाव । तरकश में से मारा राम ने एक बाण। पीछा न छोडा जयंत का घूम लिया सारा ब्रह्माण्ड। देवर्षि नारदने बताया, बचने का सरल उपाय । जिसका बाण है वही ले वापिस, करो ऐसा उपाय, शरण में चले जाओ, शरणागत वत्सल है राम । चरणों में पड़ गया, रक्षा की प्राणों की, एक नयन कर छोड़ दिया । आभा में लग गया दाग तब हुआ कुभावना पे पश्चाताप । बिना सोचे समझे किये गये कार्य का यही अंजाम । जय सियाराम । आदर्शवादी आप सा न कोई, यह वर्णन करने में समर्थ अग्र रामायण । आपका नाम । मुक्त कंठ से प्रशंसनीय है । हे राम तुम्हारा नाम, यह गुप्त रहस्य है । हे राम आरम्भ हुआ अरण्यकाण्ड अब नवधा भक्ति का होगा गुणगान । जय सियाराम ।

अरण्यकाण्ड

प्रेम के विभिन्न रूपों का दिगूदर्शन है यह अरण्यकाण्ड । अवर्णनीय को कैसे वर्णन करें । गागर को सागर में भर लाना है । गणनायक आपका काम । तुच्छ प्राणी क्या करे इस रस का बखान । जहाँ बडे बडे ज्ञानी गये हार । तूलिका को आप लेना सँभाल । हे गणनायक महाराज । यह तो है केवल एक प्रयास । जीवन की संचरित पूंजी से दिया एक उपहार उचित अनुचित की मुहर लगाना जनता जनार्दन का काम दीपक जलाया, किसी काम आया या बुझ गया, आप लेना सँभाल । चरणों में आपके समर्पित है यह प्रयास ।

मुकाम, ठिकाना, ठोर, रहने का स्थान निवासस्थल की खोज में मानव कैसे आगे बढता है उसे विभिन्न क्षेत्र और विभिन्न प्रकृतियों का अनुभव होता है इसका दिग्दर्शन कराने में भी अग्र रामायण । मानव की दैनिक

अनुभूतियाँ और आवश्यकताओं पर हर दृष्टिकोण से प्रकाश डालने में समर्थ अग्र रामायण । यह राम मानव के आराम की आधार शिला को लेकर मानव के सब आवश्यकताओं का विवरण देती है केवल ढूंढने की देर है । पूछ कर देखो सही उत्तर तैयार है । जैसे किसी मनुष्य के पास देहली में अति विशाल भवन है लेकिन किसी कारण वश वह मुंबई आ जाये तो वह मुंबई में ही अपने रहने का स्थान खोजेगा । देहली का विशाल भवन उसके इस समय काम का नहीं क्योंकि उसे मुंबई में रहना है ।

पतिव्रत धर्म

इसी प्रकार अयोध्या में महल होते हुये भी राम वनवास में थे । उन्हें वन में अपना निवास स्थान ढूँढना था । चित्रकूट उन्होंने कारणवश छोड दिया था, अब वह आगे बढ़ रहे हैं सबसे पहले अत्रि के आश्रम में आते हैं, अतिथि सत्कार केवल राजा ही नहीं बल्कि हर मानव यथाशक्ति कर सकता है । सपत्नीक राम अत्रि के आश्रम आये हैं । प्रौढा होने के नाते सीता चरणों में सीस नवाती है, अनुसूया आशीर्वाद देती है । पतिव्रत धर्म की महिमा वर्णन करती है जिसे आज की नारी चाहे रूढिवाद कह दे लेकिन यह मन की भावना का एक बिन्दु गृहस्थ जीवन का सबसे बड़ा केन्द्र है जिसे किसी भी दृष्टिकोण से परखो सुखदायी है । परिपूर्ण, व्यथा भंजक है मनभावक है। उज्जवल जीवन की रेखा है। इसके विपरीत चलने से अनेकानेक बाधाएं आती है । नारी गृहस्थ जीवन की वह धुरी है जिसके ऊपर मानव जीवन घूमता है । यदि नींव कमजोर होगी तो भवन विशाल कैसे बनेगा । नर यदि पर्वतराज है तो नारी उसकी आधार शिला भू माँ, पुरूष यदि पुरुषार्थ है तो नारी उसकी प्रेरणा । नर यदि रत्नसागर है तो नारी उसमें मिलनेवाली शीतल, मीठी सुन्दर धारा जो पर्वत से निकलकर आती है यानि अपने पिता घर से आती है और सागर में मिलकर जीवन के बस राग अलापती है । राह का सारा विवरण सागर को अपने स्थल पर बैठे ही मिल जाता है । वह नारी यदि राह में भटक जाये तो सागर को वह गुमराह भी कर सकती है । लेकिन वह सागर में एकनिष्ठ भावना से चलती है । जीवन मधुर सरस और सुन्दर रहता है । गंगा का मिलन सागर से, गंगासागर कहलाता है, जिसे युग युग से पवित्रतीर्थ स्थल माना जाता है। । सगर राजा के मृतक

पुत्रों को मुक्ति दाता हुआ यह संगम कितना शक्तिशाली है पतिव्रत धर्म मानो या न मानो । यह अति सुन्दर तराना है । जीवन में कभी विक्षेप नहीं आता है । मानव जीवन धन्य हो जाता है । नर नारी का एकनिष्ठ प्यार। सब कष्टों का उपसंहार है तभी तो नारी को पुरुष अपने नाम से आगे नारी को मान दिलाता है । यह गंगासागर, जय सियाराम, जय राधाकृष्ण का नाम विश्व में जपा जाता है । अनुसूया सीता को पतिव्रत धर्म की व्याख्या बतलाती है लेकिन साथ में कह देती है । तुम्हें क्या बतलाऊँ तुम तो इस धर्म की मूर्तिमान नारी हो विश्व को इसकी महत्ता समझाने को बखाना यह नाम है । कल्याणकारी जीवन के धन संचय को जन साधारण तक पहुँचाना उद्देश्य हमारा है । यह तो जन साधारण के लिये दिया । अनुसूया ने अब सीता को घर आये का नाम का उपहार देने की सोची । पतिव्रत के तेज से अंतर्पट खोल उपहार ढूँढा । समयानुकूल अपने जीवन की सबसे बड़ी साधना दे दी सीता को वस्त्र दिया जो कभी मैला न होगा । लेप दिया जो लगा लेने से तन सदैव निर्मल सुवासित रहे । मैलापन कभी स्पर्श न कर पाये । भोजन दिया ऐसा खाने को जिसे खा क्षुधा अग्नि शान्त रहे, न सताये मन को देखो, भारत की महानता, जिसमें आज से युगों पहले ऐसी ऐसी वस्तुएं थीं जो अभी तक भी सामने नहीं आई । ज्ञान- विज्ञान, शृंगार शास्त्र किस चीज में नहीं मिलता ज्ञान हमारे प्राचीन भारत में । प्राचीन को नवीन कर देखो कह रही पुकार कर अग्र रामायण । हमारा भारत महान है, विशाल है । हर विद्या का भंडार है, हर क्षेत्र का भरणपोषण कर रहा । इसलिये गुरू वशिष्ठ ने शोधकर रखा भरत रामानुज का नाम है। कितना सुन्दर अलंकार है, छोटे भाई को दिया सबसे बड़ा विश्व भरण पोषण का सम्मान है । गृहस्थ नीति शास्त्र में अग्र रामायण का नाम है ।

अत्रि के आश्रम में सम्मान का आदान प्रदान कर राम आगे बढते हैं । मुनि सुतीक्षण जो अगस्त मुनि के शिष्य थे यहां राम की मानसिक पूजा में हर समय निमग्न थे । उनके हृदय में सीता राम और लक्ष्मण विराजमान थे । गुरू ने क्रोधित हो उन्हें एक दिन फटकार दे दी थी कि तुम मेरे आश्रम में तभी आना जब गुरूदक्षिणा में राम लक्ष्मण सीता को सदेह साक्षात संग लाना । मन माँगी मुराद मिल गई, सुतीक्षण मुनि विह्वल हो उठे । चरणों

में गिर पड़े । राम ने हृदय से लगाया । मन चाहा वर माँगने का अवसर दिया । मुनि बोले- प्रभु मैं क्या माँगू ? आपकी माया अपार है । जिस विशाल सम्पदा का मुझे आभास ही नहीं है, मैं क्या माँगू । आप जो दयाघन देंगे उसे पाकर ही सेवक कृतार्थ है । समझ गये राम वरदान दिया अविरल भगति बिरति विग्याना । होहु सकल गुन ग्यान निधाना ।। यह वर पा मुनि सुतीक्षण के विवेक नेत्र खुल गये, बोले प्रभु- आपने दिया और मैंने यह सिद्धि वर पाया लेकिन अब मेरी मनवांछा पूर्ण करो, यह वर दो अनुज जानकी सहित प्रभु चाप बाण धर राम । मम हिय गगन इंदुइव बसहु सदा निहकाम ।। तात्पर्य क्या कि मेरा मन आपका वासस्थल हो, ऐसा ही होगा। सुतीक्षण के आश्रम में आने से पहले राम ने कबंध नामक राक्षस का उद्धार किया । फिर सरभंग ऋषि जो राम के दर्शनों की प्रतीक्षा में अपने प्राण छोडने में विलम्ब कर रहे थे उन्हें दर्शन दिया। सरभंग ऋषि ऐसे पहुँचे हुये थे कि योगअग्नि से अपना शरीर छोड़ दिया। उनके मन के सब भेदभाव मिटा अपने में उन्हें लीन कर राम आगे बढे तब एक विचित्र अस्थि समूह देखा, जिसका विवरण पूछने पर पता मिला कि मुनियों को राक्षस लोगों ने भक्षण कर उनकी हड्डियों का ढेर लगा रखा है । इस वन में अनेकानेक मुनि थे लेकिन अब तो कोई दो चार गिने चुने ही बचे हैं । इस समाचार को पा राम ने प्रण किया कि 'निसिचर हीन करूं महि भुज उठाय प्रण कीन्ह । सकल मुनिन्ह के आश्रम जाय जाय सुखदीन्ह । अपने उद्देश्य की पूर्ति के हेतु राम खोज खोजकर सब मुनियों के स्थान पर चले जा रहे हैं । सुतीक्षण मुनि से मिल अब आगे बढे तो मुनि भी संग हो लिये । राम के पदार्पण से पहले ही मुनि को उनके आने की सूचना दे गुरू ऋण से मुक्त हो प्रसन्न चित्त आश्रम में प्रवेश किया । ऋण लेते समय मानव कितना लाचार होता है और ऋण चुकाकर कितना मुक्त होता है । यह तो सबके जीवन में घटित क्रीडा है । लेते समय हार का अनुभव और देते समय जीत का आनन्द आता है ।

कुम्भज ऋषि के आश्रम में जैसे ही राम ने प्रवेश किया मुनि अपने आसन से उठे और उन्हें मान सत्कार दे बैठने को कहा। कुम्भज ऋषि मुनि अगस्त्य अति तेजस्वी ऋषि थे जिन्होंने समुद्र को अंजलि में भर पी लिया,

उनसे अधिक योगी राज कहाँ मिलेगा ? इसलिये राम ने सुपात्र को पा अपने मन का रहस्य उनके सामने रखा, हे मुनिदेव । मुझे उपयुक्त निवास स्थान बताओ तथा असीम को शोषने का बाण बताओ। मुनि मुस्कराये बोले राम पहले प्रश्न का उत्तर तो अति सरल है । बोलो ऐसा कौनसा स्थान है जहां आपका वास नहीं । आप सर्वव्यापी हैं। फिर भी मैं बताता हूँ पंचवटी में वास करो । दंडकवन को शाप मुक्त कीजिये । इतना रमणीकस्थल होते हुये भी मुनियों के शाप से निर्जन प्रदेश है, केवल पशु-पक्षी ही रहते हैं या निशाचर मायावी विचरते हैं । शुद्ध साधुओं का वहाँ वास नहीं है । इसलिये पंचवटी का मर्मस्थल बींध रहा है । उसके हृदय की कसक को मिटाइये, अपने वासस्थान का नाम दे युग युग के लिये उसकी महिमा बढाइये ।

सिद्धियोग

अब द्वितीय प्रश्न हे लीलाधारी राम । शुद्ध सच्चिदानन्द आपका नाम। क्षीरसागर आपका धाम माया का वहां क्या काम । यह जग है मायाजाल। भ्रमित है जिसमें सब संसार सागर किसने शोषा किसने देखा यह केवल भ्रम मात्र । गम्भीरता ही है वह अंजलि जिसमें शोष लो सागर का जल आकार । एक में अनेक और अनेक में एक का वास । सब आपकी माया का जाल भ्रम का फैल रहा मिथ्या जाल । वास्तविकता खोज लो जीत लिया सब संसार । विष को देता है विष ही मार । मायावी को जीतने में देना अपनी माया का जाल फैला । मान मेरा बढाया, कठिन नहीं है आपके लिये कोई काम । जानते हुये भी अनजान बनो दो भक्तों को मान । भक्त वत्सल तुम्हारा नाम । स्वयं सिद्ध होते हुये भी दूसरों का बढाओ मान । करके ढींग मारे हर मानव लेकिन पी जाना आपका काम । आपसा कौन है राम । विश्व के आराम, जग में महान वर्णन करने में तुम्हारा नाम । अग्र रामायण का काम । जय सियाराम ।

अगस्त्य मुनि ने राम से पंचवटी की महिमा वर्णन की हे राम ! पंचवटी एक सुन्दर रमणीक निवासस्थल है । पास में गोदावरी जल है । शुद्ध पवित्र जलवायु है । रहने के लिये अति उत्तम स्थल है । शान्त वातावरण है । साधानों के लिये एकान्तस्थल है । बहुत से ऋषि मुनि वहां वास कर अपनी योग साधना में संलग्न थे लेकिन राक्षसों को चैन कहाँ । उन्होंने तरह

तरह के रूप रात्रि को धर उन्हें सताया क्योंकि दिन में तो दिनकर उनकी माया को हर लेता है लेकिन रात्रि में हिमांशु तारागण से अठखेलियां करता रहता है इस ओर ध्यान न ही देता क्योंकि रात्रि आराम और आमोद प्रमोद का समय है । इसलिये यह मायावी भी अपनी माया का प्रयोग करने में सफल रहते हैं । हर रात्रि के बाद दिन और दिन के बाद रात्रि का आगमन। सृष्टि का चक्र है । इसलिये इनके कष्टों से तंग आ मुनियों ने निर्दोष स्थल को श्राप दे दिया कि तेरे यहां वास करने से मानव क्लांत रहेगा, तू भूतावास है केवल पशु पक्षी ही निवास करेंगे व निजन रहेगा । हे राम ! आप समर्थ हैं, पंचवटी में वास करें । उसके हृदय की जलन निर्जनता को दूर करें । उसे सम्मान प्रदान करें कि यहां राम का वास है । सुनकर राम चल दिये उस ओर जो उनके लक्ष्य का साधन था । जिस लक्ष्य की पूर्ति के लिये राम ने अपनी प्रिय माता कैकयी को महलों में रहते हुये भी एकाकीपन के लिये बाध्य किया । वही माता जो चंचल थी । श्रृंगार प्रिय थी । मनमोहिनी थी आज एकान्त कक्ष में वास कर रही है। माता शब्द भी कान से सुनने के लिये तडप रही है । पतिसुख से वंचित हो वैधव्य की अग्नि में जल रही है। सेवा में केवल है तो कौन माँडवी, धन्य है भरत भार्या माँडवी जो हर समय अग्नि के पास बैठ तपस्या कर रही है । पति भरत पास में होते हुये परदेशी है । मिलने का नाम नहीं, सेवा का अधिकार नहीं । भरत की ओर से एक बूँद जल का काम नहीं । फिर भी एकनिष्ठ सेवा कर रही है ।

होनी चले अपनी राह

मेरी कैकयी माँ की, मेरी कार्यसाधना में पूर्णरूपसे सहायक है । अवध की सब नारियाँ ही एक से एक बढकर हैं, जनक की सब दुलारियां ही । लक्ष्य पूर्ण हो निर्विघ्नता से । इसलिये नये गृहप्रवेश के समय मना लिया मन के अन्तस्तल में गणनायक विनायक, गणपति महाराज को । पंचवटी आये राम । गणेश के नाम से प्रताप से प्रथम भेंट हुई राम की पिता के मित्र गीधराज जटायु से संरक्षक मिल गया मार्गदर्शन मिल गया कमी किस बात की, पिता का मित्र पिता के समान मिल गया वन में राम हुये पूर्ण काम । राम लक्ष्मण से पुत्र मिल गये । पुत्रवधू सीया समान । जटायु सम आज कौन भाग्यवान । दोनों पुत्र और पुत्रवधू की देख रेख में संलग्न जटायु।

खुशी से बीत रहे जीवन के दिन रात, आगे आ रहा अब काल मुनियों का श्राप । यथार्थ वचन उनका हो कार्य सिद्ध राम का हो वह आ गया अब अवसर महान ।

वन विहार करने आई रावण की बहिन शूर्पनखा विकल हुई देख राम के अद्वितीय स्वरूप को भूल गई सिया है उनके साथ कर अद्वितीय शृंगार छलने चली सत्य को कर कृत्रिम सौन्दर्य के उपाधान कर दिया पेश प्रस्ताव "तुम सा पुरुष न मो सम नारी । यह संजोग विधि रचा संवारी ।।" राम बोले तुम्हारा प्रस्ताव तुम्हारे लिये ठीक है लेकिन मेरे लिये आपत्ति जनक। मेरी पत्नी संग में है । मैं विवाहित हूँ । दो नारी नहीं चाहिये हे सुकुमारी मुझे । भाई मेरे से पूछ लो यदि वह मन भाये तुम्हारे तो । गई लक्ष्मण पास निर्लज्ज हो । रख दिया प्रस्ताव, बोले लखनलाल दास से तुम्हारा क्या सरोकार वह अयोध्या के राजा हैं समर्थ हैं जो चाहे कर सकते हैं । मैं उनका दास सेवा के लिये आया हूँ बन में, अकेला उनके साथ । दासता में कैसे होगा आपका निर्वाह । मैं दास हूँ कहाँ से लावूंगा तुम्हारे यह हारशृंगार। मेरे से नहीं होगा यह काम । जाओ उन्हीं के पास । राम ने जब किया इन्कार तो जाग गई सौतिया डाह । कर लूं इसकी नारी का भक्षण तो बन जाये मेरा काम ।। होनी चले अपनी राह, कर मूक विचार, राजा राम भेज रहे शूर्पनखा को फिर लक्ष्मण के पास । मदान्ध भूल गई बोली, चट कर जाऊँगी इन दोनों को निष्कंटक होगा अपना दोनों का राज । बोलो क्या मंजूर है यह प्रस्ताव ।

कर्तव्यच्युत कर रही मुझे, छलना सिखाये मुझे, ऐ मायावी नार । जिस सौन्दर्य के डोरे तू मुझपर रही है डाल । उसकी जड जब लूंगा मैं उखाड । नाक कान काट लूं निर्लज्जता तूने कर दी पार । नारी हत्या हम सूर्यवंशी न कर, रख लूं अपने को पराकाष्ठा में बाँध । परिधि उल्लंघन करना है अनुचित कार्य । जल स्थल दोनों अपनी सीमा में रहे तो दोनो का मैत्रीभाव सुखदायी है, प्राणी मात्र को नहीं तो प्रलयका आह्वाहन है विध्वंसकारक महान । लेकिन होनी को कौन रोके वह करे अपना काम चले अपनी राह। जय सियाराम ।

नारी प्रकृति

अपने सौन्दर्य की हर समय व्याख्या सुनने की हार्दिक इच्छुक नारी तरह तरह के हारश्रृंगार करने वाली नारी विविध प्रकार के वस्त्राभूषण धारण करनेवाली नारी उसमें भी शूर्पनखा जैसी मायावी चतुर नारी जो क्षण में अपना रंग रूप बदलने की कला में निपुण सौन्दर्य पर किये गये इतने बडे आघात को सहनकर सकती थी कदापि नहीं दो दो आघात एक संग, प्रणय के सुमन जो अपने हृदय थाल में सजो ले गई थी अपने वांछित नर के पास। उन्हें फेंक दिया नर ने अपने कर से उठा । हो गई यह तीर कलेजे पार, दूसरा किस अस्त्र से वार, सौंदर्य पर आघात विकल हुये नेत्र लाल, प्रतिशोध की भड़क उठी आग । हमारी ही वनस्थली पंचवटी में किया हमारा ही अपमान । नाक कान काट लिये । प्राण कैसे सहे इतना बड़ा अपमान । जड इनकी फेंक दूँ उखाड । तभी लूँ चैन की साँस । सोचने लगी उपाय, सीमा रक्षक मेरे भाई खरदूषण के पास आई भाग । सीमा रक्षक का भार सौंपा जाता है उसी के हाथ जो पूर्ण समर्थ हो रणकौशल में यह राजनीति का नियम है क्योंकि सीमा सुरक्ष की पदवी महत्त्वशाली महान ।

सचेत किया भाई को दिखा अपना हाल । मत सोना आ गया सीमा में शत्रु महान ले अति सुन्दर नारी अपने साथ नारी अद्बितीय है सौंदर्य में संग पराक्रमशाली भाई अंगरक्षक साथ । बहिन के मुख सुन अन्य नारी के सौन्दर्य का बखान, उत्कट लालसा हुई लूं ऐसे अद्बितीय सौन्दर्य को निहार। होगा अवश्य अपरम्पार । तभी तो एक नारी कर रही मुक्त कंठ से दूसरी नारी के सौन्दर्य का बखान, जो नारी स्वभाव के विरुद्ध है कह रहा सारा जहान । मोह न नारी, नारी के रूपा । पन्नगारि यह नीति अनूपा दुर्दशा कराकर भी कर रही जिनकी नारी का बखान, वह अवश्य कोई अनमोल रत्न है । उसे प्राप्त कर लूँ । ऐसी मन में ली ठान । युद्ध के लिये चल दिये खरदूषण संग सेना महान । मार्गदर्शिका शूर्पनखा भी साथ । बोल दिया धावा पंचवटी पर शत्रु को युद्ध के लिये ललकारा । निकल आये राम सौंप लक्ष्मण पर सीता का भार । अगस्त्य मुनि की विद्या से लिया काम । जहर को जहर से मारने की ली ठान । मायावी से युद्ध माया से करूँगा वहीं रहेगा उचित कर लिया विचार । समक्ष देख सुन्दर राजकुमार को समझ गये खरदूषण

इस रहस्य को, क्यों कटे शूर्पनखा के नाक कान । छुपा गई जिस बात को अंधेरे में, वह आ गई सामने सूरज के प्रकाश में । प्रेम के प्रस्ताव में हुआ है यह हाल । दोषी शूर्पनखा है पर छुपा ली असली बात । क्यों व्यर्थ मारूं इसे, लूँ नारी इसकी माँग । दूत भेजा शत्रु के पास, किया उपद्रव हमारी सीमा में, नारी दे दो तुम्हारी, लौट जाओ अपने धाम, नहीं तो सुर लोक है तैयार । बोले राम- सैर सुरलोक की ही चाहिये । पृथ्वी तो ली घूम कई बार, तुम करावो मुझे या मैं कराऊँ तुम्हें, मेहमान तो वहाँ जाने को बहुत तैयार । उठाओ अस्त्र देवता खड़े कब से अपने मेहमानों की जो रहे बाट। बिलम्ब मत करो, क्लांत हो जायेंगे तो न कर पायेंगे उतना उच्च कोटि का सत्कार । खुल जायेंगे मोक्ष के द्वार । राम से युद्ध हुआ आरम्भ, राक्षसों का दल अपार, सूर्यवंशी राम ने कर अपने इष्टदेव को नमस्कार । लिया अपने पितरों का नाम, सूर्यदेव सूर्यवंशियों के अधिष्ठाता है फैला दिया राम के चारों ओर किरणों का जाल । राक्षससेना को चारों ओर दिख रहे राम। आपस में लड मरे, हो गया काम तमाम । सूर्य उदय होते ही अन्धकार का होता है नाश, यह सृष्टि का नियम अपार। सत्य हुआ वचन राम का, सब राक्षसगण पहुँच गये सुरलोक, खुल गये उनके लिये मोक्षद्वार, क्योंकि सूर्यवंशी राम ने भेजा उन्हें सुरलोक, सद्गति प्राप्त हुई, देवताओं ने किया खूब सत्कार, क्योंकि राम आये थे उनके साथ । जीवन पथ की अंतिम मंजिल में चारों तरफ उनके अंतस्तल में राम रहे थे विराज । चारों तरफ देख रहे थे साक्षात् छवि राम की, जिसके दर्शन के लिये मुनि करते है योग दिन रात। अंत तपा सो तपा देखो, प्रभु की माया अपार । जिसका बार बार दर्शन कराने में समर्थ अग्र रामायण । तुम्हें बार बार मेरा प्रणाम । हृदय कमल में राम विराजे तो दुर्गति का क्या काम । सुख है वहां अपार, जहाँ राम का धाम । असुरों को पहुँचा स्वर्गधाम । राम लौट आये अपने धाम, जहाँ सीता लक्ष्मण रहे थे विराज ।

खरदूषण का देख संहार, क्रोधानल में जलती शूर्पनखा पहुँची रावण भैया के दरबार । स्थिति को भली भाँति समझ गये अन्तर्यामी राम । अब आरम्भ हो गया उनका काम । लक्ष्मण जब कंद मूल लेने गये बाहर तो सीता से राम ने लिया अपना कार्य करवा । बोले असुरों का नाश करने आया प्रिये मैं बन में ले तुम्हें साथ । तुम मेरी अर्द्धांगिनी असुरनिकन्दनी

दुर्गा माँ का है नाम वही तुम्हें करना है काम, बिना शक्ति के असुरों का नहीं हो सकता नाश। तुम्हें जाना होगा उनके पास तभी सिद्ध होगा मेरा काम। सिया सहयोग तुम्हारे के बिना अधूरे हैं राम। मंगलमयी कल्याणमयी को नहीं छू सकते, भस्म हो जायेगा उसी क्षण, निर्दोष पर कैसे चलाऊँ बाण। मर्यादा भंग हो जाये तो लग जाये कलंक, मेरा मर्यादा पुरुषोत्तम नाम अग्निदेव को सौंपता हूँ तुम्हें कृत्रिम सीता की रचना करो ऐसी जिससे भ्रमित हो जाये संसार। अंतर न पहचान पाये असुरराज। विडंम्बना को ले जाये अपने साथ। युद्ध के खुल जाये द्वार। नर नारी का पूर्ण सहयोग जीत सकता है जीवन के सब कष्ट रूपी असुरों को, यह निसंदेह है बात। देखते चलो दिखाने में समर्थ है अग्र रामायण यह राह, विपत्तियों को कितनी सुगमता से जीत सकता है यदि भ्रम का न फैले उनके जीवन में जाल अविश्वास और भ्रम यह गृहस्थजीवन के शत्रु महान। अंकुरित होते ही काट डालो इसे यह दाम्पत्य जीवन का है रोग महान। दुसाध्य होने से पहले यदि उपचार हो जाये तो समझो मौत के मुँह से बच गये, बडे थे हमारे भाग्य, जय सियाराम। विश्वास, निष्कपटता, इस रोग की औषधि बता रही अग्र रामायण तुम्हारे पास।

दावानल में दग्ध शूर्पनखा पहुँची सीधी रावण के दरबार। दिखाया अपना बुरा हाल। ललकारा रावण को युद्ध के लिये, मार उपालम्भ के असह्य बाण। तुम्हारे जीते हो गया मेरा यह हाल। ऐसे तेजस्वी राजकुमार आ बसे इस बन में, संभल जाओ, कहीं कर दे निशाचर कुल का नाश। मदमस्त हुये कर रहे तुम सुर और सुरा का पान। मदमस्त हाथी का चीटी कर दे नाश वह तो अति सामर्थ्यवान। अकेले राम ने खरदूषण को सेनासहित पहुँचा दिया स्वर्गधाम। तेज और सौन्दर्य का मैं क्या वर्णन करूँ। सुना नहीं देखकर आई सारा रणकौशल अपनी आँखो से। आद्योपांत सुनाया शूर्पनखा ने वृत्तांत, उनकी सिया के अनुपम सौन्दर्य का तो पहले भी सुन रखा था नाम। आंख ने देखा नहीं केवल सुना था कान ने उस नारी के अनुपम सौंदर्य का बखान। यदि ऐसी ही अद्वितीय है वह नार तो क्यों न मेरे महलों की बना उसे पटरानी बढाऊँ मान। सुत सब आज्ञाकारी हैं धन्य होंगे पा ऐसी माता महान, लेकिन विचित्र है यह एक समाचार। खरदूषण

का सेनासहित कर दिया अकेले राम ने संहार । मन के तार झनझना उठे रग रग में दौडा यह विचार । चेतना जगी, मधुर संगीत को सुन वास्तविकता का हुआ आभास। मन में सोचा "खरदूषण मो सम बलवंता, तिन्ह को मारहि बिनु भगवंता।।" यदि नर के रूप में आ गये चलकर नारायण मेरी सीमा में तो सब प्रकार से है कल्याण । भजन कर न सकूँगा यदि वैर कर लूँ तो हो जाये बेड़ा घर बैठे पार । शत्रु के ध्यान में हर समय लगा रहेगा ध्यान । यदि मरूँ उनके हाथों तो युग युग रहेगा नाम, जब तक भूमण्डल है तब तक अग्र रहेगा जीवों में राम का नाम तो मेरा अस्तित्व रहेगा उनके साथ । मित्र तो बहुत होंगे लेकिन समक्ष युद्ध में लोहा लेने को कौन तैयार। राम के साथ मेरा भी जुडेगा नाम । हर मानस है अच्छे बुरे का धाम, जो अधिक मात्रा में हो उसी के हिसाब से मिलता उसे नाम, जिसमें दुष्टता का अधिक वास, उसका दुष्ट नाम । सदाचारी का सज्जन है नाम । जय श्रीराम। अब चलूँ किस युक्ति से लूँ काम ताकि राम आये इस धाम । अर्द्धांगिनी उनकी लाऊँ चुरा, तो खोजते आयेंगे राम यहाँ, राम नाम का कितना प्रभाव, राक्षसराज कर रहा उसका मानसिक जाप मित्रता का नहीं शत्रुता का लेकर आधार ।

रमता राम

ब्रह्माण्ड के कण कण में रमने वाले राम, अपने पथ पर अग्रसर राम। सबको मान बाँट रहे राम, पर्वत नदी नाले पक्षी आदि सबको दे रहे पूर्ण मान सम्मान । जटायु पिता का मित्र, पिता है पुत्र का दे अधिकार । जंगल में भी पा रहे राम पिता का प्यार । नतमस्तक हो सब ऋषियों से पा रहे उनके जीवन के संचरित खजाने का सार । राम है कौन महान जानते हुये भी है अनजान । कर्ता स्वयं है लेकिन कहते नहीं कभी मुख से एक बार। लघु संज्ञा छोटा बन जाना कितना है महान । राम सीख रहे सब ऋषियों से विभिन्न युद्ध कला कौशल के ज्ञान, घर स्वर्ग है जहां ले सकता मानव चैन की साँस । नीडों में लौट आते पक्षी भी रात को लेने विश्राम, कुटुम्ब अपने में बैठकर क्या आनन्द आता है कह रहे राम । कुटुम्ब की क्या परिभाषा है वर्णन करने में अग्र रामायण । विस्तृत करो दृष्टिकोण विश्व तुम्हारा है । जुड़ जाओ विश्व से विश्व तुम्हारा है । तोड दो नाते तो कोई

न तुम्हारा है यह तन भी माल पराया है। श्री राम जुड़ रहे सबसे कर मान सम्मान का प्रदान तो जंगल में मंगल हो रहा रांम कर रहे जन कल्याण।

रावण युक्ति सोच अपने पथ पर अग्रसर हुआ। चला मारीच के पास। वेश बदलने में अद्वितीय था उसका ज्ञान। उपयुक्त पात्र उसे जान रावण पहुँचा उसके पास। कह सुनाई सब गाथा। कपट मृग स्वर्ण का बन जाओ। विलक्षण चीज संचय करने की सदैव से नारी का है स्वभाव। सीता माँगेगी तुम्हारा चर्म, राम आयेंगे लेने तुम्हारे साथ दूर लेकर निकल जाना। बन जाये मेरा काम। लेकिन आपत्ति उसमें एक है मान जाओ राक्षसराज, वह जन साधारण नहीं है महान। बालरूप में दर्शन किये विश्वामित्र के धाम एक बाण से सात कोश दूर फेंका था। छवि आज भी है याद, मुनि के यज्ञ की सुरक्षा भी की और व्यर्थ हत्या का भी न लगाया अपने को दाग। प्राण नहीं हरे फेंक दिया इतनी दूर कि साहस न होता अब यह मायावी करने को काम। भजन में लग गया ध्यान, छवि उनकी बस गई अंतस्तल के माँहि। वह परब्रह्म है वहाँ न चलेगा यह छल कपट का काम। शूपर्नखा ने ही की होगी कोई छेड़ छाड़ अन्यथा वह नीति प्रतिपालक कभी न करते नारी पर वार। मान जाओ, रावण लौट जाओ लंका, भूल जाओ यह बात, सुनकर मारीच के यह शिक्षाप्रद वाक्य गर्ज उठा रावण क्रोधित हो महान। आदेश पालन करो या प्राण की बलि दो। मैं नहीं आया तुमसे सीखने ज्ञान। प्राण हर लेगा यह राक्षस इससे तो भला मरूँ राम के हाथ। सद्‌गति हो जायेगी इस कपटी की भी क्योंकि अंत समय राम मिलेंगे पास। रुक रुक हर कोने से देखूँगा उन्हें सावकाश। नेत्र तृप्त होंगे उस छवि को निहार। मन विह्वल होगा, मरण के कष्टका न होगा अहसास। जीवन नैया को सौंप दूँगा खिवेयां के हाथ, बेड़ा होगा पार। बोला मारीच-मत मारो, करूँगा तुम्हारा काम। स्वामी भक्ति में तो लिखा जायेगा कम से कम मेरा नाम। प्राण तो दोनों तरफ से जाने हैं लेकिन मरता मरता कर जाऊँ मैं भी दो काम। तुम्हारी आज्ञा पालन करूँ अपनी सद्‌गति करूँ मरते मरते मेरे भी हो जाये दो काम। जय सिया राम। सामने नहीं आये राम। रम रहे थे मारीच के तन में रमैया राम। सद्‌बुद्धि कर दी प्रदान, स्मरणमात्र से देखो कितना कल्याण गुप्त रूप से दे देते दाता राम, उनसा कौन महान।

दिया भी नहीं, कहते दे देते सह कुछ जिसमें हो मानव कल्याण । राम के नाम में कितना प्रताप । समय समय पर बताने में कर रही अग्र रामायण काम। जय सियाराम ।

जय और पराजय

भूभार उतारने को हो रहे कमर कसके राम तैयार, जानते हुये भी बन रहे अनजान । सर्वसम्मति से मैत्री जोड राम बना रहे सबको अपना सलाहकार । कण कण को जोडने से संचित होती है शक्ति महान । त्रुटियां सब दूर हो जाती है, जब किसी भी कार्य का बीड़ा उठाने में लग जाती है, सर्व सम्मति की छाप, सिद्धियाँ स्वयं वहाँ आ जाती हैं, जहाँ सब प्राणी दे अपना हार्दिक साथ, सब राजनीतियाँ सफल होती हैं जिनमें दे जनता साथ । पराजय का वहाँ क्या काम, जहाँ सब लोग एकत्रित हो जुट जायें करने को जन कल्याण । रामशक्ति एकत्रित कर रहे, पशु पक्षियों तक को भी देकर सम्मान, उधर रावण स्वजनों की सलाह भी ठुकरा रहा है, दिखा अपनी शक्ति का अभिमान । मारीच हर लूँगा तेरे प्राण । यदि मेरी आज्ञा का तू करेगा अपमान । राम दे रहे सबको मान । रावण हर रहा सबका मान । शक्ति के डर से कर रहे उसका सब साथी काम । इधर प्यार में बँधे सब साथी कर रहे निर्भीकता से काम । प्रेम के बंधन में बँधा भँवर सूर्यास्त हो जाये तो भी कभी नहीं कमल की पंखुडियों से निकलने को तैयार, प्राण जाये या रहे वह कैद उसी में स्वच्छा से रहता जब तक खुल नहीं जाता कमल अपने आप । प्रेम बंधन में बँधे सेवक उत्सर्ग कर देंगे अपनी जान, बचाने को अपने स्वामी की आन, ऐसे स्वामी की सदा जीत है, जिसके सच्चे मीत है साथ । राम रावण युद्ध हर पल चलता है मानव अंतस्तल में। पर जीत वहीं है जहाँ सच्चाई का है वास । छल नहीं चलता, फट जाता है उसका आँचल होते ही सच का प्रकाश । तम स्वयं भाग जाता है जैसे ही सूर्योदय का फैलता प्रकाश । यह विधि का विधान, प्रतिदिन देख रहा जहान। इसमें नई नहीं कोई बतायी बात। नियमित चलते सृष्टि के जब तक सब काम तो उथल पुथल नहीं हो सकती । सृष्टि चक्र चलता है इकसार, यदि इसके विपरीत चले ते विध्वंस का होता आह्वाहन, राम नियमित जीवन पाल रहे हैं, उन्होंने पहन रखा है गले में जीत का हार । लोककल्याण ऐसे

आदर्शवादी जीवन का परिचय देने में अग्र रामायण समझो तो कर दे सबका कल्याण । सिद्ध हो सब काम । यदि राम बसे तुम्हारे धाम । जय का यह मंत्र है, जपना सीखने में है अग्र रामायण । सीख ले मानव हर क्षेत्र में, जीत है, पराजय का नहीं काम । जय सियाराम ।

अंतर्द्वन्द के रावण से कह दो धमकी से नहीं बनते काम । धोखा भी मिल सकता है इसका परिणाम । प्रेम की जीत है धोखे का वहाँ नहीं काम, यह राम बाण जीत का दे रही विश्व को अग्र रामायण । चलाकर देख लो अपने आप ।

मानव जीवन का ध्येय और गेह चरितार्थ कर दिखाने में अग्रगण्य मानव रूप में अवतरित राम का जीवन है । यह सार बताने में ब्रह्मांड में अग्र है रामायण । जीवन के लक्ष्य क्या हैं । जीवन यात्रा के विश्राम स्थल आराम गेह कहाँ हैं यथार्थता जीवन का यदि ध्येय हो तो सब ऋदिसिद्धि और शक्तियों का प्राणीमात्र का जीवन गेह हो । राम मानव बन विचरण कर रहे हैं संसार में हर पल और हर क्षण प्राणीमात्र के अंतर्द्वन्द में होता है राम रावण युद्ध । सत्यमेव जयते, सत्य की जीत और असत्य की हार है । भूले भटकों को राह दिखाने चले आये बन में राम । पशु पक्षियों में भी है शक्ति महान । न कोई छोटा न बड़ा सब हैं समान । यदि इसको कोई ले पहचान । राम नाम का ले आधार तो सम्भव सब विश्व के कार्य। राम का यदि जुड़ा हो नाता तो दानव भी उस पशु को नहीं खाता । कण में मन है । मन में सागर हिलोरे खाता । पार जाने का पुल बँधाया जाता। यह जग सारा जानता । राम मानव है मानवता का दिग्दर्शन दे रहे जिसे देखना सरल है, सुगम है । विचरण करने जा रहे हैं । सरल सुगम बना रहे सब जीवन की राह ताकि आनन्दमय सब जीवों का हो जीवन निर्वाह । कहते हैं प्यासा ही जाता है कुए के पास, कुआँ नहीं आता प्यासे के पास। लेकिन राम सा कौन महान, जो स्वयं चला जा रहा सबके पास ।

कृष्ण पूर्ण ब्रह्म है समस्त ब्रह्मांण्ड है, जिसको समझना है सूक्ष्म विवेक चक्षुओं का काम । वह पारदर्शी परब्रह्म है जिसे समझ पाना सर्व साधारण के लिये है कठिन काम, लेकिन राम तो है गृहस्थधाम, जहाँ विचरण करना हर प्राणी मात्र का नित्य नियमित दैनिक काम । इसीलिये राम मानवता

का आराम जिसे वर्णन करने में रामायण का अग्र नाम जय सियाराम । तुम्हारा धाम अग्र रामायण नाम ।

राम कृष्ण है कृष्ण राम

राम कृष्ण है कृष्ण राम दोनों है महान । कृष्ण कर्मयोगी बनाते हैं राम कर्मभोगी बनाते हैं । योग साधना के नाम से जन साधारण कठिनाई अनुभव करता है लेकिन भोग के लिये तो जीवन सदैव तत्पर है । मानवीय प्रवृत्ति की भोग लालसा है इसलिये मानव भागा चला आता है समझो तो लक्ष्य दोनों के एक है मानव को उन्नति की ओर अग्रसर करना लेकिन मार्ग दो है । कर्मभोग सरल मन को झट आकर्षित करनेवाला कर्मयोग जरा जटिल जहाँ जाते मानव घबराता है । कर्मयोग बहुत उच्च ज्ञान है जिसे व्यक्त करना साधारण प्राणी का काम नहीं केवल प्रयास है, कर्मयोग कर्म हर समय करो लेकिन उसका परिणाम निर्णायक के हाथ सौंप दो और जो वह दे, वह करबद्ध हो निर्द्वन्द सहर्ष ले लो तर्क वितर्क की कोई आवश्यकता नहीं । परीक्षा में जैसा लिखकर आये वैसे ही नम्बर आयेंगे तर्क करने से अधिक तो आयेंगे नहीं । कर्मभोग, ऐसे कर्म करो जिन्हें तुम भोग सको । जो तोको काँटे बोए वाको तू बो फूल । तोको फूल के फूल हैं वाको है त्रिशूल । कहने का तात्पर्य यह है कि जो जैसा करेगा वैसा फल मिलेगा। यदि परीक्षा में बैठा बालक प्रश्नों के सही उत्तर लिखकर आयेगा तो उसे अच्छे अंक मिलेंगे और अगली कक्षा में चला जायेगा, उन्नति की ओर अग्रसर होगा । इसके विपरीत यदि प्रश्नों के उत्तर ही मिथ्या लिखे तो पास होने का अवसर कहाँ ? वह बालक उसी कक्षा में बैठा रहेगा जिसमें था ।

कर्मयोग और कर्मभोग दोनों जीवात्मा को महानता की ओर अग्र सर करने के दो मार्ग है । लेकिन कृष्ण पारब्रह्म परमेश्वर थे वह नर नारी का एकाकार रूप ब्रह्म थे, तभी तो स्थान स्थान पर वर्णन है राधा कृष्ण है, कृष्ण राधा । वह नारी के वस्त्र भी धारण करने को तैयार थे, हर लीला खेलते हुये भी सबसे मुक्त । बँधन का वहाँ नाम नहीं था । वह भक्ति का साधन था, जहाँ से आवागमन अशेष । लेकिन राम मानव को सब बंधनों के अंदर जकड़े हुये सिद्धि मार्ग दाता थे । उनका अनुकरण युग युग तक मानव सरलता और आनन्द से कर गृहस्थाश्रम को भोगता हुआ भी आनन्द विभोर

है । राम मानव जीवन के आराम की नींव है वैसे राम कृष्ण है कृष्ण राम इसलिये तो भारतवर्ष का यह स्वर विश्व में आज गूंज रहा है हरे राम हरे कृष्ण जय सीताराम, जय राधाकृष्ण । यदि सारा विश्व ब्रह्ममय हो जायेगा तो संसार का संचालन कैसे होगा इसलिये नाते रिश्ते, राज काज, अस्त्र शस्त्र सबके संचालन की विद्यायें विलीन हो जायेंगी उन्हें युग युग में मानव नवीनता दे और कर्म करे इसलिये राम बनवास में रहकर राक्षस संहार कर अयोध्या लौटे और हजारों वर्ष राम राज्य किया जिसके आधार पर यदि विश्व चले तो सर्वत्र सुखशान्ति होगी । उनका उद्देश्य था राजा प्रजा का मालिक नहीं सेवक है । प्रजा के हर वर्ग की आवाज सुनना उसका काम है, इसलिये राजनीति का वर्णन करने में भी अग्र रामायण है । राम मानव रूप धरे परब्रह्म है । इसलिये राम कृष्ण है कृष्ण राम ।

राम सर्वव्यापी

राम सर्वव्यापी, सब जानते हुये बन रहे अनजान हैं । विश्व के हर प्राणी का जीवनयापन करने का सुखमय मार्ग बता रहे चलकर राम कहकर नहीं करके दिखा रहे श्रीराम । हर जीव, हर सगे सम्बन्धी को प्रसन्न रखे वहीं है बसता मानव कल्याण । तृष्णा मारीच कंचन मृग है जो सबके हृदय में बसे उसे उज्जवल करे सबके अंतस्तल की भाषा को पढ़े तथा मन माँगा वर दे ऐसे सामर्थ्यवान है श्रीराम । जिसका वर्णन कर रही अग्र रामायण, यदि समझ सके तो निसंदेह है मानव का कल्याण । राम पंचवटी में विराजमान है सब भूमिका तैयार कर दी । लक्ष्मण जब फल लेने गये बन में सीता को अग्नि में प्रवेश करा दिया । मायावी से खेलना है इसलिये माया में भी उन्होंने कल्याण की मर्यादा रखी, उसे अपयश नहीं सुयश किया प्रदान । अपनी भार्या का रूप दिया, क्योंकि सीता महारानी को रावण हरण करने में असमर्थ था । उसने मारीच को विवश कर कंचन मृग का रूप दिया। माया का सहारा लिया । माया भी मेरी बनाई हुई है वह हारे नहीं इसलिये उन्होंने अपनी प्रिय भार्या सीता को मायावी सीता बना दिया । एक साथ सबकी मनोकामना पूर्ण । राम सीता हरण चाहता है उसके लिये रास्ता बना दिया । मारीच श्रीराम के करकमलों से मरने की इच्छा लेकर आ रहा है उसकी इच्छा पूर्ण की, अब अपनी भार्या की इच्छा प्रबल की । उछलता

कूदता कंचन मृग आ पंचवटी में किलोल कर रहा है । मायावी सीता माया को न पढ़ सकी, पति से उस मृग को मार उसकी सुन्दर मृग छाला लाने का आग्रह किया । राम जानते थे कि सोने का मृग कभी जीवित मृग की तरह नहीं विचर सकता लेकिन बन बन में सहगामिनी सीता के आग्रह को वह कैसे टाले । तर्क वितर्क करने से पति के कर्तव्य में अन्तर आ जाता है । पत्नी का मन रखना पुरुष के लिये युक्तिसंगत है । इसलिये राम तरकश बाण ले मारीच के पीछे जाने को उद्यत हुये सीता की सँभाल का भार लक्ष्मण को सौंप । माया मृग के पीछे राम जा रहे हैं, वह मुडमुडकर राम को निहार रहा है । दूर राम को ले गया जब उसकी आत्मा तृप्त हो गई राम के दर्शन से तो रामने बाण मारा उसकी छाती में जिसके लगते ही राम उसके हृदय में विराजमान, सीता लक्ष्मण अनुपस्थित थे । तीनों की उस छवि का जो वह अभी पंचवटी में देखकर आया था उसे वह पुनः प्राण त्यागने से पहले देखना चाहता था । बस पुकारा हे लक्ष्मण, हे सीता यह ध्वनि सीता के कान में पहुँचते ही सीता हुई बेहाल क्योंकि अब मायावी थी इसलिये घबरा गई । लक्ष्मण ने समझाने की बहुत चेष्टा की कहा माता भ्राता पर कोई संकट आ नहीं सकता वह राम विश्व के आराम हैं, उनपर संकट कैसा । लेकिन सीता ने आवेश में आकर ऐसे कुछ कटु वचन कह दिये कि लक्ष्मण उन्हें छोड़कर जाने के लिये बाध्य हो गये लेकिन जाते जाते भी लक्ष्मण रेखा सीता के चारों ओर खेंच गये, बोले, माता हम दोनों भाई जब तक लौट कर न आयें आप कृपया इस रेखा के अन्दर रहना । बाहर नहीं आना । आप तक आने का कोई साहस न कर सकेगा ।

लेकिन रावण ताक में था, साधु का वेश धर भिक्षा हेतु आ खड़ा हुआ, चोरी के उद्देश्य से आया था इसलिये चारों ओर देखता जाता है कि कोई मुझे देख तो नहीं रहा । दुष्कर्म अपने को परदे की आड में छिपाता है । यानि साहस हरता है । इसके विपरीत सुकार्य करने जाता है मानव सहर्ष चौड़ी छाती कर सीना तान यानि शक्ति सत्य के साथ है । असत्य से दूर शक्ति नहीं जिसके पास, उसकी हार होना स्वाभाविक । मनोबल सबसे बड़ी शक्ति है जिसके सहारे मानव असम्भव को सम्भव कर देता है । लग्न और मनोबल साथ है तो फिर कमी किस बात की । उडनखटोले की कहानी आज

सत्य कर दी विज्ञान ने । वायुयान बनाकर अग्नि बाण बना दिखाया अणुशक्ति ने । अग्निबाण विध्वंसकारी है निरीह जनता का अहित है । इसलिये राम अग्नि बाण का प्रयोग न करके यदि राक्षस चला रहे तो मेघबाण चला उसे काट धरा को शान्त करते हैं समय समय पर शान्ति स्थापित करना महानता है इसलिये राम युद्ध के लिये किसी को नहीं ललकारते, लेकिन सुरक्षा हेतु सर्वसम्मति से युद्ध स्थल में जाते है । हर एक सैनिक का मान बढाकर युद्धस्थल में भी उन्हें आराम देते हैं, हर सैनिक जब अपना है तो, पराजय का क्या काम । हर मानव अपने जीवन में हर क्षण राम के दर्शन कर ले यदि वह जरा अंदर झाँकि, तो राम कहीं दूर नहीं वह सबमें है । मन यदि मानव के काबू में है तो दानव का वहाँ क्या काम । जहाँ राम आ गये वहाँ से रावण स्वयं भाग जायेगा । यानि सुविचार आते ही दुष्ट विचार भाग जायेंगे । कहने का तात्पर्य यह है सुविचार राम का रूप है, न्याय सत्य हर नातेरिश्ते को सुचारु रूप से निभाना, मर्यादा के अन्दर रहना कल्याणकारी है । रावण भिक्षा लेने आ गया, सीता आतिथ्य सत्कार जो भारतीय सभ्यता का लक्षण है उसे पूरा करने भिक्षा लाती है । रावण आगे बढ़ता है लेकिन यह क्या वहाँ तो लक्ष्मण रेखा अग्नि परिधि है । उसके अंदर रावण प्रवेश करने में असमर्थ । दूसरी चाल चलता है । हम बँधी भिक्षा नहीं लेंगे इस रेखा से बाहर आओ, यदि भिक्षा देना चाहती हो तो । वही सीता जो कभी अपने घरवालों की बात का उलंघन नहीं करती थी वह कुल की मर्यादा को लाँघ परिधि से बाहर आ गई क्योंकि वह अब असली सोना नहीं था नकली हो गया था । छल का रंग उसपर चढ़ गया था। प्रकृति सदैव अपने को परिधि में रखती है सागर कभी अपनी परिधि नहीं लाँघता । इसलिये धरा सुरक्षित रहती है लेकिन संसार को रंग दिखाने के लिये धरणी सदा अपने कर्तव्य को भूल गई । क्योंकि राम का आदेश यही था । प्रभु की इच्छा को कौन टाल सकता है । राम ने शक्ति को अग्नि प्रवेश का आदेश दिया यानि विरह-अग्नि जिसके लिये सीता अयोध्या में तैयार न थी जबकि उसकी तीनों बहिनें उसी दिन से सेवन कर रही थीं तपस्विनियां बनकर । उसी में सीता को राम ने प्रवेश कराया साहस का लेप लगाकर। प्राण नहीं जायेंगे सिया लौट आओगी और भी चमककर । खोट सब जल

जायेंगे, शुद्ध होगा स्वर्ण अग्नि में पिघल जाने से, प्रेम निखरता है विरह में से निकलने पर । उर्मिला का प्रेम नहीं है लक्ष्मण में, जो जी रही घर में। माँडवी क्या राजदुलारी नहीं है । भरत प्राण प्यारी नहीं है जो हर समय चरण दबा रही माँ कैकयी के । श्रुतिकीर्ति और शत्रुघ्न अयोध्या कीर्ति के हैं स्तम्भ । महलों में रह रहे दोनों, राजसी भेष में । कर्तव्यच्युत न हो जायें, एक दूसरे को नहीं देखते इस डर से । यौवन भँवर में न फंस जाये इसलिये नहीं निकलते एक दूसरे की डगर से । अयोध्या की नारियां महान है । वे शक्ति स्वरूप कर रही पुरुषों को शक्ति प्रदान है । अब पृथ्वी भार उतारने की शक्ति मुझ में समर्पित करो, दानवों के घर रहो वे अग्निबाण हैं उन्हें निशक्त करो अश्रुधाराओं के मेघ से शान्ति स्थापित हो विश्व में तुम्हारे इस कार्य से । विरह-अग्नि में चलते जब पैर डगमगाये तो देख लेना वहाँ अपनी तीनों लघु भगिनियों को क्रमानुसार से सबसे छोटी सबसे ऊपर । शत्रुघ्न भार्या श्रुतिकीर्ति जो महलों में रह रही पति संग तो भी दूर है । कमलसी जल में रहकर भी स्पर्श नहीं कर रही जलको, उसकी कीर्ति महान है । भरत भार्या माँडवी बैठी माँ कैकयी के पास में । लक्ष्मण भार्या महलों में रह रही लक्ष्मण के पास में । नींद को जीत लिया लक्ष्मण ने उसी शक्ति महान से । अब दानव संहार करे राम तुम्हारी शक्ति महान से नारी का सम्मान बखान रहे राम मुक्त कंठ से बताने में है अग्र रामायण जहान में ।

शान्ति का संदेश राम

विश्व में शान्ति का संदेश स्थापित करनेवाले राम को कभी भी अशान्ति किसी भी स्वार्थ हेतु नहीं थी अंगीकार । राज्य विस्तार वह नहीं चाहते थे किसी को युद्ध में ललकार । असुरों को भी नहीं वह कभी थे मारने को तैयार । लेकिन सत्य में यदि असत्य विलीन हो जाये तो उसमें क्या नुकसान । सूर्योदय होते ही तम विलीन हो जाता है । प्रकाशमय विश्व हो जाता है तम का हनन करने से ही प्रकाश । इसलिये प्रकाश और तम दोनों ले अपने अपने स्थान ।

न कोई बडा न कोई छोटा सबका अपना अपना स्थान । दिन रात यदि सूर्य तपता रहे तो क्या मानव नहीं होगा क्लांत । विश्राम और आराम के लिये रात्रि का होना उतना ही महान, इसलिये तो चंद्र सूर्य मिलकर करते

काम । दिन ढलता है स्वयंकाल को देता आवाहन । रात्रि व्यतीत कर भोर का होता प्रादुर्भाव । दोनों बेला में सूर्य चमकता रक्ताम्बर एक समय । उदय और अस्त दोनों समय उसका रूप एक समान । समानता में महानता का वास । राम असुरों को नहीं मारते वह ज्योति दिखाते उन्हें बार बार ज्योति में वह स्वयं विलीन हो जाते असुर निकंदन राम ।

विरह-अग्नि को सौंप रहे राम अपनी प्रिय सीता को । माया को दे दिया असली सीता का रूप ताकि मायावी खेलने आ जाये बाहर सीता हरण कर रावण उड़ रहा आकाश में, हा राम हा लक्ष्मण पुकार रही परबस बनी सीता माँ, पराधीनता में कहाँ आराम । फिर भी राम भी वहाँ कहाँ जहाँ नहीं आराम । गीधराज जटायु ने सुनी यह आवाज, यह पुत्रवधू सीता रही पुकार । तुरंत भागा वह विमान रोक लिया । रावण को युद्ध करने को हो गया तैयार, घमासान युद्ध किया, अंत में अपने पंख कटा हो गया लहू लहान । दृढ़ संकल्प किया तन छोड़ूँ मेरा जब राम को यह संदेश दूँ सुना, पक्षियों में भी कितनी सद्भावना है काया कष्ट से तडफता हुआ भी उद्देश्य पूर्ति के लिये जीने की है आशा । ऐसे दृढ़ संकल्पी जीव सब हैं महान ।

मारीच को मार लौटते हुये बोले लक्ष्मण से राम, उदासीनता छा रही है । हे लक्ष्मण ! मम मन सीता आश्रम नाही, जानते हैं तो भी स्पष्ट नहीं कर रहे । लक्षणों के आधार पर व्यक्त कर रहे राम जल्दी चलें, देखें, हो सकता है गलत हो मेरा अनुमान । यानि सत्य को भी असत्य मान रहे राम ताकि लक्ष्मण के मन को कष्ट न हो कि आज्ञा राम की त्याग मैं आ गया राम के पास ।

कुटिया सूनी थी । ढूँढा चारों ओर भैया ढूँढे भाभी को चारों ओर लक्ष्मण ढूँढे रेखा को । सीता नहीं है लक्ष्मण क्या ढूँढ रहे तुम ? एक प्रश्न का समाधान । पूछो मुझसे शंका करो निवारण ताकि आगे बढायें कदम । नहीं तो यहाँ फँसे रहेंगे उलझन में हमें सिया ढूँढनी है बन बन ।

भाभी की सुरक्षा के लिये यहाँ लक्ष्मण रेखा खेंची थी मैंने । वह ओझल हो गई कहाँ । कौन आया इस परिधि को लाँघ जहाँ अग्नि थी पहरेदार। रघुवंशियों का भैया मरण है वहीं जहाँ मिट जाये उनकी आन। इसी उलझन में फँसा हूँ । लुप्त हो गई रेखा कहाँ, परिधि को नहीं कोई लाँघ

सकता था । भस्म हो जाता उसी समय परिधि तो अग्नि थी, लेकिन दीवार मोम की थी वह निकली स्वतः बाहर इसलिये परिधि लुप्त हो गई किसकी सुरक्षा करूं अब मैं यहाँ । जब रक्षिता स्वयं आ गई मेरी सीमा के बाहर । भूल जाओ, अधिक मत सोचो यही था विधि का विधान, अब करने हैं बहुत से काम । शान्त करो मन को ढूँढते हैं शायद कहीं मिल जाये, उसकी खर खोज । गृहस्थ जीवन में नर नारी दोनों की महानता है समान । एक बिना दूजा बेकार । राम सीते सीते करते हुये विलाप करते जाते हैं पत्ते पत्ते से पूछते हैं पशुपक्षियों से पूछते हैं । स्थावर जंगम सबसे पूछते हैं क्या सीता तुमने देखी है । इस विलाप को सुन सब भ्रमित हो जाते हैं । संसारिक जीवों का तो कहना ही क्या सती जैसी शिव की भार्या भी भ्रमित हो जाती हैं । यह कैसा राम जिसे सदाशिव करे प्रणाम । यह तो कामातुर है जो नारी के लिये वन वन विलाप कर रहा है । लेकिन इस बनवास के जीवन में राम की तो बात ही छोड दो, अयोध्या में भी काम का वास नहीं था । सब तपस्या में जुटे थे । माया भी एक शक्तिहै जिसे तेजस्विनी माया ही काट सकती है । जहर को जहर ही मार सकता है । सती ने माया की, सती कट गई ।

राम बढते जा रहे हैं मार्ग में गीधराज मिला, राम उसकी दशा देख सीता को भूल गये, उसे गोद में लिटाया । पंख सहलाये, राम ने उसे आराम दिया । यह कैसे हुआ, पूछा तब जटायु बोला- हे राम ! सीता पुत्री को रावण ले गया, उसके साथ युद्ध किया मैंने मेरी पुत्रवधू को हरण कर रहा था । मेरा खून खोलने लगा निःसहाय पुत्री सहायता के लिये पुकार रही थी। युद्ध में एक बार तो मुझे सफलता मिलने ही वाली थी । मैंने चोंच मार मारकर रावण को बेहोश कर दिया । लेकिन जेसे ही मैं पुत्री को अपने कंधों पर लेने गया कि उसे होश आगया मेरे पंख काट दिये । मैं तुम्हारी प्रतीक्षा में अपने प्राणों की रक्षा कर रहा था । तुम आ गये समय पर मेरा जीवन उद्देश्य पूर्ण हुआ । अब प्राण तन को छोडना चाहते है । राम बोले- यह क्या ? बोला जटायु बस राम तुम्हारे जैसे पुत्र की गोद में प्राण छोड रहा हूँ इससे बडा मेरा कौनसा पुन्य जाग्रत होगा । मेरे मित्र दशरथ को चार चार पुत्र होते हुये भी किसी की गोद नहीं मिली और उसके मित्र को तुमने

गोद दी। मुझे अन्य कोई लालसा नहीं है। जटायु ने राम की गोद में ही प्राण छोडे और राम लक्ष्मण ने ही जंगल की लकडियां चुन चुनकर जटायु का अंतिम संस्कार किया जो राजा दशरथ को भी प्राप्त नहीं हुआ । वे तडफते गये राम की अनुपस्थिति में । यह चैन से गया राम की गोद में । पिता के मित्र के साथ क्या नाता होता है और उसे किस तरह निभाया जाता है, विश्व के इतिहास में इससे बढकर क्या कोई अन्य अग्रगण्य उदाहरण है जिसे व्यक्त कर सके कोई साहित्य । राम मानव जीवन के हर क्षेत्र में हर नाते रिश्ते को निभाने में अग्र है इसलिये उनका वर्णन करने वाली रामायण विश्व में अग्र है । प्राणी मात्र के जीवन की ज्योति अग्र रामायण ।

गीधराज का दाह संस्कार कर राम आगे बढ़े तो उन्हें एक विलक्षण प्राणी दृष्टिगोचर हुआ । जिसके नेत्र से ज्योति निकल रही थी जो मार्ग में प्रकाश प्रदान कर रही थी लेकिन उसका मुख नेत्र तथा हाथ पाँव सब पेट में थे यानि प्राणी गठरी की तरह बँधा हुआ था । हाथ अति लम्बे थे जिन्हें फैलाकर वह जीवों को पकड़कर अपना उदर पोषण करता था । वह राम की ओर पकडने को लपका ताकि अपनी क्षुधा तृप्ति कर सके । विलक्षणता में कहीं न कहीं विशेषता छिपी रहती है । राम उसे खोजने लगे, यह तो शाप से ग्रसित कबंध है जिसके अंग प्रत्यंग गठरी की तरह बँधे है । बहुत बंधन में जकडा हुआ जी रहा है । दु:खभंजन राम ऐसे प्राणी को कैसे देखें, उन्होंने चट उसे बंधन मुक्त किया । शाप से पीडित उस जीव ने बताया कि मैं बहुत दु:खी था । हे राम ! आप धन्य हैं मेरा उद्धार किया । मैं बारम्बार आपको नमस्कार करता हूँ । आगे बढिये बहुत से जीव आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं ।

राम अब आगे चलते हुये शबरी के आश्रम में पहुँचते हैं । शबरी जाति की भीलनी थी लेकिन अपने गुरु के आदेशानुसार रामभक्ति में लीन थी । वह एक ऐसी नारी थी जो अपने गुरू के वचनों में दृढ विश्वास रखती थी । चाहे उसे कोई कुछ भी कहे लेकिन वह राम के आने की वाट में रोज मार्ग बुहारती पुष्प बिछाती । स्वागत की तैयारी में निमग्न रहती । वन के बेर चुनकर लाती उनमें से खट्टे मीठे चखकर छांटती अपने राम के भोग के लिये । गुरुजी कह गये हैं राम अवश्य आयेंगे तेरे स्थान पर । इसी

विश्वास में उनकी बाट जोहती अपना जीवन यापन कर रही थी, जिसके हृदय की वीणा के तार राम आयेंगे मेरे आश्रम में, हर समय आलाप रहे थे। वहाँ राम पहुँच गये। राम आ गये प्रेम विह्वल शबरी उन्हें अपने आश्रम में ले आई बैठने को आसन दिया। बेर खाने को दिये, खाओ राम यह सब मीठे मैंने चखचख कर रखे हैं। राम भीलनी के जूठे बेर खाने में अमृत का आभास पाते हैं। लक्ष्मण भैया, लो खाओ, यह बेर अमृत हैं अमर हो जाओगे, ले लिये लक्ष्मण ने प्रभु के हाथ से, आँख बचा पीछे फेंक दिये, जूठे जान के। सर्वव्यापी मुस्कराये जान के। अमृत तो अमृत रहेगा चाहे वह हो किसी भी पात्र में। यही प्राणरक्षा करेंगे तुम्हारी, रूप संजीवनी बूटी का धार के। खा लिये राम ने, फेंक दिये लक्ष्मण ने जूठे जान के। तृप्त हो गये राम, नवधा भक्ति का ज्ञान सुनाया उन्होंने शबरी को अपने मुखारविन्द से। पथ नौ हैं भक्ति के लेकिन लक्ष्य एक ही है आत्मिक संतोष, भक्ति की मंजिल जाने के ये नौ पथ हैं।

प्रथम भक्ति संतन कर संगा। दूसरी रति मम कथा प्रसंगा।
गुरुपद पंकज सेवा तीसरी भक्ति अमान।
चौथी भक्ति मम गुन गन करहु कपट तजि गान ॥
मंत्रजाप मम दृढ विश्वासा। पंचम भजन सो वेद प्रकासा ॥
छठ दम शील विरति बहु करमा। निरत निरंतर सज्जन धरमा ॥
सातव सम मोहिमय जग देखा। मौते संत अधिक कर लेखा ॥
आठव यथा लाभ संतोषा। सपनेहू नहिं देखे पर दोषा ॥
नवम सरल सब सन छल हीना। मम भरोस मन हर्ष न दीना।

राम ने आत्मिक शान्ति के कैसे सुन्दर नौ पथ बताये हैं। जहां राम हर समय बसते हैं, वहां कष्ट, द्वन्द, विकार आदि का क्या काम, वहां तो आराम ही आराम है। शबरी के हृदय में भी हर समय राम का वास है। इसलिये वह राम में एकाकार हो रही है। अब राम पूछते हैं सीता की सुधि शबरी से। शबरी कहती है, यहां से आगे जाइये पंपा सरोवर पर। वहां वानर राज सुग्रीव अपने मंत्रियों संग रहते हैं। शायद वे बता सकें।

शान्ति के दूत राम सर्वत्र विराजमान हैं, जानते हुये भी बन गये अनजान राम। अपनी भार्या का कर दिया बखान महान।

जीवन साथी कैसा अमूल्य है मानव जीवन में, इसे व्यक्त करते हुये फिर विलाप करने लगे राम बन बन में । नारद हो गये क्षुब्ध याद कर अपने श्राप को राम व्याकुल हो रहे अत्यन्त सीता वियोग में मालिक को कष्ट देना सेवक धर्म के विरुद्ध बात है उनसे मिल आऊँ । क्षमा माँग लूं अपने इस श्राप के लिये चरणों में गिर गये नारद पूछा प्रभो ! क्यों मुझे वंचित किया था आपने नारी के संग विवाह रचाने को । इच्छा अपूर्ण रह गई विवेक खो गया, दे दिया यह श्राप आपको । मुस्कराये राम, बोले- नारद! माया जीव, नर नारी यह उलझन है- सुलझन है गृहस्थियों के काम की, योगी यति जब त्याज्य बताये तो क्यों धारण करे इस विपत्ति महान को । मैं मानव हूँ आप मुनिश्रेष्ठ । इसलिये वर्जित किया आपको इस बंधन से । आप ज्ञान के भंडार हैं जिसकी सुरक्षा के लिये मानव घडे विविध प्रकार के पात्र को । नर नारी मिलकर करे सृष्टि की रचना इसलिये दोनों महान हैं । एक दूसरे का मान सम्मान रखने में ही आराम है । इसलिये मेरा नाम सीताराम है । अग्र नारी है सम्मान देना पुरुष का काम है । त्याग मयी नारी सब त्याग आई मेरे साथ है उसे खो देने में मेरा अपमान है । सीता संग आया अयोध्या से, लौटकर जाऊँ चौदह वर्ष बाद उसके साथ में, नहीं तो ध्वजा कैसे फहरायेगी जब कीर्ति न होगी उसके साथ में । अरण्य तो अब पूरा हुआ । ढूंढता हूँ चलकर अब किष्किन्धा में । जय सियाराम ।

अरण्यकाण्ड समाप्त ।

किष्किन्धाकाण्ड

श्री गणेशाय नमः ।। श्री शिवाय नमः ।। सत्य की लहराये जिस नैयापर पतवार । सब भँवर से बेड़ा हो उसका पार । राम सत्य के धाम । सच्चे व्यापारी, उधार का नहीं काम । इस हाथ से लेना उस हाथ से हिसाब चुकाना उनका उद्देश्य था महान । प्रेम का शबरी से किया आदान प्रदान । प्रेम से झूठे बेर लिये, अति मीठे बताये बढाया प्रेम से उनका दाम । नवधा भक्ति का दिया शबरी को ज्ञान, मिटा जाति पाति का घोर अंधकार । पूछ लिया सीता खोजने का मार्ग, बताया शबरी ने अपने विचार अनुसार । सच्चे हितैषी का मार्गदर्शन है कल्याणकारी इसमें नहीं दो बात । इसलिये चल दिये राम उस ओर जो शबरी ने मार्गदर्शन का दिया ज्ञान । ले चले, दे चले चुकता किया हिसाब । बढ़ रहे आगे राम विश्व के आराम दूर से देखा उन्हें आते । तेजस्वी थे वह महान । तेज अपार था । भयभीत हो उठा सुग्रीव। भ्रातृद्रोह से कंपित हो उठा, उसका तन बदन । बालि ने यदि भेजा इनको तो निश्चय प्राण जायेंगे । कैसे लड़ सकूँगा इस तेजस्वी से जिसके आगे नहीं ठहरती दृष्टि कैसे लडूँगा बोलो मेरे सहृदय मंत्री हनुमान । शीघ्र पता लगाओ यह कौन मानव है महान । कौन है ? कहाँ से आया ? सखा यह मित्र किसका ? कर देना इशारा मुझको, छोड़ इस पर्वत, भाग जाऊँगा अन्यत्र । प्राण बचाने तात । जय बजरंगबली संकट मोचन हनुमान हो गये तैयार पता लगाने को विप्र का रूप धार । सात्विक होंगे तो विप्र को करेंगे नमस्कार । छल कपट होगा यदि पास, तो न ठहर सकेंगे बजरंग बली के पास । रोग दोष निकट नहीं आये । हनुमान जब नाम सुनाये ।। जिसके नाम मात्र से सब मायावी काँपते हैं, भूत पिशाच निकट नहीं आवे । महावीर जब नाम सुनावे । उसके समक्ष खड़ा होने का साहस किसमें है । जो शुद्धहृदय हो । छल कपट पास न हो । उसका मेरे हृदय में वास हो । अपने इष्टदेव को कर प्रणाम । चल दिये हनुमान, करने सुग्रीव का काम ।

दूर से विप्र आया देख राम ने किया नमस्कार । आने का ध्येय दिया निष्कपट बखान, गद्गद् हो उठे हनूमान । लिया अपना इष्टदेव पहचान । हो जाओ इस तन पर दोनों भाई सवार। एक कंधे पर बैठाये राम विश्व के आराम, दूसरे पर शेषावतार लक्ष्मण हुये विराजमान । धन्य वीर हनूमान ।

धरा को उठाये शेष, जिस पर विराज रहे अशेष, वह दोनों कंधों पर शोभायमान । जय हनूमान । इस छवि को मूंद नयन लो निहार । तेरी शक्ति का क्या पार हे पवनकुमार । जिस पर विराज रहे शेष और अशेष एक साथ । अंजनी सुत से कौन महान जिसके कंधों पर रहा ब्रह्माण्ड विराज । हनूमान निरख रहे राम लक्ष्मण को, राम निरखे हनूमान को, जिसमें रहा शक्तियों का हर प्रकार विराजमान । पवनकुमार चले पवन की चाल । पैतृक सम्पत्ति है यह उसके पास । शंकर सुवन सत्यं-शिवं-सुन्दरम् का गुण उसको मिल गया जन्म के साथ, शक्ति मत पूछो कितनी मत पूछो माँ जगदम्बा की देन उसे अपार । लेकिन कहीं दुरुपयोग न कर ले एक अंकुश था उस पर ऋषियों ने दिया लगा । बल भूल जायेंगे तेज स्वतः नहीं याद आयेगा, वह तभी जागेगा जब उसे कोई लेगा जगा, राम बोले- अंजनी पुत्र तुमसा न कोई और महान । वह तभी है जब आप मुझपर रहे विराज । बोले समीर कुमार प्रभु आप है सेवक में । कँधों पर ले चलूं आपको उठा ऋष्यमूक पर्वत पर ले चलूं । दो एक से दुःख में व्यथित मेरे स्वामी उनको दूँ मिला तो शायद यह जीवन हो साकार । बोलो जय जय अंजनी पुत्र पवनकुमार । तुमसा और कौन महान जिसके कँधों पर परब्रह्म रहे विराज । जय सियाराम, जय पवनकुमार ।

एकात्मता ही मित्रता है

ऋष्यमूक पर पहुँचे हनुमान ले राम लक्ष्मण को अपने साथ । निर्भय हो स्वागत करने को आये सुग्रीव ले जाम्बन्त इत्यादि को साथ । स्वागत हमारा स्वीकृत हो हे नाथ ! मैत्री का राम ने बढाया हाथ । मित्रता में भेदभाव का क्या काम । दूध पानी सी मित्रता हो, मिलाकर जल को अपने में दूध रखता नहीं कुछ भेदभाव । वही रूप सरूप दे उसे अपने ही दाम में लेता बिका । पानी भी नहीं कम वह अग्नि पर रखते ही मित्र से पहले अपने आपको लेता जला । भेदभाव का सच्ची मित्रता में क्या काम । मित्रता इसी का नाम है, जहाँ अपना पर्वत के समान दुःख, एक तिनके के बराबर लगे और मित्र का तिनके सा दुःख पर्वत सा लगे, इसी का नाम मित्रता, जहाँ भेदभाव जाति पाति मोल तोल का नहीं विचार । एकाकार का नाम मित्रता है आडम्बर का नहीं काम जहाँ । जय सियाराम ।

हनूमान ने सुग्रीव और रामचन्द्र जी की मैत्री जोड़ी, अग्नि की साक्षीसे। अग्निदेव हर मानव में, हर समय, हर परिस्थिति में विराजमान है। अग्नि के बिना मानव निराधार है । अग्नि ही मानव जीवन की नींव है, क्षुधा अग्नि यदि न हो मानव में विराजमान, तो कैसे होगा उसके भोज़न का पाचन, रस न बनेगा भोजन का तो कैसे होगा जीवन यापन । अग्निदेव सच्चाई के सबसे बड़े प्रतीक हैं । कुंदन अग्नि में जलकर ही अपनी सच्चाई व्यक्त करता है, जानता क्या नहीं सारा संसार । अग्निदेव भोजन पकाकर मानव का पोषण भी करते हैं तो साथ साथ उसका दाह संस्कार उपसंहार भी । वह हर समय सबमें विराजमान है, इसलिये विवाह, मैत्री इत्यादि में इनकी साक्षी दी जाती है ताकि प्रीति की ज्योति उसके अंतस्तल में जगमगाती रहे, चाहे वह पति पत्नी हो अथवा सखा सखा हो । मैत्री भाव का गठबंधन हो गया सुग्रीव और राम में, अब देर किस काम में । बोले सुग्रीव - मित्र, कैसे हुआ आगमन तुम्हारा । सीता सुधि लेने मैं आया, बोले राम। हे राम! एक दिन मैं इस पर्वत पर बैठा था । आकाश में एक विमान से जा रही स्त्री ने कुछ अपने आभूषण दिये नीचे डाल । शुभ सूचक जान मैंने उन्हें रख लिया सँभाल । पूर्ण हुआ मेरा विचार, यदि वह हो सीता के भूषण । लाता हूँ अभी लो उन्हें पहचान । तुरंत मंगाये सुग्रीव ने । आभूषण देख राम यद्यपि गये पहचान, तो भी पूछते हैं लक्ष्मण से । देखो लक्ष्मण क्या ये सीता के हैं । धन्य, राम, तुम मानव अवतार के झनझना रहे सभी तार.। भूल करना पग पग पर मानव का स्वभाव लेकिन अपनी त्रुटि को स्वीकार करे वह मानव राम महान । श्रेष्ठ होते हुये श्रेष्ठता से अनभिज्ञ रहते राम । मानव मानव तो सब एक है लेकिन पशु पक्षियों को भी दे रहे पूर्ण अधिकार। जीवन मात्र को एकदृष्टि से देखे वह मानव है राम, सबका करे मान सम्मान। आमोद प्रमोद में न भेदभाव वह मानव राम । कूटनीति का करे व्यवहार। बल बुद्धि साथ भर जाये जहाँ अभिमान, नम्रता का मिट जाये नामोनिशान खड्ग ही खड्ग से ले काम । लोहा मेरा है विश्व में । वह मानव है दानव-अभिमान में फूल वह बन जाता विशालकाय । विवेक शून्य हो जाता लोहा लेकर भूल जाता केवल लोहे को काम लेता लुहार, उच्च नहीं उठ रहा क्योंकि हो गया विशालकाय । मुक्त गगन में नहीं घूम सकता । शनैः शनैः

डूब रहा जल में यह मानव बनकर दानव । लोहे का राज्य नहीं चल सकता कभी । सूक्ष्म बनकर सब हृदय में वासकर, शान्ति सुख दे हर जीव मात्र को, राम राज्य होगा अटल । बोले लक्ष्मण, भैया क्या बोलूं, भाभी के नुपूर या पायल होती तो शायद मैं लेता पहचान । क्योंकि चरण कमलों में करता था नमस्कार । मुखमण्डल से मेरा क्या काम, जो आपके तेज से था देदीप्यमान। सूरज के समक्ष देखना, क्या तुच्छ मानव का काम, वह भस्म हो जायेगा स्वतः जो करें ऐसी धृष्टता का काम । भाभी का मुखमण्डल नहीं देखा आज तक, यह आभूषण लूं कैसे पहचान । यह आपका काम है । आप समर्थ हैं, भैया राम । मेरी विवशता को देख क्षमा कर देना मुझे । मैं असमर्थ हूँ, यह आपका करने को काम । जय जानकीबल्लभ सीताराम ।

राम ने आभूषणों को पहचाना, बोले सखा सुग्रीव, यह आभूषण तो सीता के ही हैं । अपनी मित्रता होगी सार्थक यह शुभ लक्षण आ गये आपके हाथ में है । पर कुछ ध्यान करो किस किस ओर उडा जा रहा था विमान, जब फेंके सिया ने ये चिह्न इस पर्वतराज पर । शायद जा रहा था दक्षिण को लेकिन लूँगा मैं भूखण्ड की चारों दिशायें पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण के चप्पे चप्पे को छान । मेरे वानर भालू जायेंगे चारों दिशाओं में सीता माँ को खोजने । दक्ष वानर जायेंगे खोजने दक्षिण में सीता माँ को, सुधि लायेगा वह फल पायेगा । अपना आपको गँवायेगा जो त्रुटि करेगा परमार्थ के कार्य में । मेरी ओर से न कोई सजा है न इनाम । यह तो स्वयंसिद्ध है विधि का विधान, हे राम मेरे तेरे का जहाँ नहीं है भेदभाव, वहाँ आनन्द ही आनन्द है, जहाँ छल का नहीं मुकाम । तुम मानव बने स्वयंसिद्ध हो हे राम । अवर्णनीय का वर्णन करना क्या सुगम है काम । कण कण में बस रहे राम, जन के आराम राम, तुम्हें बारम्बार नमस्कार । स्वयंसिद्ध के लक्षण सब तुममें विराजमान जय सियाराम । मेरे कार्य सिद्धि का तो तुमने लिया सखा सुग्रीव बीड़ा उठाय । लेकिन अपनी आपत्ति को हृदय में लिया छिपाय । प्यासा जाता है कुए के पास न कि कुआँ आता है प्यासे के पास । यह मानव जीवन की सुन्दर परिधियाँ है यदि इन्हें ले मानव भली भाँति पहचान, तो बिन माँगे मिल जाये उसे प्रकृति से सफलता का बीज मन्त्र, यदि सुचारू चले वह चाल । वक्र चाल का है वक्र परिणाम । अपने कर्म को मानव

भोगता है । प्रकृति तो चलती अपने नियमानुसार । यदि छोड़ दे प्रकृति अपने नियम को तो प्रलय का होगा विध्वंसकारक नाच । कर्म भोगी सब है आज भी, थे कल भी और होंगे भविष्य में भी, यह अटल नियम है, करता नहीं किसी को माफ । नवीन प्राचीन होगा, प्राचीन नवीन यह घूमता संसार का चक्र महान, लेकिन सत्य सत्य है इसमें नहीं आता परिवर्तन लेश मात्र । बादलों से चाहे ढक जाये सूरज का प्रकाश, छँट जायेंगे बादल तो अधिक सुहावना लुभावना होगा सूर्य का प्रकाश ।

विश्वास प्रेम की आधारशिला

इसी प्रकार सत्य को भी, ढकलो किसी आवरण से तर्क की युक्तियों से बाँध लो जैसे कहते है तर्क करने में पडकर सत्य भी बनता छुई मुई है। लेकिन यह भी कितना सुन्दर अटूट सत्य है । छुई मुई मुरझाता है अपवित्र मानव करों के छू जाने से, खिल उठता है हाथ दूर हो जाने से । कहने का तात्पर्य है कि आवरण हटते ही सत्य द्विगुणित चमक उठेगा, तेज उसका मानना पडेगा, न मानने वाले को भी । मैं आया तुम्हारे पास अपनी प्यास बुझाने को । तुम तृप्ति जल देने को तैयार हो, लेकिन जल बाहर तभी खींच पाऊँगा जब उसका उचित खींचने का साधन जुटाऊँगा । तुम बोलो, क्यों नगरी से बाहर जंगल में तुम्हारा बास । प्रयत्न करूँ मैं कष्ट तुम्हारा मिटाने का ताकि विश्वास का साधन लग जाये मेरे हाथ । विश्वास की आधारशिला पर ही खड़े हैं सब प्रेम पात्र, सखा लो निहार । विश्वास के बिना प्रीति जायेगी डगमगा । प्रेम के सब नाते रिश्ते स्थिर हैं यदि विश्वास न डगमगाये, मित्र ऐसा मेरा विचार यदि जँचे तो मानो नहीं जँचे तो तोड़ दो । किसी को प्रेम में रस्सी से नहीं दिया जाता बाँध । चाहे वह नर नारी हो मित्र या अन्य कोई रिश्तेदार । सत्य प्रेम नातों को निभाने में विश्वास ही आता काम, भक्त विश्वास से पुकारे, चले आते नंगे पाँव भगवान, जय श्रीराम। धन्य तुम्हारे काम । पहले करते दूसरों के काम । पहले स्वयं नगद देकर पीछे लेते सौदा, ऐसे विलक्षण ग्राहक तो बहुत बिरले होंगे जहान में जो नगद नारायण देकर पूछते तक नहीं हिसाब, लेकिन तेज इतना जिसका इतना कि सौदागर लालच के वशीभूत हो तनिक विचलित नहीं हो सकता। सच्चा देता है हिसाब दिखा, देखो ग्राहक की कमाल जिसकी दृष्टि से नहीं

छुप सकता एक कण का भी हिसाब । बोलो जय सियाराम । मानवता के अग्र ग्राहक राम, विश्व में अग्र उनके पदचिह्न मानो न मानो हम तो कहेंगे विश्व में अग्र रामायण मानवता का सार । जय सियाराम ।

मैत्री का अर्थ

मित्र के कष्ट को हर प्रकार दूर करना मैत्री का सच्चा अर्थ है । हे सखा सुग्रीव ! आप इस तरह नगरी से दूर अपने मंत्रियों सहित इस पर्वत पर क्यों रहते हो । हे राम क्या कहें, यही तो सारी आपत्ति है । मैं और मेरे भाई बालि में अत्यन्त प्रेम था, हर समय, सुख-दुःख दोनों में साथ था । यह जानिये सहोदर होने के नाते सहृदयता थी । लेकिन विधाता उसे न सह सका । अकारण ही हम दोनों में अविश्वास का बीज रोप दिया । जिसका फल शत्रुता आया । वही भाई जो प्राण से अधिक मुझे चाहता था । जो मेरा प्राणाधार था वही मेरा प्राणहन्ता हो गया । प्रेम को निभाना भी ईश्वर का ही काम है । वह सर्वांगीण है घट घट का वासी है । बिगडी बनाना ईश्वर का काम है । क्षण में क्या परिवर्तन हो जाये होनी को नमस्कार है । जीव तो अपनी ओर से अपनी सुरक्षा का हर उपाय जुटाता है । लेकिन परमेश्वर क्या लुटाता है और क्या बचाता है । उसकी माया वही जाने । एक समय एक अति बलशाली दानव ने हमारी नगरी पर धावा बोल दिया । ललकार सुनते ही बालि बाहर आया, ताकि निरीह जनता को युद्ध से कोई कष्ट न हो । बालि नीतिज्ञ प्रजापालक शासक होने के नाते राजधर्म को भली भाँति निभानेवाला वीर, ज्योंही वह नगरी से लडने बाहर आया मैं भी उसका साथ देने निकला । नगरी का फाटक बंद करने का बालि ने रक्षकों को आदेश दिया और बोला जब हम दोनों बंधुओं से कोई लौट कर आये तभी भली भाँति पहचान कर द्वार खोलना क्योंकि आँख बंद कर अपने घर का पट खोलना आपत्ति जनक हैं । राजा की अनुपस्थिति में नगर को सुरक्षित रखना जनता का काम है । लडते लडते कई दिन व्यतीत हो गये । शत्रु के छक्के छूटने लगे तो वह बिल रूपी गुफा में घुस गया । लेकिन बालि भी कोई कम न था । वह युद्ध की सब विद्याओं में निपुण था । वह गुफा के अन्दर गया और मुझे बाहर खडा रहने की आज्ञा दे गया । पन्द्रह दिन युद्ध गुफा के भीतर चलता रहा । अचानक रुधिर की धारा बाहर आई । मुझे बंधु के

पराक्रम को जानते हुये भी भ्रम हो गया कि भाई मारा गया, अब वह राक्षस हम सबको मार डालेगा, इसलिये गुफा के मुख पर मैंने एक भारी पत्थर रखा और नगर को लौट आया। यद्यपि बालि प्रजा के हृदय पर विराजमान था तो भी उन्होंने गद्दी सूनी देख मेरा राज्याभिषेक कर दिया। कुछ समय बाद बालि आया, यह चरित देख उसका हृदय बदल गया। वह समझा कि राज के लोभ में मैं उसे मरवाना चाहता था। इसलिये गुफा के मुख पर शिला रख नगरी में अफवाह फैला दी कि बालि मारा गया। भोली प्रजा मेरे पराक्रम को जानती हुई भी विवश हो गई, इसका राज्याभिषेक करने। क्योंकि मंत्री जामवंत, हनूमान, फौजी कप्तान तथा कुछ अन्य पदाधिकारियों की सलाह से यह कार्य सम्पन्न हुआ जो इस कार्य में सम्मिलत थे उन्हें मैं नगरी से चले जाने का आदेश देता हूँ। मैं मेरी प्रजा की सम्मति से मेरे शासन की बागडोर हाथ में लेता हूँ। मेरा सर्वस्व यहाँ तक कि मेरी नारी तक बालि ने ले ली। मैं जान बचाने हेतु इस पर्वत पर रहता हूँ कारण कि ऋषि के श्राप के कारण बालि इस पर्वत पर नहीं आता क्योंकि यहाँ चढते ही उसकी मृत्यु हो जायेगी, ऋषि ने ऐसा श्राप दे रखा है। मैं, अपने जीवन की सुरक्षा के लिये इन सबके संग यहाँ रहता हूँ। सीमा पर जाकर शत्रु मित्र सबका भेद यही सब लाते हैं इसीलिये हनुमन्त ब्राह्मण का वेश धारण कर आपका भेद लेने आया। आपका तेज देख मैं भयभीत हुआ कि कहीं बंधु का भेजा हुआ, यह तेजस्वी वीर मेरे प्राणहरण को तो नहीं आ रहा लेकिन मेरी शंका का समाधान हुआ। मेरे मित्र आये, मेरी सुरक्षा के लिये।

हे सुग्रीव ! अब सबसे पहले मैं तुम्हारा काँटा निकालूँगा। तुम अपने भाई को युद्ध के लिये ललकारो। कारण कि अकारण किसी प्रजापालक राजा को युद्ध के लिये ललकारना वीरोचित नियम विरुद्ध है। तुम तो आपस के शत्रु हो चुके। शत्रुता के नाते भाई का निधन अन्याय नहीं। लेकिन प्रभु मैं जीवित अग्नि में कूद जाऊँ। बालि को युद्ध के लिये ललकारूं। क्षण में मुझें मार डालेगा। घबराओ नहीं सखा ! मैं वृक्ष की आड में खड़ा रहूँगा। तुम्हारे प्राणों की रक्षा के लिये। यह जीत तुम्हारी हार मेरी है।

सांत्वना का आधार

सांत्वना का दे आधार, राम ने किया सुग्रीव को तैयार । किष्किन्धा के द्वार पर जाकर उसने ललकारा ज्योंही बालि को गढ से बाहर आने को। समझाया बहुत उसकी भार्या तारा ने सुग्रीव में इतनी सामर्थ्य कहाँ जो आ सके आपके सामने । असमर्थ शत्रु जब आता लडने प्राणहन्ता शत्रु से तो जान लो उसके पीछे किसी का हाथ है । अंगद कह रहा था, चाचा के पास ले गया हनूमान दो तेजस्वी बंधुओं को अपने कंधों पर उठाकर । मान जाओ मत जाओ, यह ललकार मृत्यु का आव्हान है । भयभीत हो रहा हृदय मेरा, युद्ध में गये आप बहुत बार हैं लेकिन हृदय कमल ना कुम्हलाया आज तक एक बार है । अपशकुन हो रहे, ले लो नेक सलाह । ऐ सबल पति अपनी अबला नार से । क्यों, कुंठित क्यों हो गई, तुम यदि ले गया हनुमान दो अतिथि उसके द्वार पर । क्यों बनेंगे वह उसके मददगार । क्या शत्रु मेरे हैं? बताओ इस भेदभाव को । मानवता के विरुद्ध जायेगें तो फल मिलेगा उनको अपने अनुचित कार्य का । कायर कहलाऊँ निन्दित हो जाऊँ यह आत्महत्या है । भटकता जीव नतमस्तक हो संसार में । मरण हो गया तो वीरगति पाऊँ नाम होगा जहान में । मर पाऊँगा संतोष से न भटकूँगा संसार में । समझा भार्या को निकला बालि बाहर सीना तानकर । भिडे दोनों भाई मल्लयुद्ध करने मुग्ध हुये राम देख बालि के पराक्रम को । हड्डी पसली चकनाचूर हुई बगले झाँके सुग्रीव, अपने मददगार की । उचित अनुचित के द्वन्द में फँसे राम न कुछ निर्णय ले सके हो गया सूर्यास्त सोच विचार में । तुड़ा हड्डियाँ पीडा-से कराहता आया सुग्रीव राम के पास । अंग स्पर्श किये मेटी बेदना । एकरूप दोनो भाई हो भूल न हो जाये मेरे काम में । मित्र को मार दूँ यदि प्रेम में तो कलंक लग जाये मित्रता के नाम पै । राम नहीं फिर राम रहेंगे यदि उल्लंघन करे मर्यादा के बाँध को। मानव तो सभी मानव है एक जैसे लेकिन आदर्शवादियों का जीवित नाम जहान में । धन्य मर्यादा पुरुषोत्तम राम, तुम बस रहे कण कण में, धरा तल के हर जीवाणु में, लख वही पाये जो सूक्ष्मता में निहित विशालता को, जो विवेक कोले काम में । मित्र यदि राम हो तो शत्रु का वहाँ क्या काम है । कष्ट तो स्वयं मिट जायेगें यदि राम दे आराम तो, धन्य आदर्शवादी राम को भक्त हनुमान को ।

चिन्ह यह हार विजय का पहन लो कूद जाओ मैदान में । शत्रु का हो हनन छुपकर मारूँगा उसे तीर पेड़ की ओर से । तेजस्वी बालि है वीरता से ओतप्रोत, तेज उसमें शत्रु का मिल जाता, हो जाता उसमें ड़ेड गुणा जब कि शत्रु का हो जाता आधा देवों के आशीर्वाद से । सखा ठीक यह बात, देव नहीं आता समक्ष वह देता सुबुद्धि कुबुद्धि जिसमें विजय और पराजय दो विपक्षी परिणाम हैं । शत्रु को देख द्विगुणित हो जाता साहस में बाली में, विचलित हो जाता स्वयं शत्रु देख उसके अद्भुत साहस को । उत्साहित डेढ गुणा हो जाता बालि रणस्थल में, निरुत्साह होने से आधा बल घट जाता उसके शत्रु के पास से । यही कारण है कि देवों ने दिया यह उपयुक्त वरदान उसे । हारेगा न वह युद्ध स्थल में तीर छुपकर के मारूँगा उसके अंतस्थल में! बिंध जायेगा वह इस अनजाने वार से, क्योंकि काटने की तैयारी का कवच न होगा उसके हाथ में । गिर जायेगा बाली, सखा, भूमि पर तुम्हारे सामने कार्य तुम्हारा सिद्ध होगा मस्तक उसका सदा ऊँचा रहेगा पहन वीरता के ताज को । मानव वही सराहनीय है जो कार्य करे अपना तो भी रखे विपक्षी की आन को । धन्य राम तुम हो, जो मानव में विराजते भगवान । बढ़ा रहे मानवता की शान ।

चला सुग्रीव पा साहस राम से, ललकारा बालि को, बाहर आया वह उत्साह से, द्वन्द युद्ध देख रहे राम । दर्प न आ जाये सुग्रीव को ग्रस न पाये, अभिमान का सर्प बालि की शान को । लड़ता लड़ता जब लडखडाने लगा सुग्रीव मारा बालि के सीने में बाण तान के । मित्रता की आन रख ली, धब्बा नहीं लगाया बाली की शान को । तूने नहीं मारा मुझे सुग्रीव, सामर्थ्य इतनी कहाँ तेरे पास में । यह दुर्लभ देव का बाण है, इसमें शायद मेरा कल्याण है लेकिन देव का गुण वह विभिन्नता न करे संसार में । कल्याणकर्ता प्रभु है जान और अनजान में । शुद्ध हृदय से स्मरण किया आ गये राम सामने । प्रश्न एक ही किया बालि ने एकनाथ से । मैं वैरी सुग्रीव पियारा । कारण कवन नाथ मोहि मारा ।। निरुत्तर हो गये राम सुन इस युद्ध नीति के सवाल को । भोगना मुझे पडेगा अवश्य इस दुष्कर्म के परिणाम को । कर्मभोगी राम समझ गये । आज नहीं तो कल मिलेगा वही

फल जिसका पेड़ रोपा तुमने अपने हाथ से । यह मानसिक संकल्प कर राम बोले- अनुज वधू भगिनी सुतनारी । सुन शठ कन्या सम ये चारी ॥

इन्हहि कुदृष्टि विलोकत जोही । ताहि वधे कछु पाप न होई ॥

सब गुण होते हुये भी तुम में यह भारी अवगुण आ गया, हर ली छोटे भाई की नार को । नहीं तो देव भी नहीं मार सकता था तुम्हारे साहस अपार को । जीवित करूँ तुम्हें अभी देकर अपने जीवन के सब सुकार्य के फल तुम्हारे नाम पर । पा लिया मैंने मोक्ष हे राम जब सामने मानव के रूप में खड़े भगवान हो । बुद्धि मेरी को मलिन कर दोगे हे राम देकर जीवन दान को । नतमस्तक हो जाता है मानव जब ले लेता दानपात्र हाथ में । उज्ज्वल भाल को न कलंकित करो, जाना तो एक दिन है उस धाम को । इससे अच्छी कौनसी मृत्यु होगी जहान में । जीवन नहीं लेना चाहता उत्तरदायित्व देता हूँ तुम्हारे हाथ में । अंगद मेरा पुत्र है, उसको सम्हलाना आपका काम है । और कुछ नहीं माँग, लो पकड़ इसका हाथ ताकि सीधा जाऊँ न फँसू मोह माया के जाल में । अभयदान दे दो, हे राम । विश्व के आप आराम । छूट गये बाली के प्राण अंतः पुर में हो गया कोलाहल, तारा बालि भार्या निकली बाहर करती विलाप । रुदन सुन दुखी हुये राम, बंधुत्व के भाव से । चुप रह गये जान विधाता के इस विधान को, दाह संस्कार कराया बाली का । समझाया तारा को बोध दे इस नश्वर संसार का ।

अराजकता फैल जाये न राज्य में । राज्याभिषेक कराया सुग्रीव का, अंगद बनाया युवाराज ले निष्पक्षता के भाव को । हर मन में बसे राम आराम से । विरोधाभास न हो सके बालि के राज्य में । सुरक्षित किया बालि की धरोहर को ले अपने हाथ में । धन्यवाद क्यों न दे निसंकोच हो ऐसे प्रभु राम को । किष्किन्धा की प्रजा बिन पैसे हुई गुलाम देख ऐसे निष्कपट राम के भाव को । पक्षपात न हो सका नाम न्याय है सही निर्णय नहीं ले सकता मानव यदि उसमें आ जाये भाव पक्षपात का । यह आदर्श है राम के न्याय का । नीति विरुद्ध चलने वाले मानव दानव हैं । सही लक्ष्य से चले वह मानव राम है । यही राम रावण के युद्ध का सार है । हैं दोनों ही मानव केवल अन्तर भाव का है । विजयी होगा मानव राम, कुचल जायेगा दानव बना मानव, चाहे वह कितना भी हो महान। यह नियम है विश्व में अकाट्य।

जय सियाराम । इसलिये आदि अनादि है देव दानव युद्ध न केवल किसी विशेष युग की बात । प्राचीन सुन लिये नवीन भी होगे ऐसे विश्व में राम रावण से संग्राम प्राचीन सदा नवीन है, यह मान लो ताज है प्राचीनता के भाल पर विराजमान भविष्य का निर्माण । जो जितना शोधे उतना पाये निष्फल न होंगे किसी के काम, क्योंकि हर मानव में विराजमान राम । निसंदेह विश्व में अग्र रामायण । इसमें नहीं हो सकती दो राय । क्योंकि यह वर्णन कर रही ऐसे मानव राम का जिसमें भेदभाव का नहीं था नाम ऊँच नीच जाति पाति, राजा रंक और तो और पक्षियों तक से भी उनका था प्यार । प्राणीमात्र में था समानता का भाव । प्रभुत्व के उपासक नहीं थे विश्व बंधुत्व का था उनमें भाव । मानवता के अग्र राजा राम !

सुग्रीव का राज्याभिषेक हो गया । वर्षा ऋतु आरम्भ हो गई जिसमें यातायात की कठिनाई रहती है, इसलिये सीता सुधि के जाने का विचार शरद ऋतु आते तक स्थगित कर दिया, लेकिन वर्षाऋतु अति सुहावनी है, गृहस्थियों के आमोद प्रमोद के लिये क्योंकि रिमझिम वर्षा बरसती है वनस्पति फूट निकलती है । धरती हिलौरें लेती है । नर नारी झूमते हैं मयूर मयूरी नाचते हैं स्थान पर प्रकृति रिमझिम का स्वर आलापती है । पशु पक्षी चहचहाते हैं मेघ मल्हार नर नारी मिलकर गाते हैं । जल के झरने पृथ्वी के अंतस्थल में फूट निकलते पा मेघों की मधुर प्रेम फुहार को । पशुपक्षी आनन्द मानते हैं अपने नीडों में, नर नारी बैठे अपने घरो में, भगवान की तरह तरह की झांकियां सजाई जाती है मन्दिरों में। लेकिन मेघ की तरह अश्रुधारा बहती है विरही जीवों के नेत्रों में । चाहे वह परिणय का विरह हो अथवा बंधुत्व का । मानव राम भी इसी स्थिति में थे । इधर भार्या सिया क़ी अनुपस्थिति उधर बेसुध बंधुत्व की । कारण कि सखा सुग्रीव भी वर्षा के आमोद प्रमोद में जाकर महलों में रंगरेलिया मना रहे थे । लेकिन अवधि तक तो राम मौन सब कुछ सहते रहे क्योंकि मर्यादा की परिधि थे मर्यादा पुरुषोत्तम राम, लेकिन जैसे ही वर्षा ऋतु समाप्त हुई उनके धैर्य का बाँध डगमगाने लगा, आशा की हिलौरों की खाकर मार । बोले लक्ष्मण से जाओ किष्किन्धा सुधि लाओ भैया क्या बिसर गया सुग्रीव को मेरा ध्यान । डराना, धमकाना पथ पर लाना पर न पहुँचाना उसे कोई नुकसान । क्योंकि सखा धर्म है

महान । मित्र के राई जितने कष्ट को पर्वत समान अनुभव करना और अपने पर्वत जैसे कष्ट को राई समझना । यही है सच्ची मित्रता का भाव । अच्छा सौंप दो सहर्ष मित्र को, बुराई रख लो अपने पास, तो कभी न टूट सकता ऐसी अटूट मित्रता का तार ।

मित्रता का भाल

समझा कर ले आना सुग्रीव को मेरे पास कष्ट सुई की नोक जितना भी न हो सुग्रीव को ऐसा करना उपचार । रोग निवारण कर देना चाहे बेहोश कर लेकिन तुरंत सुधि आ जाये रखना इतना ध्यान । साँप भी मर जाये लाठी भी न टूटे ऐसा करना काम । कार्य भी बन जाये और धब्बा भी न लगे उज्ज्वल मित्रता के भाल । कार्य सफल होगा करो प्रस्थान लेकर सिद्धि विनायक का नाम ।

इधर लक्ष्मण चले उधर हनुमान का प्रेरित हुआ ध्यान । वर्षा विगत शरद ऋतु आई । तात न सीता की सुधि पाई ।। राम के यह शब्द स्वयं झंकृत हो उठे हनुमन्त के हृदय आगार । भूल भटकैया में पड़ गया सुगीव निमग्न हो गया पा राजलक्ष्मी का साथ, लेकिन क्षण में खेल बदलने की सामर्थ्य उनमें महान । बालि के हनन का स्वप्न में क्या कर सकता था मनन। स्वप्न में भी जिस सफलता को पाने की नहीं देख सकता झाँकी उस सफलता को साकार कर दिया वह मानवों में अग्रगण्य अमोघ शक्ति को धारण किये पैदा हुये मानव राम । मानवता का जिसने पहन रखा ताज, वहाँ छलकपट का क्या काम, युग युग जाये। ब्रह्माण्ड रसातल को जाये फिर भी पुनः भू आजायेगी सागर के बाहर । फूल पत्ते फिर खिलेंगे चाहे कितनी भी खा ले पतझड़ की मार । एक कण से पुनः अंकुरित होगा मानवता का संसार। कण कण पर राम का नाम । कण में बसते राम सूक्ष्मता में विशालता का धाम । ऐसे मानव राम है परब्रह्म का धाम । ऐसे राम कार्य की सुधि बिसरा दी सुग्रीव ने किया बहुत भूल का काम । सचेत करना इस समय कर्तव्य मेरा है । रखूँ स्वामीभक्ति की आन । इधर हनुमान चले राजमहल की ओर खडखडाने सुग्रीव के हृदय के किवाड उधर लक्ष्मण ने वीररूप से खडखडाये किष्किन्धा के द्वार, सचेत हुआ सुग्रीव कर हनुमन्त के वचनों का पान काँप उठा सुन लक्ष्मण की गर्जना महान । अपराध हो गया मोह माया में फँस

गया बचा लो ऐ हनुमन्त ! त्राहि माम् जय राजा राम । कलंकित कर दी जो मैत्री उसे लेकर कैसे जाऊँ मैं उज्ज्वल मित्रता के पास मत घबराओ सुग्रीव जल पात्र मैं बनूँगा ले चलूँगा जल को दुग्ध के पास । मिलकर फिर एक हो जायेगी भूल जायेंगे, अपनत्व का ध्यान । एक रंग में पुनः पुनः रंग जायेंगे यही सच्ची प्रीत का नाम । कम ज्यादा सस्ते मँहगे का वहाँ नहीं भेदभाव, दूध पानी मिलकर जग में बिकते एक भाव । वह सखा तुम्हारे, तुम मित्र उनके, चलो मिलने उनसे मेरे साथ । क्षीर सागर में बडवानल का क्या काम । शान्ताकारं के पास क्रोध और अपूर्णत्व का नहीं नाम । सत्यं शिवं सुन्दरम् मानवता का उद्गम महान । सुख चैन के सुन्दर पुष्प हर समय बरसे सत्य का जो हो धाम । ऐसे मानव राम है सत्यं, शिवं, सुन्दरम्, अशान्ति का वहाँ नहीं नाम ।

लक्ष्मण के स्वागत को आगे बढ़े हनुमन्त ले तारा और अंगद कुमार को साथ । नतमस्तक झुकाया शीश अंगद ने, मोहजाल अपार है जंजाल इसको काटना अति कठिन है काम, अपराध क्षमा करो ऐ लक्ष्मण कुमार अबला की सुन लो पुकार । गद्गद् हुये लक्ष्मण दिया सारी किष्किन्धा को अभय दान । हनुमन्त चले मिलने राम को ले संग सुग्रीव अंगद और बूढ़े मंत्री जाम्बन्त को साथ । प्रौढ होने के नाते प्रौढ ही अनुभव थे बूढ़े मंत्री जामवन्त के पास । यौवन जैसी शक्ति नहीं थी चाहे उसके साथ । बूढ़े निरर्थक नहीं हैं उनके अनुभव है सार्थक । शक्ति क्षीण हो गई तो भी वह प्रेरणाशक्ति के हैं मंजर । मान सम्मान यदि दे उन्हें युवा पीढी तो निसंदेह होगा उनका कल्याण ।

राम के पास पहुँचे सब लक्ष्मण के साथ क्षमा माँगी सुग्रीव ने बोले प्रभु तीन दिशाओं में यानि उत्तर पूर्व, पश्चिम में भेज दिये मैंने उपयुक्त दूत लेकिन दक्षिण की ओर पठाऊँ अन्य सेना को अंगद जाम्बन्त और हनुमन्त के साथ । यदि आप भी सहमत हो मेरे विचार के साथ । सहमति का क्या काम मुझे तुम पर है पूर्ण विश्वास । उचित ही है सब जो तुम करोगे काम। दक्षिण जाये यह वीर सब शायद बने वही काम क्योंकि सब कहते हैं कि दक्षिण दिशा को ही जा रहा था विमान जिसमें से फेंके थे सिया ने अपने आभूषण निशानी के लिये, ले राम का नाम ।

हनुमान सिया सुधि लायेंगे कर समुन्दर पार लंका में है सिया ले गया उसे रावण अपने धाम । स्पष्ट बता दिया था जटायु ने मरने से पहले यह समाचार । पर भक्तोंका रखने मान नहीं बोले सियाराम, सुग्रीव बोला- तुम सब दक्षिण दिशा को जाओ संलग्न हो करना काम । एक मास में लाना सिया सुधि मेरे पास । यदि अपूर्ण रहा यह काम तो भेज दूँगा तुम्हें परलोक धाम।

हनूमान को बुलाया राम ने पास में दी मुद्रिका उसके हाथ में । वत्स, यह मुद्रिका सहनानी है फेंक देना सिया के सामने । यह राम की है, तुरंत जान जायेगी छलकपट का इसमें नहीं काम है । लानेवाले का अता पता जब पूछने को तत्पर हो तो बता देना सब समाचार आद्योंपान्त से फिरती बार मांग लाना उसकी भी निशानी ताकि देख लूँ पहचान लूँ कहीं मायावी की तो नहीं चाल है । सीता सुरक्षित है, क्योंकि माया की मूर्ति न दे सके गुप्त सहनानी, वास्तविकता में ही वह शक्ति महान है ।

आनन्द विभोर सब चल दिये दक्षिण दिशा की ओर, नदी नाले गिरि कंदराओं को लाँघते आ गये वानर भालू समुन्दर के तट पर, गोष्ठी बैठी करने लगे सोच अपार। भूख से तडफडाने लगे निकल जायेंगे अब तो प्राण यदि भोजन का नहीं होगा अब इंतजाम । तुम सब बैठो मैं ढूँढने जाता हूँ आहार का सामान बोले हनुमान । परोपकारी, दृढ निश्चय जीवन का क्या कभी विफल हो जाता जिसके हृदय में विराज रहे कण कण में बसनेवाले राम । भानुप्रकाश के सामने तम का क्या काम । थोड़ी दूर जाकर देखा हनूमान ने पशु पक्षी झुंड के झुंड जा रहे एक स्थान को । या तो उस स्थल पर कोई तमाशा होगा दर्शकगण इकट्ठे हो रहे उसे देखने को, कोई जलाशय या भोजनालय होगा जहाँ जा रहे सब खान पान को । मैं चलूँ वहाँ शायद बन जाये हमारा भी काम । गुफ़ा के रास्ते अग्रसर हुआ हनूमान आगे जाने को। बन गई जटिल गुफा, छा रहा घोर अंधकार । गुम गये हनूमान रास्ता न दिखे आर पार गर्ज उठे हनूमान । हे प्रभो, राम, मुझे नहीं मेरे प्राणों का केवल ध्यान । सब क्षुधा पीडित मर जायेंगे मेरे संग साथी, क्षुब्ध होगा मेरा आत्माराम । आत्मा में जाग्रत होते ही राम, छट गया अंधकार परीक्षक आ गये सामने सफलता का सुना दिया परिणाम । राम के सब कार्य पूर्ण करोगे

हनुमान । तुम्हारे तन के रग रग में बसे विश्व के आराम राम । जय श्री राम, जय हनुमान, बजरंगबली तुम हो पवन कुमार वेग तुम्हारा पवन के समान । भरपेट तुम सब करो जलपान आओ इस स्थान । क्षुधा पूर्ति करो आप सब मिलकर मैं सादर करूँ तुम्हारा सत्कार । बारम्बार तुम्हें नमस्कार। सबको बुला लाये । तृप्त हुये सब संगी साथी आये सागर के तट पर करने लगे पुनः विचार । इतने में एक और संकट आ गया महान ।

बहुत दिन से न मिला पेट भर आहार । क्षुधा तृप्ति करूँगा मारकर तुम सबको बना निज आहार । बोला पंख कटा गीधराज । तुम भी गिद्ध हो धन्य था तुम्हारा जाति भाई जटायु गीधराज जिसने राम काज के लिये उत्सर्ग किये निज प्राण । क्या बोले तुम सच सच बताओ सारा वृतान्त वह जाति भाई नहीं सहोदर था मेरा संपाति नाम । शक्ति में मदान्ध हो एक बार हम पकडने चले सूर्य को महान । उसके तेज को लख लौट आया विवेकशाली लघु सहोदर जटायु ले नम्रता का भाव । मैं अग्रसर हुआ अभिमान का ले बल साथ । पंख जल गये पड़ा भूमिपर आ, हाय उड़ न सकूँगा मुक्त गगन में कैसे खोजूँगा आहार । तड़फडाया जब मैं करुणा से हो आर्द्र, तो आगये करुणा के धाम । बोले पंख जम आयेगा, सीता सुधि को जब आयेंगे वानर भालू इस ओर तो पता बता देना सीता का बन जायेगा तुम्हारा काम । उदर पोषण तुम्हें स्वयं यहीं मिलता रहेगा सच मान लो यह बात । ले चलो सिंधुतट दूं तिलांजलि भाई जटायु को सागर स्नान कर शुद्ध हो आऊं तुम्हारे पास, सीता की सुधि बताकर असमर्थ के पंख उग आये राम नाम के आधार। दी तिलांजलि, किया शुद्ध स्नान आया सागर के इस पार । बोले, वह देखो, सिया बैठी अशोक वाटिका में ले रही राम का नाम । हम सुदूर वस्तुओं को देख सकते हम गिद्धों को विधाता का यह वरदान । तुम नहीं देख सकते सच मान लो यह बात देखो, पौ फट रही पंख निकल रहे मेरे बाहर । यह सात योजन का सागर जो एक फलांग में लांघ जाये वही पहुँच सकता लंका में नहीं तो डूबे मझधार । अब कर लो इसका विचार । विचार विमर्श हुआ मंत्री जामवंत बोला मैं बूढा हूँ सामर्थ्य इतनी नहीं है मेरे पास। अंगद युवराज है उनसे सेवक का उनकी ही प्रजा कैसे ले काम अब केवल कौन रहा केवल हनुमान ।

सचेत किया हनुमान को बूढे मंत्री जामवन्त ने दे प्रेरणा की शक्ति महान । बोले भूल गये कैसे हे हनूमान । तुम्हारे में शक्ति है अपार । विस्मृत हो जायेगी यह एक बार ऋषियों ने दे दिया था श्राप कारण कि बाल क्रीड़ा में सताते थे उन्हें । मंत्र जाप में होता था विघ्न बारम्बार । बोले विस्मृत रहोगे चुपचाप बैठे रहोगे कोई बीड़ा न उठाओगे जब तक न कोई दिलायेगा याद। मालूम है मुझे देखते क्या हो हनूमान । पवनपुत्र तुम्हारे लिये क्या कठिन है यह काम । पवन तो सर्वत्र है वह तो एक क्षण में पृथ्वी को ले नाप, इतना उसका वेग महान, फिर सागर लँघना कौनसी बड़ी बात, उत्तेजित हो उठे हनूमान रूप हो गया स्वर्णपर्वत के समान चमचमाने लगा तेज महान। आज्ञा करो जामवन्त कैसे करूँ काम । क्योंकि तुम प्रौढ हो मंत्री हो । दो मुझे परमार्श कैसे करूँ काम ।

बोला जामवन्त - समुद्र लँघकर जाओ तात उस पर सिया की सुधि लाकर प्रभु को देना इतना ही अपना काम । एक मास में कुछ ही शेष शीघ्र लौटकर आना । सिया सुधि लाना प्रभु को संदेश सुनाना आगे जैसे करेंगे वह है सर्व शक्तिमान । कूद पड़े हनूमान लँघने को सत योजन सागर । करने राम का काम । किष्किन्धा काण्ड पूर्ण हुआ । अब सुन्दर अशोक वाटिका का जा रहे हनूमान । जय श्री राम ।।

सुन्दर काण्ड

अपने मन में राम का स्मरण कर सब देवी देवताओं का आह्वान कर । विघ्नहर्ता गणपति का ले नाम । जामवन्त का वचन मान उड़ चले लंका की ओर श्री हनूमान । पवनपुत्र जा रहे लँघने समुद्र अपार, देवों ने विभिन्न कुशल परीक्षक भेजे लेने उनकी सब विद्याओं का इम्तहान । पहला पेपर, मैनाक पर्वत उभर आया समुद्र के बाहर रोकने सफलता का मार्ग । पथभ्रष्ट करूँ, विश्राम की भूल भूलैया में भटक जाये हनूमान । रम्य रूप धारण कर मुस्कराया सुस्ताओ ऐ पवनकुमार । राह मत रोको इस समय मेरे पास समय का अभाव । लक्ष्य पर जानेवाले पथिक को सदैव रहना चाहिय लक्ष्य का ध्यान । चैन और आराम का क्या स्वामी भक्ति में कहीं लिखा है नाम। मेरे प्रभु है राम । मात खा जाओगे मत करो मुझसे छल का काम । वह तुममें भी है मुझ में भी है । जानते दोनों के हृदय का भान, क्योंकि

वह प्राणी मात्र के हैं हृदयनाथ । तारसे तार जोड दिये वह दे रहे सब अच्छे बुरे अंतस्तल के समाचार । मान जाओ न रोको राह, विरोधाभास है युद्ध का उद्‌गमस्थल । नहीं मानूँगा जाने न दूँगा बोला मैनाक, "बजाओ अपनी रण भेरी मनचाहा राग लो आलाप । सत्यमेव जयते । मैं बढ़ रहा लो आगे ले राम का नाम बोले पवन कुमार । आकाश को छूने चला भर मद में मैनाक पर्वत राज । गगन पथ रोकने को हुआ तैयार । पर्वत कभी आकाश नहीं छू सकता चाहे कितना भी हो महान । पवन हल्की, ओझल जा सकती ब्रह्माण्ड के आर पार क्योंकि वह सदा है निरभिमान । एक रस बहती कभी न लड़ती छाती तान, इसीलिये मानवता का जीवन प्राण । प्रकृति के विरुद्ध चल रहा यह पर्वत राज, पर्वत नहीं कुछ और है बसा पर्वत की ले आड़। गगनचुंबी हो जाये यह यदि तो होगा, प्राणीमात्र को क्लेश । ले यह निर्णय झट कुचला उसको मिटा दिया अभिमान का नामोनिशान । बोला पर्वतराज-परीक्षा हेतु आया था, उत्तीर्ण हुये पूर्ण अंक ले तुम पवनकुमार। सफल होंगे मनोरथ सब जहाँ आप पहुँच जाओ अंजनीकुमार । देखो यहां कोई पर्वत का नहीं नामोनिशान । सब तकलीफों का सामना करे । तन मन का मोह त्याग लगन से करे काम तो मानव अवश्य लक्ष्य पर पहुँच जायेगा इसमें नहीं दो राय, संलग्नता सफलता की कुंजी है ऐ हनुमन्तराय, जय श्री राम। मैं दानव नहीं, देवता का भेजा परीक्षक हूँ । जो परीक्षा हेतु आया यहाँ, परीक्षा में सफल हुये पूर्ण अंक पाये तुमने लेकिन धन्य मैं भी जुड़ गया तुमसे मेरा नाता आज । तुम्हारी उज्ज्वल कीर्ति के संग मेरा भी बखान होगा जैसे चंदा चमकता पा सूर्य का प्रकाश । ले मैनाक का आशीर्वाद, आगे बढा हनूमान । दूसरा परीक्षक आ उपस्थित हुआ ले धर्म की आड़ देवताओं ने भेजी सुरसा को लेने परीक्षा हनुमान के पास । बोली क्षुधा पीडित हूँ पहले बुझाओ मेरी भूख, स्वामी अर्पित इस समय यह तन मेरा नहीं, काज कर संदेश दे स्वामी को ले तन वहाँ से आ जाऊँगा आप के पास । बुझा दूँगा भूख तुम्हारी स्वामी का पूर्ण करके काज । इस समय तन मेरा नहीं, मन मेरा नहीं, धर्म के चक्कर में नहीं फँस सकता कारण कि मेरी बागडोर है स्वामी के हाथ । बढने लगी सुरसा उससे आगे बढे हनूमान । इसी प्रकार चलता रहा यह कार्य लेकिन खोल दिया जब उसने सात योजन

मुख तो लिया हनूमान ने प्रभु का नाम सूक्ष्म में बस रहे विशाल भगवान सिद्ध करे जो सबका काम । सूक्ष्म रूप धारण किया घुस उस गुफा में निकल आये सुगमता से बाहर । आ प्रणाम किया माँ उदर तुम्हारे का दर्शन किया सूक्ष्म रूप धार मैं पुत्र हुआ तुम्हारा धर्म के अनुसार अब मातृत्व को कलंकित करोगी क्या करके मेरा आहार । मुक्त कंठ से आशीर्वाद दो, सफल हो पुत्र तुम्हारा पा जाये अपना लक्ष्य, उज्ज्वल हो मातृत्व की भावना । विशाल शत्रु को जीतने की परीक्षा में उत्तीर्ण हुये ऐ वत्स ! होगा सफल मनोरथ तुम्हारा। स्वामी भक्ति में अग्रगण्य। सदा जीतने का सर्वोत्तम तरीका यही है कि सूक्ष्म बन जाये उस क्षण लडनेवाला । लघु हो निकल जायगा वह इधर से उधर विशाल का स्वतः हो जायगा न्हास। जैसे शून्य का न होते ही महत्व है सब कुछ । दस में से यदि शून्य हटा दो तो केवल अंक एक रह जाता है । यदि दसके आगे जोड दो शून्य तो सौ बन जाता है । महत्त्व कितना है शून्य में देख लो हर अंक के आगे जोडा जाता । देवताओं ने यही परीक्षा लेने मुझे भेजा था । सफल मनोरथ होगा तुम्हारा दिव्य रूप उसने अपना दिखाया धर्मांध न बने विवेक के खोल दिये जब हनुमन्त ने पट, पास परीक्षा कर उत्साहित हो आगे बढ़े हनुमान जय सियाराम । धन्य शंकर सुवन हनूमान, शंकर ने दे दिया ऐसा अपूर्व स्वामी भक्त पुत्र राम को, जिसके रोम रोम में बस रहे राम हैं वह शंकर का लाल है । शंकर राम को अति प्रिय है जिन्होंने दिया उन्हें ऐसा लाल है, राम शंकर को अतिप्रिय है तभी तो दे दिया उन्होंने ऐसा लाल निकाल । जिन्होंने दोनों को कर दिया निहाल । शंकर करे राम का भजन, राम शंकर का करते हैं । क्योंकि दोनों देहरी द्वारों के बीच हनुमन्त कुलदीप जगते हैं । सब आनन्दमय है जहाँ सत्य शिव बसते हैं । विश्व में अग्र रामायण है, जिसमें सरस्वती यानी सब विद्याओं के तार बजते हैं । सरस्वती की कृपा अपार है तभी तो रामायण सब विद्याओं का भंडार है । कौनसा रस नहीं टपकता कौनसा अर्थ नहीं मिलता । वीणा वादिनी के इस काव्य में । अर्थशास्त्र, विज्ञान, शस्त्र शास्त्र, औषधि ज्ञान इत्यादि सभी तो पाओगे माँ सरस्वती के इस धाम में । असाध्य को साध्य कर दे माँ सरस्वती यदि संलग्न नमन हो पहुँच जाये कोई भी जीव उसके धाम में । झुकने में सामर्थ्य है इतनी झुककर नमस्कार करो किसी को भी तो तुरंत उठा लेगा

वह तुम्हें गले से लगा लेगा । आशीष का उपहार देगा साथ । छोटा बनना इसलिये है महान, जय सियाराम ।

दो परीक्षाएं दे आगे बढ़ा हनूमान। कोई खींचने लगा अपनी ओर, कोई आकार नहीं साकार, खींच ले रहा मुझे पतन की ओर । विघ्न आ रहे बारम्बार हे विघ्न विनाशक, गणनायक महाराज, क्या भूल गया मैं लेना तुम्हारा नाम । तुम बंधु मेरे कर दो बेड़ा पार, गुप्त रूप से जो करे वार उसकी सीमा से तुरंत निकल जाओ बाहर । निशक्त वह स्वयं हो जायेगा, सीमित नहीं ठहर सकता असीमित के समक्ष, असीमित पवन सर्वव्यापी है हे पवनकुमार । ऊपर हवा में उठ जाओ पहुँचो उस पार । अब सब विघ्न हो गये दूर गणनायक का लेते ही नाम । पूर्ण अंक से पास हुये विदेश जाने का मिल गया इनाम । समुद्र पार लंका के द्वार पहुँच गये हनूमान मारकर एक झलांग ।

रात हो गई सोचा हनूमान ने रात भर यहाँ खड़ा क्या करूँगा । अंदर घुस देखूँ निस्तब्ध रात्रि में लंका का हालचाल । क्योंकि शान्ति में मनन हो सकता है भलीभाँति इसमें नहीं दो राय । जेसे ही घुसने लगा, रोका लंकिनी ने, कैसे घुस रहे हैं, मैं हूँ यहाँ की पहरेदार । जाने दो राहगीर हूँ अंदर जाकर करूँगा विश्राम । जाने की आज्ञा नहीं है किसी आगुन्तक को मैं हूँ यहाँ की पहरेदार । नम्रता से जब नहीं बना काम तो युद्ध को उद्यत हुये हनूमान । मारा मुक्का छाती में निकला रुधिर मुख से हुआ लंकिनी का काम तमाम, दे दिया अपना सब विवरण एक क्षण में । राक्षसों का होगा संहार निष्फल न होगा तुम्हारा प्रयास । अंदर जाओ मेरा कर दिया तुमने कल्याण। अपराध वशीभूत श्राप को कर अंगीकार इस राक्षस भेष में मैं भटक रही थी । आज हुआ कल्याण । क्योंकि श्राप के संग मिला मुझे यह भी था वरदान । यदि एक वानर के हाथ मारी जाओगी तो होगा लंका का नाश । छूटेगी जिस दिन तुम्हारी योनि, उस दिन से लंका में होने लगेगी अनहोनी। परिधि टूटना विनाश का है आव्हाहन । तुम्हारी परिधि टूटते ही निसंदेह होगा लंका का विनाश । जय जय हे कपिराज, कह लंकिनी ने आनन्द से छोडे प्राण । रातभर जो न सो सकती थी वह चिर निद्रा में निमग्न हुई आते ही तुम्हारे पास । जय श्री हनुमान । सत्य तुम्हारा नाम । भूत पिशाच निकट

नहीं आते । महाबीर जब नाम सुनाते । जब तुम्हारे नाम के समक्ष ही भूत पिशाच नहीं ठहर पाते तो समक्ष में तो उनका विनाश होना कोई आश्चर्य की बात नहीं । लंकिनी आशीर्वाद दे स्वर्गलोक को गई अब हनुमान जी ने सूक्ष्म रूप बना रात्रि की निस्तब्धता में लंका में प्रवेश करना उचित समझा। क्योंकि किसी भी अनजान नगर या घर में प्रवेश करना हो तो अपने को छोटा यानी नम्र बनाओगे तभी तो प्रवेश पाओगे । अपनी शान और अकड़ दिखाने पर तुम्हें कौन अनजान अपने घर में आने देगा । यदि विनीत बनोगे तभी तो विश्राम हेतु राहगीर को किसी सज्जन के यहाँ दिन को नहीं रात्रि को स्थान मिल सकेगा । दिन में तो तुम्हें राहगीर जान वह कह देगा भई, अभी दिन है, मंजिल पार करने का समय है यहीं क्यों रुकते हो आगे बढो। दिन दिवाकर है वह पुरुषार्थ है उसमें इतनी क्षमता कहाँ कि वह किसी को अपने आँचल में स्थान दे । लेकिन निशा एक नारी है जो अपने आँचल में हर जीवन को विश्राम देती है शान्ति देती है । नारी नारी है, नर नर है दोनों की कुछ विशेषतायें भिन्न होते हुये भी अभिन्न हैं । दोनों का समावेश सृष्टि का मूल है । माया और जीवन दोनों मिलकर पूर्ण ब्रह्म है । अलग अलग रहने से माया मोहिनी है पुरुष केवल ब्रह्म । पुरुषार्थहीन से भी जीवन निशक्त है, तो आकर्षणहीन होने से भी बेकाम । पुरुषार्थ को जागृत करने के लिये स्फूर्ति का होना अति आवश्यक है इसी प्रकार माया जीव दोंनो का एकाकार होना ही पूर्ण ब्रह्म । एक के बिना दूसरा अधूरा दोनों सम हैं, न कोई बड़ा न कोई छोटा । मष्तिष्क पूरे शरीर के संचालन का केंद्र तभी तक है जब तक इडा वहाँ वास करती है । इड़ा यदि छोड़ भागे साथ, तो हो जाता है बेहोश मस्तिष्क महाराज । यह तो रोज का है काम जैसे ही डाक्टर बेहोशी की सूई देता है लगा । रोगी तन मन की सुधि भूल जाता है। तभी तो शल्य चिकित्सक कर सकता काम है, अन्यथा क्या होश में कोई रोगी अपना शरीर कटवा सकता है । यह तो बेहोशी की दवा की ही है करामात, जैसे चाहे मोड लो तोड़ लो काट लो चाहे कोई अंग वह नहीं जान पाता, होश आते ही पीड़ा से कराहता है । बेहोशी में नहीं चिल्लाता है, क्योंकि इड़ा को नियत समय के लिये औषधि के जोर पर चिकित्सक हर ले जाता है । प्रेरणा शक्ति के जाते ही पुरुषार्थ स्वयं शिथिल पड जाता है, इसलिये तो गृहस्थाश्रम सबसे बड़ा कहलाता है, यहाँ पूर्णब्रह्म विराजता

है, सर्वांगीण खेल खेला जाता है युग युगान्तर तक मानवता का जन्मदाता है। वही मानवता जिसकी कीर्ति पताका का इतिहास ब्रह्माण्ड में लहराता है जो ब्रह्माण्ड में रमता है उसी को रामायण अपने हर श्वास में भर लाया है। सुनते जाओ गुनते जाओ, खुला अटूट भंडार है। लूट लो जितना भी धन चाहो यह खजाना न कभी खाली होने पाया है। रामायण गृहस्थ के सम्पूर्ण ज्ञान का खजाना है। रमता राम, रावण हर मानव में खोजने पवन वेग हनूमान मन यहाँ आता है जो एक क्षण में विश्व की खबर लाता है। सचेत रावण को भी करे न माने तो रावण हार जाता है। क्योंकि रामभक्त पवन पुत्र कहलाता है। अग्र रामायण है जो हर ओर से जगमगाता है। आदि अंत न कोई इसका पार पाता है। सब स्वरूप दिखाता है। जीवन के पथ पर यह अग्र है मानव को पथ प्रदर्शन कराता है। अग्र रामायण सिखाये जीवन कैसे जिया जाये। रावण को जीतने वाला मानस राम कहलाता है। कटुता, दुष्टता, त्याग नर, राम बन आराम पाता है। इसीलिये राम नाम विश्व का आराम कहलाता है। जय सियाराम।

निस्तब्धता में एकाग्रता उपलब्ध है एकाग्रता सदैव सिद्धिदायिनी है यह विचार कर हनूमान ने आलस्य को त्याग स्वामी का कार्य करना आरम्भ किया सबसे पहले सबसे मुख्य अट्टालिका रावण के भवन में सीता की खोज हेतु प्रवेश किया। रावण के भवन के वैभव को देख सर्वत्र विचरने वाले पवन के पुत्र हनुमान दंग रह गये, भवन की शिल्प कला, वस्तुकला वैभव सब अवर्णनीय थे और तो और भवन के द्वारपाल कुबेर खड़े थे। एक बार तो विस्फारित नेत्रो से कपि निहार उस छटा को माया में खोने लगा। लेकिन दूसरे ही क्षण अंतस्तल में विराजमान स्वामी राम ने हनूमान को कर्तव्य की ओर सजग किया। निद्रा का क्या काम यहाँ जब सिया सुधि लिये बिना चैन न लूँगा, यह बीड़ा मैंने उठाया, सचेत हुये हनूमान सूक्ष्म रूप से अंत:पुर में घुस गये, जहाँ नारियाँ कर रही थी विश्राम।

विरहणी के लक्षण

लख सबकी मुख मुद्राओं को सोचते हनूमान यहाँ सीता नहीं हो सकती क्योंकि चैन से यहाँ सो रही सब नार विद्युत के जब आपस में जुडे हों तार, तो एक जगह जलन दूसरी जगह चैन कहाँ। पति तडफे पत्नी की

याद में, पत्नी के हृदय में हो यदि पति का वास तो तार कैसे न झनझनायेंगे, नयनों से कैसे न बरसेगी अश्रुधारा। असम्भव कभी सम्भव नहीं हो सकता, अन्यथा हो जाये उसका नाम बदनाम। प्रीत की रीत अनोखी है सब देख ली मैंने अंत:पुर के शयन कक्षों की बहार। यहाँ कहीं नहीं है सीता नार। माया की छलना में क्या धरा हनूमान चलो खोजो कहीं ओर जाकर महल से बाहर। घूम रहे हनूमान न पा रहे पार। भवन सब एक से एक हैं, पर कहीं नहीं दिखता सज्जनता का निशान। सोचते हैं क्या करूँ कैसे पार पाऊँ। मन कैसे हारे जहाँ राम रहे विराज। भवन एक नजर आया जहाँ लिखा था राम नाम। तुलसी का पेड़ रहा था वहाँ विराज, बोला, चलूँ यहाँ देखूँ कौन सज्जन बस रहा यहाँ। सूर्योदय से पहले ही, उठ विभीषण जपने लगे, राम नाम। यहाँ राम है आराम है पूछो इनका नाम गांव। कपि के पहुँचते ही विभीषण ने नवाया अपना माथा, बोले रावण लंकापति का भाई हूँ। बोलो क्या आऊँ मैं तुम्हारे काम। जिसका नाम जप रहे तुम उसीका सेवक हूँ। आया तुम्हारे धाम। एक स्वामी के दोनो सेवक हैं। फिर भेदभाव का क्या काम। सिया सुधि लेने मैं आया, खोज अभी तक न पाया। भेद खोल दो कहाँ सिया का है निवास। अशोक वाटिका में रहती है चारों ओर है पहरेदार। सुक्ष्म रूप से घुस जाओ तुम वानर कुमार पेड पौधे अनेक हैं वाटिका में फलफूलों से लदे अनोखी है बहार, सुन्दर सरोवर है बीच में। जिसके पास बैठी सिया बहा रही अश्रुधार। विरह-अग्नि में दग्ध न हो जाये इसलिये हर समय बह रही जलधार। जल शीतल कर रही विरह-अग्नि को प्रकृति उसकी अंगरक्षिका बनी है वहाँ जाकर देख लो श्री हनूमान।

भोर भये हनूमान विभीषण के आदेशानुसार गुप्त रूप से अशोक वाटिका में प्रवेश करते हैं। वाटि्का की अनुपम छवि को निहार, पवनकुमार दंग रह जाते हैं। देव, दानव और मानव में क्या अंतर है विचर रहे पवन कुमार। दानवों का वैभव देवों से कोई कम नहीं। देव तो दानवों के पहरेदार हैं यानि शक्ति के पूर्ण भंडार है। लंका के द्वार पर विराज रहे शम्भुनाथ हैं। कैसे परास्त करेंगे इसे मेरे नाथ राम। रावण के वैभव सागर में गोता मार इसकी शक्ति की गहराई को लूँ नाप। कौन से छिद्र हैं जहाँ से टूटेंगे गढ़ लंका के द्वार। दानवों की अपार शक्ति का कैसे होगा संहार,

पूर्ण खोज कर जाऊँ ले संदेश अपने स्वामी के पास यह ली पवनकुमार ने ठान ।

चहचहा रहे विविध प्रकार के पक्षी चहुँ ओर। फल फूलों से लदे वृक्ष। पुष्पों की सुगंधि से सुवासित हो रही वाटिका इस प्रकार कि वैरागी हो जाये रागी संयमी खो बैठे अपना संयम, इस वाटिका में आय । सरोवर के स्वच्छ जल में प्रतिबिम्बित हो रहा था सूर्य का प्रकाश । अनुपम छटा थी जहाँ बैठी सीता माँ । संयम न खोया, ऐसी परिस्थिति में भी तेज उसका फैल रहा था चहुँ ओर वाटिका में अपार । थाह पा ली शंकर सुवन ने कर लिया अनुमान। अपना न कोई यहाँ है तो भी जगमगा रही सिया माँ । विरहणी हो रही क्षीण काया फिर यह कौन सी शक्ति की माया कि समक्ष कोई राक्षस सिया को देखने न पाया । शक्ति को संयम से गुणा कर दो तो वह चौगुना हो जाये बीजगणित के आधार पर हनुमान ने प्रश्न का हल निकाला । देव, दानव मानवता के पेड़ की दो शाखाएँ । नर नारायण है । नर पिशाच है। अन्तर इतना ही पाया संयमित नर नारायण, असंयमित नर पिशाच है । शक्ति को संयम से गुणा करने पर वह स्वतः बढ जायेगी, शक्ति को संयम का भाग देने से वह घट जायेगी यह निष्कर्ष सामने आया । संयमी राम, संयमी सीता को जब लेने आयेंगे तो रावण समक्ष कैसे ठहरने पायेगा । बल से गुलाम बना रखा जिन देवों को, बल घटते ही उनका छुटकारा स्वयं हो जायेगा । देव स्वामी भक्त नहीं है दग्ध है । अवसर पाते भाग जायेंगे पाकर छुटकारा । मानव राम है वह देते हम पशुपक्षियों को भी आदर सम्मान । वह बाँधते नहीं स्वतः बँध रहे उनके सेवक उनके साथ, राम हृदय के आराम । कल में बल है चैन में आराम । उस स्वामी का साथ कौन छोडेगा जिसके सेवक मन से उसके गुलाम । राम की सेना के सिपहसालार वानर भालू जानवर, आयेंगे इन राक्षसों से भिडने राम के साथ, गौरव हमें दिलायेंगे । सर्वत्र विजयी हैं राम क्योंकि हर कण कण में उनका वास । लघु, लघु है पर उसमें शक्ति महान । चींटी बस में करे हाथी को जानता सारा जहान । ऐशो आराम की भूलभूलैया में न भटके वह मानव दिग्विजयी राम । अहंकार में मदमस्त हो चले मानव तो वह दानव है । लघु संज्ञा से अवश्य होगा उसकी स्थूलकाया का नाश । यही माँ सिया है कैसे करूँ जान

पहचान । यह सोच रहे हनूमान इतने में आ गये रावण ले मंदोदरी और दासियों को अपने साथ । तरह तरह के प्रलोभनों के अस्त्र फेंकने लगे सिया के पास, लेकिन क्या मजाल की कोई भी अस्त्र पहुँच जाये उसके पास । लोभ के अस्त्र निष्फल हुये तो रावण ने उठाया भय का अस्त्र अपने हाथ, बोला- मान जाओ सिया मेरी बात तो सुहानी होगी रात अन्यथा चन्द्रहास खड्ग से लूँगा तुम्हारे प्राण । न राम मिलेगा न रावण, न जाने कहाँ जायेंगे प्राण, ऐ माँ भगवती का रूप खड्ग ले लो मेरा प्राण । ब्रह्माण्ड के हर कण में है राम जहां जाऊँगी वहीं पाऊँगी राम । बढा आगे मारने को रावण मंदोदरी ने पकड़े हाथ । नारी पर खड्ग चलाना है बहुत बड़ा अन्याय, वह नर की जननी है । सहचरी है शक्ति है अपार, उस पर वार करने से नर का है विनाश । खड्ग मत चलाना, वह चल न पायेगी, टूट कर गिर जायेगी अनिष्ट होगा नर का । अबला अबला है पर समय पाकर सबला हो जाती है । वह शक्ति महान्, असुर निकंदनी है जय काली माँ । समझाओ बुझाओ कोई अन्य युक्ति चलाओ लेकिन कभी करना न ऐसा काम । मैं भी नारी वह भी नारी हमारी है एक जात । तुम दो पर कर रहे वार । सहनशक्ति नारी की अनोखी, नारी शक्ति का हर रूप में है भंडार, सौतिया डाह को मैंने तिलांजलि दी, राज्य लक्ष्मी को सिया ने दिया त्याग, सिया मेरी ही है उसे बना रहे मेरी सौत मुझे न कोई विचार । पथभ्रष्ट करने को राजलक्ष्मी का दिखा रहे उसे लोभ । लक्ष्मी बहिन है सिया की वह क्यों गिरायेगी उसे गर्त में वह विष्णुभार्या है उसे माँ बहिन के रूप में देखो तो सदैव बनायें तुम्हारे काम । लेकिन कुदृष्टि से देखते ही वह भाग जायेगी अपने स्वामी वैकुण्ठ नाथ के पास । सिया ने उसे ठुकराया नहीं नतमस्तक किया प्रणाम। माँ बचा लो मेरी लाज । प्रलोभन का अस्त्र भाग गया, सीता और लक्ष्मी का हो गया एकाकार । जय सियाराम ।।

नारीत्व के गौरव की महिमा अपार रावण भी न कर सका इन्कार । कड़ा पहरा बैठाया निशाचरियों का समझाओं, बुझाओ, डराओ, धमकाओ साम, दाम, भय भेद चारों अस्त्रों से लो काम । सिया को एक मास के भीतर कर दो विवश मान ले मेरी बात नहीं तो इसके साथ जान तुम्हारी भी लूँगा, ध्यान से करना काम सौंपता हूँ तुम्हारे पर यह भार । डराने लगी

धमकाने लगी, समझाने लगी सब मिलकर सिया को बार बार । त्रिजटा ने मन में किया विचार धरनी डगमगा जायेगी यदि धरनी सुता के साथ होगा अन्याय । माता क्या कभी सह सकती अपनी संतान का संताप । मातृहृदय स्वतः डोल जायेगा देख सुता का संताप । अर्थ नहीं अनर्थ हो जायेगा । कैसे लूँ सबको बचा । लोक कल्याण का आते ही शुद्ध विचार, त्रिजटा को सूझी एक युक्ति महान । बोली सबको बुलाकर अपने पास । सपना मुझे आया है आज रात । विध्वंस लंकापति का होगा । कण कण में बसते राम । सबके आराम । सिया के रोम रोम में राम । मत डराना, मत धमकाना इसे करो हृदय से प्रणाम । तभी होगा कल्याण । सुशिक्षा को पाते ही सबको मिल गया ज्ञान । सिया को किया प्रणाम । क्षमाप्रार्थी हैं हम, कर दो क्षमा हे सिया, हम लाचार हैं स्वयं नहीं कर रही कोई करवा रहा था यह सब काम। भूल सबसे हुई कि अन्याय का हमने दिया साथ । तुम सभी निर्दोष हो, चैन से सो जाओ, दिन आने दो स्वतः ही हो जायेगा प्रकाश । सभी निद्रामग्न हो गई चैन की बंसी बजा सिया बोली त्रिजटा से- माँ, ममता दायिनी माँ, वियोग का कष्ट नहीं सहा जाता मुझसे ला दो कहीं से अग्नि, करो मेरा दाह संस्कार । रात्रि में अग्नि उपलब्ध नहीं है पुत्री लो धैर्य से काम। क्या करूँ कैसे होगा इस पीड़ा से पार, ऐसे मन में बारम्बार कर रही सीता विचार । चंदा की निर्मल चाँदनी में चमक रहे थे अशोक के पुष्प मानो अंगार उनके समक्ष सिया ने दिया हाथ पसार । आओ मुझे दे दो तुम अग्नि संस्कार । दृश्य देख द्रवीभूत हुये हनूमान फेंक दी मुद्रिका निकाल, चकित सिया यह मुद्रिका आई कहां से छलना है क्या यह भी कोई धर्म की आड़ में । हर लाया था रावण भी साधु वेश बना ले मुझे धर्म की आड़ में । इतना ही नहीं सहा जाता, हे नाथ ! बचाना मुझे आप । कौन लाया, कहाँ से आई, यह मुद्रिका मेरे नाथ की । शुभ संदेश, प्रगट हो जाओ हार्दिक आशीर्वाद पाओ, मेरे सामने आओ तुम सुत हो, जननी सुखदायी । झट उतरे पेड से आये सामने किया प्रणाम । नतमस्तक हो जानकी माँ को ।

यह मुद्रिका मैं लाया माँ सकुशल राम हैं । विरह-अग्नि में दग्ध वह भी आपके समान है । बैचेन जब आप यहाँ तो चैन उन्हें कहाँ, क्योंकि आपके हृदय में उनका और उनके हृदय में आपका बास । उलट पुलट कर

कैसे भी देख लो नयन शून्य दोनों तरफ से समान हैं । आपके नयन जब निर्झर बने तो मत पूछो उनका क्या हाल है । राम का मैं दास हूँ । इस नाम की शक्ति के आधार ले चलूँ तुम्हें इसी क्षण यहाँ से । तुम सुरक्षित मायके में विराज रही हो, त्रिजटा माँ की छाया में । वह स्वयं लेने आयेंगे आपको सादर वानर भालुओं की ले बारात साथ में, केवल सुधि लाने का ही आदेश मिला, अन्यथा ले चलता तुम्हें अपने साथ में । बोली सिया, पुत्र ! यहाँ शक्तिशाली विशायकाल पहरेदार हैं, पेड से पेड़ पर उछलने कूदने वाला यह सूक्ष्म वानर तन तुम्हारा कैसे इन स्थूलकाय निशाचरों का पार पायेगा । स्थूल को घुमा दो उस ओर सूक्ष्म आ जायेगा, सूक्ष्म को घुमा दो फिर उस ओर स्थूल आ जायेगा, बूँद बूँद से भरे घटे, बूँद बूँद रिस जाने से स्वतः खाली हो जाता है । बूँद सागर है तो जल निकल आता है मानव एक दम भीग जाता है । शुष्क तन गीला हो जाता है । राम हर तन, हर कण, हर मन और पूरे ब्रह्माण्ड में विराज रहे । मैं उनका दूत हूँ । देख लो मेरा भी स्थूलरूप । राम मुझ में बसते हैं यह हो जाये आपको पूर्ण विश्वास, इसलिये यह विशाल रूप दिखाता हूँ । लख इस तेजस्वी रूप को माँ नौ निहाल हुई, पा ऐसे सुत पवनकुमार को दिया हार्दिक आशीर्वाद । अजर अमर गुणनिधि सुत होहूँ । करहु बहुत रघुनायक छोहूँ ।। जननी समक्ष सुत सदैव छोटा है इसलिये शिशु रूप फिर धारण किया हनुमान ने । सुबह हो गई माँ भूख लग रही है आज्ञा दो खाऊँ फल फूल जो लग रहे इस वाटिका में, पेडों को मत हानि पहुँचाना पृथ्वी पर पड़े फलों से क्षुधा बुझाना, यह नहीं यह लूँगा तोडने लगे, फेंकने लगे मचलने लगे हनूमान । माँ क्या बोले जब मचल उठे सुत फेंक दे सब खिलौने एक के एक बाद ।

आ गये माली होने लगी लडाई वृक्ष तोड डाले डालियाँ फेंक दी कोई वानर को न पकड़ पाये । मारे गये जब बहुत से माली तो दरबार में खबर पहुँचाई । बानर ने अशोक वाटिका में भयंकर धूम मचाई सिया की सीमा को छोड, सारा बाग दिया उजाड़, बचाओ हमें इस वानर से हमारी सरकार। भेजा अक्षयकुमार को उनके साथ पकडने हनूमान को । वह तो पकड़ में नहीं आया । रावण सुत अक्षयकुमार ने अपना प्राण गँवाया । तुरंत दोहाई दी सबने रावण के दरबार में । यह साधारण नहीं असाधारण वानर है ।

पकड़ में नहीं आता किसी के उजाड़ दी सारी वाटिका को । मेघनाद तुम जाओ बाँधकर लाओ, मारना मत देखूँ मैं भी तमाशे उस विचित्र वानर के। मेघनाद आया, बहुत यत्न किया पर वानर को न पकड़ पाया तो उसने ब्रह्मास्त्र चलाया, मानवता के रचयिता ब्रह्मा है उनकी आन को झट हनूमान ने बचाया मूर्च्छित हो गिर गया अपने को बँधन में बँधाया ।

कैदी बना, मेघनाद वानर को खूब शान से दरबार में लाया । पिताश्री पूछ लों इसके सब हालचाल यह कहाँ से आया । वाटिका में क्यों इसने तूफान मचाया । क्या पूछते हो मैं बताता हूँ मैं राम दूत हूँ सिया सुधि लेने आया । भूख लगी फूल फल मैंने खाया । वानर प्रकृति से कूद पेड पौधों को उछल कूद में रोंद गिराया । तुम्हारे मालियों ने मुझपर हाथ चलाया । सुरक्षा सब करते हैं वही काम मैंने कर दिखाया । अनुचित करनेवाले सब मारे गये । इसमें बोलो क्या दोष मेरा, हे लंकाधिपति, यदि तुम भी अपनी प्रजा और अपना भला चाहते हो तो अनुचित मत करो । चोरी बुरा काम है, सिया को सादर भेज दो राम के पास इसी में कल्याण तुम्हारा है ।

सदा आकाश की ओर टकटकी लगाकर देखने से जी घबराता है चक्कर सा माष्तिष्क में आता है । नतमस्तक हो जाये तो आनन्द आता है। सज्जन के आगे नतमस्तक होने से मानव आशीष पाता है । दुर्जन के समक्ष झुक जाने में भी अपने प्राण बचाता है, यानी जीवन दान पाता है, नतमस्तक सदैव लाभान्वित है जानता जमाना है उसे कोई न हानि पहुँचाता है । लघु बनकर विशाल शत्रु भी जीता जाता है । सिया को लेकर सादर साथ जाओ राम के पास देखो क्या आनन्द आता है । अर्द्धांगिनी सिया राम की उसके श्री चरणों में जब तुम लुटा रहे सब खजाना हो । फिर देखो छबि दोनों की मिलाकर क्या आनन्द आता है । पूर्णब्रह्म को पाकर रावण परमानन्द आता है । सिया राम के चरणों में लुटा दो तुम्हारा दर्प का खजाना। तन्मय हो जायेगा यह बैचेन मन तुम्हारा । राम मन का आराम है मान जाओ कहना हमारा । गर्ज बोला रावण- मैंने न तुझे अपना गुरु बनाया है शत्रु का दूत जान वाणी पर न मैंने तेरे नियंत्रण लगाया है । कुशल राजनीतिज्ञ हूँ इसलिये राजनीति का कर्तव्य निभाया है । असीमित हो गया बोलना तेरा अब नहीं मुझसे सुना जाता है । असीमित वाचाल शत्रु के दूत का प्राण

लेना अयुक्तिसंगत नहीं है यह लिख दूँगा आज मैं राजनीति के कानून में। प्राण मेरे या तेरे किसके जायेंगे यह कौन जानता जहान में। मौत अनभिज्ञता लाती है । चुपचाप जीव को ले जाती है । कब आयेगी कहाँ आयेगी जीव को स्वतः उस स्थान पर ले जाती है । भेद अपना न कुछ बताती है। सुन कटु वचनों को रावण उद्यत हुआ, मारने हनुमान को । आ गये मौके पर विभीषण बोले दंड अन्य कोई भी दे सकते हो रिपु दूत को । प्राण हनन नहीं कर सकते, क्योंकि जीवित संदेश दे लौटाना पडता है उसको अपने स्वामी के पास में । यदि ऐसा अन्याय होने लगेगा तो क्यों दूत जायेंगे विपक्षी के राज में । वह आता है अपने स्वामी के पक्ष में बोलने को विपक्षी के राज में । अन्याय नहीं किया उसने तुम्हारे साथ, सेवक धर्म पालन किया अपने स्वामी के गौरव को बखान के । तुम दण्ड जो चाहे दो लेकिन प्राण नहीं ले सकते इस अपराध में । मौके की बात कही भ्राता विभीषण तुमने आ गई मेरे दिमाग में । भगिनी मेरी को अंग भंग कर भेजी मेरे पास में। प्रतिशोध की अग्नि भभक रही मेरे हृदय के आसपास में । अंगहानि कर भेज उसके दूत को भी उसके पास में । विश्व के आराम राम ने कर दिया जीवन मेरा हराम । अब छेदता हूँ मैं भी उसके हृदय को उसी अग्नि बाण से ।

पूँछ वानर को अतिप्रिय है सर्वसम्मत निर्णय यह हुआ कि जलाकर पूँछ भेजो इसको राम के पास में । खुश हुये हनूमान सुनकर इस संवाद को । सुबुद्धि कुबुद्धि देते भगवान । वह न आते जीव के सामने । स्वामी भक्ति का यह इम्तिहान है । कुछ कर जाऊँ, देना सिद्धि , मनाया गणनायक विघ्न विनाशक गणपति भगवान को । पूँछ बढ़ा दी इतनी कि सब बाँधते थक गये कपड़े । डाला तेल झट लगाई आग । सूक्ष्म रूप बन गये पवनपुत्र घुमा रहे पूँछ को, अग्नि कोसों दूर, न आ रही लपट उनके पास । लंका दहन कर दी हाहाकार मच गया, बचाओ हमें इस आग से । अग्नि नहीं हुई विभीषण के धाम को, क्योंकि राम का वास था, पवनपुत्र उन्हीं का दास था । कितने शक्तिशाली होंगे राम जिनके दूत का है ऐसा काम । महिमा राम की जब लग गई सब राक्षसों के हृदय में छाप । तब प्रज्वलित अग्नि को किया हनुमान ने सागर में जाकर शान्त । आये लघु रूप में सिया के

पास । बोले दो चिन्हारी आपकी ले जाऊँ राम के पास । चूडामणि दी सिया ने, बोली-दे देना उन्हें पहचान जायेंगे, कहना, अब असह्य हो रहा जीवन। एक मास की अवधि केवल है मेरे पास में । इसी बीच छुड़ा ले मुझे इस निशाचर के हाथ से । पिशाच के हाथों से मारी जाकर कहीं पिशाचनी बन न भटकने लगे यह आत्मा मेरी, शीघ्र बचा लो मुझे इस दुर्गति से, कह देना करुणा के धाम से । क्षमा दान दो मुझे, करबद्ध माँगती क्षमा, मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। लक्ष्मण रेखा लाँघ भूल की, भटक रही हूँ आजतक संसार की भूल भुलैया में । मैं अर्द्धांगिनी उनकी, कह देना ले जाये मुझे अपने साथ में । दशा मेरी सब तुम वर्णन करना उनके सामने, सुत तुम मेरे पवनकुमार, करना सब सारांश व्यक्त उनके सामने। धीरज धरो, माता, आऊँगा पुनः समय पर मैं आपके पास में । जय सियाराम कह उड चले हनुमान आकाश में ।

सागर को लाँध पहुँचे हनूमान अपने सब वानर भालू साथियों के पास में । सिया अशोक वाटिका में विराज रही बहा रही नयनों से अश्रुधार है । गढ लंका के सब समाचार मैं लाया निसंदेह राक्षसों की वैभव और शक्ति अपार है । स्वर्ण की लंका जगमगा रही जहाँ उनका वास है । मेघनाद अद्वितीय शूरवीर हैं । ब्रह्मास्त्र उसके पास है । नीतिज्ञ है एक पत्नीव्रत है भवानी भक्त है, चाहे राक्षसकुमार है । ब्रह्मास्त्र के बल पर बाँध लिया मुझको, अब एक ओर ऐसा ही शस्त्र उसके पास है । किसके काम आयेगा वह जानता भगवान है । राम सदाचारी है । रावण उसका विरोधाभास है । नीति और न्याय का न उसमें नामोनिशान है । पूँछ बंधा आग लगाई उसने मेरे तन में । राम बस रहा मेरे रोम रोम में, हर अग्नि हो जाती शीतल आकर राम के पास में, क्योंकि क्रोध द्वेष, ईष्या इत्यादि नहीं यहाँ तैयार है। प्रज्वलित कैसे होगी जब आहार न मिले उसे खाने के वास्ते । सोना पिघल गया, स्वतः आ, अग्नि के पास, रामदूत सुरक्षित रहा । कोलाहल मच गया रावण के राज्य में निरीह प्रजा व्यथित हुई आग न लग सकी विभीषण के धाम में। क्योंकि राम नाम अंकित था उस मुकान में । चोरी राजा ने की, प्रजा का हुआ बुरा हाल है । चोर राजा है प्रजा भी चोर बन जायेगी इसमें न दो बात है । "यथा राजा तथा प्रजा" यह नियम है संसार में । विश्वास डगमगा गया शक्ति छोड देगी प्रजा कठपुतली बन नाचेगी केवल राजा रावण के

साथ में । जिसका खाया अन्न उसका बन गया गुलाम तन । पर मन स्वतंत्र है वह न किसी पिंजडे में आता है । सुरक्षा प्रजा की जब न कर सका रावण तो लाखों आत्माओं ने राम को पुकारा, स्मरण करते ही बुझ गई आग मिला आराम, राम नाम सबने अपने हृदय में छुपाया । विवश लडेंगे वह रावण की ओर से । लेकिन मन उनका रामके शान्त स्वरूप के पास चला आया । नर नहीं, जानवर वानर भालूओं की सेना होगी राम के साथ में, विशालकाय दानवों की सेना होगी रावण के पास में । निर्जीव हो चुके वह क्योंकि जीव उनका आ गया राम के पास में । अस्त्र अनेकानेक हैं रावण के पास में, लेकिन तीर निशाने पर कैसे जायेगा जब कंपकपी चल जाये चलाने वाले के हाथ में, निष्फल सब तीर जायेंगे, विलम्ब हो रहा है चलो राम के पास में । सिया अतिव्यथित है । अवधि केवल एक मास की है, करना सब कार्य इसी एक मास में ।

मधुबन में पहुँचे, मधुपान किया सबने खूब ठाठ से आ गये लौटकर सूचना मिली । अनुमान झट लगाया सुग्रीवने, कार्य कर आये सुधि सीता की ले आये तभी तो कर रहे सब मधुपान । स्वागत अपनी प्रजा का करने आये सुग्रीव ले सबको अपने साथ में ।

उल्हास भरा सबके मन में मुस्काते आये राम के पास में, वृद्ध मंत्री जामवन्त के सामने चुपचाप खडे रहे हनुमान देखो कितने शीलनिधान पवनकुमार हैं । बोले जामवन्त प्रभु, सुधि सिया की ले आये पवनकुमार हैं। आँख से देख आये तुम वर्णन करो सब समाचार आग्रह किया श्रीराम ने। असीमित का क्या वर्णन करूँ सीमा तो है प्रभु आपके पास में। अथाह विरह सागर में डगमगा रही सिया की जीवन नैया बचा लो प्रभु, समय बहुत अल्प है हाथ में । यह चूडामणि निशानी लो । माँ सीता को मैंने वचन दिया है कि कुछ दिन संतोष रखो मैं प्रभु को लेकर आऊँगा मेरी लाज हे नाथ अब आपके हाथ है । इस दास की विनती मान लंका की ओर प्रस्थान करो। राम की पताका जब लहरायेगी लंका के आस पास में तो छक्के छूट जायेंगे निशाचर राज के । भयभीत पहले ही हो गई है वहाँ की प्रजा राम के नाम से । त्राहिमाम् त्राहिमाम् जो पूजा कर रही आपके नाम से, उसकी क्या दशा होगी जब सुनेगी आ गई राम की सेना पास में । प्राणी की योग्यता

वही जिसका वर्णन वह न करे । एक अपना मुख छोड कह दे अनेक मुख उच्चार के । हनूमान ने लंका दहन का वर्णन न किया क्योंकि वह राम के हैं इसलिये राम ने ही किया उस काम को है । मैं क्या कहूँ प्रभु मेरे हृदय में विराज रहे उन्होंने स्वयं किया सुन्दर इस काण्डको है उनकी अदृश्य शक्ति यदि नहीं आती पास में तो विकृत हो पूँछ जला उनका दास आता उनके पास में, लेकिन सुन्दर उज्ज्वल हो निकल आया मैं इस काण्ड में । असुन्दर बनाना चाहा रावण ने लेकिन सुन्दर काण्ड हो गया प्रभु के प्रताप से ।

आद्योपांत लंका दहन के सब समाचार कहे जामवन्त, अंगद तथा अन्य वानर भालूओं ने बखान के । तुम सिया सुधि लाये । राम को आराम पहुँचाया उपकार किया मेरे ऊपर भारी बोलो क्या दूँ प्रति उपहार मैं । स्वामी के समक्ष प्रभु क्या हस्ती है सेवक की आप हर समय वास करो मेरे हृदय धाम में । मैं कभी आपसे अभिन्न न हो पाऊँ बाँध लो ऐसे भक्तिपास में । हे नाथ, राम आप कण कण के आराम हैं आपका सदा वास रहे इस हृदय आरामगाह में । सब प्राणी मात्र पाये आराम, आकर इस विश्रामगाह में, रोम रोम जब राम हो तो क्लेश का क्या काम है । सुररंजन दुःख मंजन प्रभो, आप मानव अवतार हैं । माँ सिया को शीघ्रातिशीघ्र बंधन मुक्त करो यह विनंती स्वीकार करो ।

जनता का आग्रह मानने में मानव का कल्याण है । मानव तभी जनता जनार्दन कहलाता है जब वह जनतादास बन जाता है । निष्कंटक उसके सब मार्ग हैं जो जनता का आदेश न कभी ठुकराता है । धन्य वह मानव है जिसका मानवता के हृदय कक्ष में नाम लिखा जाता है । जनसमूह का आग्रह मुझे शिरोधार्य है । तुम सिया लाने की करो तैयारी अपने हिसाब से, मैं प्रतीक हूँ तुम लीकहो, चलूं मैं तुम्हारे साथ में । देखो मानवता के ऐसे प्रतीक राम हैं, जिन्होंने सौंप दिया अपने मार्गप्रदर्शन का कार्य अपने साथियों के हाथ में । वह प्रतीक कभी न डगमगा सकता है जो जनता की लीक पर लगाया जाता है । सब सैनिक नौ नौ हाथ उछल रहे क्योंकि स्वेच्छा के नाम पर उन्हें राम सेना में भर्ती कराया है । जय श्री राम का सबने नारा लगया है । पृथ्वी गूंज उठी, सागर थर्राया है रामादल सागर की ओर

उमड़ आया है । रामादल के आगमन को सुन सिया प्रसन्न हुई, उसके वियोग का अंत आया है । मंदोदरी तिलमिला उठी उसके हठी पति का अंत आया है । समझाने लगी अपने पति को दूसरे को दो आराम तो आराम तुम्हारे पास आता है । तुम पुरुष हो, नहीं जानते नारी हृदय को वह कोमालांगी है, पति वियोग उससे नहीं सहा जाता है । सिया व्यथित है, दग्ध जिस अग्नि में, उसके सेक से ही मेरा हृदय घबराता है । उसे सादर पहुँचा दो उसके पति के पास इस विचार से चैन मेरे हृदय में आता है । सौतिया डाह से मैं नहीं दग्ध हुई कभी, मन मस्त मेरा तुम्हारे प्यार में है । प्यार यह न छिन जाये यह सोच जी घबराता है । रह रहकर सियापति राम का ध्यान आता है, पर पुरुष का ध्यान मेरे सतीत्व पर आँच लाता है । सीता को भेज दो राम के पास यह विचार आते ही चैन आता है । मैं जीऊँ चैन से, उसे जीने दो चैन से, यही विचार रह रहकर आता है। हाथ जोड कहती हूँ मान जाओ मेरा हृदय व्यथित हुआ जाता है । सीतापति का रह रहकर मन में ध्यान आता है । जयश्री राम । गृहस्थ मानव जीवन का सुन्दर काण्ड है उसमें क्यों विप्लव मचाया है । मान जाओ कहना मेरा नारी ने भी तो इस सुन्दर काण्ड में समान अधिकार पाया है । मन मस्त मेरा पागल हुआ जाता है । जब सीता और उसके पति के वियोग का ध्यान आता है । विरहाग्नि सुलग रही इस दम्पति के अंतस्तल में, वह कभी फूट कर भभक उठे और जला दे सारे लंका धाम को । परस्त्री को माँ बहिन माननेवाला, हर रोग दोष से बच जाता है । लेकिन इस करंट में जो फँस जाता है वह अपना सर्वस्व गँवाता है । सीता राम की है भार्या, हर समय तुम्हारा ध्यान क्यों उसमें जाता है । मैं भार्या हूँ तुम्हारी मेरा सीतापति के नाम से मन घबराता है । परस्त्री को माँ बहिन समझो, पर पुरुष को पिता, पुत्र, भ्राता समझो तो कल्याण हो जाता है । अन्यथा जीव स्वयं मृगतृष्णा में भटक सर्वस्व गँवाता है । मैं भी नारी हूँ, वह भी नारी है दो नारियों को एक संग क्यों कष्ट पहुँचाया जाता है । नारी शक्तिस्वरूप है शक्ति का हनन होते ही पुरुषार्थ स्वयं डगमगाता है । सूर्य की किरणों की शक्ति मिलते ही कमल खिल जाता है । हम दोनों का एक साथ करो कल्याण । उज्ज्वल अक्षरों में लिखा जायेगा

मानवता के इतिहास में आपका नाम । मुक्तकंठ हो बोलो जय सियाराम । छोड़ दो यह हठ की बात, अचल हो मेरा अहिवात ।

हँस बोला रावण- नारी स्वभाव से डरपोक होती है इसलिये शक्ति होते हुये भी रणभूमि में नहीं ले जायी जाती है । वे निधियाँ है जिन्हें सुरक्षित महलों में रखी जाती है । सुरक्षा की अवहेलना में निधि चोरी हो जाती है। मेरा नहीं कसूर राम लक्ष्मण ने की भूल । नारी क्या कभी जंगल में इस तरह अकेली छोड़ी जाती है । मुझे जंगल में मिल गई निधि, मैं लाया उठा, मेरे निवास की बढ़ाये शोभा यह निधि, इसमें कौनसा अन्याय है । मैं क्यों लौटाऊँ उसे जिसे ढूंढकर मैं लाया यहाँ । ऋण नहीं लिया राम से जो चुकाऊँ उसे । लाया उठा इसी निधि को अपने बलबूते से । वह ले जाये वापस इसे अपने पुरुषार्थ से । मेरे जीते जी राम नहीं आ सकता इस मणि के पास में, मर जाऊँगा पर जीते जी सिया राम को नहीं लौटाऊँगा । तुम कितना भी राम का गुणगान करो । पर मुझे न समझा पाओगी। हठ नहीं टूटे देह चाहे छूटे, इस संकल्प से मुझे नहीं गिरा पाओगी । यह आदेश दे, गृहस्थ सुन्दरकाण्ड की सुन्दरी रानी मंदोदरी की अवहेलना कर, रावण राज दरबार में परमार्श करने गया । अपने महाराजाधिराज रावण को प्रसन्न करने के लिये चापलूसों ने मधुर मधुर वीणा बजानी शुरू की, वानर भालूओं को तो हम क्षण में मारकर खा जायेंगे । आप क्यों घबराते हैं । एक वानर अंजनिकुमार के कर्तव्य को देख भीतर से सबके हृदय आतंकित हैं लेकिन जवान नौ हाथ की चलाते हैं, मन में सबके राम नाम अंकित कर गये हनूमान थे । मन में सुमर राम बढ़ाये रावण की शान, बेचारे लाचार थे ।

चापलूसों की भरी सभा थी लेकिन वहाँ भी नीतिज्ञ कई विराजमान थे । प्रहस्त रावण सुत ने दिया सुना इन सबको, क्यों झूठीं शान दिखाते हो, एक वानर जला गया लंका को उसको तो पकड भी न पाये हो । डर के मारे काँप रही सब नारियाँ गर्भ उनके गिरते जाते हैं । तेज उनका इतना है कि गर्भ में सुरक्षित संतति भी नष्ट होती जा रही है । तुम क्या खाओगे उनको बचा लो अपने घर को इसी में कल्याण है । पिताश्री, सीता भेज दो राम के पास इसी में आपका और प्रजा का कल्याण है । चापलूसों की बात में न कोई सार है गाल बजाना इनका काम है । मदान्ध रावण सुत की इस

शिक्षा को सुनने को कब तैयार था । गरजा बिजली सा, धमकाया उसे चला गया वह छोड़ पिता का, आ गया विनाश काल, इसलिये बुद्धि ने यह चक्र चलाया है । हितोपदेश इसे नहीं सुहाता है । "विनाश काले विपरीत बुद्धि" मरनेवाले के कोई उपचार काम न आता है । विभीषण भी थे सहमत इसी बात में, समझाया उन्होंने हर प्रकार से, मंत्री माल्यवंत भी बोला सीता को भेज देने में कल्याण है । वृद्ध मामा माल्यवंत जिन्हें आदरपूर्वक रावण बुलाता था आज उसपर भी लाल हो गया कुबुद्धि ने कैसे तांडव मचाया है। बोले विभीषण भैया सुमति कुमति सबके हृदय में रहती है आप जरा सोचो, जहँ सुमति वहँ सम्पत्ति नाना । जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना ।। तुम सब मिलकर मुझे पथभ्रष्ट करना चाहते हो, तपस्वी की महिमा गा गा कर, निकल जाओ यहाँ से मिल जाओ उससे जाकर लात मार विभीषण को गिराया है। फिर भी, नम्र हो उसने वही वचन सुनाया है । मैं तो चला जाऊँगा राम शरण में । फिर भी आग्रह करता हूँ हठ छोड़ दो नहीं मच जायेगा विप्लव सुन्दर काण्ड में, सुन्दरियां संतप्त होंगी सोच लो । मत खेलो यह युद्ध काण्ड लंकाराज्य में । संधि में सार है युद्ध विध्वंसकार अभी तो रामादल खडा सागर के उस पार है । वरुण देवता तुम्हारे पहरेदार हैं उनसे भी पूछ लो सेना के क्या समाचार हैं ।

विभीषण उड़ चला आकाश मार्ग से पहुँचा उस पार जहाँ रामादल था तैयार रावण के गुप्तचर आ रहा आकाश मार्ग से रोक लेंगे इसे न जाने देंगे राम के पास में । रोका उसे सेनापतियों ने बोला- राम को सूचना दो आया रावण भ्राता आपकी शरणधाम में । गद्गद् हो उठे राम सुनकर इस समाचार को निर्भय हो ले आओ विभीषण को मेरे पास में । हानि लाभ का न इसमें विचार है । शरणागत की रक्षा करने में मानव का हर प्रकार से कल्याण है । शत्रुओं से लोहा लेने को तैयार लक्ष्मणकुमार हैं । प्रेम पात्र को भरने के लिये राम सदैव तैयार हैं । दोनों हम भाईयों के बीच में आने दो पूछ लें हम उनको हृदय के क्या हाल है । प्रभु की आज्ञा मिलते ही ले आये वानर भालू सादर विभीषण को प्रभु के सामने । चरणों में लौटकर दंडवत प्रणाम किया विभीषण ने त्राहिमाम् त्राहिमाम् पुकार के । शरण में ले लो प्रभु दग्ध हुआ हूँ भाई के तिरस्कार से । जल लाओ आदेश दिया

श्रीराम ने बैठाये आसन पर किया राज्याभिषेक अपने हाथ से । मेरे दल में लंकेश नाम से सम्मान होगा आपका । बैठो निर्भय हो मेरे पास में। संधिपत्र लिखता हूँ मैं तुम्हारे साथ में । आज से मेरा मार्ग दर्शन होगा आपके हाथ में । आप रहोगे हर समय मेरे साथ में । तिरस्कार की जलन का क्या उपचार नहीं हुआ, सम्मान की इस दवा से । तुम्हें हृदय से लगा लिया मैंने अपने हाथ से । शान्त विभीषण हुआ आके रामके पास में । बैचेन रावण हुआ नीतिज्ञ भाई को गँवा के । गुप्तचर भेजे रावण ने देखने अपने भाई की स्थिति राम के धाम में ।

भेषबदल आया चतुर शुक गुप्तचर लेकिन माया का तम हट गया आते ही प्रकाश के सामने । मारने पीटने लगे वानर भालू उसे छुडा दिया लखनलाल ने । विपक्षी दल की खबर लेना दूत का काम है । अपराध नहीं किया इसने कोई सजा का क्या काम है । सकुशल जाने दो इसे अपने महाराज के पास में । ठीक खबर लाया है इसकी सहनानी के लिये पाती देता हूँ मैं इसके हाथ में । दे देना तुम्हारे स्वामी को निर्णय लेगा वह स्वयं अपने विचार से । जो देखा वह सब सुना देना रोक नहीं है कोई किसीकी जबान में । सकुशल लौट जाओ, भूल हुई मारा इन्होंने तुम्हें बेकार है जब करने आये तुम अपना काम है ।

राम विचार विमर्श करने लगे कैसे जाये इस अथाह सागर के पार लंका का यह रखवाल है । फाँद गये पवनपुत्र इस शत योजन सागर को आकाश मार्ग से लेकिन इतनी सेना कैसे उतरे पार इसका विचार है ।

उपासना करो वरुण देवता की वह स्वयं दे देंगे मार्ग कहा विभीषण ने विचार के । विचार समझ में नहीं आया तो भी चुप रहे लक्ष्मण अपने भैया के सामने । राम बैठ गये समाधि लगा के । तीन दिन व्यतीत हो गये बैठे समाधिस्थ राम को । सागर किंकर्त्तव्य हुआ भूल गया अतिथि सत्कार को मर्यादा को ठेस लगी । मर्यादा पुरुषोत्तम जाग उठे यह अथाह सागर है । मदमस्त जल अपार है । यहाँ विनती के जल की बूँद का क्या काम है । भक्ति के शीतल पय को निगल गया यह अभिमान से, विष का उपचार विष है । अमृत नहीं आता वहाँ काम में । अग्निबाण लाओ लक्ष्मण शोषूं मैं इसके अभिमान को । चलाया अग्निबाण राम ने । सागर की प्रजा जलने

लगी । हाहाकार मच गया सागर के राज्य में । प्रजा की रक्षा करना राजा का कर्त्तव्य है, यह सोच भेंट ले सागर आया राम के सामने । रक्षा करो प्रभु मेरी अज्ञानता में हो गया यह अवहेलना का काम है । सन्मार्ग पर चलाने के लिये यदि की जाये प्रताडना तो वह भी उपहार है । जननी खींच लेती है अबोध शिशु को यदि वह जाता अग्नि के पास है । रक्षा करती है वह उसकी न कोई नुकसान है । शरण में आपकी आया जल रही प्रजा मेरी, बचा लो शरणागत वत्सल आपका नाम है ।

आप जलनिधि, जल मानवता के जीवन आधार हो । पूजा की आपकी, पिता पितामह समान हो । मार्ग चाहिये मुझे जाना उस पार है । नल नील दो शिल्पी आपकी सेना में तैयार हैं, पुल बाँध लो उनसे उतर जाओ पार, सुन्दर निर्माण हो जहाँ वहीं सुन्दर काण्ड है ।

आद्योपांत सब समाचार सुनाया शुक ने आकर रावण के पास । सौंप दी पत्रिका बोला- मान लो इस बात को इसी में कल्याण है । भभक उठा रावण मारी लात उसके भी आकर क्रोध के आगार में । रामादल में आ गया । श्रापमुक्त हुआ वह शुक सज्जनों के साथ में । वह कलुषित राक्षस बन रहा था रावण के राज में । परिणित हो गया ऋषि राज के सुन्दर रूप में आकर राम के इस सुन्दर काण्ड में । अपार महिमा है इस सुन्दकाण्ड की । इसका मनन ध्यान और पाठ करने से बेड़ा पार है । जय पवनकुमार की । रोम रोम में जिनके बस रही मूर्ति राम की । विश्व के आराम की सुन्दर मानव जीवन प्रदर्शन करने में अग्र रामायण का नाम ।

पुल बाँधने में जुट रहे सब बानर । पत्थर राम नामसे अंकित कर दे रहे नल नील के हाथ में राम गौरी गणेश और शिव का ध्यान कर रहे बैठे अपने स्थान पर । निर्विघ्न सब कार्य गणनायक आप रहना साथ में राम और शिव का नाता अभिन्न है । सत्यं शिवं सुन्दरम् बस रहे राम के मन मन्दिर में । पुल जहाँ से बाँधा जायेगा वहाँ शिव की स्थापन होगी । पूजा शिव और शक्ति की होगी गणेश मनाय के । राम के ईश्वर शिव हैं । जय सियाराम जय पार्वतीनाथ शिव भगवान । ऋद्धि सिद्धि लायें साथ गणपति महाराज । आप कर्णधार हैं आपको ही करना यह काम है । स्वर आपके हैं तार आपके हैं जैसे झनझनाओगे वैसे बज उठेंगे तार । मानव की प्रेरणा शक्ति हे देव ! आपके हाथ है, आपको बारम्बार नमस्कार है । विघ्न बाधाओं से बचा लेना, जाना उस पार है, जय गणनायक महाराज ।

सेतु बाँध, विश्वनाथ, शिव भगवान की रामेश्वर नाम से स्थापना कर यानि राम के ईश्वर सत्यं, शिवं सुन्दरम् को प्रेरक बना राम सेना सहित उतरे सागर पार । लंका के बाहर खुले मैदान में अपने खेमे दिये डाल ।

सागर को पार कर सेना आ गई लंका के द्वार, यह मिला रावण को समाचार, मन में घबराया रावण, सेना विचलित न हो जाये इसलिये मन के भेद गुप्त रखने का करने लगा उपचार । गढ़ लंका के शिखर पर अप्सरा नृत्य का भारी आयोजन किया तैयार । मणिमुकुटों से सुसज्जित हो पहुँच गया वहाँ मंदोदरी के साथ । नर्तकियों को अमूल्य उपहार दिये जायेंगे । नृत्य करो ऐसा कि इन्द्र की सभा की हो जाये हार । देव हतोत्साह हो जाये स्वयं देख राक्षसों का वैभव अपार । मदमस्त हो रहा था रावण शिखर पर थी पायल की झनकार । क्षुब्ध मंदोदरी बैठी थी पास कर्णफूल गिरे अपने आप । अपसगुन हो गया । मंदोदरी गई घबरा । सगुन अपसगुन यह तो नारियों की विड़म्बना महान । नारी अबला इसीलिये कहलाती है, क्योंकि इन कुचक्रों में फँस, नहीं लेती सबलता से काम, जरा सी आकांक्षा में मन मुरझा गया, चेहरा कुम्हला गया, देखो नारी का स्वभाव । कर्णफूल मैं स्वयं पहनाता हूँ । सगुन अपसगुन का छोडो विचार । कर्णफूल उठाने जैसे झुका रावण मुकुट शीश से गिरा अपसगुन सत्य है दिया उसे आभास । नारी को

दोषी ठहरा रहा क्या वह नहीं जानता वही है उसका निकास । निकास से ही है विकास । शक्ति स्वरूपा नारी करें धमनियों में रक्त संचार । वह प्रेरणा शक्ति है करती सूक्ष्मता से विचार तभी तो सही निर्णय देती है निकाल । युद्ध अशुभ है मान जाओ पिया समझाती बारम्बार, लेकिन रावण कब मानने को तैयार, उसके सिर पर मौत का भूत संवार ।

अदृश्य शक्ति राम ने भेजी, दिया रावण को सुझाव, अपसगुन के पारदर्शी यंत्र से देख लिया नारी ने लेकिन मदहोश रावण के बीस लोचन न आये काम ।

रात्रि का सुहावना समय था, पूर्णचन्द्र थे आकाश में विराजमान । आमोद प्रमोद करने लगे राम भी अपनी सेना के साथ । रावण दर्प से बैठा सिंहासन, देख रहा नाच । राम अपनी सेना के मध्य विराज उनके विचार रहे जाँच । चाँद कितना सुन्दर है पर यह काला धब्बा कैसा दिख रहा बोलो सब अपने विचार के अनुसार । पृथ्वी की छाया दीखती है और कुछ नहीं है मित्र सुग्रीव का था समाधान । चंद्र और विष दोनो भाई है इसलिये दोंनो में इकाई । मिलन में जहाँ अमृत बरसाता चंद्रमा वहाँ विरह में जहर उगल तडफाता भी है । साथ साथ बोले श्रीराम । बोले हनूमान - प्रभु चंद्र है आपका दास आपके साँवले स्वरूप का उसके हृदय में सदैव रहता वास । श्यामलता का ही है उसमें प्रकाश, सही प्रश्नोत्तर मिल गया, हो गया समाधान । जय श्री राम, सब जीवन मात्र को दे रहे आराम । तुम्हारी महिमा अपार ।

रात्रि व्यतीत हो गई, प्रातःकाल हो गया युद्ध के श्रीगणेश के विषय में वानरदल विचार विमर्श करने लगा । राम क्या आदेश देंगे युद्ध का संचालन कैसे उपयुक्त रहेगा । इसी विचार में निमग्न सब एकनिष्ठ खडे थे। रगों में सबके एक ही खून दौड़ता है लेकिन उसे भी परिधि में रहना पड़ता है । परिधि यानि मर्यादा को लाँघना सबके लिये हानिकारक सिद्ध होता है। हर जीव में राम रहता है । आत्माराम की आज्ञा बिना जो डग आगे भरता है वह द्वन्दों के कीचड़ में फंस गिर पडता है लेकिन जो गणपति गणेश मनाकर राम के आदेश से चलता है । उसका बेडा निसंदेह पार होता है । राम विश्व के आराम है । दुःख भंजन के पास दुःख कैसे आ सकता है । भंवर के चक्कर में कैसे फँसेगा वह जीव जिसके अंतस्तल में चक्रधारी रहता

है अपनी सेना के सब जीवों के अथाहसागर मन की ली जब राम ने थाह माप । तब मौन भंग किया बोले राम बिना सूचना दिये किसी पर भी धावा बोलना है अन्याय । युद्ध के ललकार की पूर्व सूचना दो रावण को पहुँचा, वह सचेत हो जाये शत्रु आ गया उसके पास अब क्या उसका है विचार । हम बन बन में विचरते हैं वह है महाराजाधिराज । संधिपत्र भेजने में हमारा सब प्रकार से है कल्याण । क्योंकि लंका के महाराज विभीषण बैठे हमारे पास । मित्र के राज्य की रक्षा करना है मित्र का काम । जय श्री राम, भक्तवत्सल राम, मानव दानव पशु पक्षी तक को भी देते सम्मान । प्रजा को कष्ट न पहुँचे, जय प्रजापालक राम, तुम्हारा मानवता के पटल पर अग्रगण्य नाम । युग युग बीत जायें लेकिन नाते रिश्ते टूट नहीं सकते क्योंकि यह तार नहीं जिससे रखा मानव को बाँध यह तो भावना के सूत्र हैं जिनमें मानव स्वयं ही लिपटा जा रहा है देखो कैसा है कमाल । मानव कहीं भी चला जाता है लेकिन वंश उसीका कहलाता है जो पिता माता है अग्रवाल सारे विश्व में हर क्षेत्र में छा रहे हैं तो भी कहलाते अग्रसेन महाराज की औलाद । युग युग बीत गये लेकिन आज भी है अग्रगण्य उनका नाम अग्रवाल । मानव जीवन की पथप्रदर्शिका है रामायण अग्रगण्य इसलिये अग्ररामायण मेरा नाम, जय श्री राम, जय अग्ररामायण । दूत भेजना है रावण के दरबार । बहुमत से नियुक्त हुआ बालिकुमार अंगद युवराज । दे आशीष, योग्यता का कर बखान पूर्ण विश्वास से सौंपा राम ने इस उत्तरदायित्व को अंगद के हाथ । साहस से काम लेना, जीव कोई अकेला नहीं विवेक सदैव रहता उसके साथ । बालक हो इसलिये पितावत् दे रहा तुम्हें शिक्षा दो चार वैसे तो तुम हो बालिकुमार । शत्रु के घर नहीं जा रहे पिता के मित्र के यहाँ जा रहे तुम बालिकुमार । रावण और बालि में था सदैव मित्र व्यवहार इसलिये सौंपा तुम्हें यह कारभार । पिता के मित्र की रक्षा करना है सबसे बड़ा काम सहर्ष जाओ लंका ऐ बालिकुमार । अंगद युवराज बोले जय सिया राम । हृदय में ले लिया राम को अपने साथ । अंगद के संग जा रहे राम । सिया सुमर रही राम, रावण सोच रहा क्या राम आ गये, त्रिलोकीनाथ भगवान ऐसा कौनसा मानव है जो दानवों से लोहा लेने को हो तैयार । संदेह भयभीत है रावण, क्या हो गया रामावतार। जय सियाराम ।

जा रहा बालिकुमार रावण के दरबार परमपिता राम है उसके साथ। माता पिता छोडने जाते शाला में बच्चे अपने का पकड हाथ । डरना मत बेटे मास्टर नहीं मारेगा देख मैं बैठा तेरे पास । निश्चिंत हो जाता बालक क्योंकि पिता उसके है साथ । यह संसार का है नियमित व्यवहार । पिता की आड़ में निर्भीक हो बैठ जाता है बालक सीनातान । बालिकुमार का भी हुआ वही हाल बैठने को भी न मिला रावण के दरबार में स्थान । तो झट ले राम नाम का आधार पूँछ अपने से किया बैठने को सिंहासन तैयार । रावण के सामने उससे भी ऊँचे सिंहासन पर बैठे अंगद युवराज । नतमस्तक तो हो गया वह पहले ही झटके में । मदांध न समझ सका । वैसे रावण था प्रकाण्ड विद्वान । प्रभु की माया का पार न किसी ने पाया ।

सेना का सारांश

युवराज अंगद निज इच्छा निर्मित ऊंचे सिंहासन पर रावण के ठीक सामने आरूढ हो गये । रावण के पहले मानवीय गुण शिष्टाचार को धक्का मार दिया । तुम महाराजाधिराज होकर भी आसन नहीं दे सकते आये अतिथि को अपने दरबार में । सुन लो मैं रामादल का प्राणी हूँ भेज दिया तुमसे भी ऊंचा सिंहासन युक्ति से मेरे प्रभु ने मेरे पास । भेदभाव नहीं है समानता का भाव है राम के आगार में । राजा, रंक, ऊंचा नीचा न कोई, राम बसते सबके हृदय समानता से आराम से । वह नयनाभिराम है देख ले अपने हृदय में झाँक के । केवल दो नयन हैं हमारे पास में उन चक्षुओं से देखकर आनन्द मग्न हो जाते हमारे प्राण । तू तो अपूर्व है बीस लोचन तेरे पास में । जरा देख इस छवि को कितनी शान्ति, आराम आयेगा तेरे हृदयधाम में । कर परीक्षा कृतकृत्य हो जा भेज सीता राम के पास में । निष्कंटक राज करना बचा अपनी प्रजा को आतंकवाद से । द्वेष छोड़ प्रेम कर आराम ही आराम फैल जायेगा तेरे इस लंका राज्य में । स्वर्ण की लंका है तेरी द्वेषाग्नि में पिघल जायेगी, प्रजा जल जायेगी क्या आयेगा तेरे हाथ में । विरहाग्नि में जल रही सिया माँ, क्या आया कुछ तेरे हाथ में । माँ समझ भेज उन्हें अपने राम के पास सब अपराध बह जायेंगे ममत्व के प्रभाव में । बीस लोचन पाकर भी मदांध तू नहीं देख सकता प्रकाश को, इस पर्दे को हटाने को भेजा राम ने मुझे तुम्हारे पास में । वह मानवता के आराम

है । दीपज्योति प्रकाश है, स्वयं नहीं आगे बढकर झुलसते किसी को लेकिन निर्दोष हैं । जब पतंगा स्वयं आकर प्राण गंवाता मोह के वशीभूत हो उस दीपक के प्रकाश में ।

मुस्काया रावण, बोला - बहुत लंबी लंबी बातें बनाता है । क्योंकि स्वामीभक्ति वानर का स्वभाव है तभी तो मालिक के इंगित पर नाच कूद दिखाता सब संसार को । केवल रामादल से आया इतना बताया किसका जाया पिता का नाम भी क्या नहीं है तेरे । तेरी अपनी हस्ती क्या है केवल राम का कर रहा बखान है । कपि तो केवल वही एक था जो आया पहले मेरे पास में । वह सेवक था हमारा, सुधि लेने भेजा था, क्या कुछ कर गया अनिष्ट जो रावण महाराज कर रहे भाँड ज्यों उसका गुणगान है । प्रभु की आज्ञा बिना कुछ कर गया इसलिये शायद भेद छुपाये वह फिर रहा चुपचाप है । बालिकुमार युवराज अंगद मेरा नाम है । वह हनूमानकपि था हमारे राम का वायुवेग से चलने वाला इसलिये आया था समुद्र लाँघ सीता का पता लगाने लंकाराज में । बालि इतने प्रतापशाली पिता का पुत्र होकर तपस्वी का दूत बना फिरता है धिक्कार है अंगद तेरे नाम पै । बालि मेरा मित्र है उसकी कुशलक्षेम बताओ बैठ मेरे पास में । राजोक्त गुण सीख, छोड इस धावन के नीच काम को ।

छोटा बड़ा नहीं कुछ भेदभाव हमारे पास में । मिल जुलकर अपनी अपनी योग्यता के अनुसार हम सब करते काम हैं । शिल्प में चतुर थे नलनील उन्होंने बाँधा पुल सागर पर राम नाम के आधार पर । चलने में चतुर था पवनकुमार आया पवनवेग से तुम्हारे राज में । पिता मित्र होने के नाते ही मैं आया तुम्हारे बीसों नेत्रों के जाले हटाने राम नाम का अंजन डाल के । मित्र बालि रामाकार हो गया, गया स्वर्गधाम को पूछ लेना राम की महिमा जाकर उसके पास में या सुन लो मैं बालक हूँ मेरे पास में । मैं पाँव रोकता हूँ धरती में ले राम के नाम को खींच ले यदि कोई मुझे तो सीता हार दी मेरे स्वामी चले जायेंगे मेरी बाजी की हार से, लेकिन जीत गया मैं तो राजा, राजा के चार मुख्य गुण रूपी मुकुट चले जायेंगे ले संदेश स्वयं राम के पास में । गुण स्वयं वर्णन करते हैं जाकर कहता नहीं कोई निज मुख से जाकर हमारे राम के पास में ।

मत कर ऐ छोकरे ऐसा प्रण, हार जायेगा उठाया था शंकर सहित कैलाश मैंने अपने हाथ में । यहाँ राम नहीं राम का सेवक है, क्या कोई सेवक नहीं है बाजी खेलने को तुम्हारे राज्य में ।

आज्ञा रावण की पाकर सब उठे । बोले- एक एक करके आओ मेरे पास में । सब भरसक प्रयत्न कर हार गये, पग टस से मस न हुआ, वह खड़ा था राम नाम के आधार पर । मेघनाद हार गया बोला, छोडो इस बेकार के काम को । शक्ति ह्रास हो रही इस वाद विवाद में । स्वयं झुका रावण खींचने पग तो हटा लिया अंगद युवराज ने, बोला- जीत जाओगे स्वतः ही बाजी, पकड़ो राम के चरणों को जाकर अपने हाथ से । मित्र का पुत्र है दण्ड नहीं देता, चुपचाप चला जा अपने धाम में । निर्भीकता दे रहा तुझे इनाम में । जीत का इनाम तेरे चार मुकुट पहले ही जा चुके मेरे राम के पास में । तू मदांध है, नहीं देख सकता परदा आ गया तेरी आँखो के सामने। वह देख, जा रहे मेरे आगे आगे मैं कर रहा ले अनुकरण उनके साथ में । राम आराम है विध्वंस का तू कर रहा काम है । जय सियाराम है ।

अंगद रावण को नीचा दिखा आ गया लौटकर रामादल में । गौरव खूब बखाना रामने निज मुख से बालिकुमार का । गौरव से जो उत्साहित करे निज सेवक को वह सेवक कभी नहीं जा सकता उस मालिक के हाथ से। डराये धमकाये जो मालिक हर समय अपने सेवक को तिरस्कार के व्यवहार से वह अवसर पाते ही निकल जाता है मालिक के हाथ से । राम बोले- युवराज अंगद यह मुकुट चार तुमने कैसे भिजवाये मेरे पास में । मुकुट नहीं प्रभु ये राजा के चार गुण स्वतः चले आये आपके पास में । मदांध रावण न रख सका इन्हें सँभाल कर अपने पास में । यह स्वतः भाग आये आपके पास में । युद्ध होना निश्चित हो गया, बोले, सेना को कैसे विभाजित किया जाये । कौन सहायक होंगे, कौन सेनानायक होंगे, किसके हाथ में सौंपते हो युद्ध के सब भार को । बोले जामवन्त - बूढ़ा मंत्री हूँ । पराक्रम नहीं अब मेरे पास में । पर सुझाव देने में शायद मैं आ सकूँ आपके काम भक्त विभीषण आपके साथ में । वह मित्र आपके हैं स्वयं लंकाधिराज बनाया आपने उनको अपने हाथ से । उनकी प्रजा को कष्ट न हो, युद्ध के संचालन का भेद पूछो सब विभिषण लंकाअधिपति के पास से । चार लंका

के द्वार हैं । चार भागों में विभाजित हो सेना तैनात हो चारों द्वार पे । भेद सब जानते है पूछ लो पवनकुमार से । सबसे बड़े फौजी खजाने की सुरक्षा करेंगे मेघनाद, उनके सामने आ सकते केवल लक्ष्मणकुमार हैं । किष्किन्धा के राजा सुग्रीव होंगे खड़े एक द्वार पर सेना को ले साथ में । अंगद भी कुछ कम नहीं वह बालिकुमार है । ख्याति जिसकी फैल रही चहुँ ओर, रखा था रावण को छः महीना काँख में दबाकर । पवन पुत्र के पराक्रम का क्या पार है काँपती लंका की जनता आज भी उनके नाम से । चौथी टुकड़ी होंगी उनके साथ में लेकिन वह पवनवेग है इसलिये सब युद्ध की बागडोर होगी उनके हाथ में । वह घूमेंगे चहुँ ओर घेरा डाल के । जहां भीड़ पड़ेगी वहीं पहुँचेंगे संकट मोचन हनुमान है ।

विधि का विधान

रावण की एक एक करके सब शक्तियाँ क्षीण होती जा रही हैं । उसके बड़े बड़े शूरवीर, अपर, महोदर, अतिकाय इत्यादि सब वीर रण में अपने प्राण गंवा चुके हैं । देकर अपने प्राणों की आहुति रणचंडी की भूख वह न बुझा सके काल विवश रावण रणचंडी को शान्त करने के लिये नहीं तैयार है । वह तो अग्नि में घृत बार बार डालता जा रहा है अग्नि प्रज्वलित अति वेग से होती जा रही है । त्राहिमाम् त्राहिमाम् प्रजा कर रही लेकिन राजा का नहीं जा रहा उस ओर ध्यान है । प्रजा दुःख से पीडित हो जिस राजा की, उसका कहाँ कल्याण है । रावण नहीं झुलसा जा रहा इस अग्नि में क्योंकि जगत जननी सीता का उसके हृदय में बास है । पुत्र कितना भी कुपुत्र हो लेकिन माता कभी कुमाता नहीं होती यह विधि का विधान है । बड़े बड़े सुत के अपराध तृण समान जान, झेलना जननी का काम है । दण्ड देती है अपराध करने पर लेकिन यदि रो पड़े बालक तो क्षमा कर पुचकारना जननी का स्वभाव है । सचेत बार बार कर रही रावण को लेकिन काल विवश वह प्रेम के अश्रु नहीं बहा पाता । रोमांचित हो पसीना छूटता जा रहा है, क्योंकि कोई उपचार न उसके काम आ रहा है । नागपाश में बाँध लिया राम लक्ष्मण को अचेत कर दिया मायाजाल में आ गये गरूड ले आये हनुमन्त अपने साथ में । काट दिये सब बन्धन मुक्त हुये राम लक्ष्मण दे रहे सम्मान पक्षीराज गरूड और श्री हनूमान को । मायातीत है स्वयं उन पर माया का क्या चल सकता जाल है । माया का मान भंजन न हो, इसलिये

चुपचाप बँध गये मायाजाल में । सबकी खुशी का जो ध्यान रखे वह महान राम है । नर नारायण है मानवता का विधान महान है । ब्रह्मास्त्र थे दो मेघनाद के पास में, एक चलाया उसने पहले हनुमान को पकडने के लिये अशोक वाटिका में, मुर्च्छित हुये हनुमान, ब्रह्मा का रखने भान, बँध गये नागपास में । दूसरा चलाया युद्धक्षेत्र में लखनलाल पर मूर्च्छित हो गिर पड़े विफल न होने दिया ब्रह्मा के बाण को । प्रण पूरा हुआ, युद्ध समाप्त हुआ, ले चलूँ इसे पिता रावण के पास । उठाने लगे मेघनाद टस से मस न कर सका धराशायी लखनलाल को । पड़ा रहने दो पिता को शुभ सूचना दे जश्न कराऊँ जाकर लंका के राज में । शोक सभा जुडने दो कर दाह संस्कार लौट जायेंगे अपने धाम को । देख रहे थे मेघनाद का यत्न उठा न पा रहे थे लखनलाल को । पीठ दिखाई जैसे ही रावणसुत ने, वैसे ही ही पहुँच गये पवनसुत वहाँ, उठाया फूल के समान, लक्ष्मणलाल को अपने हाथ में । राम नाम के आधार पै, ले आये राम के पास, छटपटा उठे राम, बढ़ाया भातृप्रेम का सम्मान संसार में । युद्ध को विराम दो नहीं चाहिये मुझे सीता, भ्राता के दाम पर सिया अर्द्धांगिनी है मेरी आँधा अंग ही गँवाया आधा तो है मेरे पास में । लेकिन क्या जबाब दूँगा माता को जब बिलखती आयेगी वह मेरे पास में ।

बोले विभीषण धीरज धरो, राम जब तक साँस है तब तक आस है। उपचार हो सकता है जीव निकलने से पहले यह औषधि शास्त्र का विधान है । वैद्य सुषेण है लंका राज में । वह जिला दे यदि साँस हो काया में । उसके पास औषधियों का विचित्र विज्ञान है । पता बता दिया विभीषण ने तुरंत ले आये हनूमान उठा उसे आकाश मार्ग से ।

शत्रु के मरीज को देखने से की पहले तो सुषेण ने आनाकानी । नम्र राम बोले यहाँ शत्रु मैत्री का न कोई काम है । यदि मरणासन्न पड़ा हो अचेत रोगी तो वैद्यराज आपका क्या कहता आत्माराम है । उसकी रक्षा करना या अपने ज्ञान की ज्योति को अस्त होने देने उसके साथ में । शत्रु मित्र का यहाँ भेदभाव नहीं है । मैं सौंप रहा अपने भाई को आपके हाथ में । आस्थाभरा मेरा यह समर्पण है जो चाहे उपचार करो आपके है हाथ में।

जाँच पड़ताल की भलीभाँति वैद्यराज ने, बोले शक्ति लगी भारी है, लेकिन औषधि शास्त्र में इसका एक विधान है, संजीवनी बूटी है एक हिमालय के पास में । जगमग ज्योति जगती है उसकी घोर रात्रि के अंधकार में । यदि ले आये सूर्योदय से पहले कोई उसे वहाँ से तो लौ से लौ जग जायेगी, प्राण की रक्षा निसंदेह हो जायेगी । पवनपुत्र खड़े सुन रहे सब बात थे, दो मनुष्यों की बात में बिना बुलाये बोलना मूर्खता का काम है । प्रभु समर्थ हैं स्वयं आज्ञा देंगे भेजेंगे सेवक अपना बूंटी लाने हिमालय के पास में । बूंटी अंकुरित हुई थी उन्हीं भिलनी के जूठे बेरों से जिसे त्याज्य जान फेंक दिया था पीछे को लखनलाल ने भैया अपने की आँख बचा के । कण कण में व्याप्त भेद उनसे क्या छिप सकता जिनका हर मन में वास है । जीवन दायिनी बनी संजीवनी बूंटी सादर मँगायेगे राम श्री हनुमान से । प्रेम जीवनदायिनी शक्ति है, वही आती सृजन के काम में । आनन्द मग्न हुये एक क्षण प्रभु प्रेम के इस संविधान में । समयाभाव है, झट बूंटी लाने का आदेश दिया पवनकुमार को ।

पवन वेग से सादर चले लेने पवनकुमार समाचार मिला यह राक्षसराज को । राजद्रोही हो गया जब निज भ्राता विभीषण तो सुषेण का क्या अपराध है । झुँझलाया रावण, फिर शान्त हुआ, रोकना अब मुझे राह में पवनकुमार को । चिन्ह बूंटी के सब बूंटियों पर लगा दो फँस जाये भ्रम के मायाजाल में । बूंटी न पहचान सके यदि पहुँच भी जाये उसके पास । पहले मध्य में रोक लो ऐ कालनेमि बिछा प्रेम के मायाजाल को । बजाओ ऐसी डुगडुगी, नाचे बंदर हनुमान तुम्हारे इशारे पर । सूर्योदय तक नचाना, भूल जाये वह बूंटी लाने की बात को । यह असाध्य है क्यों वृथा मेरे प्राण गँवाते गिड़गिडा कर बोला कालनेमि रावण के सामने । कायर धूर्त यदि आज्ञा उलंघन की तो मारूँगा तुझे मैं अपने हाथ से । मौज मस्ती के समय सब सखा तत्पर थे लेकिन भागना चाहते उलझन के काम में । कालनेमि ने अपने मन में विचार किया मरना तो मेरा निश्चित ही है यदि न करता हूँ तो रावण मार डालेगा तथा इस षडयंत्र के लिये किसी और को नियुक्त करेगा, स्वामी द्रोही का कलंक मेरे सिर पर लगेगा इसके विपरीत अपने कर्त्तव्य पर खड़ा रहने से यदि भेद खुल जायेगा तो राम दूत हनूमान के हाथ से मृत्यु होगी । राम

भक्त के रूप में चाहे वह स्वांग रूप ही क्यों न हो मेरा कल्याण हो जायेगा पवन पुत्र के स्पर्श मात्र से । निश्चय यह कर रामभक्त का रूप धर सखा रूप से आया सामने हनुमान के । बोला राम- रावण में युद्ध हो रहा जीत होगी श्री राम की । मेरे नेत्र पारदर्शी है, देख सकते बहुत दूर की । सोचा हनूमान ने गुरू इसे बना दूरदर्शिताका यदि ले लूँ ज्ञान तो सुगम हो जाये मेरा काम । बूंटी यहीं से देख लूँगा सीधा जाऊँगा उसके पास । मन में आया आराम । आराम में बस रहे राम, राम के पास तम का क्या काम । प्यास लग गई बोला जल पी आऊँ तृप्त हो गुरूदीक्षा लूँ आपके पास से । कमण्डल दिया जल का । इतने जल से मेरी प्यास नहीं बुझेगी सरोवर बता दो तृप्त हो, पी आऊँ भाग कर वहाँ से । कालनेमि के बताये हुये सरोवर पर झट पहुँचा हनूमान कपि छलांग मारकर । मकड़ी एक वहाँ थी श्रापग्रस्त पड़ी, हो गई श्राप मुक्त कपिपति चरणस्पर्श पाकर । दिव्य रूप धारण किया बोली यह भक्त नहीं राक्षस है छल रहा तुम्हें अपने माया जाल में । डाल के सुगमता का उलटा चक्र चला यह दुर्गम कर रहा सब काम को । भागे हनूमान, गुरू मंत्र से पहले गुरू दक्षिणा दे दी हनूमान ने उसके हाथ में । पूँछ में बाँध पटका भू पर जीवन मुक्त किया कालनेमि राक्षस को । भक्त का रूप था चाहे स्वांग में पर राम भज रहा था कालनेमि ले माला हाथ में । सद्गति हो गई राम नाम जपने के प्रताप से । राम आराम है छल कपट का वहाँ नहीं काम है । तम ठहर नहीं सकता जहाँ भानुप्रकाश है । पवनपुत्र के रोम रोम में राम है । भूत पिशाच का वहाँ क्या काम है, राम राम का जहाँ नाम है । जयश्री राम । जय पवनकुमार । रोम रोम में राम, विश्व का आराम संकट मोचन पवनपुत्र तुम्हारा नाम है । तुम्हारी कृपा होते ही राम तुम्हारे पास आराम है । जय अंजनीकुमार राम तुम्हारे पास हैं । संकट सब कट जाते आपकी कृपा से मिलते राम आपके पास आराम ही आराम है । जय श्रीराम ।

राह के कंटक उखाड़ हनूमान पहुँचे हिमालय पर्वत पर गिरि द्रोण के पास । लेकिन चकित रह गये हनूमान जगमगा रहा था सारा पर्वत राज। वैद्यराज ने तो कहा था कि संजीवनी बूटी की है यही पहचान कि रात में जगमगाये वह लता अपने आप । वह प्राणदायिनी बूंटी है सुधाकर से वह

रात को करे प्रेमालाप । शान्त वातावरण में अमृत का करते दोनों आदान प्रदान । सुधाकर रात को चाँदनी छिटका मदमस्त करता संसार । मधु बरसता धरा पर जीवन सृजन करता संसार । संजीवनी का भी वही है काम वह भी शीतल रात्रि के वातावरण में बेसुध को सुध में ले आये बचा ले उसके प्राण। सूर्योदय के बाद चाँद और संजीवनी दोंनो ही भूल जाते मानवता से अपना प्रेमालाप । पर यहाँ तो कुछ और ही है जगमगा रहे सब वृक्ष कौनसा ले चलूँ साथ । यहाँ अवश्य है कोई जालसाज । सूर्योदय होते ही बिगड़ जायेगा सब काम । इसीलिये यह निर्णय किया ले राम का नाम पूरे पर्वत को ही उठा लिया उडने लगे हनूमान उसे ले अपने साथ ।

अयोध्या मार्ग में आई । रात को जागते थे भरत कुमार, देखा कोई निशाचर आया है, आग का गोला लिये अपने हाथ में । राम की प्रजा की सुरक्षा हेतु छोड़ा उन्होंने बाण ले राम का नाम, गिरि द्रोण लाये हनूमान ले राम का नाम, भरत ने चलाया बाण राम का ले नाम, दोनों जुड गये, नीचे उतरे हनूमान गिरते हुये बोले जय सियाराम, घबराये भरत कुमार यह तो निशाचर नहीं राम भक्त है हुआ अनर्थ मेरे हाथ । समाचार पूछा आप कौन हो कहाँ जा रहे मेरे भैया का प्रेम से ले रहे मूर्च्छा में भी नाम । राम का दास हूँ हनुमान मेरा नाम शक्ति लगी लक्ष्मण को ले जा रहा हूँ गिरि द्रोण राम के पास । सूर्योदय से पूर्व पहुँचना है राम के पास । बैठो मेरे बाण पर पहुँचाये एक क्षण में राम के पास । मैं सेवक राम का हूँ धन्य है भरतकुमार जिनके राम बाण में शक्ति है इतनी कि एक क्षण में ले जाये राम के पास। नतमस्तक हुये हनूमान किया भरत कुमार को नमस्कार । रामानुज दो आशीर्वाद पहुँच जाऊँ मैं निष्कंटक राम के पास । माया अब न आ सके मार्ग में अगोचरहो आपका यह राम बाण काट दे सब बंधन मुक्त हो पहुँचूं राम के पास । माया के स्वतः सब कट जाये जाल जयश्री राम, मन में सुमिर पवनकुमार । सुमेरू बने भरत कुमार, जिनका हृदय राम का आगार। रटते हर पल राम का नाम भरत और पवनकुमार । जय श्रीराम।

समय का सम्मान

रात्रि व्यतीत होने का समय हो रहा पवनकुमार के आने में विलम्ब हो गया । व्यथित हो बोले श्रीराम यदि सूर्योदय हो गया और पवनपुत्र नहीं

आये तो बिगड़ जायेगा सब काम । समय बड़ा मूल्यवान है । समय चूक जाने के पश्चात पछताने में क्या सार है । समय की सदैव एक चाल है वह कभी नहीं रुकता सदैव गतिमान है । आलस्य का उसमें न लेशमात्र है। इसी प्रकार मानव भी यदि आलस्य को दूर भगा समयानुकूल करे अपना काम तो उसका कल्याण है । अन्यथा बीत जायेगा समय कुछ हाथ न आता है । विलाप कर रहे राम निराशा का फैल रहा उनके चहुँ ओर अन्धकार । प्रकाश ले गिरि सज हाथ में आ गये पवनकुमार । उचित अवसर पर आशा के दीप जगाये लेकिन बिलम्ब कहाँ हुआ कहो मार्ग के वृतान्त । अवकाश के समय सब होंगे वार्तालाप इस समय तो करो वैद्यराज लक्षमण कुमार का उपचार । औषधि शास्त्र में अनभिज्ञ मैं नहीं पहचान पाया सब बूंटियाँ एक जैसी जगमगा रही थीं मैं ले आया गिरिराज को राम से मिलाने यहाँ आप सबके पास । पहचान लो संजीवनी बूंटी करके उसका सम्मान, करो उपचार। बूंटी तो अलग यह जगमगा रही भ्रमित कैसे हुये पवनकुमार । यह भी था कोई छल मायावियों का । छलना नहीं ठहर सकती जहाँ हो राम का आगार। रामादल में आ छलना लुप्त हो गई । वास्तविकता का जगमगा उठा प्रकाश। घोट कर बूंटी जैसे ही दी मुख, उठ बैठे लक्ष्मणलाल । वैद्यराज धन्य आप हैं मैं भूल नहीं सकता आपका कभी अहसान । मेरे जीवन चरित्र में सुनहरे अक्षरों से सदैव लिखा जायेगा तुम्हारा नाम और औषधि शास्त्र का ज्ञान । काल से बचा ले यदि काल पर पहुँच जाये धन्य संजीवनी बूंटी तेरा नाम । तू अजर है, अमर है, विश्व कल्याणकारिणी औषधि तेरा नाम । तू प्राचीन है युग युग में नवीन बनेगी खोजकर लायेंगे जो मानव रात दिन संलग्न हो उनका भी सदेव लिखा जायेगा तेरे इतिहास में नाम । अमिट का हर पल जो चिन्तन करे वह अमिट है । सुषेण वैद्यराज अमूल्य का कोई मोल नहीं क्या दूँ आपको उपहार । विज्ञान का सदैव भरा रहे भंडार । नये नये सदैव होंगे आविष्कार, नये नये रखे जायेंगे नाम, लेकिन तत्त्व सदैव एक है । उसे प्राचीन कहो या नवीनता का दे दो नवीन खोजकर्ता के साथ नाम । जय श्रीराम ।

राम तो सोच रहे क्या दूँ उपहार, उधर वैद्यराज झटपट जुटा रहे संजीवन बूंटी का अपने पास भंडार । राम निमग्न अपने काज में वैद्य

अपना कर रहा काम कपि ने देखा यह हो रहा उल्टा काम । युद्धविराम में अड़चन होगी यह जीवित कर देगा विपक्षी दल के सब योद्धा कैसे आगे चलेगा काम हे राम । सचेत हुये भगवान बोले सादर छोड आओ वैद्यराज को इनके धाम । प्राणरक्षक संजीवनी बूंटी ज्ञान की घूँटी है । तेजस्विनी है अपार । संभाल लेगी सब काम । रावण जब प्राण दंड देने को भागेगा तो यही आयेगी मेरे काम । क्यों मारते हो प्रभु, बूंटी लाया हूँ भरपूर आपके वास्ते यही तो कवच होगा वैद्यराज के हाथ तभी तो बच पायेंगे उनके प्राण। रावण की उग्रता में अपमानित हो बिखर जायगा वैद्यराज का एकनिष्ठ ध्यान। वह बौखला जायेंगे, भूल जायेंगे जगधात्री माँ संजीवनी का उपचार। नियम विस्मृत हो जायेंगे । इष्ट साधना में चूक होने से सदैव होता अनिष्ट महान, गलत सेवन करने से औषधि नहीं आयेगी काम । वैद्य शान्तिपूर्वक जब देखेगा रोगी को तभी तो कर सकेगा उपचार । देखने में चूक गया तो कैसे बनेगा काम । एकनिष्ठ ध्यान था तभी तो सबरी के बेर खाने आ गये राम । जूठे मान तिरस्कार किया, आँख बचा राम की फेंका पीछे, पाया परिणाम, प्रेम अमृत है । फेकने पर भी जीवित रहा, सुरक्षित रहा, बचा लिये बन संजीवनी लखनलाल के प्राण । धन्य है निष्कंपट प्यार । वह जगमगाता चीर अंधकार विष नहीं आता अमृत के पास । सबरी के प्रेम का तिरस्कार किया तो भी उसने अपने को सुरक्षित रख बचाये लखनलाल के प्राण, धन्य सबरी तेरे निष्कपट प्रेमभाव । जय श्रीराम ।

लक्ष्मण उठ बैठे । वैद्यराज सुषेण को श्री हनूमान कुशलपूर्वक उनके धाम पहुँचा आये । गिरि द्रोण को सम्मानपूर्वक यथास्थान हनूमान स्थापित कर आये । त्रिगुणात्मक शंकर सुवन केशरी नन्दन ने पूर्ण किये यह तीन काम। जीता साम, दाम, भेदभाव, काँप उठे रावण के प्राण, हताश हुआ कुँवर मेघनाद, ब्रह्मशक्ति दो थी उसके हाथ, दोंनो निकल गई उसके हाथ से । एक ने मूर्च्छित किया हनुमान को दूसरी ने मूर्च्छित किया लक्ष्मणलाल को । दोंनो चमक उठे इस अस्त्र के वार से, जैसे चमकता है कुंदन निकल अग्नि के प्रहार से । सोचने लगा रावण, सब वीर काम आ चुके संग्राम में । भ्राता कुम्भकर्ण निमग्न है नींद के आराम में । तेज सो रहा है जगाऊँ आये वह मेरे काम में । उसके समान अन्य तेजस्वी वीर नहीं है मेरे पास में ।

अपने विश्वासपात्र आदमियों को भेजा रावण ने कुम्भकर्ण को जगाने हेतु उसके पास में । वह पर्वतकाय सो रहा था आराम से । श्वास के स्वर चल रहे थे नाक से, मानो तेज हवा बह रही हो पर्वतराज पे, जगाये कौन जा उस भूधराकार के पास में । क्रोध के आवेश में आजाये वह तो मसल दे पाँच सात को पकड एक हाथ में । चढ़े कौन उस पर्वत पर वह जड़ नहीं चेतन हैं वह धरणी का शृंगार नहीं वनस्पति का आगार नहीं जो बुलाये पर्यटकों को अपने पास में । वह विशालकाय राक्षस है सो रहा आराम से। निद्रा भंग करने से यदि भड़क गया तो पहुँचायेगा सबको क्षण में परलोकधाम में । रावण बैठा अपने महल में । इसे जगाना कोई खेल नहीं, रावण की बुद्धि पर क्यों परदा पड़ा, नहीं समझता मर गये पुत्र अतिकाय से । नर क्षति कर रहा फँस नारी के मोह फाँस में । सीता के हृदय में राम का वास है । सिया को दे रखा रावण ने अपने हृदय में वास है । लेकिन विधि का देखो कैसा अनोखा विधान है, विनाश काल देख हर लेता सब ज्ञान है । इसलिये कहते हैं "विनाश काले विपरित बुद्धि" । बीस लोचन रावण के पास है, लेकिन आवरण देखो कैसा आ गया उसके सामने । सिया के हृदय में देख नहीं सकता राम का तेज अपार है । वह प्रकाश इतना तेज है कि चकाचौंध हो गये बीस लोचन । मद का छा रहा अन्धकार है । पास रखी चीज नहीं देख सकता फिर दूरदर्शिता का तो स्वतः हो गया ह्रास है । काल पास कर रहा अट्टहास है । राम दे रहे चेतावनी बार बार है, लेकिन लुप्त हो गया रावण जैसे प्रकाण्ड पंडित का सब ज्ञान है । नतमस्तक नहीं हो रहा समय पर झुक जाने में सार है, यह जानते हुये भी अनजान है । रावण के डर से भयभीत सब मिलकर कुम्भकर्ण को जगाने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं । एक युक्ति निष्फल होती है तो दूसरा साधन निकालते हैं । सीढी लगाकर सब उस भूधर पर चढते हैं नाक कान में तिनके डालकर जगाते है, लेकिन निद्रा में निमग्न कुम्भकर्ण जरा नाक कान को मसल फिर खर्राटे भरने लगता है । अब सबने माँ सरस्वती की शरण ली, ढोल नगाडे बजाने लगे । माँ वीणा धारिणी का प्रयास कैसे असफल जा सकता है, माँ की वीणा में सब तार नियंत्रित हैं । वाद्य बजाकर वीरों को युद्ध स्थल में ले जाते हैं। हर खुशी के समय वाद्य बजाये जाते हैं । जन्म के समय भी वाद्य बजाये

जाते हैं, विवाह के समय भी वाद्य शुभ सूचक बजाये जाते हैं । सब शोभा यात्राओं में बाजे बजते हैं और तो और श्मशान ले जाते समय भी घंटे घड़ियाल बजाते हैं, ताकि सब जान जायें कि जीव अंतिम यात्रा को जा रहा है ।

कथा वार्ता में भी वाद्य बजाते हैं ताकि जीव का ध्यान एकनिष्ठ हो। वह जम्हाई न ले चुस्त रहे ध्यान से सुने । मंदिरों में आरती के समय नगाड़े बजाते हैं ताकि भक्त ध्यान से आरती गाये और भगवान भी अपने भक्तों की तन्मयता में मग्न हो जाये । वीणा धारिणी की वीणा की महिमा अपार है । संगीत जीवन का सार है, सब सिद्धियों का दातार है । मधुर भाषण अपनी झंकार से जीत लेता संसार है ।

नगाड़े जीते, उठ बैठा कुम्भकर्ण, बोला- क्या बात है ? हलचल क्यों मची मेरे पास है ? युद्ध हो रहा राम रावण में, वीर गति को प्राप्त हुये लंका के बहुत से वीर, रावण ने बुलवाया आपको है । आराम करके उठा कुम्भकरण आराम में बसते राम हैं । बोला- युद्ध का क्या कारण है ? लंका पर आक्रमण किया किसी ने या कोई अन्य भेदभाव है ? रावण हर लाया राम की भार्या सीता लौटाने को वह नहीं तैयार है, बस यही सारी तकरार है । विभीषण ने समझाया उसे लात मार निकाल दिया । राम ने किया उसे अंगीकार है । चोरी कर लाना पराई नारी को यह बड़ा अन्याय है । भाई बने विरोधी तो खुल जाये सब भेद, फिर जीत का क्या काम है । बंधुत्व ठुकराना स्वतः को जलाने का काम है । आत्महनन कर लिया रावण ने । रणचंडी को दिया आह्वाहन है । लेकिन दुष्टों का संहार और सत्पुरुषों का उद्धार रणचंडी का काम है । बहुत गलत किया रावण ने यह काम है । अब जगाया मुझे युद्ध से पहले क्या मुझसे परमार्श ली थी जो बुलाया अब मुझे जब बिगड़ चुका सब काम है । सद्बुद्धि की हिलोरों में झूम रहा कुम्भकर्ण युद्ध के लिये नहीं तैयार है । माँस और मदिरा का दिया उसे प्रेम से आहार हे । निद्रा से उठे हो कुछ जलपान करो, पीछे सब हो जायेंगे विचार, अब करो आप आहार, खा पीकर मस्त हुआ कुम्भकर्ण गरज उठा सद्बुद्धि भाग गई जैसा खाया अन्न वैसा हो गया मन, चला कुम्भकर्ण भ्राता रावण के पास, विशालकाय कुम्भकर्ण से सन्मुख वार्तालाप करने को रावण

अपने महल के शिखर पर खडा हुआ भ्राता का करने सम्मान है । सुनकर रावण के मुख से सब युद्ध के वृतांत कुम्भकर्ण बोल उठा तुमने किया बड़ा अन्याय है । पूर्व सूचना यदि तुम देते मुझे तो मैं बतलाता नारद ऋषि ने कहा मुझे इक बार था । नर के हाथों अपना वध होगा । शायद आ गये नारायण लेकर नर का रामावतार, करने राक्षसों का उद्धार है । युद्ध में जाता हूँ मैं जीत तो मेरे हाथ है । प्राण गँवा दू तो जीत गया राम के हाथों मरकर मेरा अहोभाग्य है । समक्ष होंगे राम तो, भय का क्या काम है । एकनिष्ठ ध्यान होगा उनसे युद्ध करने में, मेरा सौ फीसदी कल्याण है । यदि मर गया तो ज्योति में मिल जाऊँगा, यदि नारायण नहीं हुये तो जीत युद्ध को आज दे दूँगा विराम है । सायंकाल तक निर्णय हो जायेगा बेड़ा किस पार है । जय सियाराम । युद्ध में आ गया एक भूधराकार है ।

विशेषता की माँग विशेष ध्यान, यह एक स्वयं सिद्ध बात है कि विशेषता को देखने के लिय हर मानव आकर्षित हो जाता है । सडक पर जन समुदाय चल रहा है उनमें यदि कोई विशेष व्यक्ति आ जाये तो उसे देखने के लिये जमघट लग जायेगा । चाहे वह कोई नाटककार हो, फिल्मी दुनिया का नायक, या नायिका हो, विदेशी हो, विशेष लम्बाई में कम हो, विशेष लम्बा हो इन सबको देखने सब खड़े हो जाते हैं । क्यों ? क्योंकि उनमें कोई विशेषता है । विशेष लम्बाई में छोटा हो तो बौना आया, बौना आया कहकर सब देखने भागते हैं । विशेष लम्बा हो तो, ताड़ वृक्ष आ गया कहकर देखने भागते है । इसी मानवीय प्रकृति के अंतर्गत सब वानर सेना भूधराकार कुम्भकर्ण को आते देख चकित हो प्रभु राम के पास पहुँचे बोले- प्रभु एक मानवाकार आ रहा है जैसा हमने न कभी सुना न देखा, देखो कौन आ रहा है । माया है या वास्तविकता प्रभु आप पारदर्शी हैं निहार कर देखिये, यह कौन सा पर्वत चला आ रहा है । पास गये जो वानर देखने उन सबको मुट्ठी दबा कुचल डाल रहा है । सौ सौ एक बार पाँच सौ हडपता है एकबार, सौ सौ दोनों पैरों के नीचे, सौ सौ दोनों हाथों की मुठ्यिों में, सौ एक बार डालता है मुख कन्दरा के माहीं, प्रभु कैसे होगा बेडा पार ।

सुनकर समाचार, भ्राता से मिलने आया विभीषण बाहर, किया नतमस्तक हो बडे भैया को प्रणाम दिया आशीर्वाद लघु भ्राता को कुम्भकर्ण ने, यह चेतावनी दे बार बार । तुम धन्य हो चले गये रामादल में रखने को इस कुल का नाम । वैर किया राम से निसंदेह नष्ट होगा यह वंश । तुम सबका तर्पण करोगे । लंकेश होगा तुम्हारा नाम उज्जवल । नहीं तुम्हारा नतमस्तक कलंकित होगा भाल । हम कट जायेंगे लेकिन कटने नहीं देगें अपनी शान, हार या जीत यह तो हर खेल का परिणाम । हमारा मरण भी जीत का पहनेगा हार । मर मिटेगा कुम्भकर्ण धब्बा न भातृ द्रोह का लगने देगा अपने भाल । अब दूर हो जाओ मिलने आये थे रख रहा हूँ तुम्हारा सम्मान, अन्यथा विपक्षी दल का होने के नाते करता तुमसे भी दो दो हाथ, नीति के अनुसार एक बार छोड़ रहा तुम्हें बार बार न करना मेरे पास आने का साहस अन्यथा करूँगा तुमसे भी शत्रु का व्यवहार । मिल भ्राता से मलिन चेहरा लिये आये विभीषण श्री राम के पास । पानी पानी हो रहे क्यों काँप रहे बोले श्रीराम । मोती का पानी उतर रहा, जा रही प्रभु उसकी आब । प्राण तो बक्स दिये भ्राता कुम्भकर्ण ने लेकिन उतार ली सब मोती की आब। सहोदर है हम दोनों भाई रावण कुम्भकर्ण, निज जननी की कोख की रखेंगे लाज । तुम भाई सौतले हो, निज जननी के नाते तुम्हारा है अपना अलग अधिकार । तुम विपक्षी दल में शोभायमान हो हमारे शत्रु समान । दूर चले जाओ भ्राता हनन न हो जाये मेरे हाथ । मुस्कराये प्रभु राम बोले- धन्य कुम्भकर्ण का विचार । अक्षुण्ण रहेगा उसका नाम । विश्व में कुम्भकर्ण अनेक होंगे जिसने दिया तुम्हें उपालम्भ बडप्पन के साथ । चाँद में भी एक धब्बा है लेकिन कितना शीतल, उज्ज्वल है चन्द्रमा का गोलाकार मुखागार है, उज्ज्वलता के बीच वह धब्बा है उसे देखे किस रूप में वह तो है देखनेवाले का काम है । लात रावण ने मारी तुम्हें किया भ्राता अपमान झूठी प्रशंसा न कर नेक सलाह देना है मंत्री का काम । निर्दोष को ठुकराया मदमस्त हो रावण ने यदि छोड आये तुम उसका धाम तो कौनसा किया बोलो अपराध। तुम तो सुरक्षा को, खड़े हुये बचाने उसका नाम, लेकिन वह उद्यत हो गया मिटाने अपना नाम । रावण न अन्य कोई और होगा जहान में नाम । कुम्भकर्ण, मेघराज, विभीषण सब रखेंगे नाम । आत्मग्लानि कैसे हुई राम

भक्तों में होगा तुम्हारा अग्रगण्य नाम । कलंक यह, छोटा सा है छुप जायेगा जब चारों ओर फैलेगा चंद्रमा के समान प्रकाश । आत्मग्लानि की पीड़ा हर रहे तर्क का कर प्रकाश, हर क्षुब्ध हृदय का क्षोभ हरते राम देखो कितने महान, माँ कैकयी संतप्त हुई कैकयी नाम कलुषित हो गया जहान । बोले राम- जननी का केवल कैकयी को ही होगा सदैव एकाधिकार । कैकयी केवल राम की जननी ही कहलायेगी । अन्य और किसी की माँ को नहीं मिलेगा इस नाम का अधिकार । एक छत्र राम माता के नाम का मुकुट पहनाया । दशरथ की प्रिय रानी, भरत जननी । कैकयी के मस्तक पर श्रीराम ने कर विज्ञान प्रकाश । हर ली ग्लानि माता की, फैला चहुँ ओर राम का प्रकाश । मन का दुःख हर ले, जय श्रीराम । मानस का दुःख हर ले, चैन दे आराम दे वही मानव विशेष होंगे युग युग में श्रीराम । प्राचीन नवीन है नवीन प्राचीन है यह शृखंला अटूट है युग युग में उत्पन्न होते है मानव महान, जय श्री राम । बुझते दीपक की लौ अधिक चमकती है देख चकाचौंध हो रहे सब वानर भालूराज । राम देते सबको आराम, अपने पराक्रम में मस्त कुम्भकर्ण पा रहा आराम । थककर करने लगे सब वानर भालू आकर अपने दल में आराम । दिन ढलने लगा पक्षी नीडों को जा रहे करने आराम। कुम्भकर्ण ललकारा बाहर क्यों नहीं आते राम । मेरा प्रण है मैं नहीं लौटूँगा वापसी बिना लिये या दिये प्राण । अस्ताचल को सूर्य जाने से पहले यह सौदा करना है, आओ करने क्रय विक्रय का यह सौदा महान । दे दो या ले लो प्राण, दो खडे हैं, एकाकार होगा, बोलो आओ बाहर । राम राम फूट पडा, कुम्भकर्ण के रोम रोम के बाहर । राम आ गये युद्धस्थल में, हिम आच्छादित हुये कुम्भकर्ण पर्वतराज अग्निबाण बरसने लगे पिघल गया हिम पर्वतराज । कुम्भकर्ण युद्ध स्थल में गिरा, गिरते समय भी दब गये अनेकानेक उसके नीचे जैसे आ गया भूचाल। लेकिन ज्योति मिल गई ज्योति में कुम्भकर्ण राम में हुये एकाकार । कुम्भकर्ण का हुआ संहार । मिला रावण को समाचार। जय श्रीराम ।

आशा ठगनी

कुम्भकर्ण की मृत्यु का समाचार पा रावण एक क्षण के लिये तिलमिला उठा, लेकिन आशा ठगनी मृगतृष्णा फिर उसे विजय के स्वप्न दिखाने लगी। प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? कुम्भकर्ण जैसे असाधारण योद्धा का राम के हाथों

वध हो चुका ज्योति में ज्योति मिल चुकी । द्विगुणित तेज का बल जग चुका लेकिन रावण के हृदय का तम अहंकार दूर नहीं हुआ । सत्य है तर्क के करों में पडकर सत्य भी बनता छुई मुई है । सेना का निरन्तर संहार हो रहा है सब स्वजन परिजन रणस्थल में अपने प्राणों की आहुति चढा चुके हैं । मृत्यु की ओर अग्रसर हो रहा रावण, आशा ठगनी मदपान करा रही है । माया धन्य तेरी छाया जब तक साँस तब तक आस, आशा तृष्णा ना मरी मरमर गये शरीर, रावण स्वयं युद्ध में जाता है । सूर्य को पकडने जाता है अपने आप को जला लौट आता है । मेघनाद यह सुन, पिताश्री के चरणों में आ शीश नवाता है । चाचा कुम्भकर्ण को मौत के घाट उतारा यह राम नहीं मानवता में चमत्कार है । ब्रह्मास्त्र दोनों काम आ चुके । चमत्कार को काटने के लिये चमत्कार चाहिये, उसे देवी की आराधना से मुझे पाना है । रणचंडी दे दिव्यास्त्र इसलिये मुझे निर्विघ्न यज्ञ रचाना है मौत का भय नहीं मैं कूद जाऊँ इसी क्षण युद्ध में लेकिन सफलता हेतु यह गुप्त रूप से यजन कराना है । एकनिष्ठ ध्यान से माँ चंडी का यह यज्ञ कराना है । पिता से आदेश ले यज्ञ आरम्भ किया मेघनाद ने बैठ गुप्तस्थान में भेद खुल गया झट रामादल में, वहाँ विलम्ब का क्या काम था जहाँ लंकापति विभीषण स्वयं विराजमान था । बोला प्रभु राम मेघनाथ नहीं आया युद्ध स्थल में इसमें बड़ा राज है, वह कर रहा रणचंडी का आह्वाहन है । यज्ञ विध्वंस करो नहीं तो पाँसा पलट जायेगा, प्रभु आप मर्यादा पुरुषोत्तम हो मर्यादा भंग न करोगे देवी के अस्त्र की वह वरदान दे विवश हो जायेगी । लक्ष्मण रेखा लाँघ फँस गई सीता रावण के हाथ में । पूर्णाहुति यज्ञ की होने से माँ दुर्गा फँस जायेगी राक्षसकुमार मेघनाद के हाथ में । पूजास्थल से बाहर ले आओ मेघनाद को, साम, दाम, भेद भाव किसी भी उपचार से । बोले मुस्कराकर श्रीराम लक्ष्मण रेखा के निर्माता लखनलाल, हनुमान आदि को ले जाओ तुम उस स्थान पर, परिधि बाँधने वाला ज्ञाता भली भाँति जानता है परिधि तोडने के ज्ञान को। तुम्हारी लंकापुरी का गुप्त दर्शनस्थल दिखाओ तुम रहना उनके साथ में । राक्षसी माया का पूर्ण ज्ञान है तुम्हें मार्गदर्शन कर, करवा लेना पूर्ण सब काम को । जय गणनायक विघ्न विनाशक सुमरन कर राम ने भेजा लखनलाल हनूमानादि को विभीषण के साथ में ।

मेघनाद एकान्त गुप्त स्थल में बैठ निश्चिंत हो, कर रहा था माँ भैरवी का आह्वाहन उचित स्थान को ढूँढने में नही लगा बिलम्ब, क्योंकि जानकार विभीषण थे उनके साथ । झट पहुँच वहाँ विध्वंस करने लगे यज्ञ का वानर मचा मचा तूफान । हरकतें सब सहते रहे वानरों की मेघराज मौन साध । उत्तरोत्तर बढता गया तूफान, लखनलाल ने भी दी युद्ध की ललकार । हुडदंग पराकाष्ठा को पार कर गया, पूर्णाहुति तक न रुक सकेगा यह तूफान । चुप रह यदि सहता जाऊँ तो भी नहीं करने देंगे वानर पूर्ण यज्ञ का काम । सभ्य मानव लखन तो नहीं करेंगे मुझ पर यज्ञशाला में वार लेकिन यह वनचर तो कहीं भी मचा सकते तूफान, इन्हीं नीति का नहीं ज्ञान । अनभिज्ञ को नहीं दोषी ठहराता कानून, नहीं लागू बनचरों के साथ, यह विचार कर खड़े हुये ले शस्त्र मेघनाद आये यज्ञशाला के बाहर ।

बोले गरजकर, तुम तपस्वी तेजस्वी कहलाते हो अपने आपको । मेरे माँ के भवन में कैसे मचाया तूफान इन वनचरों ने कैसे आये लडने तुम मेरे भवन में । यह रणनीति कौनसी है बताओ जरा जानूं कितना तुममें है ज्ञान । परीक्षा ले तुम्हारे ज्ञान की पीछे करूँगा तुमसे दो दो हाथ ।

बोले लखनलाल मुस्कराकर सुनो घननाद यह रात्रि का समय नहीं फैल रहा चहुँ ओर सूर्य का प्रकाश । यह चाँदनी रात नहीं । यह दिन है पुरुष द्योतक है, रजनी नहीं नारी का जहाँ नारा । शयनकक्ष नहीं तुम्हारा। नारी का नहीं ले रखा सहारा, यह माँ भवानी का भवन माता की गोद में उधम मचाता निरीह बालक सताता बार बार तो भी प्यार पाता । मातृत्व इतना महान है कि पुत्र कुपुत्र हो तो भी माता कभी कुमाता नहीं होती । समझा माँ दुर्गा की यह स्तुति महान । वानरों ने उधम मचाया माँ क्या हुई उनपर नाराज । वह देख उनकी हरकतों को मुस्कराती रही तभी तो आगे बढते गये । यदि आँख दिखा, देती डाँट, तो शायद आ जाते बाहर । वानर माँ के बालक अबोध है, उनकी क्रीडायें देख वह मुस्कराती रही । वह नाच कूद हुडदंग मचा उसे रिझा रहे थे । मैं शीश नवा रहा था नतमस्तक हो पाने को माँ का आशीर्वाद । जय माँ दुर्गा भवानी माँ उन्होंने क्या दिया मुझे यह तो निर्णय हो जायेगा अपने आप । मरो या मारो युद्ध का धर्म है। माँ सबकी माँ है उसका प्यार सबके लिये समान, युद्ध भूमि से भाग क्यों लिया उसकी

गोद में तुमने मुँह छिपा । विषमता का वह नहीं करती व्यवहार, इसलिये देखो भेज दिया स्वतः तुम्हें अपनी गोद से बाहर । क्रोध नहीं किया तुम पर भी नहीं निकाला भवन के बाहर । विचार बदल गया तुम्हारा तुम स्वयं आ गये बाहर । वह कल्याणमयी है, अनिष्टकारी नहीं, असुरनिकंदनी है, देव और दानव दोनों पूजते माँ काली, धन्य तेरी महिमा अपार ।

कूद पड़े युद्ध में दोनो ले माँ भैरवी का नाम । दोनों ओर से शस्त्र चल रहे तेज दोनों का महान शक्ति दोनों की अपार । इधर सती सुलोचना थी मेघनाद की नार, उधर उर्मिला का एकनिष्ठ था लखनलाल में लगा ध्यान। सुलोचना कुंठित थी उसने मना किया मत जाओ युद्ध में आज । मान लो मेरी बात । युद्ध नहीं आज यज्ञ होगा जीत हेतु लाऊँगा मैं माँ दुर्गा से अस्त्र माँग, दे यह वचन आये थे मेघनाथ अपने कक्ष से बाहर । सीता ने काटी लक्ष्मण रेखा विप्लव हुआ महान । मेघनाद ने वचन तोड दिया युद्ध का जैसे ही सुना निकल गया वाक्य,"सत्यमेव जयते" सत्य की विजय हुई दोनों तरफ से सत्य हुआ सती सुलोचना का वाक्य । सकुशलता का मूक वाक्य सत्य हुआ उर्मिला का अटूट था ध्यान । सती तो दोंनो उर्मिला और सुलोचना थी समान । लेकिन उर्मिला तपस्वनी के रूपमें थी एकनिष्ठ था उसका ध्यान । सुलोचना पति के साथ थी भले बुरे का दे रही थी ज्ञान । वचन की आड़ थी मेघनाद नहीं सके ताड़ । बाणबिद्ध हुये जब भूमि पर पड़े तब आया ध्यान, । वचन तुम्हारा सत्य हुआ अनिष्ट हो गया लुट गया तुम्हारा सुहाग । भुजा भेज रहा हूँ सहनानी के लिये तुम्हारे पास । प्रिया युग युग तक अमर रहेगा मेरा तुम्हारा प्यार । राक्षस कुल का संहार होगा लेकिन अमर रहेगा अपना प्यार । राक्षस कुल में थे सती सुलोचना और मेघनाद से एक पतीव्रत पुरूष महान । राम का आदेश, उर्मिला का मान, दोंनो रह गये देखो माँ रणचंडी का न्याय । सतीत्व के इतिहास में माँ ने उर्मिला और सुलोचना दोनों का लिख दिया एक साथ नाम, नारी सुबोधिनी है तेजस्विनी है । तुच्छ समझ, अवहेलना न कर ध्यान से सुनो उसकी बात, फिर तथ्य लो निकाल । पुरुषत्वका डाल प्रकाश उसमें सब प्रकार से है कल्याण । विचार विमर्श से यदि हो सब गृहस्थाश्रम के काम । प्रसन्न रहे सब प्राणी जो सम्पर्क में आये इस आश्रम के साथ । जिस गृहस्थी में चैन मिले सब

प्राणियों को वही है राम राज्य क्योंकि प्राणीमात्र के हृदय को आराम दे उसीका है राम नाम ।। जय श्रीराम ।।

कर्ण मधुर चापलूसी, जिसका सदैव भयंकर होता है परिणाम, कटु सत्य बखाना लखनलाल ने जिसका सदैव होता है मधुर परिणाम । वह प्राणीमात्र के आराम, राम के थे भ्राता । कल्याणकारी सुझाव दे दिया लेकिन कडवा जान फेंक दिया गरज उठे मेघनाद । आज युद्ध न होगा देकर आये थे वचन सुलोचना को भूल गये काल विवश मेघनाद । अनिष्टकारी होगा युद्ध आज का मत जाना रणक्षेत्र में रख लेना मेरे वचन की आन । शपथ का कवचन अभेद पहनाया था सुलोचना ने उतार फेंका मेघनाद ने स्वयं अपने हाथ । लुट नहीं सकता था सुलोचना का सुहाग यदि रखते मेघनाद अपने वचन की आन,लेकिन होनहार और विधाता के विधान को नमस्कार। युद्ध घमासान हो रहा तेज था दोनों का अपार । तीर पर तीर चल रहे दोनों ओर से शक्तियों का हो रहा ह्रास । सूर्य सोच में पड़ गये क्या होगा परिणाम। सोच में पड़े सूर्य गति मंथर हुई थर्रा गया संसार गति सूर्य की यदि रुक गई तो अनर्थ हो जायेगा स्थिति को सँभालो, है सूर्यवंशी राजकुमार । तुम्हारी कुशलता के हेतु जा रहे सूर्यनारायण अपने इष्ट देव का नाम । पूर्वजों ने दिया आशीर्वाद, तीर झट लगा मेघनाद के, छूटने लगे जब प्राण, तब आया प्रिया का ध्यान । कटी भुजा को आदेश दिया जाओ सुलोचना के पास कह देना सब आँखों देखा युद्ध का हाल, वचन तुम्हारा सत्य हुआ, अनिष्ट हो गया आज लंका में महान । मैं तो तज चला जहान, लेकिन अब भी पिता यदि मान जाये तो, बच जाये मेरी जननी का सुहाग । गोद सूनी हुई माँ की लुट गया पुत्रवधु का सुहाग । यह नर नहीं नारायण है मान लो सत्य यह बात । दस शीष, बीस भुजाधारी पिताश्री को । पिताश्री को हो रहा अपनी शक्तिपर गर्व महान । उनका तो रूप देखने में अजब गजब है लेकिन राम है मानवाकार सूर्यवंशी जिनका तेज महान। सूर्य गोलाकार है छोटे दिखते हैं उदय होते समय, लेकिन आलोकित कर देते हैं सारा संसार। सीता के नेत्रों से बह रही अश्रुधारा लंका की सब नारियों का वही हो रहा हाल । माया और जीव है सियाराम प्राणीमात्र में व्याप्त यह दोनों रूप, माया और जीवन । जय सियाराम ।।

सदाचार और अनाचार, राम रावण का युद्ध युग युग में होता रहेगा, हो रहा है, हुआ था, हो रहा है हर क्षण हर प्राणीमात्र के हृदय के अन्दर। सत्यमेव जयते यह अंत में सदैव आता परिणाम लेकिन दुष्ट विचार रावण भी दिखाता अपना तेज महान । बादल ढँक लेता सूर्य को क्षीण होता प्रकाश लेकिन क्षणिक है बादल, अटल है प्रकाश झँट जाता है बादल निकल आता है प्रकाश । अग्र रामायण है मानव विज्ञान जो जन्म से मरण तक के सब देती मानव को संस्कार मानव जीवन के सब सुर केंद्रित है अग्र रामायण में । साज देखो लो इसे बजा ।

मेघनाद की भुजा ने खड़िया माटी से लिख सब सुना दिया सती सुलोचना को समाचार । मेघनाद हो चुके थे रामाकार, उनका शव पड़ा था लंका नगरी के माहीं । राक्षस मानते थे अपने को वानर भालूओं और नर से कई गुणा बलवान, लेकिन निशक्त हो गये उठा न पाये मेघनाद का शव छोड गये वहाँ से भाग । तब प्रभु राम का ले नाम उठा लाये वानर शव को प्रभु के पास, शीश मिल गया धड़ मिल गया प्रभु लेकिन एक भुजा खो गई प्रभु न आई हमारे हाथ । शीश रख दो सादर तुम सँभाल । भुजा का न करो विचार । वह पहुँच गई अपने यथोचित स्थान । सब वनचर स्वतः नतमस्तक हो उठे, देख श्रीराम का व्यवहार, जो शत्रु का भी करते अपने दल में सम्मान । ठुकराया नहीं शत्रु का शिर, सादर रखने का आदेश दिया।

जनता जनार्दन

धन्य राम तुम्हारा व्यवहार जो शत्रु से भी नहीं करते दुर्व्यवहार । बोले राम- मुझसे अधिक है वृक्ष महान, जिनको पत्थर मारने पर भी देते मीठे फल खाने को धरती पर डाल, वह जड़ कहलाते फिर भी चेतन से महान। वह क्षमाशील इतने कि मार खाकर भी नहीं करते किसीका अपकार। वह छाया देते श्रम हरते पर नहीं माँगते कभी किसी से कुछ बदले में दाम। धन्य उनकी प्रकृति महान । फलों से लद नमन हो जाते, अहंकार न कभी दिखाते, तभी तो निर्जन में खडे भी आतप, वर्षा, वात सहने की शक्ति उनमें आ जाती है अपार । अहंकार शक्ति हर लेता है, नम्रता में है शक्ति अपार । वह जीत लेती सबके मन को अपने आप । तुम उन वृक्षों के वासी हो इसलिये तुम शक्ति के भंडार हो, युद्ध में लड़ रहे हो स्वयं दे रहे मुझे

सम्मान । वह राजा नहीं कभी हार सकता जिसकी प्रजा देती हृदय से उसका साथ । जीत प्रजा की है, राजा का केवल नाम जनता जनार्दन है । जय श्रीराम ।

मेघनाद योद्धा कम नहीं घननाद है उसका नाम, सती सुलोचना अर्द्धांगिनी उसकी जिसका स्वर्ण अक्षरों में अंकित होगा सतीत्व के इतिहास में नाम । वह तेजस्विनी जब शीश लेने आयेगी यहाँ, मनोमालिन्य न हो उसका इंगित मात्र भी बस इसी में रामादल का है कल्याण । शीश सुरक्षित सादर सौंप देना यह धरोहर है उसकी अपने पास । इसको लेने के बहाने आकर वह कल्याणमयी दर्शन देगी हम सबको कर देगी कृतार्थ । देखना उसके तेजको, मृतक शीश हँस देगा अपने आप । ।। जय सियाराम ।।

मेघनाद का निधन हुआ, मच गया लंका में हाहाकार । हताश रावण हुआ, लेकिन आशा ठगिनी ने उसे जनता के समक्ष न होने दिया उदास । रो रहा अंतस्तल लेकिन अश्रु न आये नेत्रों के बाहर, राजा यदि हो जाय हतोत्साहित, तो प्रजा का स्वयं हो जायेगा बुरा हाल । वह हथियार डाल देगी नतमस्तक हो अपने आप । मेरे जीतेजी सीता चली जाय लंका के बाहर तो मर जायेगा रावण आत्मग्लानि में जल अपने आप । अपकीर्ति का कलंक लगेगा। इससे तो कहीं अच्छा है रणभूमि में कूद पडना । मोदक है मेरे दोनों हाथ, प्राण जायेगा तो वचन रह जायेगा, सिया न जा सकी रावण के जीते जी लंका के बाहर । वीरगति पाऊं तो हो जाऊँ रामाकार जहाँ हर समय सिया का बास । माया का तम जब हट जायगा तो वास्तविकता का स्वतः हो जायगा मुझे आभास । रावण अद्वितीय विद्वान था, सोच ली उसने सब अपने हृदय में बात । निष्कर्ष लिया निकाल । सीतापति के हाथों मरूँगा या सीता नहीं दूँगा अपने जीते जी, लुट जाय चाहे मेरा सब राजपाट । निर्णय कर लिया रावण ने उधर सुलोचना बिलखती पहुँची अपने ससुर के पास । शीश मँगा दो मेरे पति का होऊँ सती उसके साथ, मुझे अब इस जीवन से नहीं सरोकार । याचना नहीं करूँगा शत्रु से ला दूँगा तुम्हें तीन शीश एक साथ राम, लक्ष्मण और मेघनाद यह तीनों शीश लंका में आयेगें एक साथ । धैर्य धरो पुत्री, अपने ससुर के रणकौशल का भी जरा देखो चमत्कार । वह पैदल,मैं रथ में । वह बानर भालूओं के

संग में, मैं राक्षसों के दल में । भ्राता द्रोही विभीषण है उसके संग में । गुप्त भेद लंका के दे उसने यज्ञ विध्वंस करा दिया मिल उनके संग में । सबसे पहले वही काँटा निकालूँगा तभी भरूँगा आगे कदम । मुझे इन बातों से क्या लेना देना है । इन जीत हार के खिलौने से नहीं मुझे खेलना है । दग्ध हो रहा मेरा हृदय निज पति से सन्मुख वार्तालाप करने को, तभी शान्त होगा शरीर । माँ आज्ञा दो, चरणस्पर्श कर निज सास मंदोदरी से आदेश माँग रही सुलोचना पति शीश प्राप्त करने के लिये। बोली मंदोदरी- निसंकोच हो, जाओ रामादल में पति शीश पाने को । ससुर तुम्हारे विभीषण वहाँ विराजमान है राम के साथ में । नर शिरोमणि राम है, करते नारी का पूर्ण सम्मान है, शूर्पनखा ने की इतनी हरकत तो भी सजा नहीं दी राम ने अपने हाथ से । वह नारी का हर तरह करते सम्मान है । सादर तुम्हें शीश मिल जायेगा । इसमें न कोई दो राय है ।

सासकी आज्ञानुसार शीश लेने चली सुलोचना राम दरबार में । क्षुब्ध हुये रावण मंदोदरी निज पुत्रवधू को याचक बना भेज दिया शत्रुओं के दरबार में । पर शान्त हो बैठ गये क्योंकि तीर निकल गया था कमान से । देखो आदर या निरादार क्या होता है राम दरबार में ।

मेघनाद भार्या आ रही है स्वागत के लिये भेजे वानर भालू शिविर से बाहर श्रीराम ने । सादर लाओ, आ रही सती सुलोचना कल्याणमयी इस दरबार में । धन्य हैं हम सब जिनको दर्शन दिये इस तपस्विनी नार ने। ध्यान से सुनना क्या क्या चमत्कार है इस नारी शक्ति के हाथ में । वह लावण्यमयी है कान्तिमयी है ज्योतिस्वरूपा है सादर शीश झुकाना माँ के चरणारविन्द में स्वतः पुष्प खिल जायेंगे तुम्हारे पास में । आज्ञा पाते ही सादर ले आये सुलोचना को राम के पास में । शीश की माँग की सुलोचना ने श्रीराम से । जीवित या मृतक किस रूप में मँगा दूं प्रश्न किया विनीत भावसे श्रीराम ने । जिस रूप में है उसी में दे दीजिये । हे प्रभु, मैं पूछँ अपने प्राणनाथ से, उन्हें देह चाहिये या विदेह बन जाऊँ मैं भी उनके साथ में । खुशी हम दोनों की एक है द्विविधा का न कोई काम है । उन्हें खुशी है न गम है प्राण गँवाने में । आप पूर्ण ब्रह्म सर्वसामर्थ्यवान है । जीवित कर सकते हैं मेरे प्राणनाथ को, इसमें सूई की नोक जितना संदेह नहीं कारण कि प्रत्यक्ष को क्यों चाहिये प्रमाण है । उनको रणचंडी की भेंट चढा देना

हर किसी का नहीं काम है । युद्ध कौशल में उनको जीत लेना पराकाष्ठा के बाहर है । परकाष्ठा के बाहर के सब काम परब्रह्म के हाथ में है । आप जीवनदान दे सकते हैं, क्योंकि आप जगन्नाथ है । लेकिन जीवनदान प्राणनाथ को स्वीकार्य है या अस्वीकार्य, क्योंकि भिक्षा माँग कर लेने में लघुता का वास है, वह महानता यानि आपमें रम चुके या लघुता में रहना चाहेंगे देह धार के । बोले राम- धन्य सुलोचना, तुमसी न कोई तेजस्विनी बुद्धिमान नार है । यदि मान लेते मेघनाद उस दिन तुम्हारी बात को तो रणचंडी नहीं छीन सकती थी तुम्हारे सुहाग को । वचन तोड़ दिया, कूद पड़ा युद्ध में अपशकुन सत्य कर दिया, तुम्हारा वचन मिथ्या न जाने दिया । निष्कर्ष निकाला अति कठिनाई से रणचंडी माँ ने । होनहार को नमस्कार है । ले आई खींच कर रण में तुम्हारे पति को तुम्हारी आड़ से, होनी प्रबल है उसे बारम्बार नमस्कार है । होनी को अनहोनी नहीं कर सकती । होनी माता की शक्ति अपार है मेघों में गरजती बिजली करती प्रकाश अंधकार में । प्राणीमात्र के जीवनाकाश में युग युग से चमकती आई चमकती है, चमकती रहेगी। दिखा दे क्षण में कल्पनातीत चमत्कार जिसका जीव नहीं कर सकता स्वप्न में भी अनुमान है । वास्तविकता का तो स्वप्न से बहुत दूर संसार है । लेकिन स्वप्न को वास्तविक और वास्तविक को स्वप्न करना होनी की कमाल है । जय ''होनी'' माँ तुम्हें नमस्कार है । ''होनी'' माँ के पास प्रेरणा शक्ति महान है । वह सुबुद्धि की प्रेरणा दे प्राणी मात्र के सँवार देती, सब बिगड़े काज और कुबुद्धि की प्रेरणा दे पाँसा पलट देती क्षण में जीतता प्राणी खा जाता मात। ''होनी'' शक्ति महान ।

सती सुलोचना ने अपने हृदय की निष्कपट भाव से प्रगट कर दी प्रभु के समक्ष सब बात । नारी की आन का प्रभु भी रखते थे पूर्ण मान । क्योंकि नर नारी का एकाकार है सम्पूर्णता का नाम । योगी तभी सिद्ध है जब साधना दे उसका साथ । पौरुष तभी है जब शक्ति हो साथ । जीव मात्र की आधार शिला है ममतामयी माँ । जीवन रथ चलता पथ पर अर्द्धांगिनी के साथ। हर रूप में नारी को दे रहे राम सम्मान । सुन उनके वाक्य पुलकित हुई मेघनाद की नार । लक्ष्मण मूक सोच रहे,क्या है होनहार मेघनाद को पुनः जीवित करने को श्रीराम हो रहे तैयार । मेघनाद सुलोचना के प्रश्नोत्तर पर कर रहा विचार । सेना के सब जीव सोच रहे मृतक शीश कैसे देगा

जबाब । यह भी क्या कोई विद्या है सुलोचना के पास । हम भी देखें आज माया का अट्टहास । सब उपस्थित थे उसी स्थल पर मौन थे । एकाग्रता से कर रहे थे ध्यान । क्या कहूँ निज पति से सुलोचना ने कर लिया विचार, इसलिये मौन भंग किया उसी ने जगाया सबका ध्यान । बोली- पिता मेरे को बुलाती आपकी सहायता को यदि आप मानते मेरी बात । युद्ध नहीं करते, विचार विमर्श का अवसर देते तो न होता यह हाल । अट्टहास कर उठा शीश सुनते ही यह बात । बानर भालू दंग, यह तो एक आश्चर्य घटना देखी आज ।

मूल मंत्र

बोले राम- यह आज ही नहीं कल भी था, कल भी रहेगा सती के तेज का प्रताप । तेज सदैव है शाश्वत है अमिट है । ब्रह्माण्ड पुनः सुव्यवस्थित होता है प्रलय के बाद, हंस रहा है शीश कर रहा ठिठोली अपनी प्रिया के साथ । तुम्हारे पिता ने ही तो किया मेरा संहार । किसको बुलाती थी बना मददगार । खुल गया सारा रहस्य वानर सेना के पास लक्ष्मण थे शेषावतार और सुलोचना शेषजी की कन्या, ब्याही मेघनाद के साथ । शेष पर शयन करे विष्णु, जो है रामावतार । रामाकार हो गया मेरा मन, मुझे आ रहा आनन्द, यहाँ तुम्हारे पिता के घर है क्षीरसागर, तुम्हारे लिये तो हर समय खुले हैं किवाड़ । तुम आ सकती निसंकोच तुम्हें नहीं कोई रोकनहार ।

पति हो गये लीन आप में, बंधन मुक्त हुये संसार से, शीश दे दो प्रभु, मैं भी रहूँ इनके साथ में । पहुंच जाऊँ आपके धाम में । शीश सौंपा सादर राम ने सुलोचना के हाथ में । सुलोचना के सेवक बन खड़े रहो, आदेश दिया सब सेना को राम ने । जो चाहिये उसी क्षण उपस्थित करना बिलम्ब न करना सुलोचना के काम में । स्वर्ण-अक्षरों में लिखा जायगा सुलोचना का नाम, मेघनाद के साथ ब्रह्माण्ड के इतिहास में, क्षीण न होगा कभी सदा जगमगायेगा यह नाम सृष्टि के इतिहास में । मेघनाद रामाकर हुये सुलोचना चढ़ी उसी सोपान पे । धगधग अग्नि शीतल हुई । मिले दोनों आराम से । आराम में राम है, राम आराम है, यह मूल मंत्र है जहान में।

सती सुलोचना हुई, पहुँच गई परमधाम को निज पति मेघनाद के साथ में । वानर भालू नतमस्तक करे नमस्कार । साक्षी को खड़े राक्षसराज

विभीषण पास में । समाचार मिला रावण को पर न आया देखने यह दृश्य। सोचग्रस्त बैठा रहा निज गढ़ लंका आवास में । सब राक्षस कुल के योद्धाओं का संहार हो चुका था । अब शेष न था कोई उसके पास में । सब निर्णय कर लिये उसने आज बैठ एकाधिपत्य शान्ति के साथ में । सब खो दिया शक्ति देना, साहस न गवाऊँ, की प्रार्थना रणचंडी के सामने । लाज मेरी रखना, सीता युद्ध की प्रेरणा न जाये जब तक प्राण न निकले इस शरीर के बाहर में । सिया या राम इन दोनों में से एक अवश्य आ जाये मेरे हाथ में । प्राण गँवाऊ युद्ध में मिल जाऊँ श्रीराम के साथ में, सिया रहती सदा जिनके साथ में । यदि जीवित रहूं तो सिया नहीं जा सकती विराजती जिसकी छवि मेरे हृदय के मांहि है । राम यदि रहते सिया के हृदय में तो उनकी छवि स्वतः विराजमान है मेरे हृदय के कपाट में । सुरक्षित जब तक सिया का ध्यान है प्राण नहीं जा सकते इस तन के बाहर में क्योंकि यदि छवि में स्वतः राम विराजमान हैं तो कैसे तीर मार सकते हैं वे स्वतः अपने हृदय के भीतर । तीर लगते ही उनका अनिष्ट होगा मोदक तो है मेरे दोनों हाथ में । छवि खो दूँ मिल जाऊं राम में तो सिया उनके साथ है । सिया यदि रखूं सँभाल के तो राम स्वतः उनके साथ है । दिग्विजयी हुआ मैं मोदक दोनों मेरे हाथ में है । अट्टहास कर उठा रावण निर्णय लिया विजय तो है मेरे दोनों हाथ में क्योंकि राम नहीं छीनते किसी का आराम वह सुखधाम है। सिया तभी लेंगे मुझसे जब मिलालेंगें अपने साथ में । बंधनमुक्त हो जब राम से मिल जाऊँ तो सिया कहाँ गंवाई वह तो है उनके साथ में । पर नारी अकल्याणकारी है, यदि देखते तुम उसे नारी के भाव से, लेकिन नारी कल्याणकारी है यदि देखते माँ बहिन के भाव से । ठुकरा रही है सिया मेरी तृष्णा के भाव को समक्ष दर्शन नहीं कर सकता कितना तेज और लावण्य है, वह रखती अपने को तिनके की आड़ में । राम के संग मिल जाऊँगा तो पूर्ण छवि पाऊँगा माँ के भाव में । सिया जब राम के साथ विराजेगी तो छल कपट के सब तृण हट जायेंगे । पूर्णब्रह्म का दर्शन होगा सिया राम दोनों साथ में । जय सियाराम ।। जय सियाराम । बोलता हुआ रावण निद्रामग्न हुआ जो बैचेन था । आज तक नींद नहीं आती थी रातको । विश्व के आराम राम है वहाँ उद्विग्नता का क्या काम है । जय सियाराम की महिमा अपार है । वह मार नहीं रहे मुक्त करते जा रहे सब राक्षसों को

क्योंकि हर समय वे वैर भाव से सुमिरन कर रहे उन्हें अपने हृदय के आगार में । ध्यान एकनिष्ठ होते ही ज्योति में ज्योति मिल जाती है । जैसे बाती को छुआ दो जलती बाती के साथ में, वह भी जगमगाने लगती है उसके स्पर्शमात्र से । संसार के सब रंग दिखा रहे, हर क्षण, हर पल राम रहते मानव प्रकृति के साथ में ।

प्रजापालक शासक

रावण ने रात्रि को युद्ध का स्वयं संचालन करने का पक्का निश्चय कर लिया । सुबह होते ही उसने लंका में घोषणा करा दी कि युद्ध मैंने अपनी हठ पर मोल लिया है । प्रजा इसमें अपने प्राणों की आहुति देने को बाध्य नहीं है प्रजा को बाध्य कर कोई भी काम कराना शासक का अधिकार नहीं, प्रजा को अपना मत काम में लेने का पूर्ण अधिकार है । यदि प्रजागण युद्ध में न जाकर अपने प्राणों की रक्षा चाहते हों तो मुझे पूर्ण रूप से स्वीकार्य है । मैं अकेला युद्ध में जाऊँगा लेकिन रावण की प्रजा उससे इतनी संतुष्ट थी कि सब के सब प्राण देने को तत्पर हो गये रावण की प्रजा अपने राजा के साथ सदैव चैन की वंशी बजाती थी । वह ऐसा राजा था जो स्वयं सोने के महल में रहता था तो प्रजा को भी सोने की लंका में रखता था । अपने बल बूते पर जो वैभव लाता था वह सबको बाँट कर खिलाता था । यहाँ तक कि आमोद प्रमोद के समय भी प्रजा के संग बैठ अप्सरा नृत्य आदि कराता था । राजा रावण अपनी प्रजा से न कभी कुछ छुपाता था। अपना सब वंश खपा दिया लेकिन प्रजा को अपनी आड़ में छुपाता था । पहले स्वयं को जला पीछे प्रजा पर आंच का आभास आ पाता था । ऐसे शासक के संग सब जाने में तत्पर थे कारण कि उसकी अनुपस्थिति में क्या दशा होगी प्रजा की यह सोच सबका मन घबराता था । पालन किया जिसने सदैव, मुख समान, प्रजा का उसके साथ द्रोह करना किसे सुहाता था । विभीषण राज चाहता था । प्रजा ने जो चाहा सब पाया रावण के राज में इसलिये एक भी उसे छोड लंका के बाहर नहीं आया । संतुष्ट प्रजा कभी विद्रोह नहीं करती, सब निकल आये लडने को रावण के संग, एकने भी कदम पीछे नहीं हटाया रावण प्रजापालक शासक है, यह उसके गौरव का डंका प्रजा ने रामादल में जोर से बजाया ।

रावण कूद पड़ा युद्ध में जैसे ही विभीषण सामने आया। प्रजा ने शोर मचाया, राम से निपट लेना स्वांमी पीछे पहले पत्ता इसका काटो इसने लंका का सब भेद बताया मेघनाद से लाल को मरवाया। शक्ति फेंकी रावणने तीव्र पर राम ने अपनी ओट में विभीषण को बचाया। शक्ति थी इतनी तीव्र की राम यानि ब्रह्माण्ड घबराया। राम पैदल, रावण रथ में यह दृश्य देवगणों को नहीं सुहाया। इंद्र ने तुरंत भेजा रथ, मातली ले आया। आग्रह किया राम से रथ में प्रभु चढ जाओ। ज्योति मंद पड़ जाये इसकी तेज अपना समक्ष दिखांओ, एकाग्रता के रथ की जीत है जो ध्यान और शान्ति से चलाया जाता। बिना एकनिष्ठ ध्यान के जो चालक तेज रथ को दौड़ में जीतने को भगाता वह गर्त देखना भूल जाता है। रथ उलट कर खड्डे में गिर जाता है और चालक अपने प्राण स्वयं गँवाता है। तेजस्वी रावण में भी राम है लेकिन दस शीश वह काम में लाता, बीस भुजाओं से तीर चलाता, वह विशालकाय चकाचौंध हो जाता। वह चारों ओर तीर चलाता सूक्ष्म लक्ष्य को न भेद पाता। तीर बिखर जाते हैं एकता में नहीं बँध पाते हैं क्योंकि दसानन के पास दस मष्तिष्क है, एक साथ वह दस विचार काम में लाता है। एक सूत्र में न पिरोये जाने के कारण विचार रूपी अमूल्य मोती इधर उधर बिखर जाते हैं। ढूँढने पर समय नष्ट होता है यानि अवसर चूक जाता है। इधर उधर बिखरे मोतियों में से कोई मिल भी जाता है और कोई खो भी जाता है। साधारण मानव एक मस्तिष्क धारी होता है। उसके सब विचार वहीं केंन्द्रीभूत होते है और केन्द्र के आदेशानुसार वह एक सूत्र में बँध क्रियान्वित होते हैं। एक शृखंला में पिरोये जाते है, इसलिये सुदृढ हो मानव की शोभा बढ़ाते हैं। दस सिरों के नेतृत्व में एकाकार न होने के कारण सब मोती इधर उधर बिखर जाते हैं और कुछ खो जाते हैं यानि माला की निधियाँ स्वयं ही लुट जाती हैं। श्री राम मानव है वह एकनिष्ठ ध्यान से तीर चलाते हैं। दर्प में फूल अट्टहास कर गर्जते नहीं लेकिन मंद मंद मुस्कराकर सबको मोह रहे हैं वीर रूप में खड़े भी मानव के लिये डरावने नहीं लुभावने है उनकी छवि को दानव भी निहार कर आनन्द विभोर हो अपने को स्वयं खो रहे है। वह भय व्याकुल हो घबरा नहीं रहे बल्कि प्रेम में मर रहे हैं। राक्षसराज रावण भी चकित है यह

मानव कमाल है जो मुझसे लडने को आ गया । मेरे जैसा एक भी अस्त्र इसके पास नहीं । शैन्य बल के नाम पर वनचर भालू साथ है। पर आत्मविश्वास पर कमाल है मैं तीर चलाऊँ बीस हाथ से यह दो हाथ से काटने को तैयार है कौनसा ऐसा अस्त्र इसके पास है । यह पहल नहीं करता, पर काटता जाता हर बाण है । मैं हर युद्ध विद्या काम में ले रहा पर एक भी अस्त्र इस पर नहीं करता वार है । कौनसी अमोघ शक्ति इसके पास है । अभिमान में मस्त न समझ पा रहा संयम और विवेक दोनों राम के पास है । जहाँ माया का कोई भी बाण नहीं कर सकता काम है । घमासान युद्ध हो रहा। पार नहीं कोई पा रहा घबरा रहा सारा संसार है । रावण के हृदय में बैठी सिया देख रही सब युद्ध का हाल है । क्या होगा माँ त्रिजटा से पूछ रही दिल मेरा घबरा रहा है । सद्बुद्धि त्रिजटा बोली- सिया जब तक रावण के हृदय में तुम्हारा वास है । तब तक अंत नहीं होगा उसका क्योंकि शक्ति तुम्हारी अपार है । अंग पर अंग रावण के कट रहे पुनः नवीन बन रहे क्योंकि वहाँ तुम्हारा वास है। छूटते ही तुम्हारा ध्यान तीर लगते ही उसके हृदय में रावण का हो जायेगा काम तमाम । उससे पहले राम प्राणी मात्र के आराम प्रलय को नहीं देंगे आह्वाहन क्योंकि वह विध्वंसकारक है । खेल रहे राम खिला रहे रावण को जिता रहे बारबार जैसे पिता रखते सुत का मान है । खेल में पुत्र की प्रसन्नता के लिये स्वयं हार जाते जिता पुत्र को देते, कर अपने मान का ह्रास पुत्र के मान को देते अधिक सम्मान, ऐसे राम है महान । विवेक खो चुका रावण नहीं समझ पा रहा है । राम ने जब दे दिया उसे पुत्रवत सम्मान तब भी उनकी अर्द्धांगिनी सिया माँ की संज्ञा में आ गई वह मूढ़ नहीं समझ पा रहा यह बात । माता को कुदृष्टि से देख रहा अब उसे मारने में निर्दोष राम हो गये चाहे वह ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुआ । राम मार नहीं रहे उसे वह स्वयं मार रहा विवेक शून्य हो शलभ आ रहा जलने को दीपक की लौ के पास । जय सियाराम ।।

घमासान युद्ध को देख पृथ्वी घबरा रही, देवता पुकार रहे, बस प्रभु और नहीं ले आओ छोर, सुनो हमारी पुकार अचेतन होने लगा रावण छूट गया सिया का ध्यान । मान बढाने को विभीषण का बोले श्रीराम बंधु तुम्हारा अति तेजस्वी है, मुझे नहीं इससे लडना आता बताओ कोई युक्ति हे

राक्षसराज! । बोले विभीषण - नाभिकुंड में अमृत है शोष लो प्रभु मारकर अग्निबाण । विभीषण को आगे आंया देख बंधु द्रोह से जल उठा रावण भूल गया सब ध्यान सीता भी निकल गई हृदय से टूट पड़ा वह विभीषण को मारने इतने में तीर मार । राम ने रावण के हृदय में तान । धराशायी हुआ रावण देवताओं ने पुष्प दिये वर्षा ।। जय सियाराम, जय सियाराम की हो रही जय जयकार ।

नीति धर्म

रावण का पतन हो गया सब देवगण राम की स्तुति गा रहे हैं । ऐसे अवसर पर देखो राम अपने को अभिमान की असि धारा से क्या खूब बचा रहे हैं । नीति धर्म के वचनामृत राम बरसाते हैं । देव ओर दानव दोनों एक ही पिता मानव की संतान है । हर युग हर पल हर क्षण दोनों का मानव हृदय में वास है परिधि जीत का सार है । उच्छृंखलता हार का शृंगार है । हर मन हर तन दोनों में सबका बास है । संयम और नीति सचेत रह पहरा दे जिस सीमा का वह अजेय है शत्रु नहीं लाँघ सकता उस परिधि को जहाँ सत्य, संयम और नम्रता का वास है । लेकिन गढ़ स्वयं टूट जाता है जहाँ अभिमान उच्छृंखलता और क्रोध का वास है । प्रकृति के नियम हैं सत्य उनकी आधारशिला जीत के पुष्प उस पर स्वयं चढ जाते हैं । मन्थर गति के सागर में नौकायें स्वयं पार हो जाती है लेकिन तूफान में पारब्रह्म ही नैया पार लगाते है । राम न जीता न रावण हारा, प्रकृति ने अपना काम कर दिखाया है । सत्य की परिधि ने उदंडता को दूर भगाया है । पिता दशरथ मिलने आये राम ने पुत्रवत शीश नवाया है । राम नहीं जीता यह दशरथ सुवन होने के नाते ही पिताश्री, सुयश मेरे पास आया है । सूर्यवंशी हूँ, कुलगुरू सागर है इन सबके सहयोग से यह यश मेरे हाथ आया है । वंश की महत्ता, पिता के सम्मान, कुलगुरु के गौरव का राम ने मुक्तकंठ हो गुण गाया है । आदर्शवादी राम का हो जहाँ वास, वहाँ राम आराम ही आराम है, द्वेष और क्लेश का क्या काम है ।

रावण अति तेजस्वी है उसके पास ज्ञान का भंडार है मिट्टी में मिलने से पहले ग्रहण कर लो लक्ष्मण जीवन का क्या सार है । गये शिक्षा लेने बैठे शीश की ओर मीन रावण न बोला कुछ लौट आये लक्ष्मण राम के

पास । बोले- प्रभु रावण न कुछ बोला शायद फितूर अब भी है उसके पास। बोले राम, रामेश्वर की स्थापना कराते समय, आशीर्वाद दे गया था मुझे कल्याणकारी एक पुरोहित का कर्त्तव्य निभाकर, शत्रु का भाव नहीं है वहाँ रावण नीति का जानकार है । शीश की ओर बैठा तनकर न कुछ पूछा मैंने चला आया बैठकर, आपके पास हूँ । पुनः जाओ, लघु बन चरणों की ओर बैठो । देखो क्या होता है परिणाम । बैठे लक्ष्मण जा चरणों की ओर, मुस्करा के रावण बोला- कुशलक्षेम के पूछे समाचार भैया मेरे ने शिक्षा लेने भेजा है आपके पास बोले- लखनलाल, भैया तेरा धन्य है जो शत्रु से भी निसंकोच हो माँग रहा ज्ञान का प्रकाश । वह स्वयं तेजपुंज है आदर्शवादी मैं क्या बताऊँ बात, पर एक ही बात कहता हूँ, काल करे सो आज कर, आज करे सो अब । पल में प्रलय होगी फेर करेगा कब । यानि लघु जान कभी किसी की उपेक्षा नहीं करना चाहिये । क्योंकि लघुता में गुरुता का वास है । मैंने तीन काम सोचे थे । पहला सोने में सुगंध पैदा कर दूँगा, दूसरा स्वर्ग को सीढी लगा दूँगा जहाँ मानव सैर करके आ सके, मौत को पृथ्वी से दूर भगा दूंगा सोचा था यह तीनो मेरे बाँए हाथ का खेल है । कभी भी कर लूँगा । पर आज तक इस लघुता के विचार पर जीत न पा सका। लघुता विशाल हो गई । मेरा जीवन समाप्त हो गया यानि जीवन की प्रलय हो गई । लघुता विशाल बन गई वह जीत गई मैं हार गया । यानि सूक्ष्मता की अवहेलना करना सबसे बडी भूल है । कण ब्रह्माण्ड का मूल है । एक बूँद जल में मानव का पूरा आकार है । समय पाकर जो करता विकास है। एक में अनेक, अनेक में एक यही जीवन का सार है । कितना बडा राक्षसों का परिवार था उसमें केवल एक रह गया विभीषण करने को सबका दाह संस्कार । राम का था उसके वास इसलिये किया सबका दाहसंस्कार, जहाँ राम का वास हो वहाँ विकारों का स्वयं हो जाता दाहसंस्कार ।

जय सियाराम । जय सियाराम । जय सियाराम ।

देवता स्तुति गाकर अपने धाम लौट गये पितर राजा दशरथ अपने पुत्र को आशीर्वाद दे अपने लोक को गये । विभीषण रावण का दाहसंस्कार कर श्रीराम के पास आया तथा लंका नगरी को श्री राम के चरणकमलों से पवित्र करने के लिये आग्रह करने लगा । दानवों की इस नगरी को प्रभु

आप चलकर पवित्र कीजिये । लंका नगरी तो सदैव पवित्र है क्योंकि इसके द्वार पर सत्यं, शिवं, सुन्दरम् शंकर विराजमान है । यह नगरी शंकर ने बनाई अपने वास के लिये । विप्र रावण ने गृह प्रवेश की पूजा करवाई भा गई नगरी उसके मन को, दक्षिणा में माँग ली नगरी । यजमान से । यजमान शंकर भोलेनाथ सा कौन उदार है जिसने अर्द्धांगिनी पार्वती के खिन्न मन को देखकर दे दी मुँहमाँगी दक्षिणा पुरोहित के हाथ में । नगरी दी है दक्षिणा में खिन्न मत हो प्रिये भार्या पार्वती हम दोनों यही विराजेगें जहाँ माँगलिक पूजा करवाई विप्र रावण ने अपने हाथ से । अपने भवन पर नहीं आ सकती कोई आपत्ति क्योंकि भर भर मुँह आशीर्वाद दे दिये पुरोहित विप्र राज ने। वचन झूठा नहीं होने देगा कभी वह पूजेगा, शिव और शक्ति को सदैव एक साथ में । शक्ति की अवहेलना जिस दिन करेगा अन्याय नारी के साथ में उस दिन पुरुषत्व छिन जायेगा उसके हाथ से । नारी से अन्याय यदि करेगा वह तो स्वतः जाग उठेंगे अर्द्धनारीशिवर भूतनाथ है । केवल कैलाशनाथ ही नहीं भूतनाथ का हर स्थान पर वास है । वह सत्यं, शिवं, सुन्दर है । साथ में भूतनाथ भी उनका नाम है । भोलेनाथ के अंग पर विषधर का भी बास है । काल कूट भी उनके कंठ में विराजमान है । नीलकंठ नाम है । शिव का वर्णन किया निजमुख से श्रीराम ने । बोले- अभी अवधि बनवास की पूर्ण नहीं हुई समय का बहुत अभाव है । अवधि बीतते ही उसी दिन नहीं पहुँचा अयोध्या तो भरत त्याग देंगे अपने प्राण को । लक्ष्मण तथा अन्य सब वानरों को हनूमान सहित ले जाओ तुम्हारे साथ में । पर काम पूर्ण करना शीघ्र तथा पहुँचा देना समय पर मुझे अयोध्याधाम में, यही सौंपता हूँ काम मैं तुम्हारे हाथ में । तिलक करा विभीषण ले आया अनेकानेक भेंट राम के पास, बोले राम- बैठ विमान में । गगन पर जा वर्षा दो यह सब सामान मैदान । पक्षपात नहीं होने पायेगा ले लेंगे जो आयेगा जिसके हाथ में । अमृत बरसाया देवताओं ने जी उठे वानर भालू अपने प्रभु राम का मान बढाने को । नहीं जिये राक्षस बंधनमुक्त हुये, राम सुखधाम है, वहीं ले लिया उन्होंने वास है । कण कण में श्री राम विराजमान हैं । दुःख भंजन, सुख का सार, उसी का राम नाम है ।। जय श्रीराम ।।

अब विलम्ब नहीं करो अवधि का सम बहुत कम है हाथ में । शीघ्र पहुँचाओ अयोध्या नहीं तो अनर्थ हो जायेगा । अवधि बीतते ही भाई भरत त्याग देंगे अपने प्राण को । बोले विभीषण- पुष्पक विमान है प्रभु लंका राज में उसमें बैठ आकाशमार्ग से शीघ्र पहुँच जाओगे अयोध्या धाम को । प्रिय सखा विभीषण, अब विलम्ब न करो मन में लगन लग रही भरत मिलाप की। बोले विभीषण मन में, धन्य राम आप हो नाते रिशते निभाने के ज्ञान में । अर्द्धांगिनी सिया का नहीं लाये नाम जबान पे, भ्रातृ प्रेम की महत्ता मुक्त कंठ से लगे बखानने । यह प्रश्न गुत्थी बन गई जिसे विभीषण लगे सुलझाने, नहीं समझ पाये राम के इस गुप्त विज्ञान को, सिया अर्द्धांगिनी है रहती वह हर समय उनके साथ में । प्रणय असीम है उसका न कोई पार है वह बहता हर प्राणी के अंतस्तल में अपने आप है । वह मानसिक निधि रहती सुरक्षित सदैव मानव के पास लेकिन गृहस्थाश्रम के सब नाते रिश्ते जीवन वीणा के अनमोल तार जो बजे यदि इकसार, लयबद्ध हो तो संजीवन संगीत मधुर होगा । आनन्द विभोर हो जायेगा मानव अपने परिवार में राम सुखधाम आराम के बीज बो रहे कण कण में, हर परिवार में, ताकि गुल खिल जायेगा विश्व के गुलिस्तान में । प्रीत जीवन की जीत, राम विश्व के आराम सुखधाम है । वह पथ अग्ररामायण है, जहाँ श्रीराम विराजमान है । जयश्रीराम । कण बनकर यानि सूक्ष्म रूप से आप हर मन में विराजमान हैं, कण क विश्लेषण करने से हर तत्त्व वहाँ विराजमान है । विशालता के मद में चूर हो कण की अवहेलना मत करो। कण में विशालता स्वयं विराजमान है । यह मूल मंत्र अग्र रामायण है । ग्रहण करो या फेंक दो कण तो कण में मिलने और मिलाने को सदैव तैयार है ।

करबद्ध हो विभीषण बोले- प्रभु, जिसे लेने आये सागर लाँघ के उसे तो लोगे अपने साथ में तभी तो जाओगे अयोध्या धाम में । सिया विराज रही सुरक्षित लंका राज में । वह धरोहर रावण की है तुम्हारे हाथ में । मैंने रावण का राज सौंप दिया तुम्हारे हाथ में । मित्र से छीन कर नहीं लेना चाहता मेरी प्रिय वस्तु भी सीमा को लाँघ के । तुम लौटाओ तो सहर्ष लूंगा उसे अपने साथ में ।

सिया विरहाग्नि में दग्ध थी रावण के राज में छोटी सी चिनगारी है इसे बुझा दूँगा कौनसी बड़ी बात है । सूक्ष्म जान अवहेलना की रावण ने देखो कितनी प्रज्चलित हो गई वह अपने आप में । लंका दहन हो गई नहीं लगी अग्नि तुम्हारे धाम में सिया अब शान्त है लंका में अब विभीषण का राज है । मिलन की आस लगाये वह गिन रही घडियां, आ गया स्वतः विचार तुम्हारे धाम में, ले आओ सिया, ले जाओ पवनपुत्र इत्यादि को तुम्हारे साथ में । आज्ञा दी विभीषण ने भली भाँति स्नान आदि कराओ पूजा, अर्चना करो, वस्त्र अलंकार से सजाओ चरण वंदन करो सिया माँ की, लंका की राजश्री का कल्याण होगा, माँ के आशीर्वाद से ।

सीता को तैयार किया । रथ में सादर बैठाया चारों ओर पहरेदार थे। सीता को राम के पास ले जा रहे हैं सब उल्लास से । कूद कूद कर वानर भालू माँ का दर्शन पाने को प्रयत्नशील । थोडी झलक मिलने से कभी प्रसन्न और दर्शन न मिलने पर मन ही मन खिन्न, हो रहे अपने मंद भाग पर । राम हर समय हर प्राणी को सुखमय देखकर आनन्द विभोर हो जाते हैं । खिन्नता का नहीं वहाँ काम है । राम सुखधाम विश्व के आराम है । सीता को पैदल लाओ ताकि सब दर्शन कर सकें उनका भली भाँति, आदेश पाया उतर सीता रथ से पैदल चल पड़ी। कदम कदम पर सादर शीश नवा रहे वानर भालू बार बार है । मुक्तकंठ आशीर्वाद नहीं दे रही सीता, क्योंकि उसमें माया का बास है । माया और लौकिक निंदा दोनों का आवरण अभी चिरना बाकी है सिया को पाने के लिये । राम दूरदर्शी थे विज्ञान के धाम थे उन्होंने लक्ष्मण की अनुपस्थिति में असली सीता को अदृश्य कर दिया विज्ञान के तेज के प्रताप से । छाया को वास्तविकता बना दिया था विज्ञान की कला के चमत्कार से । मायावी रावण हर ले गया माया को वास्तविकता न उसके हाथ आई सिया तो अदृश्य रूप में थी राम के हृदयधाम में । मायावी की माया हट गई रावण का अंत हुआ, निशाचर का नाश हुआ, रजनी व्यतीत हुई पौ कट गया सूर्यवंश का प्रकाश फैल गया ब्रह्माण्ड में । अदृश्य सिया को अब प्रगट करना था श्रीराम को । बोले- अग्निपरीक्षा होनी चाहिये सिया की सबके सामने । क्या विशेषता है प्रगट आये, ताकि कोई कभी यह न कहने पाये की राम ने युद्ध किया बेकार में ।

सब सन्न रह गये, बेसुध राम के इस राम बाण से । बोली सिया, समझ गई क्षण में सारी परिस्थिती बोली, देवर लखनलाल से । अग्नि प्रगट करो वही कुंदन का परिमार्जन कर सकती है आदिकाल से । राम का रुख देख कर दिया अग्निकुंड तैयार लखनलाल ने, कूद पडी सहर्ष सिया, राम की मूर्ति हृदय में धार के । राम सूक्ष्म बने सिया के हृदयधाम में, सिया भी अदृश्य थी श्रीराम में । दोनों का मिलन हुआ प्रज्वलित अग्नि के प्रकाश में। राम खडे अपने स्थान पर सिया हो गई प्रगट विज्ञान के प्रकाश से । भ्रम के जल गये जंजाल सिया आ गई सबके सामने । नर, नारी दोनों की शक्ति है बराबर कर दिया सिद्ध श्रीराम ने । अग्र नारी है विश्व में, गृहस्थ के हर कोने कोने को आलोकित कर रही अग्र रामायण है । अब जन्मभूमि की ओर चलने की कर रहे तैयारी श्रीराम है ।

सीता, अंगद, हनूमान, विभीषण, लक्ष्मण वानर भालू इत्यादि को संग लेकर श्रीराम पुष्पक विमान में चढे सिया और राम एक संग विराजे है सब वानर भालू उनकी छवि निहार रहे हैं । बारम्बार इस युग्म को निहारते है और बारम्बार नया रूप रंग का आनन्द ले फिर नवीनता को निहारने भागते हैं । जिस दृष्टिकोण से निहारते हैं उसी दृष्टिकोण में नया आनन्द पाते है । वह सब निमग्न छवि निहारने में । राम पूर्ण काम सीता को बखान रहे सब मार्ग के स्थान हैं । सेतु बांध की यहाँ शंभु स्थापना, रामेश्वर राम के ईश्वर का यह धाम है । रामेश्वर इस धाम का नाम है । सत्यं, शिवं, सुन्दरम् का यहाँ वास है । इनके आशीर्वाद से पूर्ण सबके काम हैं । लंका जाते समय नर राम ने अकेले की थी प्रदक्षिणा और प्रणाम नट नागेश्वर जानते सबके हृदय की बात है । सीता तुम साथ नहीं थी उस समय नारी रूप में मेरे साथ में अर्द्धरूप था मेरा पूर्ण कर दिया शिवकृपा धाम ने । गृहस्थाश्रम की गाडी के ये दो पहिये नर और नारी यदि नहीं चले एक लय और एक साथ में तो नये मुसाफिर कैसे बैठने का साहस करेंगे उस गाडी में जो डगमगा रही अपने आप में । जीना सब चाहते हैं मरने के लिये कौन तैयार है । मौत तो आती बिन बुलाई अपने आप है । लाभ अहोभाग्य है सबका, हानि नादानी का काम है, हानि से निरुत्साह हुआ मानव, निंदा के सुर सुनने को आते है उसके कान में । जीवन नैया डगमगाने लगती है ।

उस समय 'ह' विस्मृति हो जाये और 'स' आ जये जो पासा पलट जाता अपने आप है । विपत्ति में हाय हाय न कर, शनैः शनैः सुमरे सत्यं, शिवं सुन्दरम् के पहुँच जाये धाम में, तो साहस संतोष, शान्ति तीनों का संगम हो जाता अपने आप है । नैया सागर के पार जाती सुगमता के साथ, शुम्भ की पतवार जब आ जाती प्राणी के हाथ में नारी का सम्मान ही मानवता का कल्याण है । नारी ही जीवन प्राण है वह गृहस्थाश्रम की आन है । अर्द्धनारीश्वर के संगीत की वह लय है सुनो ध्यान से । सप्त स्वर रागिनी है यानि स्वर के संग भी नारी विराममान है । रागिनी में स्वरों की गुँजार है यानि एक बिना दूसरा बेकार है । जय श्रीराम । सीता को दे रहे किस तरह सम्मान है । अश्लीलता का नहीं नाम है । नारी हर सौंदर्य का कर रहे बखान है। राम आदर्श महान है । हर प्राणी का वह आराम है ।

जैसे जैसे विमान आगे बढता है राम सीता को हर स्थल का वर्णन बताते है । राक्षसों का कहाँ संहार हुआ, लंका किस मार्ग से आये, सब वृतान्त राम ने अद्योपान्त सीता को सुना दिया । सीता तो हर समय सूक्ष्म रूप से राम के संग थी लेकिन तो भी राम ने निज मुख से सब बखान किया दाम्पत्य जीवन का आदर्श निभाने के लिये । सीता सबके बीच बैठी ऊब न जाये क्योंकि सब नर थे अकेली नारी थी वह उनके साथ में । कर कर प्रशंसा सब साथियों की वह उन्हें उत्साहित करते जा रहे थे, पिला वचनामृत अपने हाथ से । एक संग दो काम कर रहे श्रीराम धन्य ऐसे नर महान है जो सबको प्रसन्न कर मोह ले जो भी आ जाय उनके साथ है । हर्षोल्लास में तन मन की सुध खो दी मग्न हो गये श्रीराम में । विमान आ गया सुरसरी के पास में । सब मग्न थे आराम श्रीराम में लेकिन चालक पालक है उसे तो सँभालना सभी को जो थे उसके साथ में । सुरसरी लाँघते ही विमान को पृथ्वी पर उतरने का आदेश दिया श्रीराम ने । सीता पूजो सुरसरी माँ का सम्मान करो तुम आ रही इनकी कृपा से सकुशल अयोध्या लौटकर मेरे साथ में । आशीर्वाद माँ का है फलीभूत हुआ । माँ की महिमा अपार है। लौटते समय मिलने का जिन जिनको वचन दिया पूर्णकर रहे श्रीराम हैं । भारद्वाज आश्रम में जा शीश नवाया बोले प्रभु, मैं लौट आया सब कर्त्तव्य कर भार उतारा आपके आशीर्वाद से । नम्रता पराकाष्ठा पार कर गई, कर्ता

स्वयं वर्णन कर रहा सिद्धि सहयोग का नाम है यह किसी अकेले का नहीं काम है। धन्य श्रीराम है जो हर कण कण को दे रहे सम्मान है। इसलिये हर कण में उनका वास है। मित्र निषादराज से मिले अब आ गई अयोध्या पास में। मैं उलझ न जाऊँ प्रेमालाप में, सुधि भरत की लो झट भेजा पवनकुमार को। भ्रातृप्रेम का वर्णन करें अंजनीसुत उसी में सार है। अपने मुँह मियाँ मिट्ठु बनने में ना कोई सार है। किसी के हृदय को न पहुँचे ठेस, किसी का न हो मान भंजन, राम रखते सबका ध्यान, इसलिये तुरंत भेजा नंदीग्राम सुधि लाने पवनकुमार है। राम किस बंधन में खिंचा दौड़ आया अयोध्या सबके आग्रह को टाल के। यह उचित किया या अनुचित निष्कर्ष देंगे अंजनी कुमार आन के। बंधु बंधन है या वन नंदन है। यह निर्णय लेने में दक्ष पवनकुमार है। वह वनचर वन, वन घूमते जानते सब बनों का हाल है। जो जिस विद्या का पारंगत हो वही ले सकता दूसरे का इम्तहान है। पवनकुमार राम बाण है। पहुँच गये वेश बदल वहाँ जहाँ विरह की पल पल को गिन रहे भरतलाल थे। इतना समय अवशेष है हे राम आप आ जाना या मुझे बुला लेना, अपने पास में। अवधि बीतते ही यदि न मिल पाऊँ तो यह भाई नहीं तुम्हारा भरतकुमार है। अवधि बीतने पर यदि प्राण रह जाये तन में तो प्रण टूटता है। सूर्यवंश की आन को आती आँच है हे राम जिसके आप कर्णधार है। निसंदेह तन त्याग देगा भरत कुमार झट प्रगट हुये पवनकुमार है। विवेक से लिया काम बोले आ गये श्रीराम है। गुरूजनों और माताओं को वह करना चाहते प्रथम नमस्कार है। उनके साथ आगे आओ खड़े बाट जोह रहे श्रीराम है। लंका काण्ड अवशेष हुआ अब उत्तर में पधार गये श्रीराम है। चौदह वर्ष की अवधि के बाद घर लौट आये श्रीराम हैं। राम की यदि हो कृपा तो अवधि बीतते नहीं लागत बार है। लंकाकाण्ड समाप्त हुआ। जय श्रीराम है। अब उत्तर की ओर आ गये सब प्रश्न सुलझ गये अपने आप हैं, आरम्भ हो रहा उत्तरकाण्ड है।

उत्तरकाण्ड

बेतार के तार, हवा में फैल गया समाचार है। श्रीराम आ गये गणनायक, गणपति, विनायक, गणेश महाराज को सादर ले अपने साथ में। प्रफुल्लित हो गया सारा वातावरण क्योंकि प्रथम सुमिरन किया गणेश का

श्रीराम ने । निर्विघ्न हो गये सब कार्य आनन्द के श्रोत कूट निकले जो अभी तक कर रहे योगियों के हृदय में वास थे । गुरूजनों के चरणवंदन कर रहे सिया, राम, भाई लक्ष्मण के साथ में । मातायें और गुरू दे रहे आशीर्वाद । पुष्पवर्षा रहे देव गण आकाश से, भाई भाई मिल रहे भुजा पसार के, सब सखाओं से मिल रहे एक साथ श्रीराम अनेक रूपधार के, सबको दिख रहे श्रीराम अपने गले लगे प्रेम की विलक्षणता महान है । अरण्यकाण्ड में हुआ भरतमिलाप था लेकिन यह उत्तरोत्तर है उससे उत्तर काण्ड में । वहाँ मुकुट पहनाने गये थे भरत ले गुरूजनों को साथ में यहाँ मुकुट पहनने आ गये श्रीराम है । माताओं और गुरूजनों को कर रहे प्रणाम है । देने और लेने में अन्तर विशेष है देखो लो विचार के । हठकर सौंपो किसी को भार तो वह कैसा लेगा उसे उठा, यदि उसका तन मन न दे साथ। लेकिन यदि सहर्ष वह उसे उठाने आ जाये तो समझ लो फूल सा है वह उसके लिये भार । राम राजा बनेंगे इसमें न अब कोई दो बात है । उस मिलन में तर्क वितर्क था, संशय था अधूरी थी मन की बात । आज का मिलन उत्तर का है यहाँ न संदेह का काम । कल निसंदेह होंगे राजा राम। आज हो गया भरत मिलाप कल राजतिलक के सजेंगे साज । आनन्द अतिरेक है सब मिल रहे एक दूसरे से बारम्बार । प्रेमजल बरस रहा है पर फिर कई रह गये बाहर । उर्मिला लक्ष्मण से नहीं मिली वह निमग्न अपनी दिनचर्या का कर रही काम । लक्ष्मणलाल भी नहीं गये उसके कक्ष में, वह चलते थे सिया राम के पश्चात । सिया को आया ध्यान, बोली, उर्मिला नहीं आई क्या भेद है देवर लखनलाल ? मुस्कराकर बोले लखनलाल, वह बहिन आपकी है, पूछ लेना आप स्वयं जाकर उसके पास, या भैया समर्थ है कौशला राज वही करेंगे इस शंका का समाधान । यह शंका समाधान नहीं सुनो, सिया सम्पूर्ण रामायण का है यह सार । जब पति को दी विदा उर्मिला ने किया था यह प्रण महान इस काया की छाया भी न पड़ेगी तुम पर जब तक लौट नहीं आओगे इसधाम । उस प्रण को निभा रही उर्मिला नहीं आई बाहर । राक्षसों का इसलिये हुआ संहार, सुलोचना भी पूर्ण सती थी तेज उसका था अपार, वह थी मेघनाद के साथ । उर्मिला हर क्षण मूक वंदना कर रही सकुशल लौट आये पति मेरे इस धाम । पूर्ण करो मनोरथ मेरा हे अम्बे

भवानी माँ, पूर्ण मनोरथ हुये, मेघनाद का संहार केवल कर सकता था लखनलाल, वह नहीं गिरता तो बदल जाता सारा इतिहास । रावण यदि नहीं गिरता तो विभीषण के लिख दी अयोध्या मैंने नाम । विभीषण अयोध्या का राजा घोषित होते ही रावण करता आक्रमण बार बार । युद्ध विध्वंसकारक है । जानता जहान । उर्मिला महान है, जिसने सबका रख दिया मान । अग्र रामायण है जिसका सार । अग्र नारी उर्मिला महान । जय श्रीराम ।

जन जन के आराम श्री राम सबसे मिल रहे है, भुजा पसार पसार लेकिन जो नहीं दिख रहे उन्हें खोज रहे है आँख फाड़ फाड़, माँ कैकयी नहीं दिखी क्या बात । शीघ्र चलो भाई भरत माता के कक्ष में जहाँ खेलते थे हम मचा ऊधम बार बार । शैशव की आ रही याद । इन चौदह वर्षों में न पाया वात्सल्य का स्वाद, जिसकी तुलना में सब फीके है राग स्वाद । शीघ्र ले चलो मुझे अपनी माँ कैकयी के पास । धन्य सुत राम जो जननी के प्यार का कर रहे बारम्बार बखान । नतमस्तक निरुत्तर सुन रहे भरत कुमार । न आगे बढ रहे न पीछे हट रहे शिथिल खड़े भरत राज । मौन भंग किया शत्रुघ्नलाल ने बोले- कैकयी को माता कहते नहीं भरतकुमार । इस पीड़ा में दग्ध है माता नहीं आई कक्ष के बाहर । मैं माता की पदवी का कलंक हूँ इसलिये माता कहते मुझे सकुचाता है मेरा लाल, लाल खो दिया लालिमा नहीं फटकती मेरे पास । अंधकार ही अंधकार है चहुँ ओर राह सूझती नहीं कैसे आऊँ कक्ष के बाहर । भागे राम जैसे बछडा भागता आता गौमाता के पास । चरण पकड़ बोले, माँ फेरो मेरे सिर पर अपना हाथ । सम्भाल लो आ गया तुम्हारा लाल । वन में कोई चोट तो नहीं लगी सँभाल लो भली भाँति सब अंग पर फेरकर हाथ । यह विजय का ताज आपने ही पहनाया मेरे माथ । भरत अनुरोध कर रहे प्रातःकाल राजतिलक के सजाने को साज, गुरू वशिष्ठ मँगा रहे सब नदियों का जल अभिषेक का सजाने के लिये साज । लेकिन राम राज तभी होगा जब कण कण देगा अपना मतदान । रातों रातों में सौ फीसदी मतदान यदि होगा साथ तभी होगा राम राज । नहीं तो कैसा राम राज यदि प्रजा के एक कण में भी हो खिन्नता का वास । मतदान एक रात्रि में तभी पूर्ण होगा जब माता आप सक्रिय दोगी साथ और हाँ कहाँ है हमारी मंथरा धाई माँ जो हर समय गिरने

पडने से बचाती थी आपके आदेशानुसार। उठी कैकयी बोली अमृत वर्षा है राम राज । दग्ध हृदय धरती माँ का हुलस आया पुत्र राम । तरस रहे कान चहक उठे यह बगिया यदि माँ कह दे भरतलाल । बोले राम- भाई भरत करो माता को नमस्कार, राज पिता ने तुमको दिया भाई भरत राज पिता का वचन नहीं मान मैं लूँगा लघू भ्राता के आग्रह से यह राज का भार थाम। लेकिन बड़े भैया का मान रखना होगा प्रेमसे बोलो कैकयी माँ । चरणों में गिर लो आशीर्वाद । माता से आग्रह करो वही करेगी राजतिलक के लिये बड़े भैया और भाभी को तैयार । अब चलो मंथरा के पास वह नहला दुहला कर कपड़े पहनाये अपने हाथ । राम राज तभी संपन्न होगा जब मुक्त कंठ देगे सब आशीर्वाद । धन्य राम कितना सुन्दर विवेचन दिया मतदान का एक क्षण में, गागर में सागर भर दिया सब तत्त्व आ गया बाहर । राजा तभी सफल होगा जब प्रजा का होगा उसके साथ मतदान । मनभेद होने से विद्रोह होगा बिगड़ जायेंगे सब काम । राजा प्रजा एकसूत्र में बँधे तभी आनन्द के हिलोर आये पुलक उठे धरती माँ । सब साथ थे । रातों रातों सब सज गये साज । सूर्योदय होते ही मज्जन कराया माताओं ने सब भाईयों को सजाया पुत्र वधुओं को पहना सब सुहाग के शृंगार । तिलक किया वशिष्ठ मुनि ने शास्त्रोक्त रीति के अनुसार । प्रथम सुमरे विघ्नविनाशक गणपति महाराज । सब देवी देवता कुल देव, व पितर देवों का स्मरण किया आ गये सब देने राजा राम को आशीर्वाद । राजा, राम हुये, राम राज हो गया, झूम उठा सारा संसार । राम दरबार सजा, सब मंत्रमुग्ध छवि निहार रहे सिंहासन पर बैठे सिया राम । सूर्यवंश उज्जवल हुआ राजा हो गये आज राम । जय श्रीराम, जानकी वल्लभ सीताराम ।

राजा और प्रजा

श्रीराम का राज्याभिषेक हो गया अब राम, राजा राम हैं । राजा और प्रजा के आदर्श सम्बन्धों का विवेचन करना अब उनका काम है । राज्याभिषेक के लिये अयोध्या में संग आये राज वहाँ निमग्न हो गये जाने के लिये विदा माँगते नहीं । मित्रगण हैं साथी हैं विभीषण दो दिन पहले ही सिंहासन आरूढ हुये हैं । राज को सुव्यवस्थित करना प्रजा को सांत्वना देना इस समय एक राजा होने के नाते उनका सबसे बडा कर्त्तव्य है । रावण

एक नीतिज्ञ, प्रतिभाशाली, प्रजापालक शासक था । इसमें तो कोई दो राय हो नहीं सकती । प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या, शंका हो नहीं सकती वहाँ जहाँ ज्वलंत उदाहरण तैयार है । सब जानते थे मानते थे कि रावण कर रहा अनुचित काम है । घर जला दिये पवनसुत ने लंका में मचा दिया हाहाकार। विभीषण का घर बच गया जलने से वह आ मिला रामादल में । तो भी न आये कोई प्रजागण अन्त तक, अपने राजा के साथ थे । शासक को गलत मानते हुये भी यदि प्रजा विद्रोह न करे और अन्त तक दे उसका साथ तो इससे बड़ा कौनसा प्रजापालक शासक होगा जिसकी प्रजा स्वामीभक्ति में लीन अपने प्राण उत्सर्ग कर दे पर न छोड़े अपने स्वामी का साथ । लेकिन स्वामी भी रावण सा न कोई होगा स्वामित्व कर पूरा निभाया अधिकार, प्रजा को भी ले गया अपने साथ उसी धाम जहाँ स्वयं गया अवहेलना न की प्रजा की, रखा अपनी छाती से लगा । इसका नाम है अटूट स्वामी सेवक मान ले गया रावण प्रजागण को अपने साथ वही वैकुण्ठ धाम उलझन सुलझा ली बोले श्रीराम, पति पुत्र वियोग में हाहाकार कर रही लंका की नारियाँ, सांत्वना दो उन्हें राज को सुव्यवस्थित करो, नर हानि हो चुकी है बहुत लंका में, ऐसे सुव्यवहार और प्रेमजल से सींचो भूमि को । नई फसल तैयार हो। राज्य के अभाव को पूर्ण करना नये नये निर्माण यह राजा का काम है । बोले विभीषण, प्रभु मैं आपकी शरण हूँ, नहीं जानता इस गूढ़ तत्त्व निर्माण को । आप बस रहे मेरे हृदय में मैं तो केवल जपता आपका नाम हूँ । आप चलो साथ में करो सब काम । प्रजा को दो आराम मैं तो केवल जानता श्री राम नाम हूँ । हे सखा विभीषण ! जब राम को तुम जपते दिनरात हो तो शीघ्र लौट जाओ लंका में पुष्पक विमान लौटा दो कुबेर के पास में । सब देवताओं को बंधनमुक्त कर दो । दूर करो आंतकवाद को, सुख समृद्धि ऐश्वर्य और शान्ति का वहाँ भी वास हो । राम राज्य और लंका में अब मैत्रीभाव है, कष्ट कोई यदि आ जाये तो बुला लेना सहायता के लिये राम राज तैयार है । सब शंका समाधान कर प्रश्नोत्तर दे । संतुष्ट कर भेजा विभीषण को अपने राज में । सबके हृदय आराम हो ऐसा राम राज्य का विधान है । जय राजा राम । प्रजा के सुखधाम है ।

रावण विश्व का एक अद्वितीय योद्धा प्रजापालक शासक, प्रकाण्ड पंडित था, जो काव्य का भी स्वयं सृजन करता था। शिव भगवान की स्तुति रावण द्वारा रचित स्त्रोत है जो युग युग शिव की महिमा को व्यक्त करने को भक्तजन गाकर शिव से मनवांछित फल पायेगें, एकनिष्ठता, एकाग्रता का अभाव तथा वासना की लिप्सा रावण के पतन के कारण है, साधना ने वासना पर विजय पाई है। योग ने भोग के जंजाल काट गिराये अन्यथा रावण राम था, कह प्रभु मुस्कराये दरबार सारा एक स्वर में गूँज उठा, धन्य राम आपका आदर्शवाद है, परनिंदा नहीं करते, शत्रु के भी गुण मुक्त कंठ से हो गाते। विश्व के कण कण में आप ज्योति जगाते। एकनिष्ठा विजयी की जननी कह स्वयं नतमस्तक हो माता का मान बढाते। जय श्रीराम। अब सहर्ष किष्किन्धा लौट जाने के लिये राम सादर वानरपति सुग्रीव, युवराज अंगद और मंत्री जाम्बवंत से निवेदन करते है। सखा सुग्रीव मित्रता तुम्हारी ना कभी मैं भूल सकता हूँ। लेकिन आप भी राजा है और मैं भी राजा। किष्किन्धा सँभालना तुम्हारा कर्त्तव्य और अयोध्या सँभालना धर्म मेरा है। संग नहीं रह सकते हम क्योंकि अपने अपने राज को सँभालना है। राजा की अनुपस्थिति में अराजकता फैल जाने का भय हर राज्य पर मँडराता है सेना तितर बितर हो जाती है यदि सेनापति नहीं सँभालता है हाथ जोड अंगद बोले प्रभु मुझे सेवा में रख लो अपने पास। पिता ने सौंपा था मुझे आपके हाथ। लेकिन युवराज का ताज उसी समय पहना दिया था मैंने तुम्हारे माथ। युवराज को सेवक बनाऊँ यह अयुक्तिसंगत है बात। तुम सहर्ष लौट जाओ मेरा हाथ सदैव होगा तुम्हारे साथ।

विचार मग्न चुप साधे बैठे पवन कुमार। क्या आज्ञा होगी मुझे मेरे रोम रोम में बस रहे राम। अस्त व्यस्त हो जायगा रोम रोम यदि दामन छुडा लेंगे अपना श्रीराम। रोम रोम में बस रहे राम बोले, यह दूत तुम्हारा पवनकुमार, सदैव रहेगा मेरे पास। यह पवनवेग से चलनेवाला जब जब काम पडेगा सब मित्र राजाओं का कुशलक्षेम का क्षण में ला देगा समाचार। यह सहनानी (निशानी) अपनी मित्रता की दे दो यह उपहार मुझे शिरोधार्य। उछल पडे अंजनीसुत सबको सादर छोडने गये नगर के बाहर। अंगद से

बोले हनुमान सुध तुम्हारी हर समय राम को देता रहूँगा मत घबराना ऐ युवराज । जय श्रीराम ।

राज्याभिषेक का समारोह सम्पन्न हुआ मेहमान सब विदा हो गये । अयोध्या नगरी का शांतमय वातावरण है । विप्लव दूर हो गया अब सबके हृदय में नये नये विचार अंकुरित होते है जिनका समाधान राजा राम करते हैं । भरत कुमार के हृदय जो प्रश्न उत्पन्न होते हैं लेकिन वह संकोच वशीभूत श्रीराम के आगे स्वयं प्रगट नहीं करते । प्रगट करने का माध्यम पवनकुमार को बनाते हैं । इस पर श्रीराम मुस्कराकर कहते हैं मेरे और भरत में कोई अन्तर नहीं है । फिर यह संकोच का आवरण किसलिये वह निसंकोच सब प्रश्न पूछ सकते हैं अब श्रीराम आमोद प्रमोद के समय अपने छोटे भाइयों को तरह तरह के पुराण के कहानी किस्से सुनाते हैं । सब शारिरीक रोगों का मूल कारण वात पित कफ को निर्धारित करते हैं । संत मिलन के समान सुख संसार में कोई नहीं कारण कि उनसे मानव को ज्ञान रूपी वैभव प्राप्त होता है जिससे बुद्धि और सदाचार का विकास होता है । ऐसे खजाने को तो हर समय हर प्राणी से लेने में जन कल्याण है । क्योंकि जहाँ ऐसा अक्षय खजाना होगा वहाँ कभी सूखा नहीं पड सकता वह क्षेत्र सदैव सरस होगा जहाँ सद्बुद्धि का वास होगा । गरुड ने शंका की कि महाराज मैंने आपको नागपाश में बँधा देखा तो भ्रमित हो गया कि यह नर है या नारायण। इस शंका को निवारण करने के लिये तुम काकभुशुंडी संसर्ग करो वही तुम्हारे दिव्यचक्षु खोल सकेंगे । अपने जन्म जन्मान्तर का वर्णन देकर वह सब योनियों में से घूम आये है । धर्म विरोध और गुरू अपमान करने के कारण शिव भगवान ने उन्हें श्राप भी दिया लेकिन गुरु के आग्रह के कारण निवारण भी किया तरह तरह की योनियों की सैर कराकर ज्ञानचक्षु खोल दिये अंधकार नहीं फटक सकता अब कभी भी उनके पास में, तम कोसों दूर खडा नमस्कार करता है कभी न आता पास में । सती भ्रमित हुई देख नारायण के मानव आकार को । शिव सदा शिव नर नारायण एक है समझ गये भेदभाव न आया उनके हृदय आगार में । सीता वियोग में तड़फ रहे राम तो कौनसा किया भूल का काम । लक्ष्मी के बिना क्या कष्ट नहीं होता नर नारायण को सती भ्रमित हुई डूब गई उस भ्रमणा में । नया रूप पाया

पार्वती के नाम से ज्ञान चक्षु खोल दिये रामचरित सुनाया उन्हें निज मुख से शंकर भोलेनाथ ने । निमग्न हुई पार्वती विश्वनाथ में, सुना दी पूर्ण रामचरित मानस आशुतोष भगवान ने । गृहस्थ के समान आनन्ददायक न कोई और जीवन की राह है । राम मानव रहे नारायण न कहलाये । मानवता उनकी वंशावली है हर मानव की रगों में उनका रक्त संचार है । राम का आदर्श महान है । सदाचार राम का नाम है हर समय वहाँ रहते पवनकुमार विराजमान है जिनका संकट मोचन नाम है । शिव भी रहते सदा पार्वती के साथ है । सत्यं शिवं सुन्दरम् भी करते गृहस्थ में वास है । नाते रिश्तों का अमृत मर्त्य मानवता को पिलाने में रामायण अग्र है । हलाहल रख लिया नीलकंठ ने अपने पास है । जिनता पी सको उतना थोडा है । राम विश्व का आराम हर जीव में करते वास है । केवल एकनिष्ठता से ढूँढ ले तो सफल हर क्षेत्र का हर प्रयास है । रामायण भी जीवन का अग्र सार है । इसलिये अग्र रामायण कण कण में विराजमान है । उसे संचित करो या ठुकरा कर चलो वह निजी विचार है । स्वतंत्रता हर मानव का अधिकार है। जय श्रीराम । जीवन पथ प्रदर्शन करने में रामायण तेरा अग्र नाम है । अग्र रामायण की ज्योति जले, जीवनपथ पर तो अंधकार का क्या काम है । राम जहाँ विराजमान है वहाँ आराम ही आराम है। जय विघ्न विनाशक गणनायक महाराज । एक तिनके के सहारे चल रहा प्रयास आप सँभाल लेना पतवार। बेडा हो जाये पार । व्यक्त किया वही जो भावना दी आपने । यह नैया आपके हाथ जय श्रीराम । मन कह रहा हाथ लिख रहे । सफल होगा यह प्रयास तभी जब गणनायक महाराज देंगे साथ । जय श्रीराम सत्यं शिवं सुन्दरम्, शंकर सुवन पवनकुमार शंकर आपके पिता, पार्वती आपकी हुई माता, गणेश भ्राता । यह आपका परिवार । राम के दरबार में पवनकुमार सदैव विराजमान । राम का जहाँ नाम हो वहाँ आप रहते विराजमान । त्रुटियाँ होगी अनेक उन्हें कर देना क्षमा श्रीराम । अग्र रामायण इस प्रयास को आप सँभाल लेना आपके हाथ है हर मानव की लाज । जय श्रीराम, जय जय राम । प्रश्न तो हर क्षण नये उपजते हैं लेकिन आप हर कण कण में विराजमान। दे रहे त्तर हर प्रश्न का इसलिये उत्तरकाण्ड आपका है नाम।

हर प्रश्न का उत्तर देंगे श्रीराम जो हर प्राणीमात्र में सदैव विराजमान । राम, भजो राम कहो राम जानकी वल्लभ सीता राम ।

हे सूर्य भगवान ! आप युग युग से उदय होते ही विश्व के तम को हर, प्राणी मात्र में स्फूर्ति प्रदान करते हो । सूर्यवंशी श्रीराम भी अपने जीवन की हर किरण से मानवता को सुख, समृद्धि और स्फूर्ति प्रदान कर रहे है। वह अपनी वंश परम्परा को जिस रूप से निभा रहे है राम जैसे सुत वंश स्तम्भ है जिनपर मानवता का गौरव विराजमान है इसलिये धन्य सूर्यवंश है जहाँ राम का जन्म हुआ जो नित्यप्रातः आपको शीश नवाते हैं ऐसे मानव चरित्र है जो आपकी किरणें है विश्व आलोकित करने को आज भी है, कल भी थी और सदैव रहेंगी । धन्य सूर्यवंश का गौरव जहाँ राम से सुत ने जन्म ले चार चाँद लगा दिये । आपकी स्फूर्ति के कण हर मन में बसा दिये। धन्य आप और आपके वंशज श्रीराम सदैव विश्व को प्रत्यक्ष देते प्रमाण हैं। गुप्त नहीं कुछ नित प्रातः देती स्फूर्ति आपकी किरणें जिनमें बस रहे श्रीराम है । सदैव चहुँ ओर फैला रहेगा राम राज का प्रकाश है । यह भानूप्रकाश है मानव कल्याण है । यह श्रद्धा समन्वित अर्ध्य है धरा से प्रकाश यानि भास्करदेव का कई गुणा अधिक विस्तार है । जल की एक बूँद क्या अस्तित्व सागर में वहाँ वरुण देवता का वास है लेकिन स्वाति नक्षत्र दे देता उसे मोती का रूप, पवन देव का कमाल है । अनुपम रत्नों का भंडार है लेकिन एक बूँद को भी वह अपने अंतस्थल में धारण करता है क्योंकि पवनदेव की कृपा से आई उनके साथ है । राम का चरित्र अवर्णनीय है ज्ञान का अटूट भंडार है । लहराता सागर अपने स्थान पर सीमित रहता रत्न देने से कब करता इन्कार है लेकिन निकाल लाना बाहर प्राणी का काम है । सागर नहीं करता अपना गुणानुवाद कि वह रत्नों का भंडार है । वह लहराता रहता है एक गति से मर्यादा को भंग नहीं करता इसी में विश्व का कल्याण है । सागर की तरह मानवता भी परिधि में बँधे राम इसलिये मर्यादा पुरुषोत्तम उनका नाम है । जन कल्याण उनका काम है । हर प्राणी मात्र को देते अनुकुल और प्रतिकूल हर परिस्थिती में देते आराम है वह लहर के समान है । धैर्य से तटस्थ यदि जीवन रहे तो उसका कल्याण है । अवधि बीत जाती है समय की अविरोध गति है वह रुकती नहीं किसी से आगे बढना उसका

काम है क्योंकि श्रीराम वहाँ भी बस रहे राम उनका नाम है । चौदह वर्ष की अवधि व्यतीत की संयम से हुआ राज्यभिषेक रामराज हुआ जिसका अग्र उदाहरण विश्व के पास है । रामराज का आज तक भी नाम है । न कोई भूला, न भूल सकता प्रजा के हर शब्द पर न्योछावर राजा राम थे अग्र उनका विधान है । अग्र रामायण मानवता में रहना सिखाती इसलिये अग्र राम का विधान, अग्र रामायण है । परिधि कोई बंधन नहीं वह एक राह है उसका चलना स्वेच्छा का काम है । राम तो प्राणी मात्र को मुक्त कर रहे स्वतंत्रता हर एक का जीवन सिद्ध अधिकार है । बँधकर परिधि में यदि आता आनन्द तुम्हें तो मानव स्वयं बँध जाता है लेकिन बोझ समझे तो बैल रस्सी तोड़ भाग जाता है उसे न कोई बाँध पाता है । राम नहीं बाँधते किसीको वह मुक्त कर रहे । लेकिन यदि स्वयं तुम बँध चले आते उनके पास तो वह ठुकरा नहीं पाते अंगीकार करना उनका काम है । वह कण कण के आराम श्रीराम है ।

पद्धति कोई परिधि नहीं वह सुझाव है बंधन नहीं, तुम्हारा राम जागे तो मानो, रावण जागे मत मानो, बंधन जान तोड़ फेंक दो परिणाम तो निर्णायक के हाथ में । राम जागा आराम है । बंधनों में सुख का आभास है रावण जागा मदान्ध तोड़ फेंका मानवता का परिधान तो तप्त का चहुं ओर से मिलता आभास है, घबराता मानव, प्यास मानव, तडफड़ाता मानव शब्द की परिभाषा नहीं कर पाता मानव । शब्द एक ही ब्रह्माण्ड में ब्रह्म है वह जन मूक हो जाये तो चैन की वीणा कैसे बज पाये । वीणाधारिणी माँ सरस्वती तो रहती शब्द यानि ब्रह्म के साथ है । जय और पराजय की भाषा पढ लो राम और रावण के पास है जय श्रीराम । पराजित का भी पूर्णतया करते सन्मान है । परनिन्दा करने को सब तत्पर लेकिन पर गुणानुवाद की शक्ति किसी बिरले राम के पास है जिसे पर गुणानुवाद के आता आनन्द महान है ।

अनेक पुष्पों से एकत्रित किया गया रस मधु यानि शहद कितना गुणकारी और स्वादिष्ट है औषधि शास्त्र के वक्षस्थल पर सुनहरे अक्षरों में लिखा इसका नाम है । परगुण लख सीख ले वह पागल नहीं पारदर्शी उसका नाम है । पथ भ्रष्ट नहीं कभी जीवन की राह में वह पथदर्शक उसका होगा

नाम है, जिसके हृदय में राम का वास है वहाँ आराम ही आराम है कष्ट का नहीं काम है । जय सियाराम ।

विवेचन

गृहस्थाश्रम प्रकाश पुंज है यह मानवता का उद्गम स्थल है । यह सूर्यवंश है जहाँ से प्रकाश की किरणें मानव जीवन के हर छोटे से छोटे और बड़े से बड़े कोने को प्रकाशित कर रही है । अंधकार का यहाँ क्या काम है जहाँ ज्योतिर्मय आदर्श राम विराज रहे है । राम ने अपने जीवन में हर आश्रम को शोधा वह बन बन घूमे ऋषि मुनियों का संग किया उन्हें नतमस्तक हो नमस्कार किया । संन्यासियों से संसर्ग किया जीवन के हर मार्ग को शोधा । सबको नमस्कार किया पशु पक्षियों तक को भी सम्मान दिया । पिता का मित्र होने के नाते जटायु का दाह संस्कार स्वयं अपने हाथों से किया लेकिन पिता का वचन पूर्ण कर गृहस्थाश्रम में लौटकर आये और सारा जीवन इसी कर्मक्षेत्र में बिताया क्योंकि इसकी नींव नाते रिश्तों के कंधों पर है । यह मानव को अपनी गोद में खिलाता है । लालन पालन करता है और मृत्यु के बाद तक उससे नाता निभाता है । योग मोक्ष दाता है लेकिन भोग मानव को लुभाता है यह आकर्षण क्षेत्र जहाँ मानव खिंचा चला आता है वह तपस्या है जहाँ मोह के बंधन को त्यागना है यहाँ कर्तव्य को निभाना है जीव में ब्रह्म पाना है वहाँ जीवन को ब्रह्म में मिलाना है । गृहस्थाश्रम सुगम मार्ग है, यह जन कल्याण कारक है । योग दुर्गम मार्ग है, वहाँ साधना से असाध्य को पाना है यहाँ कर्त्तव्य पालन से स्वयं असाध्य सुलझ जाता हैं इसलिये राम मानवता के प्रतीक हैं । उन्होंने सदैव अपने को मानव दशरथसुत सूर्यवंशी कहलाया है । जीवन का सबसे सुन्दर सरल, सुगम कर्तव्यपालन का मार्ग उन्होंने सिखाया है । पर्वत की कन्दराओं में बैठ योग साधना विरलों से हो पाती है । कर्तव्य निभाना तो बचपन से सबको आ जाता है । उसको निभाने में जीवन का सब सार आ जाता है। अग्र रामायण आदर्श राम का जीवन यही संदेश दे हर समय हर मानव के हृदय में ज्योति जलाती है । राम का संदेश है ऐ मानव तुम हर स्थिति में हर परिस्थिति में देश में हो या विदेश में, अनुकूलता प्रतिकुल वातावरण में। राजसी या साधुत्व किसी भी वेश भूषा में, सुख, शान्ति, संतोष और प्रेम

से जीवन यापन करो । अज्ञात को ज्ञात कर, दृश्य में अदृश्य है, यह झांक अपने इष्टदेव को नमस्कार कर बेतार के तार को झनझनाओ वहाँ की मधुर ध्वनि को सुनो, मनन करो विफलता और दुःख का वहाँ कोई काम नहीं । पवनवेग से चलनेवाले मन पर पवनसुत का यदि नियंत्रण हो जिन के हृदय में राम का वास है वहाँ मार्ग स्वतः ही निष्कंटक है, साफ है । विघ्न का क्या काम है जहाँ गणनायक रहे विराज हैं । शंकर सुवन, केसरी नन्दन के इष्ट राम जहाँ रहे विराज है वहाँ आराम ही आराम है । क्लेश का नहीं नाम है जहाँ श्री राम है, जिनके इष्टदेव पार्वतीनाथ शंकर भगवान है ।

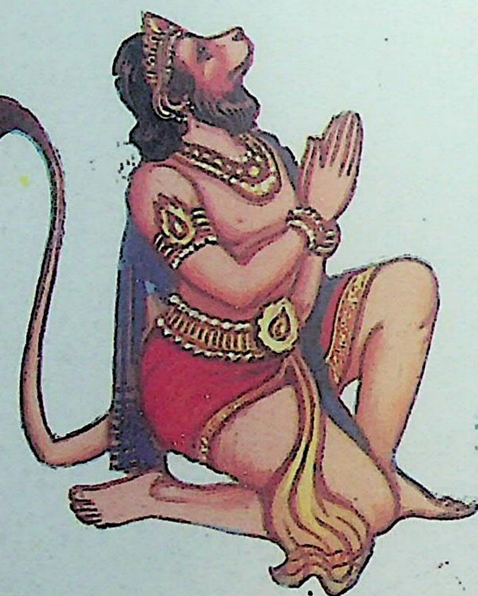
जयश्री राम, मानव कल्याण की सोपान गृहस्थाश्रम के आदर्श जीवन लीला के नाट्यकार श्री राम का अमित नाम अंकित है कण कण के मर्मस्थल में । अग्र रामायण यही स्वर और यही राग है । गृहस्थाश्रम में मानव को सरलता से अप्राप्य भी प्राप्य है । कर्महीनता नहीं कर्मनिष्ठा का राम पढाते पाठ हैं । जय श्रीराम तुम्हारा नाम है । नाते रिशतों के बँधनों में बँधते जा रहे प्रेम से तो वह फाँस नहीं साँस बनते जा रहे अपने आप है । यही राम ने जीवन को दिया साँस यानि प्राण है । जय श्रीराम विश्व के आराम ।

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.



KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

